श्री उमरहार कुर्मी वंश प्रकाशः

॥ उमरहार वंशावल्या सहितः ॥

॥ सच ॥

श्री परमहंस परिव्राजकाचार्येण श्री १०८ अवधूतेन

स्वामिना आत्मानन्दसरस्वत्या निर्मितः

रामचेला प्रभृतिभिः प्रकाशितश्च ।

॥ सोऽयम् ॥

श्री महेश मुद्रणालयाध्यक्ष पं० शिवराम अग्निहोत्रिणा

कान्हपुर प्रान्ते मुद्रितः ।

"अनन्त व्रत भोमे सं० १९९० वैक्रमीये"

एक रुपया मूल्य है ॥ मूल्यम् १) मुद्रैकम् ॥ (एकं रूपकम्)

अस्य सर्वेऽधिकाराः राजशासनानुसारेण प्रकाशकेन स्वायत्तीकृताः

[रजिस्ट्री कृताधिकाराः स्वीकृताः]

यह पुस्तक

स्वामी जी की आज्ञानुसार

उमरहार रामचेला के मकान धनसिंहपुर

पोष्ट कोड़ाजहानाबाद जिला फ़तेपुर

यू० पी०

से मिल सकेगी।

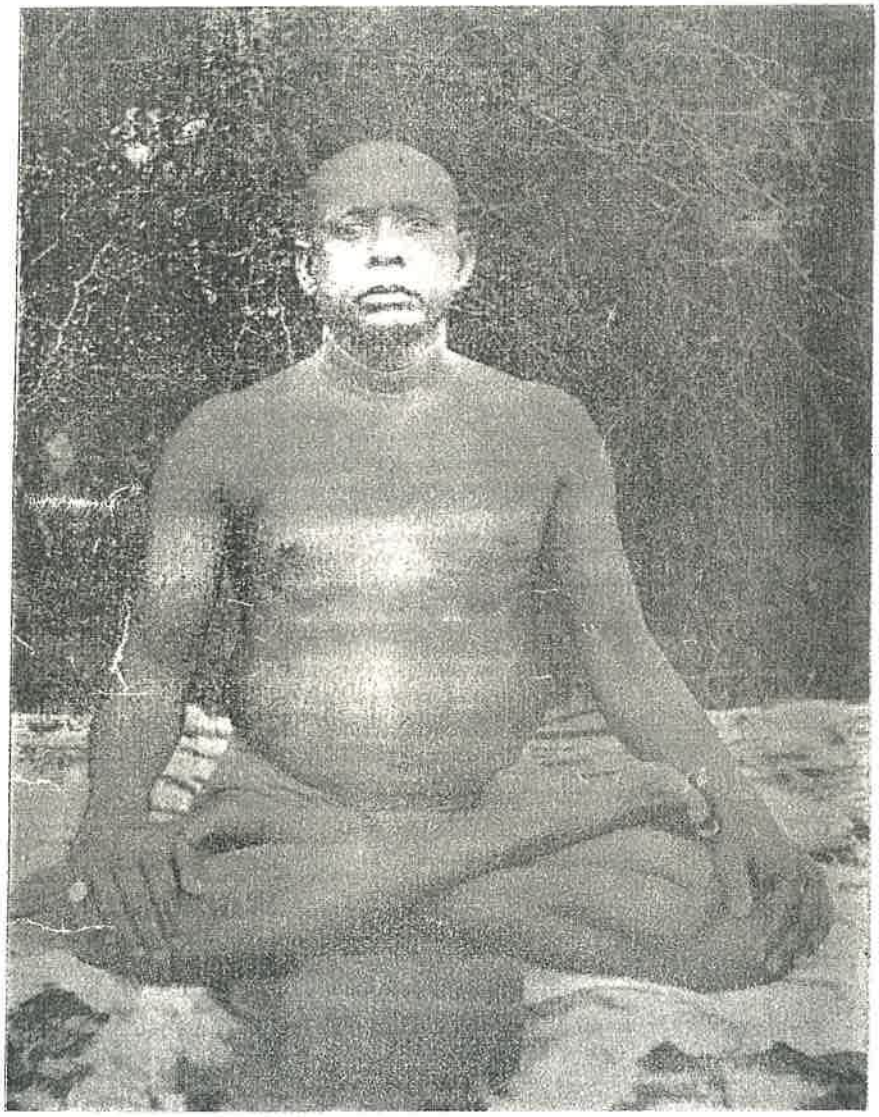

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८

अवधूत स्वामी आत्मानन्द सरस्वती,

स्थान—सोरही-जहानाबाद ।

ब्रजेश प्रेस, कानपुर ।

विषय सूची

	विषय			पृष्ठ
१		अथोपाक्रमा		१
२		कुर्मी शब्दो व्याख्याते		१०
३		जाति निर्णय		१५
४		प्रधान प्रतिनिधि सूचीपत्र		५०
५		पराक्रमःऽऽरभ्मते		५४

वंशावली ।

६	गोत्र	कौंडिल	कोढ़िहा	६०
७	,,	उपमन्यु	बेहटा खासी	६२
८	,,	कात्यानी	सुन्दरपुरिहा	६३
९	,,	धनञ्जय	लठहा	६४
१०	,,	उपमन्यु	बंगलहा	६५
११	,,	उपमन्यु	कुन्देरामपुर	६६
१२	,,	उपमन्यु	मौहाखेरिहा	७१
१३	,,	भरद्वाज	असद्दानहा	७२
१४	,,	भरद्वाज	मकन्दीपुरिहा	७४
१५	,,	उपमन्यु	भरहा खेरिहा	७५

	विषय			पृष्ठ
१६	गोत्र	भरद्वाज	गौंदहा वाले	७५
१७	,,	कश्यप	सीतापुरिहा	७७
१८	,,	भरद्वाज	बड़िगवा	७७
१९	,,	कश्यप	बकियापुरिहा	७९
२०	,,	काश्यप	हिम्मतपुरिहा	८०
२१	,,	उपमन्यु	आशापुरिहा	८०
२२	,,	भरद्वाज	धनसिंहपुरिहा	८२
२३	,,	कश्यप	बहुबहा	८३
२४	,,	क्रातिक	बुधौलिहा	८६
२५	,,	काश्यप	भैरमपुरिहा	८७
२६	,,	काश्यप	तबलहा	८७
२७	,,	शाण्डिल्य	झड़िहा	८७
२८	,,	वत्स	खटहा	८८
२९	,,	भरद्वाज	मकरहा	९१
३०	,,	भरद्वाज	हरिजनपुरिहा	९२
३१	,,	काश्यप	दांनहा	९३
३२	,,	भरद्वाज	रुसियहा	९४
३३	,,	भरद्वाज	बघइहा	९५
३४	,,	कश्यप	मेडलिहा	१००
३५	,,	काश्यप	अलियापुरिहा	१०१
३६	,,	शाण्डिल्य	बंभोलवहा	१०२
३७	,,	काश्यप	आंवरखेरिहा	१०२
३८	,,	भारद्वाज	डेउरिहा	१०५
३९	,,	शाण्डिल्य	अलमापुरिहा	१०८

	विषय			पृष्ठ
४०	गोत्र	कश्यप	रतवाखेरिहा	१०६
४१	,,	भारद्वाज	मेंहदिहा	११०
४२	,,	शांडिल्य	पतरिहा	११०
४३	,,	काश्यप	धमनहा	१११
४४	,,	गर्ग	दरियापुरिया	११२
४५	,,	भरद्वाज	डिघरुवहा	११४
४६	,,	काश्यप	मुरुकुटहा	११४
४७	,,	उपमन्यु	भैसहा	११५
४८	,,	भरद्वाज	कपिलिहा	११५
४९	,,	वत्स	मेढ़ापाटी	११५
५०	,,	उपमन्यु	मथुरापुरिहा	११६
५१	,,	कश्यप	माझेपुरिहा	११७
५२	,,	गर्ग	डेहरिहा	११६
५३	,,	शांडिल्य	हरबसपुरिहा	१२०
५४	,,	उपमन्यु	जहूपुरिहा	१२१
५५	,,		तेदुलिहा	१२३
५६	,,	भरद्वाज	विलरिहा	१२४
५७	,,	भरद्वाज	लेड़हा	१२४
५८	,,	भरद्वाज	जमुनियाँखेरिहा	१२५
५९	,,	शाण्डिल्य	साखेवाले	१२६
६०	,,	कश्यप	नन्दपुरिहा	१२६
६१	,,	कश्यप	खदरहा	१२८
६२	,,	कश्यप	गहरुखेरिहा	१२८
६३	,,	उपमन्यु	गौरीपुरिहा	१३०

	विषय			पृष्ठ
६४	गोत्र	शाण्डिल्य	सपुरहा	१३१
६५	,,	काश्यप	कंठीपुरिहा	१३२
६६	,,	उपमन्यु	बेहटिहा	१३३
६७	,,	उपमन्यु	पाराहा	१३६
६८	,,	कश्यप	बिहूपुरिहा	१३७
६९	,,	भरद्वाज	दानपुरिहा	१३९
७०	,,	उपमन्यु	पिपरिहा	१३९
७१	,,	शाण्डिल्य	खानपुरिहा	१४०
७२	,,	कश्यप	दिलवरपुरिहा	१४१
७३	,,	शाण्डिल्य	झंडहापुरिहा	१४२
७४	,,	काश्यप	महादेवपुरिहा	१४२
७५	,,	कात्यायन	सिंहपुरिहा	१४२
७६	,,	भरद्वाज	पैकापुरिहा	१४४
७७	,,	भरद्वाज	गुड़ेलनपुरिहा	१४४
७८	,,	भरद्वाज	नाथूखेरिहा	१४५
७९	,,	परम्परा	मकनियाँ खेरिहा	१४५
८०	,,	शाण्डिल्य	टड्वापुरिहा	१४६
८१	,,	उपमन्यु	सरहीवरहा	१४७
८२	,,	शाण्डिल्य	हसोलेखेरिहा	१४८
८३	,,	शाण्डिल्य	मदिहाखेरिहा	१४८
८४	,,	कश्यप	भाजीताला	१५०
८५	,,	शाण्डिल्य	बंधुरिहापुरिहा	१५०
८६	,,	कश्यप	पोखरिहा	१५०
८७	,,	कात्यायन	इच्छापुरिहा	१५१

	विषय			पृष्ठ
८८	गोत्र	गर्ग	खनपगार	१५२
८९	,,	भरद्वाज	अमिलिहा	१५२
९०	,,	भरद्वाज	निचौरिहा	१५२
९१	,,	शांडिल्य	दसोदरपुरिहा	१५३
९२	,,	भरद्वाज	हँढ़ियहा	१५३
९३	,,	भरद्वाज	टढ़ियहा	१५३
९४	,,	गर्ग	बिन्दकिहा	१५३
९५	,,	वत्स	नयापुरिहा	१५५
९६	,,	धनञ्जय	जियापुरिहा	१५५
९७	,,	भरद्वाज	धरमपुरिहा	१५६
९८	,,	वत्स	बोधीपुरिहा	१५६
९९	,,	काश्यप	गोसाईंपुरिहा	१५७
१००	,,	धनञ्जय	ढोलकिहा	१५७
१०१	,,	धनञ्जय	अम्बरपुरिहा	१५७
१०२	,,	धनञ्जय	लठहा	१५७
१०३	,,	काश्यप	पह्यावापुरिहा	१५८
१०४	,,	शाण्डिल्य	महमदपुरिहा	१५९
१०५	,,	काश्यप	गंगोलिहा	१६०
१०६	,,	शाण्डिल्य	रहमतपुरिहा	१६०
१०७	,,	उपमन्यु	भलिगवहाँ	१६१
१०८	,,	शाण्डिल्य	डेरहा	१६४
१०९	,,	गर्ग	हाटावाले	१६६
११०	,,	कश्यप	बहरौलिहा	१६६
१११	,,	काश्यप	बड़ाघराउ	१६९

	विषय			पृष्ठ
११३	गोत्र	काश्यप	गढ़वहा	१७७
११४	,,	काश्यप	विधनापुरिहा	१७७
११५	,,	भारद्वाज	जहानाबादी	१७१
११६	,,	भारद्वाज	भिखनीपुरिहा	१७१
११७	,,	भारद्वाज	सठिगवहाँ	१७४
११८	,,	कश्यप	रसूलहा	१७५
११९	,,	कात्यायन	भदूपुरिहा	१७८
१२०	,,	भरद्वाज	बाबूपुरिहा	१७९
१२१	,,	उपमन्यु	भगोनापुरिहा	१८१
१२२	,,	उपमन्यु	कोल्हुवहा	१८२
१२३	,,	कश्यप	औरहा	१८३
१२४	,,	वत्स	गड़वहा	१८६
१२५	,,	पराशर	खेड़िहा	१८७
१२६	,,	उपमन्यु	फिरोजपुरिहा	१९०
१२७	,,	वत्स	कनौरहा	१९२
१२८	,,	उपमन्यु	इटरहा	१९२
१२९	,,	उपमन्यु	अमौलिहा	१९५
१३०	,,	कश्यप	गोरहा	१९७
१३१	,,	काश्यप	खाँड़ेउरिहा	१९८
१३२	,,	कश्यप	सकट्टनपुरिहा	२००
१३३	,,	उपमन्यु	चिहुलपुरिहा	२००
१३४	,,	भरद्वाज	कल्याणपुरिहा	२०३
१३५	,,	भरद्वाज	पढ़िनिहा	२०३

	विषय			पृष्ठ
१३५	गोत्र	भरद्वाज	किरविहा	२०७
१३६	,,	भार्गव	श्यमवाँखेरिहा	२१२
१३७	,,	उपमन्यु	मयापुरिहा	२१३
१३८	,,	काश्यप	सैंठिहा	२१३
१३९	,,	कश्यप	सालेरामपुर	२१५
१४०	,,	उपमन्यु	रसरिहा	२१५
१४१	,,	भारद्वाज	रवाईपुरिहा	२१६
१४२	,,	कश्यप	अटइहा, दिलावरपुरिहा	२१६
१४३	,,	कश्यप	बावनखंभा	२१७
१४४	,,	भारद्वाज	सालेपुरिहा	२१७
१४५	,,	कश्यप	सोजेपुरिहा	२१९
१४६	,,	उपमन्यु	चिफुरिहा	२१९
१४७	,,	भरद्वाज	पहवार	२२०
१४८	,,	कश्यप	तरहन वाले	२२१
१४९	,,	काश्यप	अज्ञात	२२१

॥ ओ३म् ॥

॥ अथोपाक्रमः ॥

श्रीशम्बन्दे ! अद्य श्री परम पुराण पुरुषोत्तम परमात्मा के ब्राह्मय कल्पान्तर्गत । श्रीपरं ब्रह्म के दूसरे परार्द्ध में प्रथम दिवसारं भान्तर्गत द्वितीय प्रहरार्द्धगत ॥

श्रीश्वेत बाराह कल्प में वैवस्वत मन्वन्तर में अट्ठाइसवें कलि नामक युग चरण के प्रथम पाद में श्रीशालवाहन शाके १८५५ संख्या गत वर्ष में ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि बुधवार के प्रथम प्रहर काल में श्रीचन्द्रवंशीय कमरहार कुर्मी वंशावली का समालोचन किया । समस्त विश्व का रचयिता तथा कारण अभिन्न निमित्तोपादान स्वरूप परमात्मा निर्विकार गुणातीत निरालम्ब निर्वाण लक्षण प्रथम अलक्ष्य [अलख] स्वरूप हुआ । तत्पश्चात् [तिसके बाद] अकार स्वरूप अलक्ष्य परमात्मा ही चित्सामर्थ्य का आश्रयी परंब्रह्म " नामरूपाभ्यां " रहित मेक सेवा द्वितीयं ब्रह्म " इति श्रुतेः; नाम रूप से रहित एकही अद्वितीय परं ब्रह्म हुआ । तदन्तर मंगलमूर्ति चित्प्रतिपालक सर्वान्तर्यामी परम शिव स्वरूप शक्ति गोपक शिव हुआ । तदन्तर चित्स्फूर्ति लक्षण कलामयी शक्ति हुई । तिसके पश्चात शिव शक्ति योग

स्फुटित पुरुष हुआ। तदन्तर पुरुष भावित चिद्भाव स्फोरक प्रकृति हुई। तत्पश्चात पुरुष और प्रकृति के क्षोभ से महत्त्व लक्षण प्रणव हुआ अर्थात ॐकार हुआ। तदन्तर वही वाक् स्फोट स्वरूप रुद्र हुआ। फिर वह व्यापक चित विष्णु हुआ। महाकाश लक्षणान्तरिक्ष स्वरूप महार्णव (समुद्र) अर्थात क्षीर सागर में शयन करने वाले विष्णु की शय्या स्वरूप बात लक्षण शेषाधार में विराजमान विश्नु की नाभि से उत्पन्न कमल कर्णि का मध्य में वही ब्रह्म "ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्तात विसामितः सुरुचो वेन आवः। सबुद्ध्या उपमा अस्य विष्टाः शतश्च योनि मसतश्चविवः" इतिश्रुतेः; हुआ। ब्रह्मा से आत्रि हुये और आत्रि से अश्रुविन्दु स्वरूप चंद्रमा हुआ। चन्द्रमा से बुध हुआ। बुध से पुरुरवा हुआ। पुरुरवा से यजाति हुआ। यजाति से यदु हुआ। यदु से भोज हुआ। भोज से कुविन्दक हुआ। कुविन्दक से कुर्मी हुआ। कुर्मीही की उमरहार संज्ञा हुई। उमर नामक वैश्य की कन्या को राक्षस विवाह विधान से हर लेने के कारण उमरहार कुर्मी कहाया। जिसकी वंशावली १४६ भेदों से लिखी गई है। बहु वंश में संस्कारों के आचार्य भेद से गोत्र भी भिन्न २ होगये हैं। जैसे कौडिन्य ऋषि के वंशज कौडिल आचार्य कुर्मी के सन्तानों में से किसी वंश के आचार्य हुये अतएव

उनका कौडिल गोत्र हुआ। बहुत दिनों के बाद वे कौडिहा कहाये। परन्तु गोत्र कौडिल ही रहा। इसी प्रकार वंशवृद्धि से आचार्य भी बहुत से होगये तब उन आचार्यों के गोत्र भेद से इन उमरहारों के गोत्र भी बहुत से होगये। उमरहार कुर्मी अपने गोत्र से भिन्न २ गोत्रों में प्रायः राक्षस विधान (डोला डालकर) विवाह संस्कार किया करते हैं। क्षात्रियोचित "हत्वा भित्वा च छित्वा च क्रोशन्ती रुदतीं गृहात्। प्रसाह्य कन्या हरणं राक्षसो विधि रुच्यते" (म. ३।३३) विवाह भी राक्षस विधान (डोला डालकर) ही श्रेष्ठ है। उमरहारों की स्त्रियां दाहिने हाथ में शंख तथा कांच की चूड़ियां नहीं धारण करती हैं। किन्तु दाक्षिण कर मार्ष्टिः (माठी) और कंकण धारण करके पवित्र रखती हैं। वास्तव में वीर क्षत्रिया के आभूषण भी मार्ष्टिः और कङ्कण हैं। यह विषय जाति निर्णय उमरहार कुर्मी वंशोपत्ति प्रकाश में भली भांति प्रमाणित किया गया है। इस समय वंशावली लिखने का कारण यह है कि उमरहार कुर्मी वंशजों में से बहुत से कुर्मी लोग आर्य समाज और जाति भ्रष्ट कपोल कल्पित कूर्म क्षत्रिय नामक समुदाय में फँसकर मूर्खता से मार्ष्टिः तथा कङ्कण को उतार कर दोनों हाथों में चूरियां पहिराकर और कांधे में तिलरा डोरा विधान रहित डालकर कुर्मी जाति से भिन्न नाम

(उमराव वंशीय कुर्मी कूर्मि क्षत्रिय महासभा) रखकर अब से पूर्व सात वर्ष के लगभग हो चुके जाति च्युत (भ्रष्ट) होगये हैं। इस पाञ्चाल देश में यदुवंशियों में से भोज नामक यदु-वंशी मथुरा से आकर उग्रसेन के राज्य शासन काल में बसे थे। श्रीमद्भागवत पुराण के दशमस्कंध के द्वितीयोध्याय का दूसरा तीसरा श्लोक इस प्रकार है "ते पीड़िता निविविशुः कुरु पाञ्चाल कैकयान्। शाल्वान्विदर्भान्निषधान्विदेहान्कोशलानपि" समस्त चन्द्रवंश वर्णन श्रीमद्भागवत पुराण के नवम स्कंध के चौदहवें अध्याय से प्रारम्भ करके चौबीसवें अध्याय पर्य्यन्त किया गया है। विस्तार भय के कारण श्री उमरहार कुर्मी वंशोत्पत्ति प्रकाश में नहीं लिखा गया है। किन्तु प्रमाण रूप में प्रतीकवत प्रकाशित किया गया है। सचानः कहकर उमरहारों नें अपनेही वंशज का परित्याग श्री अवन्तिकेश महाराजा भोजराज के समय में भ्रष्टाचारी होने से त्याग दिया गया था। सचानः शब्द की व्याख्या श्री उमरहार कुर्मी वंशोत्पत्ति प्रकाश में भली भांति की गई है। इसी प्रकार उतरायल भी यवन राज्य शासन काल में त्यागे गये थे। आज दिन पौराणिक प्रमाणों से प्रमाणित तथा स्मृतियों से भी प्रमाणित शब्द कोषों से भी प्रमाणित एवं व्याकरण से प्रमाणित चन्द्रवंशियों में पञ्चाल देशान्त-

गत तो उमरहार कुर्मी वंश ही पाया जाता है। अन्य क्षत्रिय चन्देल इत्यादिक भी हैं। उमरहार कुर्मी वंशजों को जाति भ्रष्ट होते देखकर वंशावली रचने का साहस किया गया है। इस उमरहार वंशावली में जहाँ तक जाति भर में बृद्धातिबृद्ध नाम पाये गये हैं लिखे गये हैं। कोई २ लोग तो पिता का नाम भी अज्ञात पाये गये हैं। इस कार्य को प्रथम उद्योगी पुरुष उमरहारों में रामचेला कौंडिल गोत्रज ही प्रधानतया उत्तेजित हुवा। वास्तव में रामचेला जातीय धर्म का कट्टर सम्पादक है। समस्त जाति के १२० प्रतिनिधियों के लगभग जातीय धर्म च्युतों के त्यागने में निमन्त्रित किये गये हैं। यों तो दो सहस्र उमरहारों नें पतितों के त्यागने का प्रस्ताव स्वीकार करके जाति भ्रष्टों को त्याग किया है। मार्ष्टिः तथा कंकण का अपमान करने तथा विधान रहित तिलरा डोरा कांधे में रखने के हेतु से ये मूर्ख जाति भ्रष्ट होकर पतित हो गये हैं। साथ ही साथ उमरहारों के ही त्यागे हुये सचानों से खानपान व्यवहार भी कर लिया इससे अधिक पतित होगये हैं। सचान लोग दक्षिण देश वाले जाति भिन्न कुनवी कटियार (कतिया) धोबी आदि मिलकर कूर्म क्षत्रिय नामक कल्पित संस्था में मिलकर अधिक पतित होगये हैं। कुनवी लोग मुर्गी इत्यादि खाते हैं। भ्रष्टों की

अधिक मीमांसा करना व्यर्थ ही है। उमरहारों में विशेष धनाढ्य तो नहीं हैं परंतु जातीय धर्म के पालन करने में वीर यदुवंशी हैं। इस पद्धति में मनुस्मृति, पाराशर स्मृति, औशनस्मृति, कान्यकुब्ज वंशावली, श्रीमद्भागवत पुराण और महाभारत तथा वर्ण विवेक चन्द्रिका से प्रमाण लिखे गये हैं। वेदों में ऋक्, शुक्लयजुः, कृष्ण यजुः, छान्दोग्योपनिषत् और वृहदारण्य को पनिषत् के भी प्रमाण लिखे गये हैं। कोषों में अमर कोष, मेदिनी, विश्व, हलायुधादिकों के प्रमाण लिखे गये हैं। व्याकरण में पाणिनीय व्याकरण और कात्यान वार्तिक तथा शाङ्करसूत्र से प्रमाण लिखे गये हैं। कपोल कल्पित कल्पना इस ग्रन्थ में किञ्चित् भी नहीं है। जहां कहीं प्रमाद से स्वर मात्रा वर्णादिक की अशुद्धि रह गई हो सज्जन वृन्द सुधार कर पाठ करेंगे। विद्वान पुरुषों को विशेष क्या लिखा जावे शमिति।

अवधूत आत्मानन्द सरस्वती,

स्थान—सौरहो कोड़ाजहानाबाद प्रान्त फतेहपुर। [यू० पी०]

सूचना—प्रिय उपस्थित महानुभाव यह उमरहार कुर्मी वंशोद्धारक महासभा क्यों हुई और इसमें अवधूत श्री १०८ स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती को भाग क्यों लेना पड़ा इसका कारण—एक समय स्थान सोरही में श्रीमान् परम पूज्य स्वामी जी एक अद्भुत बाघम्बर बिछाए उस पर बिराजमान थे बस।

(राधेश्याम)

पद—उस समय राम चेला कुर्मी सोरही में पहुँचा जाकरके।
श्रीमान् पूज्य स्वामी जी के चरणों में शीस झुका करके ॥ १
बस बैठ गया होकर निराश मस्तक नीचे करके अपना।
नेत्रों में आँसू भरे हुए जाहिर दुःख नहीं किया अपना ॥ २
यह दशा देखकर स्वामी जी बोले बेटा क्यों घबराये।
सब सच्चा हाल कहो हमसे किस कारण सोरही में आये ॥३
चेला ने कहा महात्मा जी इस दम हमको दुःख भारी है।
विपरीति धर्म के चलने में इक टुकड़ी हमसे न्यारी है ॥ ४
मत भेद उमरहारों में कुछ छै सात वर्ष से जारी है।
सम्बन्ध खान अरु पान रुका बस इससे दिकत भारी है ॥ ५
कुल मर्यादा को तज करके एक नूतन प्रथा निकाली है।
डोरा लटकाया कन्धे पर दोउ हाथ में चूड़ी डाली है ॥ ६
हम लोगों ने उन लोगों से पूछा तो यह बतलाते हैं।

शहरों में अधरंडा बाबू कह करके लोग चिढ़ाते हैं ॥ ७
है और नहीं कारण कोई बस एक शर्म का कारण है।
हम क्षत्री हैं इस लिये योग्य चूड़ियाँ जनेऊ धारन है ॥ ८
दोहा—सिर्फ शर्म के वास्ते छोड़ी कुल की आन।
मेट दिया निज धर्म को यह है दुःख महान ॥ १
इस प्रकार से जब किया चेला ने इजहार।
बोले स्वामी जी तभी है मुझको स्वीकार ॥ २
पद—पर एक बात सुन लो मेरी जिस पर तुमको चलना होगा।
सम्बन्ध सभी त्यागन करके अब धर्म मार्ग गहना होगा ॥ ९
बेटा भाई अरु बाप सगा नाना फूफा जीजा आदिक।
होगये धर्म से च्युत जो जो छोड़ी कुल की मर्यादा आदिक ॥१०
त्यागना पड़ेगा इन सबको जीवन पर्यन्त सुनो तुमको।
यह शर्त अगर मंजूर तुम्हें तो है इंकार नहीं हमको ॥ ११
तब चेला ने कुछ समय मांग जातीय प्रमुख गण लेकरके।
स्वीकार आपकी है आज्ञा यह कहा सबों ने मिल करके ॥ १२
इस तरह अटल विश्वास देख उन लोगों में स्वामी जी ने।
देंगे इक मास तुम्हें टाइम यह बचन दिया स्वामी जी ने ॥ १३
प्रत्येक गांव में जा जा कर हम वंशावली तयार करें।
साथ ही साथ उमरहार वंश की पद्धति का परचार करें ॥ १४
दो०—चैत्र शुक्ल तिथि पंचमी रोज बृहस्पति वार।
स्वामी जी के साथ सब चले बचन सिर धार ॥ ३ ॥

पद—बारह केन्द्रों में जाकरके लगभग सवाय सै ग्रामों की।
एक वंशावली तयार करी हर एक घरों के नामों की॥ १५
कुल वेद रीति अरु जगत रीति दोनों को लोग मानते हैं।
पर कुछ भाई इसके खिलाफ अपनी ही तान तानते हैं॥ १६
हम इसके कायल नहीं मित्र फैसन पर मर्यादा तोड़े।
माँ बाप से अपने पैदा होकर सदाचार को क्यों छोड़ै॥ १७
क्या अब तक कुर्मी वंश में कोई पढ़ा लिखा नर हुआ नहीं।
जो खाक डाल कुल रीती पर चूड़ियां जनेऊ गहा नहीं॥ १८
हर एक कौम को यही उचित अपने कुल की मर्याद गहे।
बस इसी लिए इस सभा बीच द्विज सबसे निज फरियाद कहै १९
हमको सब भाई प्यारे हैं यह एक वंश के बच्चे हैं।
जो कुल की मर्यादा तोड़े वह धर्म के बिलकुल कच्चे हैं॥ २०
कुल द्रोही होकर दुनियां में इंसान न हरगिज रह सकता।
यह समझ लेखनी रुकी यहीं इस लिये न आगे कुछ कहता २१

ले० पण्डित रमाशंकर दीक्षित
स्थान कोड़ा जहानाबाद,
प्रान्त फतेहपुर। (यू०पी०)

अथ कुरमी शब्दो व्याख्यायते-

ननु कुरमी शब्दो रूढ़ि गतो वयो गरूढ़ि गतोऽथवा धात्वार्थ निरूपकोऽस्ति। लोके मानवानां मध्ये जात्यन्तराले क्षत्रियाणां मध्ये यदुवंशान्तर्गत कुरमी शब्द वाच्यो मनुष्य समुदायो वर्तते एतातो लोके कुरमी शब्दो जाति विशेष रूढ़ि गतः समुच्चार्यते मनुष्यैः। परञ्च वस्तु प्राप्ते सति वाच्य वाचको भावो भवितुमर्हति नान्यथा तस्माद्रूढ़ि गतो नास्ति। विशेष्य विशेषणा भावा द्योग रूढि गतोऽपि नोस्ति धात्वर्थ निरूपके विचार्यते। कौ पृथिव्यां रमत हीति कुरमः 'योग विभागादच् प्रत्ययः' ताच्छील्ये जीविका कर्म करण विशेषेत्वानि प्रत्यये कृते सति 'कुरमः शीलमस्यास्ति, इति कुरमी शब्दो भवति। कुशब्दो मही वाचकः। श्रूयतेहि जाति संपादको मंत्रः 'ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद्बाहू राजन्यः कृतः,,। यद्वा "ब्रह्मणे ब्राह्मणम्" (शु० यजुर्वेद सं० अ० ३१।३० मं० ११,५)इत्यादिभ्यो मन्त्रभ्यो वेदे जाति निरूपणं पुरातनेकाले ब्राह्मणादीनां सवर्णानां च संकर जातीनामपितु "नृत्ताय सूतं गीताय शैलभं,,इत्यादिभ्या मन्त्रभ्य इति। स्मर्यते वर्ण विवेक वर्ण विवेक चन्द्रिका नामक ग्रन्थे "शंकुकारात्मजाःसर्वे वभूवुश्चित्र कारिणाः। कुविन्द कात्मजौ जातौ कैरी कुर्मीति

संज्ञकौ ॥,,४१॥ "क्षत्रे कर्माणि निष्णातौद्विज भक्ति परायणौ तयो पुत्राः प्रपौत्राश्च शूद्र वर्णे प्रतिष्ठताः,, ॥ ४२॥ अत्र कुर्मी यद्वा कुरमीतिद्वाभ्या प्रकाराभ्या मपि सार्थकतांनजहाति। परन्तु कुरमी शब्द एव लोके बहुतरां प्रसिद्धः। कुर्मीयत अनेनेति कुर्मी। द्वाभ्यां प्रकाराभ्यामेव मूलत्वन्नहीयते। मानञ्च रमणान्त्वपि समान व्यवहारो लोके भवत्येव। यद्वा कुश्चरश्चेति कुरौ। कुरौमीयेत अनेनेति कुर्मी रेफ ग्रहणन्तु पावक बीच कत्त्वं प्रकाश्यते। भगवता पराशरेणापि स्मर्यते पाराशर्य्याम्। "दासनापितगोपाल कुलमित्रार्द्धसीरिणः। एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं विधीयते,,॥ (पा. ११।२२) रलयोरभेदः कुलमित्रार्थात् कुलमित्र शब्दो भवितु मर्हति। देवनागरिकास्तु त्रकारं परित्यज्य कुरमीति व्यवहरन्ति किंचिदपि कुलमानम्मीयते त्रायते चेति कुलमित्रम्। पूर्व कालेहि एवा किं बदन्ती जन श्रुतिः। क्षत्रिय कात्कुर्मिणो वैश्य कन्यायां जातो यः सुकुरमीत्युप नाम संज्ञा जाति सूचकी ज्ञाता। अतएव कुरमी यद्वा कुर्मी शब्दो जातिवाचक इति सिद्धम्। तस्माद्धत्वर्थ निरूपकोऽस्ति-कुरमी शब्दइत्यलंपिष्ट पेषणे नेतिशम् ॥ ननु कुरमीजातेः किंल्लक्षणमित्याशंक्य लक्षणमाभिधीयते ॥ यस्मात्क्षत्रियेण वैश्य कन्या परिणीता तस्मात्कृषि कर्म तेनाङ्गीकृतम्। राज्याधिकारे भूमि रमणं च वैश्य कर्माधिकारेऽपि भूम्यां रमणं समधि

कृत्यतेन साध्वङ्गी कृतं जीविकोपि जीवन मिति । कुरामिणं च्यायत इति कुरमित्रम् "योग विभागादच्" कुरमित्रः । यद्वा कुले मित्रः सूर्यः समत्पन्न इति कुलमित्रः यदा वैश्य कन्या या विवाह समयः समागतस्तदा तामुमरजां राक्षस विवाह विधानेना यहत्य वैशाद्भेद प्रदर्शनार्थं तेम "वामं वामा करं शुभमित्यादिकृत्य वाम हस्ते सौभाग्य कर्म संस्कारे सौभाग्य चिन्हं शंख धारणं स्वत्न्या मकायत सः । वैश्याद्भिनोऽहं तेन प्रदर्शितम । साधु कुर्मीणान्त्वेषाहि प्रणाली लोके वर्तते । दक्षिण हस्ते शंख धारणेन क्षेत्र व्यवहारेऽपि शंख भंग दोषापत्तिः समायाति । खनन कर्माणि शंख भंग भयादेव दक्षिण हस्ते शंख धारणं न समीचीनं नित्य प्रायश्चित्त दोषापत्तेः । किन्तु वीराङ्गनाभिस्तु दक्षिणकरेवीरकङ्कणं मार्ष्टिश्चालंकर्तव्यम् । तस्मान्मार्ष्टिश्च कंकणं धारणं सव्य कर नारीभिस्तनाङ्गीकृतम् । ततः सपिण्डऽत्वप्राप्ते सापद्धतिः सदाचार समागतः । सदाचारस्तु सदोदितो भवत्येव । क्षत्रियैर्वैश्य कन्याभिस्साद्धं विवाहः साधूदितः । यथाऽऽमनुः "शूद्रैव भार्याशूद्रस्य साच स्वाच विशः स्मृत । तेच स्वाचैव राज्ञश्चताच स्वाचाग्रजन्मनः" । (म० ३ ।१३) । सवैश्यकुलोत्पन्नयाभार्यया कृषि कर्म कारयितुं प्रतिज्ञामकारत । वीराङ्गनानां दक्षिण करस्तु मार्ष्टिः कंकणादिभिः पवित्रैराभूषणै रत्नं कर्तव्य इतिवीरोदिता पद्धतिः ।

एषा सदाचारे सपिण्डत्वे परिणता जाता। सदाचार त्यागे न जातिच्युत कुलक्षयदोषापत्तिः। उमर कन्या विवाहिताऽनेन वृत्तिरपि समाहृताऽतं उमरहार संज्ञा जाता कुर्मीणामिति। अतोऽग्रे उमर हार शब्दोऽपि मीमांसितव्य इति। एकाक्षरी कोषे "उकारस्तुशिवः प्रोक्तः,, "मश्चन्द्रोऽपि विधीयते,, । तस्मात्- उत्तमश्चेति उमौ; उभयोरमतेयः सइतिहि उमरः वैश्यः (योग विभागादच्प्रत्ययः) उमराणां सदाचारः कन्यापिच समाहृ- यतेऽनेनेति उमरहारः। कुर्मी वंश संचालनारंभे हि उमरहार एव प्रथमः। इतोऽग्रे कुरमी वंश संचालनानन्तरं कुर्मी वंश सदाचार परित्यागात्सचानादयः कुलाचार सदाचार विमुखः 'कूर्मी, 'कूर्मक्षत्री, इत्यादि नामधार का वहवो वभूवुः। उमरहारै रेवानभिज्ञ सदाचारात्सचानइति संज्ञाकृता सजाती- यानांलक्ष्मवारणार्थम्। येन पुरातने काले द्वयोः हस्तयोः शंखधारणादिकं सदाचार विगर्हितं कर्म कृतं तस्य सचान इतिसंज्ञोमरहारैः कृता। अत्रचकार श्च्छेदकार्थकः सचइति- सदाचारात्त्यक्त इति ज्ञापकार्थकः। अनइति शकटार्थे प्रकार ज्ञापकार्थकः। सचानः कोऽर्थो वहुमतावलंविकः। "कुत्सायां- कन्,, इति। यथाशकटे वहुप्रकारकानिवस्तू निसंभरन्ति कृषी- वलाः तथैव सचानाः शकटवद्भान्ति नाना मतावलंवनात्। पुनर्विवाहादि संग्रहणाच्च। अतः सचानादिकैः सार्द्धं कदापि

सम्मेलनं नभवितव्यम् उमरहाराणामितिदिक् । अनुरोधयामो वयंसजातीयानां; भो ! सजातीया उमरहाराः ! भवद्भिः कदापि न कर्तव्यं संमेलनं विजातीयैः सचानादिभिः सार्द्धमित्येषा-ऽभ्यर्थनाऽस्माकंश्रूयन्ताम् । इमेत्यक्त सदाचार कर्माणः कदापि नमेलनीयाइति विचारयन्तुसुज्ञाः यतोऽभ्युदयानिश्रेयसः सिद्धिः सधर्म,, इति कुरमी शब्द मीमांसा समाप्ताः ।

अथ जाति निर्णयः-

श्री परम पुरुष जगन्निर्माता परमेश्वर को स्मरण करते हुए लोकमें सजातीय विजातीय आन्दोलन विकसित देखकर जाति निर्णय करने के निमित्त प्रथम सृष्टि क्रमोल्लेखनारंभ करता हूँ इसलिए विलक्षण जगत् में आधुनिक काल में जगन्निर्माता के विषय में बहुतों का मत है कि जगत् को रचने वाली प्रकृति है। तहाँ पर यह विचार कर्तव्य है कि प्रकृति क्या है? देववाणी का समुच्चारित प्रकृति शब्द है। पाणिनि आचार्य अपनी अष्टाध्यायी में "जनिकर्तुः प्रकृतिः,,

ऐसा सूत्र लिखते हैं। यद्यपि यह सूत्र कारक विषयक है तथापि सूत्रार्थ इस प्रकार है; कि जन्म करने वाले की प्राकृति ही उपादान कारक है। तो प्राकृति क्या है? यह बात सिद्ध नहीं हुई। व्याकरण रीति से ही विग्रह इस प्रकार है कि- 'प्रक्रयतेऽनयेति प्रकृतिः, जोरावरी के साथ किया जाता है इसके द्वारा अतएव इसकी प्रकृति संज्ञा है। संज्ञा नाम बाचक का है तो प्रकृति शब्द का वाच्य क्या है? दिक् है? या देश है? अथवा काल है? रचना के मध्य में दिशाओं की कल्पना होती है अतएव दिक् नहीं है। देश नाम काल्पनिक

बिन्दु का है अतएव देश भी नहीं है। काल नाम रचना-रंभ विनाश सूचक गति विशेष मान मात्र है अतएव काल भी प्रकृति नहीं हो सकती ! तो फिर प्रकृति नाम शक्ति का पर्यायी शब्द है ! शक्ति नाम सामर्थ्य का बोधक शब्द है। प्रकृति अर्थात् सामर्थ्य निराधार है या साधार है। आधार के बिना सामर्थ्य (प्रकृति) का विकाश (कार्य) हो नहीं सकता। अतएव निराधार होना असंभव है। चिद्धातु का सामर्थ्य लक्षण ही प्रकृति है। इस विषय में प्रमाण "अइउण (१) शांकर सूत्र है। "अकारः परमात्मा (चिद्धातुम्) इकाराख्यां चित्कलां स्वशक्तिं (स्वसामर्थ्य) समाश्रित्य उकाराख्यं ब्रह्म लक्षणःशिवो (ण) असीत्„। परमेश्वर अपनी कलात्मक शक्ति अर्थात् चित्कला (सामर्थ्य) को आश्रय लेकर 'ब्रह्म, लक्षण शिव हुआ। यह शांकर सूत्र का अर्थ हुआ। इससे सिद्ध है कि परमात्मा (शिव) की भावना शक्ति ही प्रकृति है वह प्रकृति अभ्यास सामर्थ्य स्वरूप है। अतएव एक अद्वतीय परमात्मा ही है ब्रह्म परमेश्वर का भावित स्वरूप है। प्रकृति परमात्मा की भावित शक्ति है। जीव परमात्मा का षोडश (सोलह) कलात्मक भावित संज्ञा मात्र नाम है वास्तव में सब कुछ एक ही वस्तु है। श्रुतिया भी हैं "एक एवद्विर्णयं ब्रह्म". 'आत्मावै ब्रह्म' 'सईक्षा चक्रे' ,'तदैक्षत

बहुस्या प्रजायेय' 'सप्राण ममृजत' आगे विस्तार भय से नहीं लिखता। वह परमात्मा अपने आप अपने सामर्थ्य से अपने में अपने को नाना विध रचता, पालन तथा विनाशता है। यही उसका आस्तित्व है। शक्ति मुख्यतः चार प्रकार की है स्वभाव की, ज्ञान, बल और क्रिया। इन चारों प्रकारों से छः प्रत्ययरूप परिच्छेद हुये। देश, काल, वस्तु, स्वगत, विगत और परोक्ष। स्वगत नाम स्वजातीय विगत नाम विजातीताय परोक्ष नाम दृष्टि से परे। सोलह कलायें—प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक और नाम ये सोलह कलावों के नाम हैं। बस कला पूर्ण सर्वज्ञ ईश्वर तथा कला-हीन अल्पज्ञ जीव ये परमात्मा में भाव हैं वेद में 'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्य जायत'। इत्यादिक मन्त्रों द्वारा सृष्टि रचना का क्रम वर्णन किया गया है। वेद में भी औपपत्तिक क्रम से 'चन्द्रमा मनसो जातः' इत्यादि से विराट् स्वरूप का भी वर्णन किया गया है। वेद और स्मृतियों में सदाचार-कुलाचार आदिक आचारों तथा व्यवहारों की पद्धति सहित जीव को पजीवन की जाति संज्ञा की है। जाति के तीन लक्षण हैं। स्वभाव (वीर्य परंपरा सहित सहित संस्कार परंपरा पद्धति) गुण [विद्या का अध्ययन

कलावों सहित] कर्म [यथा योग्य जीविकार्थ कर्म व्यवहार]। अतएव कर्म, गुण और स्वभाव से ही जाति का परिचय होता है। अब आगे केवल कुर्मी जाति का निर्णय लिखता हूँ। यहाँ पर जाति निर्णायक स्वजातीय होता है विजातीय बेचारा क्या जानै विजातीय का गुण कर्म स्वभाव पूर्ण जातीय धर्म। धर्म क्या है ?। "यतोऽभ्युदय निश्रेयसः सिद्धिः सधर्मः,,। वैशिक दर्शनकार कणाद महर्षि लिखते हैं कि जिस जाति का यह लोक और परलोक दोनों जिस प्रकार के सदाचार व्यवहार जीविका तथा परमार्थ सिद्ध हो जावें उस जाति का वही धर्म है कुर्मी शब्द जाति बोधक कैसे माना जावे ?। कुनाम है पृथिवी का रमी कहते हैं रमण करने वाले को अतएव जो पृथ्वी को रमण करे अर्थात् भोग करे (जोतना बोना आदिक कृषि कर्म द्वारा अन्न धन सम्पत्ति उत्पन्न करे) उस मनुष्य को कुर्मी कहते हैं। कुरमी शब्द का मुख्य नाम पराशर महर्षि कुलमित्र कह कर निर्देश किया है। कुलमित्र शब्द इस प्रकार बना है। रेफ और लकार का कोई भेद नहीं है। यथा कौ पृथिव्यां लमते = रमतेऽसौकुलमी ॥ कुरमी। कुलमिनं = कुरमिणन्त्रायतेऽअनेनेति कुलमित्रम् पुरुष विशेष कुलमित्रः। कुलमित्र का अर्थ भी 'जाति

का जो रक्षक रूप मुखिया आचार का निर्माता हो उसको कुलमित्र अथवा कुरमित्र कहते हैं, अतएव कुर्मी सदाचार के निर्माता का नाम कुर्मी ही नाम का पर्यायी 'कुलमित्र' नाम है। पाराशरी स्मृति में भी लिखा है। "दासनापित् गोपाल कुलमित्रार्द्धसीरिणः। एतेशूद्रेषुभोज्यान्ना यश्चात्मा-नंविधीयते„ (पा० ११।२२) पुरातन कालिक जाति संशोधकों ने भी लिखा है कि-यदुवंशान्तर्गत भोज वंश में उत्पन्न कुविन्दक नामक यदुवंशी के दो पुत्र उत्पन्न हुये। ज्येष्ठ का नाम कैरी तथा कनिष्ट का नाम कुर्मी हुवा। कुर्मी के संस्कार कर्णवेधपर्यन्त बराबर पिता के द्वारा हुये। तिसके पश्चात् कुविन्दक का देवलोक होगया अतएव मुख्यकाल में यज्ञोपवीत संस्कार न हो सका। किन्तु गौणकाल (११ वर्ष के बाद २२ वर्ष के भीतर) में विवाह समय आने पर मातृ पूजन के दिवस यज्ञोपवीत संस्कार स्वतः आचार्य द्वारा किया। कालान्तर में कुर्मी वंशज विवाह के दुर्गा यज्ञोपवीत समय में कन्या से प्रथम वर की साधारण रीति से यज्ञोपवीत संस्कार करने लगे। दशवारी होने के पश्चात् मंडप सेराने के समय में कुर्मी ने अपने यज्ञोपवीत को काँधे पर से विसर्जन कर दिया था परन्तु त्रैष नहीं किया था। जब खेती का काम हल जोतना कुर्मी ने त्याग किया तब फिर

भी गले में माला के सदृश यज्ञोपवीत को धारण कर लिया था। जब देव कार्य कुर्मी करते थे तब यज्ञोपवीती [बायें कांधे पर सूत्र दाहिनी पार्श्व की ओर लटकाते] होते थे पितृ कार्य में प्राचीन बीती [दाहिने कांधे पर सूत्र बायें पार्श्व की ओर लटकाकर] होते थे। सदैव सम्बीती अर्थात् निवीती [माला के सदृश यज्ञोपवीत को गले में धारण करते] रहते रहे। अब तक भी उमरहारों के वृद्ध पूर्वोक्त रीति से सन्तानों के संस्कार करते कराते आते हैं। कुर्मी युवावस्था आने पर उमर संज्ञक वैश्य वर्ण की कन्या राक्षस विवाह विधान से [डोला डाल कर] ग्रहण की और उसी समय में अपना यज्ञोपवीत संस्कार किया। फिर विवाह संस्कार करके वैश्य कन्या को वीर पत्नी बनाया अर्थात् दक्षिण हाथ में अपना कंकण तथा वीर बधू का आभूषण पवित्रालङ्कार विशेष (मार्ष्टिः) धारण करवाया अपने को चन्द्रवंशान्तर्गत यदुवंशी होने का परिचयरूप कंकण तथा मार्ष्टिः अपनी विवाहिता स्त्री की दाहिनी कलाई में धारण कराकर वीर पुरुष की स्त्री का वेष रखता हुआ संसार में सदाचार प्रख्यात किया क्षत्रिय-जाति का मुख्य विवाह संस्कार राक्षस विधान से (डोला डाल कर) ही शास्त्र में "हत्वा छित्वा चभित्वा

च क्रोशंतीं रुदतीं गृहात् । प्रसह्य कन्या हरणं राक्षसोविधिरुच्यते" । (म० अ० ३।३३) "चतुरो ब्राह्मणस्याद्यान प्रशस्तान्कवयोविदुः । राक्षसं क्षत्रियस्यैक मासुरं वैश्य शूद्रयोः (म० अ० ३।२४) कहा है । जबसे उमर वैश्य की कन्या का हरण किया और कृषि कर्म भी हर लिया तबसे कुर्मी की ही उमरहार संज्ञा हुई । वीर क्षत्रिया के सिवाय मार्ष्टिः कंकण दाहिने हाथ में अन्य स्त्री नहीं धारण कर सकती है यदि उमरहारों की स्त्रियां मार्ष्टिः कंकण मात्र को दाहिने हाथ में न धारण किये होतीं तो उमरहारों के क्षत्रित्व का पता न रह जाता । जिस समय उमरहार मार्ष्टिः और कंकण को 'स्त्रियों के आभूषणों को' स्त्रियों से त्याग करवा देंगे उसी समय उमरहार लोग शूद्र वर्ण में प्रतिष्ठित हो जावेंगे । जैसे सचान और उतरायल आदिक शूद्र वर्ण में प्रतिष्ठित् होगये हैं । जब कुर्मी ने विवाह संस्कार वैश्य कन्या के साथ किया तब उस वैश्य कन्या के सौभाग्य कर्म में "वामं वामा करं शुभम्,, बायां हाथ स्त्री का शुभ होता है । ऐसा बिचार कर उस कुर्मी (कुलमित्र) ने दक्षिण हाथ में तो कंकण मात्र और बायें हाथ में सात या पांच शंख (शंख की चूड़ियाँ) पहिरवाई ! ऐसा क्यों किया ?। 'वीर पुरुष की स्त्री दक्षिण हाथ को पवित्र रखती हैं । दक्षिण हाथ में वीर

पुरुष पतिदत्त कंकण तथा मार्ष्टिः नाम का आभूषण धारण करती हैं, । तात्पर्य यह था कि वैश्य कन्या होने से खेती का काम यानी जोतना बोना निराना गोड़ना आदिक व्योहार क्षेत्र विषयक सभी कर्म उस कन्या को ही विदित थे। अतएव कुर्मी (कुलमित्र) ने उस कन्या से सप्त पद क्रमण में हल जोतना छोड़ कर सारा खेती के काम का संकल्प करवाया और चूरी फूटने की दोषापत्ति के कारण दाहिने हाथ में शंख (चूरी) सौभाग्य कर्म में ही नहीं पहिराई । विवाह कर्म मात्र करके वह कन्या अपने पिता के साथ पिता के घर चली गई इतने में कन्या के पिता ने अपने कुल में रहने के कारण उस कन्या को शुभ दिन में दोनों हाथों में शंख (चूरिया) पहिरवा दीं थीं। परन्तु द्विरागमन कर्म अर्थात् चौक में वह कुलमित्र (कुर्मी) दाहिने हाथ की शंख (चूरी) 'जो विवाह के बाद पिता ने पहिरवाई थीं, उतरवा डालीं और मार्ष्टिः (माठी) पहिरवा कर चौक कर्म (द्विरागमन संस्कार) किया बाद में उस कन्या को अपने घर लेगया। फिर कभी भी आमरणान्त दाहिने हाथ में शंख (चूरी) नहीं पहिराई। अनधिकार होने से वह कन्या (कुर्मी की स्त्री) भली भाँति कृषि कार्य को संचालित किया। केवल हल मात्र कुर्मी (कुलमित्र) ने स्वयं जोता। ऐसीही

पद्धति ठीक ठीक अब भी उमरहारों में चली जारही है। विवाह संस्कार में अभी भी उमरहारों के यहाँ विवाह ही होता। अर्थात् केवल छः भावरें होकर बन्द कर दिया जाता है। फिर द्विजातियों के अनुसार द्विरागमन संस्कार शुभ मुहूर्त में चौक कहकर उलटपाटा रूप सातवीं भाँवर उमरहारों के यहाँ होती हैं। जब तक चौक नहीं होती तब तक लड़की पति के घर नहीं जाती। न वह पुरुष ससुराल ही जावे। द्विरागमन संस्कार बाद जाना आना होता है। यही पद्धति अभी भी श्रेष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के यहां प्रचलित है। समस्त संस्कार कर्म इस अन्तर्वेद भूमि में शुक्ल यजुर्वेद और सामवेद द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के होते हैं। इसी प्रकार यजुर्वेद के द्वारा तथा यजुर्वेदीय कात्यायन सूत्र द्वारा कर्म काण्ड उमरहारों के भी होते हैं। क्योंकि गुरू अथवा पुरोहित कान्य-कुब्ज हैं। ऋग्वेदीय ब्राह्मण कान्यकुब्जों में कोई नहीं है। आश्वलायनादिक सूत्र ग्रन्थ गुजरातियों तथा दक्षिणियों (महाराष्ट्रों) में प्रचलित है। इस देश में विशेष करके यजुर्वेद और कात्यायन श्रौत तथा परस्कर गृह्य स्मार्त ही प्रचलित हैं। ऐसी ही पद्धति उमरहारों की भी है। उमरहार शब्द का अर्थ इस प्रकार है कि 'उकारः शिवो मकारश्चन्द्रमा। उश्च मश्चेति उमौ। उमयोः रमत इति उमरः। उमर कन्या वृत्तिश्च हयत इति

उमरहारः" 'मध्यमपद लोपी समासः'। उकार नाम शिव का है मकार नाम चन्द्रमा का है। शिव परमात्मा ही है चन्द्रमा औषधियों का राजा है। खेती से ही अन्नादिक औषधियाँ उत्पन्न की जाती है। अतएव उकार मकार अर्थात् परमेश्वर और चन्द्रमा में जो रमै उसको उमरः कहते हैं उमर नाम वैश्य का है। वैश्य कन्या अथवा वृत्ति को जो हर लेवे उसका नाम उमरहार है। कुलमित्र शब्द का अपभ्रंश हिन्दी भाषा में 'कुरमी' कहते हैं। अतएव सिद्ध है कि उमरहार कुर्मी ही समस्त कुर्मी जाति में प्रथम से हैं और उमरहार कुरमियों का सदाचार, कुलाचार व्यवहार भी आदि में जैसा चालू हुवा वैसाही अब तक चला आता है। उमरहारों के घरों में समस्त प्रजा भोजन करती है। उमरहार कुरमी पुरोहित अथवा गुरू इन्हीं के बनाये भोजन कच्ची पक्की रसोई खाते पीते हैं। क्षत्रियों के यहाँ पक्की का खाने पीने का व्यवहार है। गौतमादिक भी पक्की उमरहारों के घरों में खाते पीते हैं। सोरह संस्कार तो प्रायः ब्राह्मणों के यहाँ भी सब नहीं होते हैं। इस समय में तो क्षत्रियादिकों के यहाँ की कथा ही क्या है !!! ब्राह्मणादिकों में प्रायः पुंसवन और सीमन्तोन्नयन संस्कार भ्रष्ट रीति से पचवाँसा पूरी कोंछ कह कर होते हैं। इसी प्रकार उमरहार कुर्मी भी पचवाँसा

तथा पूरी कौंछ करते हैं। यह स्पष्ट ही है कि आचार्य के गुण दोष यजमान में जाया करते हैं। शेष जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण (दोलारोहण, तांबूलभक्षण) अन्नप्राशन चौल और कर्णवेध पर्य्यन्त ब्राह्मणादिकों के अनुसार उमरहारों के भी संस्कार होते हैं। गर्भाधान संस्कार तो भृष्ट रीति से ब्राह्मणों के होते हैं। तब उमरहारों के भी चतुर्थी कर्म होकर रात्रि में सहवास मात्र से होता है। उपनयन संस्कार तो बहुत से ब्राह्मण भी पुरोहित आदिक के द्वारा कराने लगे हैं। अतएव ब्राह्मणों की उपनयन पद्धति भी विगड़ी हुई है। उमरहार कुर्मी अपने कुल बृद्ध कुर्मी (कुलमित्र) की आज्ञा तथा आदेशानुसार उपनयन नहीं करते हैं। क्योंकि कुर्मी (कुलमित्र) का उपनयन नहीं हो सका था। कुमार की माता पुत्र को मंडप के नीचे अपने पति (आचार्य) के समीप लेजाकर हाथ पकड़ा देती है इस कर्म को उपनयन कहते हैं। मौञ्जी बन्ध (यज्ञोपवीत) संस्कार विवाह काल में दुर्गा यज्ञोपवीत के समय पुरोहित आचार्य द्वारा किया जाता है। कुलमित्र का पिता तो यदुबंशी क्षत्रिय था वर्ण विवेक चंद्रिका में लिखा है कि "शंकुकारात्सजाः सर्वे वभूवुश्चित्रकारिणः। कुविन्दकात्मजौ जातौ कैरी कुर्मीति संज्ञकौ"। चंद्रवंश में शंकुकार और

कुविन्द दो भाई हुये । शंकुकार के सब पुत्र चित्रकार हुये । कुविन्द के दो पुत्र हुये एक की जाति संज्ञा कैरी हुई दूसरे जिसका नाम कुलमित्र हुआ उसकी जाति संज्ञा कुर्मी हुई । पृथ्वी के अर्थ में कुः शब्द है अमरकोष में लिखा है। "गोत्रा कुः पृथिवी पृथिवी क्षमाऽवनिर्मेदिनीमही" [अ० को० कां० २ श्लो० ३] व्याकरण से 'कुङ्शब्दे' कवते [मितद्रवादित्वाद्डुः] [पा० वा० ३।२।१८०] इति कुः । समास में विभक्ति का लोप हो गया तब कु+रमी =कुरमी शब्द सिद्ध हुआ । कुरमी अथवा कुर्मी या कुलमित्र के नामाधार से भी कुर्मी शब्द जातिवाचक लौकिक है । लौकिक कोषों में कूर्म शब्द जलचर जातिवाचक कच्छप [कछुआ] के नामों में आया है । 'कूर्मेकमठ कच्छपौ' [अ० को० कां० १ व० १० श्लो० २१] व्याकरण से 'कुत्सितः कौ वा ऊर्मिर्वेगोऽस्येति कूर्मः' । 'पा० अचप्रत्यन्वव' [पा० ५।४।७५]इत्यत्र अच्च योग विभागा दच्च् समासान्तः । कु शब्द कुत्सित और पृथ्वी के नामों में आया है । 'पाप कुत्से दर्थे कु [अ० को० कां० ३ वा० ३ श्लो २४०] विश्व कोष में भी लिखते हैं । 'कुः पापे चेषदर्थे च कुत्सायां निवारणे' [इति विश्वः] कछुआ से मनुष्य होना असम्भव है अतएव कूर्म शब्द मनुष्य जात्यन्तर्गत नहीं लागू

होता। यहा पर आर्य समाजी भाई प्रत्येक विषय में सत्यार्थप्रकाश से चुटकुले चुनकर बेचारे वेद की छीछालेदर किये डालते हैं। जोकि 'तुवि कूर्मिन' इत्यादिक सम्बुद्ध शब्द इन्द्र के अर्थ में से खींच तान करके जाति के अर्थ में लाते हैं। यह महाभदेसिल काम है। वह मन्वन्तराधिपति इन्द्र का वाचक है इन्द्र शब्द जाति वाचक नहीं है किन्तु इन्द्र एक देवराज मन्वन्तरेश की पदवी का वाचक है जाति में और पदवी में महान् अन्तर है। वाहरे आर्यसमाजी गणों! कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा। अच्छा भोले भाले साधु मनुष्यों को चूतिया बनाया है। इसी आर्यसमाजीय मंडल के मनुष्य [जे इन्हीं उमरहार कुर्मियों के त्यागे हुये सचानादि शब्दों से तिरस्कृत अपने को कूर्म क्षत्रिय ऐसा अन्य आर्यसमाजियों के षड्यन्त्र में फँस कर कहने लगे हैं] शुद्ध उमरहारों को भी जाति भ्रष्ट करना चाहते हैं। बहुत से उमरहार भ्रष्ट भी हो गये हैं। अब वे लोग उमरहार के अतिरिक्त चुरिहार कहे जाने लगे हैं। क्योंकि उन्होंने अपनी स्त्रियों के दाहिने हाथ में चूरी पहिरा ली हैं। नहीं ज्ञात होता कि किस जाति से दाहिने हाथ की चूरी हर कर चुरिहार बने। यह अवसर अभी छः सात ही वर्ष के भीतर का है। चाण्डाल जाति वाला भङ्गी भी जाति च्युत होने से भय करता है। फिर उमरहार

कुर्मी तो एक पवित्र यदुवंशी क्षत्रिय जाति वाले हैं अतएव उमरहार कुर्मी लोग कूर्मक्षत्री भाइयों का सादर नमस्कार करें ताकि वे कृपा करते हुये उमरहार कुर्मियों से दूर ही बने रहें। क्योंकि पूर्व समय में उमरहारों के ही त्यागे हुये सचान, उतरायल आदिक इसी देश में बसे हुये हैं। आज कल बहुत से पढ़ पशु लोग यदि वेद में कोई शब्द किसी भी जाति से मिलता जुलता देखा जाय तो वही शब्द किसी भी जाति में लागू करके उसको ब्राह्मण आदि द्विजातियों में आर्यसमाजी [जाति भ्रष्टप्राय] लोग जाति भ्रष्ट कर देते हैं। नाइयों को न्याई ब्राह्मण कहकर जाति भ्रष्ट किया। अहीरों को वैश्य कहकर जाति भ्रष्ट किया। कलारों को शिवहरे वैश्य कहकर जाति भ्रष्ट किया। इसी प्रकार तेली, नोनिया और अरख इत्यादि सभी कांधे में तिलरा डोरा डाल कर जाति भ्रष्ट हो रहे हैं। इसी प्रकार उमरहारों को कूर्म क्षत्रिय कहकर पतित कर रहे हैं। वास्तव में जिस प्रकार क्षत्रियों में गौतम, चन्देल सेंगर और परिहार इत्यादिक क्षत्रिय शब्द के बिना जोड़ कहे जाते हैं इसी प्रकार उमरहार भी क्षत्रिय शब्द को बिना जोड़े उमरहार अथवा कुर्मी कहे जाते हैं। तो कूर्म क्षत्रिय कहने की आवश्यकता किसी

वर्णसंकर जाति वाले को ही होगी। दोनों दीन ते गये पाड़े, न हलुआ भये न माड़े, की मसल इस समय बनने वालों में लागू हो रही है। देखें यह कुचक्र कहां तक घूमता है। भगवान जानैं। सचान क्यों कहाये ? जब उमरहारों में से कुछ मनुष्य गाड़ा [शकट] के समान अपने को अनेकाचार संग्रही बनाया तब उन संग्रही मनुष्यों को सचानः कह कर उमरहारों ने त्याग दिया। स = वह, च त्याग हुवा, अनः अनेकचार संग्रही शकट (गाड़ी) के सदृश है। अर्थात् जैसे गाड़ी में अनेक पदार्थ या बहुत जाति वाले मनुष्यों की सवारियाँ भर लेते हैं। तैसेही इन्होंने अपनी जाति केविरुद्ध अनेकाचार (दोनों हाथों में चूरी पहिरना तथा पुनर्विवाह कर लेना इत्यादि बहुत कुछ निन्दित आचार अपने मे भर लिया इससे ये लोग सचान हैं। तबसे कुत्सिताचारी उमरहार ही सचानः कहाये। प्रायः जहाँ उमरहार हैं वहाँ ही सचान हैं। "उमरस्या पत्यं पुमानिति, ओमरः" = औमरः = वामरः। उमरका ही वंश ओमर औमर वामर इत्यादिक नामों से पञ्चाल देश में ही प्रसिद्ध वैश्य हैं। उमर शब्द का अर्थ वैश्य है। उमर की मुख्य जीविका खेती है जबसे उमर वंशज कन्या और जीविका वृत्ति कुरमी (कुल-

मित्र) ने हर लिया तबसे उमरहार कहाये । कुलमित्र का अर्थ इस प्रकार है---

"कुलं जनपदे गोत्रे सजातीय गणेऽपिच । भवने चतनौ क्लीवम्" । (इति मेदिनी) "सजातीयैः कुलमित्यमरः" (अमर० कां २ व० ६ श्लो० ४१) "संततिर्गोत्र जननं कुलान्यभिजनान्वयौ । वंशोऽन्ववायः सन्तानः' इत्यमरः (का०२ व० ब्रा०७ श्लो०१) "वंशो वेणौकुलेवर्गे पृष्ठाद्यवयवेऽपिच,, (इति विश्वमेदिन्यौ) व्युत्पत्तिश्च = कूयते कुङ्शब्दे (भ्वा० आ० से०) "वाहुल काल्लक्,, इतिकुलम् । यद्वा-कोलति-कुंलसंस्त्याने "इगुपध (पा० ३।११।१३५) इति कोवा । यद्वा-कुंभूमिं लातीतिकः (पा० ३।२।३) वो । यद्वा कौलीयते-लीङ्श्लेषणे (दि० आ० अ०) अन्येभ्योऽपि (पा० ३।२।१०१) इतिडःकुलम् । कुल शब्द के इतने नाम हैं-जनपद, गोत्र, सजातीयगण, भवन, तनु, इत्रि । मित्र-शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है । मित्र इति-"द्युमणि स्तरणिर्मित्र श्चित्रभानुर्विरोचनः" । इत्यमरः (का०१ व०३-श्लो०३०) "मित्रं सुहृदिनद्वयोः । सूर्येपुंसिस्त्रियां गन्ध द्रव्ये दैत्यान्तरे पुमान्,, इति मेदिनी । "मित्रं रवावपि,, । इत्यमरः (कां०३ व०३ श्लो०१६७) । व्याकरणा व्युत्पत्तिः ञिमिदा स्नेहने (दि०प० से०) 'अमिचमि दिशासिभ्यःक्रः'

(३० ४।१६४) इतिमित्रः । मित्र शब्द का अर्थ सूर्य और सुहृत् है 'यद्वा-कुलऽथवा कुलस्य मित्रः कुलमित्रः' वंश का सूर्य अथवा वंश में सूर्य जो हो वह कुलमित्र कहाता है । सूर्य शब्द का इस प्रकार अर्थ है किसरति सृगतौ [भ्वा० प० अ०] सुवति प्रेरयति कर्माणि लोकानितिवा । षू प्रेरणे [तु० प० से०] राजसूय सूर्य [पा० ३।१।१४४] इतिनिपातितः सूर्य इति । जो कर्म में प्रेरणा करै लोगों को उसको सूर्य कहते हैं । कुलमित्र ने अपने वंश के सजातीय सदाचार, कुलाचार कर्म में प्रेरणा किया वंशजों को अर्थात् संतानों को इससे कुलमित्र, कुलमी, कुरमी और कुर्मी कहाया । यह कुलमित्र जाति का सूर्य हुवा । अपने वंश में जो सूर्यवत् हो उसको कुलमित्र कहते हैं । कुलमित्र (कुर्मी) नाम से तथा कर्म व्यवहार से भी वास्तव में सूर्य ही हुवा । कुं भूमिं लाति इतिकुलः कुलंमीयते इति कुलमी । "योग विभागादच्" 'अत-इनिठनौ' यद्वा-"कौ पृथिव्यां रमत इति कुरमः योग विभागा-दच् प्रत्ययः' 'कुरमोऽस्यास्तीति' कुरमी, इति इनि प्रत्ययः । "कुर्मीयत इति कुरमी" इति किए् प्रत्ययः । कुलमी, कुरमी और कुर्मी ये तीनों प्रकारा से सिद्धि शब्द । वर्ण विवेक चिन्तामणि कार 'कैरी कुर्मीति संज्ञकौ' कह कर कुर्मी शब्द को जाति वाचक बताया है । महर्षि पराशर ने अपने श्लोक में 'कुलमित्र' कह कर जाति प्रख्यात करने वाले का नाम बताया है ।

अतएव दोनों प्रमाणों से सिद्ध हुवा कि कुर्मी जाति का प्रादु-र्भाव कुर्मी (कुलामित्र) से हुवा। कुर्मी 'कुलामित्र' भारत-वर्ष के मध्य में आर्यावर्तान्तर्गत पञ्चाल (अन्तर्वेद) देश में उत्पन्न हुये ! "आसमुद्रान्तु वै पूर्वादा समुद्रात्तु-पश्चिमात् । तयोरेवन्तरे गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः ।" (मनु० २।२१) हिमवन्विंध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि । प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः । [मनु० २।२१] सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तंदेव निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्ष्यते । (मनु० २।१७) एवंत्वन्तर्वेदस्यापि ज्ञेयम् । "सरस्वती दृषद्वत्योदेवनद्योर्यदंतरम् । तं देवनिर्मितं देशमन्तर्वेदं प्रचक्ष्यते" (का० वं० १।१२) "यागतिर्योग युक्तानां मुनिना मूर्द्ध्वरेतसाम्" सागतिः सर्व जन्तू नामतन्वेंद निवासिनाम् ।" [का० वं० १।१३] मनु महर्षि भारतवर्ष के मध्य में मध्य (आर्यावर्त] देशान्तर्गत पाञ्चल देश अथवा अन्तर्वेद भूमि गंगा यमुना नदी के मध्य तथा प्रयाग से पश्चिम और विनशन से पूर्व बताया है। जो गति योगयुक्त मनुष्यों की, मुनियों की और ऊर्ध्व रेतावों की होती है। वह गति अन्तर्वेद में रहने वाले समस्त प्राणियों की होती है। ऐसी पवित्र अन्तर्वेद भूमि में कुबिन्द के पुत्र कुर्मी [कुलामित्र] का जन्म पराशर

महर्षि के समय में हुआ । पराशर का समय वेदव्यास "कृष्ण द्वैपायन" का जन्म समय ही है । महाभारत के समय में पराशर महर्षि थे । इसी समयान्तर्गत में कुर्मी [कुलमित्र] का जन्म कुविन्द नामक यदुवंशी कुलान्तर्गत भोज वंश में हुआ । अब माठी शब्द की व्याख्या किस प्रकार है सो देखिये कि—माठी का शुद्ध नाम मार्ष्टिः है। "स्यान्मार्ष्टिर्मार्जनीमृजा" । इत्यमरः (का० २ व० ६ श्लो० १२१) मार्जनम् । मृजु शौचालंकरणयोः [चुरादिगणः] आवादित्वात् [वा० ३।३ ६४] क्तिन् तितुत्र [पा० ७।२। ६] इति नेह । 'णिलोपः' (पा० ६।४।५१) इति मार्ष्टि बाहुल कान्तिः । इत्यन्ये । अतएव कुल परम्परा में दोषो को मार्जन करने वाली तथा आभूषणवत दक्षिण कर [हाथ] की शोभा बढ़ाने वाली यह "मार्ष्टिः" नाम का अभूषण पट्टावत चूरिका सुवर्ण अथवा रौप्य [चांदी] की होती है । प्रायः यदुवंशियों का आभूषण भी है। परन्तु वीराङ्गना का आभूषण का मार्ष्टिः हैं । कंकण दाहिने हाथ में उमरहारों की स्त्रियों के बांधा जाता है कङ्कण, विद्रुम मौक्तिक और सुवर्ण तथा सूत्र का बनता है। प्रमाण 'कंकणं कर भूषणम्' इत्यमरः (कां० २ म० व० ६ श्लो० १०८) "कंकणं कर भूषायां सूत्र भण्डनयोरपि ।" (इति मेदिनी) व्याकरण से ।

"कंशुमं कणति । कण शब्दे [भा० पा० से०] बहुलमन्य-त्रापि [उ० २।७८] इति । "अनुदात्तेतश्चहलादेः (पा० ३।२।१४९) इति वायूच् । "प्रषोदरादित्वात् (पा० ६।३। १०९) णत्वम् । इति कंकणम् । "हस्त मण्डन सूत्रे-स्यात्कंकणोना प्रतीसरः ।" इति रत्नकोष । "क्लीवं मंडने सूत्रे कंकणं कर भूषणम् ।" इति रभसः । कंकण भी प्रायः राजाओं अर्थात् क्षत्रियों के ही हाथ में बांधा जाता है। "स्वधर्मः परम श्रेयः परधर्मो भयावहः ।" अपना धर्म ही परम श्रेष्ट है । पर धर्म अर्थात दूसरे का धर्म भय प्रवाहक है । सदैव जाति चुतादिक दोषों के समूह रूप भय को बहाता अर्थात् प्रवाहित करता रहता है । अतएव अपने धर्म में रहना यह सत्पुरुषों का परम कर्तव्य है । उमरहार कुर्मी सदा से धर्म रक्षण में शूरवीर ही रहे हैं क्योंकि जो कुछ क्षत्रिय जाति का चिन्ह है वह यह ही है कि स्त्रियों के दाहिने हाथ में कंकण और माष्टिः मात्र धारण करा कर वीर पत्नी का कर पवित्र रखना है । तथा पृथ्वी में ही रमना अथवा पृथ्वी का भोक्ता होना भी है । तथा राक्षस विधान (डोला डालकर) से विवाह करना क्षत्रिय का मुख्य विवाह संस्कार है । यह उमरहारों के यहां अभी भी प्रचलित है । दुर्गा यज्ञोपवीत काल में बर का मौंजी

बन्ध होना उमरहार कुर्मियों की पद्धति है [दशवारी के पश्चात् उपवीत विसर्जन कर देना परन्तु प्रैस नहीं करना यह पद्धति कुर्मी के समय से अब तक चालू है। वर्तमान समय में तो बहुत से ब्राह्मण जाति में उत्पन्न होते हुये सावित्री पतित हो रहे हैं क्षत्रिय वैश्य तो अपनी त्रिष्टुप् सावित्री को भूल ही गये हैं। बहुत से क्षत्रिय वैश्य गायत्री सावित्री को ही तीनों वर्ण की सावित्री माने हुये हैं। अतएव इस समय में तो वर्णाश्रम धर्म अज्ञानियों से भरपूर अच्छादित हो (ढँक) रहा है। वर्णाश्रम धर्म का तो अभाव सा प्रतीत हो रहा है ऐसे विप्लवकाल में तो उमहार कुर्मी ही बहुत शुद्ध प्रतीत हो रहे हैं। वर्णाश्रम धर्मावलम्बी पाये जाते हैं। क्योंकि इन लोगों ने अपनी प्राचीन पद्धति को नहीं त्याग किया है। महाराजा भोजराज के समय संस्कृत वाणी का प्रचार शूद्रों तक में फैल गया था। भारतवर्ष की प्रधान भाषा देववाणी संस्कृत ही है। इससे अनुमान किया जा सकता है। कि सम्भवतः श्रीमहाराजा भोजराज के समय में ही इस उमरहार कुर्मी वंश का कोई वंशज अपना स्वजातीय शृंगार तथा अन्यान्य व्यवहार बदल डाले होंगे अतएव तब से उमरहार लोग उस स्वजातीय वंशज को 'सचानः' हिन्दी भाषा

में बिसर्ग लोप करके नाम लिया जाता है। इससे 'सचान' कहने लगे तबसे सचान भिन्न होगये। सचान शब्द की व्याख्या इस प्रकार है। साकार सजातीय परोक्षार्थ विधायक कर्ता के अर्थ में है और चकार "चकारः पाद पूरणे पक्षान्तरे हेतौ विनिश्चये" इति त्रिकण्डशेषः। "चान्वाचय समाहारे तरेतर समुच्चये" इत्यमरः (कां ३ वर्ग ३ श्लो० २४१) इति। यहां पर चकार का पक्षान्तर के अर्थ में ग्रहण किया है क्योंकि वे जाति भिन्न व्यवहार करने से पक्षान्तर में चले गये अनः- व्याकरण से इस प्रकार बना है "क्लीवेऽनःशकटेस्त्री स्यात्" इत्यमरः (कां० २ वा० ८ श्लो० ५२) शन्कोति भारंवोढुम्। जीवयितुंवा तदुक्तम् "शकटः शाकिनी गायोयान मास्कन्दनं स्वयम्। अनूपः पर्वतोराजा दुर्भिक्षेनव वृत्तयः" इति। अनिति चीत्करोति। अनप्राणने (अ० प० से) असुनन् (उणादि० ४।१८९) इति अनः शकट इत्यर्थः। नवीन वृत्ति धारण करने के हेतु से शकट अर्थ वाला 'अनः' शब्द ग्रहण करके सचानः कहकर पतित उमरहारों ने स्वजाति से भिन्न कर दिया तब से त्यक्त उमरहार कुर्मी ही सचान कहे जाने लगे। आधुनिक काल में भी उमरहार वंशज कोई कोई कुर्मी लोगों की स्त्रियां दोनों हाथ में चूड़ियां पहिनने लगी है।

और पुरुषों ने तीन लर का डोरा बायें कांधे में धारणकर लिया है। वे लोग चुरिहार कहे जाते हैं। यदि स्वजातीय पुरुष किन्ही कारणों से जातिच्युत हो जावे और बीसवर्ष के भीतर का हो तो वह व्रात्य संस्कार करके स्वकुलोचित व्यवहार करै तथा अपने पूर्व वंश में मिल जावे। ऐसी शास्त्र की आज्ञा है। यदि हठ से जातिच्युत हो जावे तो वह कभी भी शुद्ध नहीं हो सकता है। ऐसा भी शास्त्र में है। उतरायल भी उमरद्दारों से ही यवन राज्य के समय में विक्षिप्त हुये हैं। यवन राज्य समय का बोधक उतरायल शब्द ही है। अपना से जो नीचे उतर जावे उसका उर्दूभाषा में उतरायल कहते है। अब उतरायल शब्द प्रकृत हिन्दी भाषा में व्यवहृत है। सुना जाता है कि विधवा विवाह करने के कारण तथा मार्ष्टिः त्याग कर दोनों हाथों में शस्त्र [चूरी] पहिना लेने के कारण भी उतरायल कहाये। सचानों में भी कोई कोई लोग विधवा विवाह करने लगे हैं। विधवा विवाह अत्यन्त नीच व्यवहार है। "नोद्वाहिकेषु मन्त्रेषुनियोगः कीर्त्यते क्वचित्। न विवाह विधावुक्तं विधवावेदनं पुनः। अयंद्वि जैर्हिविद्वद्भिः पशुधर्मो-विगर्हितः। मनुष्याणामपि पोक्तोवेने राज्य प्रशासति। [मनु० ९।६५-६६] यह प्रथा अन्त्यज जातियों में हैं। अच्छे शूद्र भी विधवा विवाह नहीं करते हैं। अक्षति योनि

[जिसका विवाह होकर चौक नहीं हुई हो अर्थात् छः भाँवरें हो चुकी हों सातवीं भाँवर होने को शेष हो वह कुमारी के सदृश अक्षतयोनि कही जाती है] होवे तो उसका विवाह देवर के साथ हो सकता है। अक्षतयोनि का विवाह अन्य वर के साथ भी होना शातातपस्मृति में कहा गया है। ऐसा प्रमाण शास्त्र में है। "सचेदक्षत योनि" (मनु ९।१७६) इत्यादि मनु आदिक स्मृतियों में कहा गया है। अतएव उमरहार कुर्मियों के यहां अक्षत योनि पुनर्भू का विवाह कर लेना प्राचीन काल से चला आता है। इससे सिद्ध हुआ कि उमरहार कुर्मी इस अन्तर्वेद भूमि में माथुर देश से आकर बसे हैं। अब भी इसी पञ्चाल देश में रहते हैं। भोजराज के समय में सचानों की एक शाखा उमरहारों से भिन्न हो गई तथा यवन राज्य के समय से उतरायलों की भी एक शाखा भिन्न हो गई है। आधुनिक काल में भी इन्हीं उमरहारों से ही चुरिहारों की एक शाखा भिन्न हुई जारही है। बड़े शोक की बात है कि शुद्ध उमरहार कुर्मी वंशज होते हुये निर्दोष रह कर भी केवल जातिच्युत लोगों के बहकाने से केवल स्त्रियों को दाहिने हाथ में चूरियां पहिरा कर और माष्टिः कंकण को उतरवाकर तथा स्वतः (पुरुष लोग) बांयें कांधे में तीन लर का डोरा डालकर

जातिच्युत हुये जा रहे हैं। देखो जब अग्नित्रय ने अग्नित्व को त्यागता है तब भस्म होकर राख मात्र रह जाता है। ऐसे उमरहार कुर्मी अपने शुद्ध धर्म को त्याग करके क्या हो जावेंगे ? यह महान चिन्ता जनक घटना है। वे जातिच्युत होकर किस जाति में मिलेंगे ज्ञात नहीं होता। प्रसंग वश जाति शब्द की भी मांसा करनी उचित है अतएव जाति शब्द इस प्रकार है सो कहते हैं कि "जातिर्जाति च सामान्यम्,, इत्यमरः (कां० १ वर्ग ४ श्लोक ३१) "जातिः सामान्य गोत्रयोः,,। इतिहैमः। जायते जनी प्रादुर्भावे (दि० आ० से०) क्तिच् क्तौ च् (पा० ३।३।१७४) इति क्तिच्। जनसन [पा० ६।४।४२] इत्यादि नात्वम्। तितुत्र (पा० ७।२।६) इतिनेट्। इति जातिः। प्रादुर्भावस्य कोऽर्थः। "प्रकाश्येप्रादुरविः स्यात्" इत्यमरः। [कां० ३ वर्ग ४ श्लो० १२) यद्वा "नाम प्रकाश्ययोः प्रादुः,, इत्यमरः (कां० ३ वर्ग ३ श्लो० २५६] प्रान्दति अदि वन्धने [भ्वा० पा० से०] वाहुल का दुस्। आगम शास्त्र स्यनित्मत्वान्ननम्। प्राप्तिवा ['अदभक्षणे, [आ० १ आ०] उस् नाम् शब्दार्थे। यहां पर प्रकाश्य के अर्थ में अदि वन्धने धातु से उस प्रत्यय से प्रादुर शब्द हुवा और भवतीतिः भावः "भावोविद्वान" इत्यमरः (कां० १ व० ७ श्लो० १२) "भावः

सत्ता स्वभावाभिप्राय चेष्टात्म जन्मसु" । इत्यप्यमरः (का० ३ वर्ग ३ श्लो० २०७) भावयन्ति-पचद्यच् (पा० ३।१।१३४) भवनंवा । ' श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे (प० ३।३।२४) इतिधञ् । अपने जन्म का प्रकाश होना अर्थात् वीज परम्परा से प्रकाशित होने का प्रादुर्भाव कहते हैं । अतएव जनी प्रादुर्भावे धातु सेक्तिच् प्रत्यय होने से जाति शब्द है इससे सिद्ध हुवा कि जो बीज परम्परा से बहुत काल तक संसार में प्रकाशित रहै उसको जाति ऐसा कहते हैं । तो फिर जाति बदलना किस प्रकार होता है ऐसी शंका होती है । जाति बदलने के विषय में छान्दोग्य, वृहदारण्यक आदिक उपनिषदों में भली भांति सम्पादन किया गया है । च्छान्दोग्योपनिषत् (आ० ५ खं० ३ से आरम्भ करके खण्ड १० पर्यन्त) प्रमाणित किया है । शुक्ल यजुर्वेद सं० (अ० १६ कंडिका ४७) वृहदारण्य कोपनिषत् [अ० ६ ब्राह्मण २ से प्रारंभ करके समस्त द्वितीय ब्राह्मण]प्रमाणित करता है । जाति बदलने के विषय को इति । मनुमहर्षि लिखते हैं कि "सरस्वती दृष द्वत्योर्देवन द्योर्यदन्तरम् । तंदेवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त पचक्षते" । [मनु० अ० २ श्लो० १८] "तस्मिन्देशय आचारः पारंपर्य क्रमागतः । वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते" । [मनु० अ० २।१६] इसी अन्तर्वेद [ब्रह्मावर्त] भूमि में ही जिस प्रकार

का आचार परंपरा से चला आया है ब्राह्मणादिक वर्णों का अथवा अन्यान्य जातियों का भी वह सदाचार कहाया है। जो कुछ कुल में आचार होते चला आया वह कुलाचार कहाया। समस्त जातियों का निश्चायक सदाचार, कुलाचार ही सदा के लिये रहता है। सरस्वती नदी पंजाब देश के अंबाला जिले में प्रगट हुई है मध्य में कई स्थानों में गुप्त प्रगट होती हुई पटिया राज्यान्तर्गत गाघरा (घाघरा) में मिल गई है। घाघरा का मुख्य नाम दृषद्वती है। ब्रम्हावर्त के अतिरिक्त देश में ब्रह्मर्षि देश कहे गये हैं। "कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः। एस ब्रम्हर्षि देशो वै ब्रम्हावर्ता दनन्तरः„। (म० २। १९) इसी ही ब्रह्मर्षि देश में पराशर, वेदव्यास और द्रोणाचार्य के समय में जिसका व्यतीत काल आज से लग भग सवा पांच हजार वर्ष होता है। जब कृष्णावतार हुवा था उस समय उग्रसेन का राज्य था। उग्रसेन यदुबंशी क्षत्रिय थे। उग्रसेन का पुत्र कंस यदुबंशियों को बहुत सताया था यहां तक कि वे यदुबंशी (कुरु, अंधक, भोज, शूरसेन आदि बंश वाले) मथुरा प्रान्त त्यागकर कंश के भय से शाल्व, विदर्भ, निषध, व विदेह तथा कोशल, कुरु, कैकय, और पञ्चाल देशों में जाकर बस गये थे। श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कंध के दूसरेही अध्याय में बहुत कुछ

लिखा है। जैसे "ते पीडिता निविविशुः कुरु पञ्चाल कैकयान्। शाल्वान्विदर्भान्निषधा न्विदेहान्कोशलावपि"। (भा० स्कं० १० अ० २ श्लो० ३) चन्द्रवंश तथा यदुवंश का वर्णन भागवत के नवम स्कंध के चौदहवें अध्याय से आरम्भ करके चौवीसवें अध्याय पर्यन्त भली भाँति सम्पादन किया गया है। उस समय इस पाञ्चाल देश (अन्तर्वेद भूमि के ब्रह्मावर्त मंडल) में भोज वंशीय यदुवंशी क्षत्रिय आकर बस गये थे। उन भोज वंशियों में से कुविन्द नामक यदुवंशी क्षत्रिय के दो पुत्र हुये। जेठे का नाम कैरी और छोटे का नाम कुर्मी हुआ। व्याकरण से "कुर्मीयते" इति कुर्मी इतिकिप् प्रत्ययः। कुर्मी क्षेत्र वृत्ति से आजीवन व्यवहार किया। कुविन्द ने ही स्वजातीय क्षेत्र में कैरी और कुर्मी को उत्पन्न किया था। वर्ण विवेक चन्द्रिका कार कुविन्दक ऐसी संज्ञा के अर्थ में कन्का आगम करके लिखते हैं। कुर्मी ही का उपनाम कुलमित्र हुआ। कहा भी है कि "परोक्षप्रियाहिदेवाः" (एतरेयब्राह्मण अ० १३ खण्ड ६-३३) देवता लोग परोक्ष नाम अर्थात् उपनाम उच्चारण करने में विशेष प्रसन्न रहते हैं। अतएव कुलमित्र यह परोक्षनाम (उपनाम) ही प्रधान नाम हो गया। कुलमित्र ने वैश्य कन्या का विवाह करके जो सन्तान उत्पन्न की उनमें से एक पुत्र कैरी शूद्र वर्ण में

प्रतिष्ठित होकर देश त्याग कर दक्षिण चला गया। आगे कुलमित्र के प्रपौत्रों [पनातियों] में से कुछ लोग शूद्र वर्ण में प्रतिष्ठित होकर गंगा पार उतर गये। और एक वंशज भोजराज के समय में इसी देश में रह कर सचानः कहाया। उसने अपनी स्त्री से मार्ष्टिः तथा कंकण दाहिने हाथ से उतरवा कर उसमें भी [दाहिने हाथ में] चूरियाँ पहिरवाईं। तबसे शूद्र वर्ण में प्रतिष्ठित होगया। प्राकृत भाषा में सचान कहाया। आगे सचान वंशी सब सचान जाति से प्रतिष्ठित हुये। अतएव उमरहार क्षत्रियों को सचानों में मिलना शूद्र होना है। यद्यपि सचान लोग उमरहार कुर्मियों के भाई ही हैं, तथापि वे लोग उमरहार क्षत्रियों का सदाचार कुलाचार मिटा कर शुद्र वर्ण में प्रतिष्ठित हो गये हैं। वर्ण विवेक चन्द्रिका में लिखा भी है कि-"क्षेत्रकर्मणि निष्णातौद्विज भक्ति परायणौ। तयोः पुत्र प्रपौत्राश्चशूद्र वर्णे प्रतिष्ठितः"। [वं० वि० चं० ४२] अर्थ यह है कि यदुवंशान्तर्गत भोज वंशी कुविन्दक के पुत्र-कैरी और कुर्मी ये दोनों क्षेत्र कर्म में निष्णात अर्थात कुशल हुये द्विज अर्थात् ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहे। तिन दोनों के पुत्र और प्रपौत्र यानी पुत्र और पनाती शूद्र वर्ण में प्रतिष्ठित हुये। तात्पर्य यह है कि कुछ लड़के और कुछ पनातियों में से पनाती शूद्र वर्ण में मानें

जाने लगे। कुर्मी [कुलमित्र] वंशज बराबर अब तक अपना सदाचार, कुलाचार प्रमाणित रास्ता इससे वे क्षत्रिय ही बने रहे। और उमरहार कुर्मी अथवा कुलमी कुरमी कहे जाते हैं। अब तक भी उमरहारों के विवाह समय में जब बरात भोजन करने को तैयार होती है तब वस्त्राभूषण शस्त्र इत्यादिकों से सजे हुये भोजन करने को बिछाई पर बैठते हैं। जिस प्रकार राजपूताने में क्षत्रियों की बरातों का भोजन व्यवहार है; इसी प्रकार यदुवंश कुलोद्भव उमरहारों का भी बरातीय भोजन व्यवहार है। प्रति दिन कच्ची रसोई के पदार्थों का भोजन अन्तर्वेदीय मर्यादा के अनुसार चौके में केवल धोती और अंगौछा के साथ धारण किये भोजन किया जाता है। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, अग्निवंशी और शेषवंशी क्षत्रियो के व्यवहार भी बरात के भोजन का व्यवहार वस्त्र भूषण शस्त्रादिकों से सजे हुये ही होता है। यात्रा युद्ध और विवाह में क्षत्रियों का भोजन व्योहार सशस्त्र ही होता आया है। इसी प्रकार उमरहारों का भी भोजन व्यवहार यात्रा युद्ध और विवाह में सशस्त्र ही होता है। आधुनिक काल में कोई कोई उमरहार वैश्नवादिक सम्प्रदायों में दीक्षा मन्त्र ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु सर्वदा यज्ञोपवीत नहीं धारण करते। क्षत्रियत्व का चिन्ह स्त्रियों के दाहिने हाथ में

कंकण तथा मार्ष्टिः (माठी) का धारण करना है। उमरहार यदुवंशी अपने सदाचार के दृढ़ प्रतिज्ञ सदा के परम्परागत चले आते हैं। क्षत्र कर्म में दक्ष कुशल कुर्मी (कुलमित्र) से आरम्भ करके अब तक उमरहारों के सन्तान हैं। पूजन पाठ कर्म न्यूनता के साथ होता है। साधारणतया उमरहार शैव पाये जाते हैं। बैश्नव तथा शाक्त भी उमरहार हैं। "घृत पक्कं पयः पक्कं पक्वं केवल वन्हिना। तदन्नंफल वद्ध ह्य" इस परिपाटी में भी उमरहार सर्वदा से ही अनुरागी हैं। परन्तु भोज परिपाटी सजातीय है विजातीय नहीं है। आधुनिक काल में बहुत से उमरहार जातिच्युत होकर सजातीय सदाचार को त्यागकर विजातीय अनाचार में मिलकर भ्रष्टाचारी हो गये हैं। कोई २ उमरहार बायें कांधे में तिलरा डोरा पहिर लिया है और उनकी स्त्रियों ने मार्ष्टिः और कंकण को त्याग भी दिया है। ऐसे बहुत से उमरहार अनाचारी व्यभिचारी जातिच्युत होकर पतित हो गये हैं। अब तक उमरहार यदुवंशियों के यहाँ की स्त्रियां सदाचार पद्धति से दृढ़ प्रतिज्ञा बद्ध हैं। जैसे "कर्वीज्यास्य चैत्राधि मासे न पौषे जलं पूजये सूतिका मासिपूर्तौ। बुधन्द्वीज्य वारे विरिक्ते तिथौहि सुतीज्यादितीन्द्वर्के नैऋत्यमैत्रे"॥ (मु० चिं० १) इस मुहूर्त के अनुसार सूतिका स्त्री जलपूजा

शुक्र गुरु के अस्त तथा चैत्र अधिमास और पौष इन मासों में नहीं करती। नवीन घट भी नहीं अनवासे जाते। इस विषय से साधारणतया उमरहारों की सभी स्त्रियां परिचित हैं। विवाह विषय में मनुस्मृति में इस प्रकार कहा है कि "शूद्रैव भार्या शूद्रस्य सा चस्वा च विशास्मृते। तेचस्वा चैव राज्ञश्च ताश्चस्वाचाग्र जन्मनः" ॥ (मनु ३।१३) शूद्र की स्त्री शूद्रा ही होती है। शूद्रा तथा वैश्या भार्या वैश्य की होती है। शूद्रा वैश्या तथा क्षत्रिया भार्या क्षत्रिय की होती है। शूद्रा वैश्या क्षत्रिया तथा ब्राम्हणी भार्यायें ब्राम्हण की होती हैं। यह अनुलोम क्रम विवाह विषय में धर्म संगत है। विवाह आठ प्रकार के होते हैं। "ब्रम्हादैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथा-ऽसुरः गन्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः"॥(मनु ३।२१) क्षत्रिय का विवाह राक्षस (डोला) विधान परमोत्तम है। राक्षसं क्षत्रियस्यैक मासुरं वैश्य शूद्रयोः" (मनु ३।२४) अतएव अबतक डोला अर्थात् राक्षस विधान से उमरहारों के यहां होते चले आते हैं। राक्षस विवाह का विधान वक्ष्यमाण प्रकार से है। जैसे 'हत्वा छित्वा चभित्वा चक्रोशंतीं रुदतीं गृहात्। प्रसह्य कन्या हरणं राक्षसो विधि रुच्यते' [मनु ३।३३] सवर्णा स्त्री के विवाह में पाणिग्रहण संस्कार अथात् हाथ पकड़ने का विधान है। और असवर्णा के विवाह वक्ष्यमाण

रीतियां कही हैं। 'पाणिग्रहण संस्कारः सवर्णा सूपदिश्यते। असवर्ण स्वयं ज्ञेयो विधि रुद्वाह कर्मणि। शरः क्षत्रिययाग्राह्यः प्रतोदो वैश्य कन्यया बसनस्य दशाग्राह्या शूद्रयोत्कृष्टवेदने'। [मनु० ३।४३।४४] क्षत्रिया के विवाह में तीर पकड़ कर तथा वैश्य के विवाह में चाबुक पकड़ कर और शूद्रा के विवाह में कपड़े की बत्ती पकड़ कर विवाह करना चाहिये। कुरुक्षेत्रं चमत्स्याश्च पञ्चालाः शूर सेनकः। एष ब्रह्मर्षि देशोवै ब्रह्मवर्ता दनन्तरः। एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्व मानवः" (मनु० २।१६, २०)। कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पञ्चाल (कान्यकुब्ज) शूर सेनक (मथुरा) ये देश ब्रम्हर्षि देश हैं और ब्रम्हावर्त देश के अनन्तर हैं। इस बम्हर्षि देश में उत्पन्न होने वाले कान्य कुब्जादि ब्राम्हणों से पृथिवी भर में सब मनुष्य अपने अपने चरित्र कहे आचार को सीखें। "तस्मिन्देशे य आचारः पारं पर्यक्रमा गतः। वर्णाना सान्तरालानां स सदाचार उच्यते"। [मनु० २।१८]। इस ब्रम्हावर्त तथा ब्रम्हर्षि देश में जिस प्रकार का जो आचार क्रम से ब्राम्हणों से लेकर वर्ण संकरों तक परं परागत चला आया है वह सदाचार कहाता है। जब भोज वंशीय यदु-वंशीय मथुरा से आकर इस पञ्चाल देश में बसे थे तबसे

वीरता, शौर्य और ब्राह्मण्य होने का परिचय बराबर देते चले आते हैं। राज्य छोड़कर चले आने के कारण इस देश में राज्याधिकार नहीं प्राप्त हुआ उसी वंश में कुविन्दक नामक यदुवंशी बड़ा ही पराक्रमी उत्पन्न हुआ। कुविन्दक ने वैश्यों को जीतकर भूमि का लाभ किया। कुविन्दक शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है कि कुं-विन्दति "गवादिषविन्देः संज्ञायाम्" (वा० ३।१।१३८) इतिशः। "संज्ञायां कन्" [पा० ५।३।७५] इति कन्। 'विद्लृ' लाभे (तु० उ० आ०) यद्वा कुप्यति 'कुपू क्रोधे' [दि० प० से०) 'कुमेर्वाश्च' (उ० ४ ८६) इति किन्दच् प्रत्ययः। संज्ञायां कन् [पा० ५।३।७५] इति कुविन्दकः। इस शब्द के अर्थ में वीरत्व प्रकाशित होता है। वीर पुरुष के वीर ही उत्पन्न होता है। कुविन्दक ऐसे एक वीर पुरुष के ही कुर्मी नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ कि जिसके नाम के पश्चात् इस कुर्मी वंश में यदुवंशियों का प्रकाशक कोई संतान ही नहीं उत्पन्न हुआ। इस समय तो कुर्मी लोग अपने वंश तथा शूरता वीरता को भूल गये हैं। केवल हल जोतना मात्र जान रहे हैं। अस्तु विशेष लिखने वृथा ही लेखनी का मुख मर्दन करना होगा। आशा की जाती है कि इस उमरहार वंशावली को पढ़कर आगे उमरहार कुर्मी

श्री उमरहार वंशावली लेखक समुदाय

(१) श्री शिवनारायण उमरहार बेहटा निवासी (२) श्री देवीचरण उमरहार बेहटी निवासी (३) श्री भगवानदीन उमरहार रामपुर निवासी (४) श्री रामरतन उमरहार पतारी निवासी (५) श्री सुखनन्दनलाल उमरहार मेढ़ापाटी निवासी।

यदुवंशी क्षत्रिय संतान अपने को चन्द्रवंशान्तर्गत यदुवंशी वीर कुर्मी क्षत्रिय निश्चय कर अपने शौर्य, बल, साहस और पराक्रमागत क्षत्रिय धर्म का पालन करेंगे। आगे विचार वानों को विशेष क्या लिखा जावे। शमित्यलम् ॥

विचार प्रकाशक—अवधूत

श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती,

स्थान, सोरही, जहानाबाद

लेखक :— शिवनारायण उमरहार कुर्मी

स्थान बेहटा,

प्रान्त—फतेहपुर, (यू० पी०)

सं० १९९० मिती वैशाख शुक्ला ६ चन्द्रवार मध्यान्ह समय में यह पुस्तक समाप्त हुयी।

प्रधान, प्रतिनिधि सूचीपत्रम्

संवत् १९९० शाके १८५५ चैत्र शुक्ला ५ गुरुवार को कार्य्यारंभ किया गया। श्रीयदुवंश कुलोद्भव कुर्मी वंश समुद्धारक सूचनिका सूचीपत्र बनाया गया है।

संख्या	नाम प्रतिनिधि	ग्राम	संख्या	नाम प्रतिनिधि	ग्राम
१	भदई	लखनीपुर	२	छेदा	हुसेनाबाद
३	दयाराम	गड़वा	४	मूसे	गौरीपुर
५	बौरा	बोधीपुर	६	उजागर	बकियापुर
७	भवानीदीन	बाबूपुर	८	गुरुचरण	कमासो
९	केवल	हरजनपुर	१०	परसाद	खानपुर
११	राजाराम	बबई	१२	गोपल	भट्टपुर
१३	काशी	बरवा	१४	भवानीदीन	गोंदहा
१५	फगुना	गौउरा	१६	कुबेर	सु० गढ़
१७	मनियाँ	दानपुर	१८	राजाराम	माझेपुर
१९	छोटा	उमरिहा	२०	अंगनू	नयापुरवा
२१	श्यामलाल	काशीपुर	२२	भोगा	अँगनाखेर
२३	मिट्ठूलाल	आँवरखेर	२४	मनई	गहरूखेर
२५	उजाला	ममनापुर	२६	हजारी	यमुनियाँखेर
२७	मन्नी	खजुरिहा	२८	छेदू	बाबूपुर
२९	परसाद	मउहाखेर	३०	बंशी	भुरहाखेर
३१	बैजनाथ	भट्टपुर	३२	द्वारिका	मदिहाखेर
३३	कंगल	दमोदरपुर	३४	राजा	डिघरुआ
३५	वेणीमाधव	भलिगवां	३६	गोकुल	बरिगवाँ
३७	द्वारिका	हवसापुर	३८	बृन्दा	सेमवांखेर
३९	रामलाल	ममनापुर	४०	मंगली	पहाड़ीपुर

४१	सीताराम	अम्मापुर	४२	महाबली	पतारी
४३	मथुरा	धर्मपुर	४४	पीताम्बर	सुन्दरपुर
४५	बदलू	बंगला	४६	रामसहांय	इटर्रा
४७	काशी	कंठीपुर	४८	छोटा	बहोरा
४९	गनेश	पह्यावा	५०	कालिका	मेढ़ापाटी
५१	रामचेला	धनसिंहपुर	५२	रामचेला	कुन्देरामपुर
५३	बदली	गुड़ैलेनपुर	५४	नारायण	बम्बुरिहापुर
५५	राजाराम	बेहटी	५६	राजाराम	धमना
५७	बदल	धिरजापुर	५८	मनोहर	मंझनपुर
५९	सउनी	रामपुर	६०	मुरलीधर	भाजीताला
६१	विहारीलाल	सांखा	६२	गिल्ला	सैंठी
६३	गजोधर	बदरा	६४	लाला	भोजेपुर
६५	श्यामलाल	डेवरी	६६	थान	अम्बरपुर
६७	गयादीन	अमौली	६८	जगन्नाथ	जरैलापुर
६९	भगवानदीन	सालेपुर	७०	खुशाली	मकन्दीपुर
७१	लोहया	महमनपुर	७२	चिरंजूलाल	कनैरा
७३	मथुरा	मिरजापुर	७४	मन्नू	मदुरी
७५	महादेव	बिलारी	७६	चेला	आम्रापुर
७७	भगवानदीन	रेतवाखेर	७८	शिवचरण	बाबूपुर
७९	द्वारिका	मुसवापुर	८०	श्यामलाल	दकियापुर
८१	बुद्ध	हाता	८२	कालीचरण	झंडहापुर
८३	मन्न	डेहरिया	८४	लल्लु	दिलावरपुर
८५	पूरन	मठहाखेर	८६	गोकुल	विघनापुर
८७	सहाय	बसन्तखेर	८८	गंगा	हरियापुर
८९	भरिहार	हंसोलेखेरा	९०	ईश्वरी	नाथूखेर
९१	कलुवा	बुधौली	९२	पुत्तीलाल	छोटेपुरवा
९३	देबीदीन	गुलाबपुर	९४	मगवानदीन	खंजालपुर
९५	रामचेला	खांड़ेदेवर	९६	पितना	रहमतपुर
९७	दीनदयाल	भ्योली	९८	रामलाल	खूदाभाल

९९	थुगराज	इच्छापुर	१००	सूरजदीन	बेहटा
१०१	मथुराप्रसाद	मोमिदपुर(पहाड़ीपुर)	१०२	बजरंगी	टरुवापुर
१०३	खुशाली	नसेनियाँ	१०४	रघुनन्दन	रोटी
१०५	बिन्दा प्रसाद	सेमवांखेर	१०६	अक्षद	धर्मपुर
१०७	मन्नूलाल	रामपुर (कुरमी)	१०८	साहबदीन	टरुवापुर
१०९	छेदालाल	किशोरपुर	११०	झुरियां	कनैरा
१११	रामचेला	रुसिया	११२	रामरतन	सगरा

॥ श्री ॥

श्री उमरहार कुर्मीवंशोद्धारक महासभा स्थान-धनसिंहपुर थाना व पोष्ट कोड़ाजहानाबाद प्रा० फतेहपुर यू० पी० सं० १९९० शाके १८५५ वैषाख शुक्ल ८ व ९ बुधवार व गुरुवार तदनुसार तारीख ३ व ४ मई सन् १९३३ ईसवी

सभापति—लक्ष्मण उमरहार, ग्राम बाबूपुर, थाना चांदपुर। पो० चाँदपुर, प्रा० फतेहपुर यू० पी०।

मन्त्री—रामरत्न उमरहार ग्राम पतारी, थाना जहानाबाद, पो० कोड़ा- जहानाबाद प्रा० फतेहपुर यू० पी०।

उपमन्त्री—भगवानदीन उमरहार, ग्राम साले रामपुर, थाना चाँदपुर, पोष्ट चाँदपुर, प्रान्त फ़तेहपुर यू० पी०।

समस्त प्रतिनिधियों सहित इस उमरहार कुर्मी वंशोद्धारक सभा में पतित परित्याग प्रस्तावक अवधूत आत्मानन्द सरस्वती, स्थान सोरही, थाना- जहानाबाद, पोष्ट कोड़ाजहानाबाद, प्रा० फतेहपुर यू० पी०।

समर्थक—सनातन धर्मोपदेशक युक्ति विशारद पं० कालूराम शास्त्री, ग्राम अमरौधा, पो० थाना भोगनीपुर, प्रान्त कानपुर, यू० पी०।

अनुमोदक—पं० देवनन्दन प्रधानाध्यापक संस्कृत पाठशाला, ग्राम अमौली वसस्थान ग्राम झाऊपुर, थाना चाँदपुर, पोष्ट अमौली, प्रान्त फतेहपुर यू० पी०।

प्रस्ताव को स्वीकार करते हुये जाति च्युतों के त्यागने वाले समस्त जातीय जन समुदाय सहित प्रतिनिधि मण्डल है।

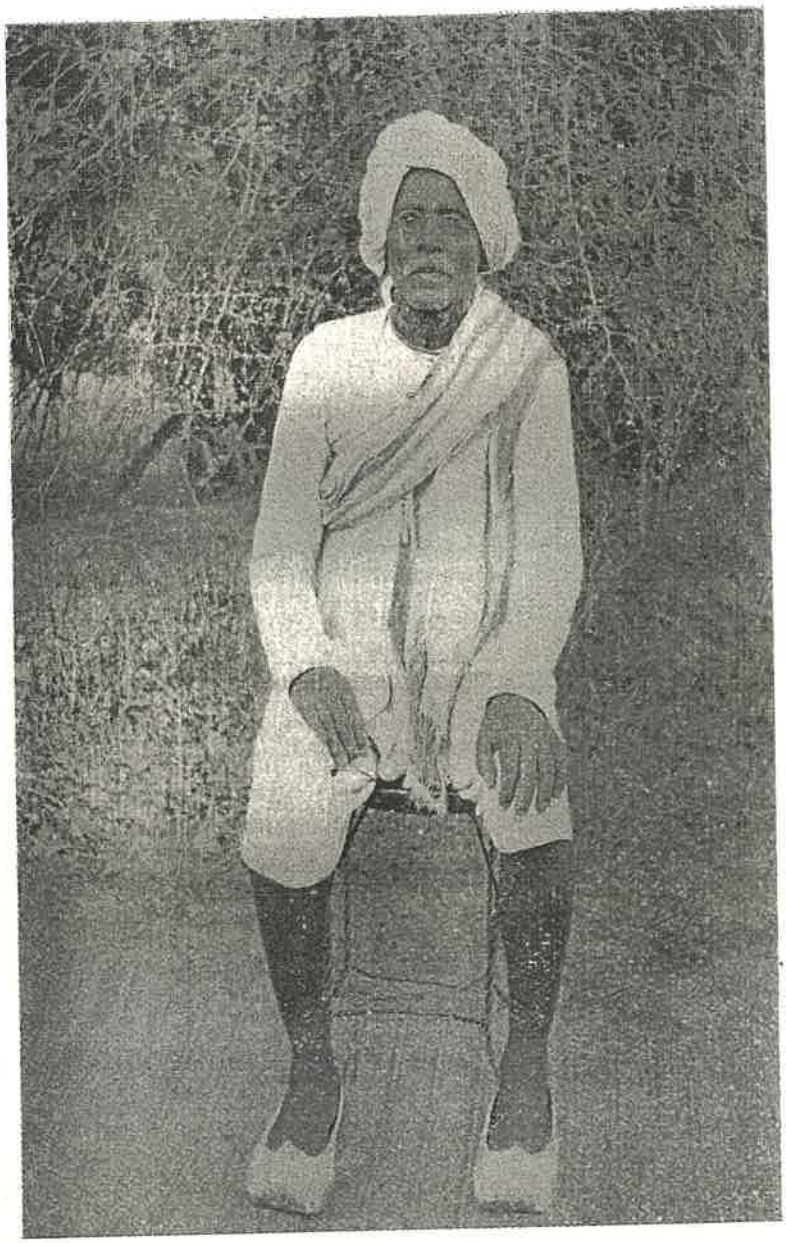

श्री लक्षिमनप्रसाद उमरहार बाबूपुर निवासी

सभापति उमरहार वंशोद्धारक महासभा ।

सभा संरक्षक—कुँवर हरदेवसिंह सब इन्सपेक्टर पुलिस गवर्नमेन्ट, थाना जहानाबाद, प्रा० फतेहपुर, यू० पी०।

भजनोपदेशक—पं० रमाशंकर दीक्षित, स्थान जहानाबाद, पो० कोड़ाजहानाबाद प्रा० फतेहपुर यू० पी०।

सभाप्रबन्धक—पं० मथुरासिंह पांड़े, ग्राम झाऊपुर, पोष्ट अमौली, थाना चाँदपुर, प्रा० फतेहपुर यू० पी०।

सभाकार्य सञ्चालक—पं० भगवद्दत्त अग्निहोत्री, स्थान जहानाबाद, पो० कोड़ाजहानाबाद, प्रा० फतेहपुर, यू० पी०।

कोषाध्यक्ष—रामचेला उमरहार, ग्राम धनसिंहपुर, थाना पो० कोड़ाजहानाबाद, प्रा० फतेहपुर यू० पी०।

कार्य कारिणी सभा।

श्री संवत १९९० शाके १८५५ चैत्र शुक्ला पञ्चमी गुरुवार को अवधूत स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के समक्ष कार्य कारिणी सभा की गई।

क्रमाङ्क	नाम	ग्राम	पद	व्यवस्था
१	रंगीलाल उमरहार	भलिगवाँ	सभापति	इन महाशयों द्वारा कुर्मी यदुवंशीक्षत्रियों की प्रतिष्ठा की जा रही है। ये पुरुष धन जन, बल और विद्या द्वारा अपनी जाति को यथार्थ स्थिर रख कर संसार समुद्र में नौका के समान प्रवाहक उत्पन्न हुये हैं
२	भवानीदीन उमरहार	बाबूपुर	मन्त्री	
३	रामचेला उमरहार	धनसिंहपुर	उपमन्त्री	
४	चमरू उमरहार	मिर्जापुर	सहायकमन्त्री	
५	रामरत्न उमरहार	पतारी	लेखक	इन सज्जनों ने उमरहार वंशावली के लिखने में परिश्रम किया है।
६	भगवानदीन उमरहार	कुर्मी रामपुर	लेखक	
७	कालीचरण उमरहार	मेढ़ापाटी	लेखक	
८	सुखनन्दन उमरहार	मेढ़ापाटी	लेखक	
९	शिवनारायण उमरहार	बेहटा	लेखक	

क्रमाङ्क	नाम	ग्राम	पद	
१०	हजारी उमरहार	कुन्देरामपुर	सभासद	ये महाशय लोग जा-
११	छन्नूलाल उमरहार	बेहटा	सभासद	तीय पुरुषोंके एक-
१२	बेनीमाधव उमरहार	भलिगवां	सभासद	त्रित करने तथाभली
१३	खुशाली उमरहार	बेहटो	सभासद	भाँति शिक्षा देकर
१४	पूसू उमरहार	कुन्दे रामपुर	सभासद	जाति उद्धारक कार्य
१५	झांडू उमरहार	धनसिंहपुर	सभासद	कर्ता गण हैं।
१६	पन्नूलाल उमरहार	धनसिंहपुर	सभासद	
१७	सूर्यदीन उमरहार	बेहटा	सभासद	

॥ अथ पराक्रमाऽऽरभ्यते ॥

वागर्थाविव सम्प्रक्तौ वागर्थ प्रति पत्तये ।
जगतः पितरौ बन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥१॥

इस परम पवित्र मानव देह को पाकर जिस मनुष्य से स्वजातीय सत्य धर्म का पालक व्यवहार घटित हो गया है वही इस जगत में यश कीर्ति से सांसारिक सुख भोगकर परमार्थ सिद्ध अर्थात् बैकुण्ठ वासी हुआ है। जब उमरहारों ने अपनी वंशावली लिखकर विचार पूर्वक वंश को आलोचन किया तब लगभग एक सौ के उमरहार वंशज जातीय धर्म विमुख पाये गये। इसके परिमार्जनार्थ एक उमरहार "कुर्मी वंशोद्धारक" नामक महासभा की गई। यह कार्य रामबेला आदिक कतिपय उमरहार मिलकर कार्य कारिणी समिति बनाकर प्रतिनिधियों द्वारा संशोधन करके पता लगाया तब ज्ञात हुआ कि असधना और पारादान तथा फरीदपुर आदिक ग्रामीण उमरहार सन्तान सब एक हजारीलाल नामक एक उमरहार के बहकाने से ये लोग जाति च्युत हो गये। हजारीलाल कानपुर में किसी बैंक में नौकर हैं। लोग कहते हैं कि शहर निवासी उसे अधरंडा कहते थे

यह सुनकर लज्जित होकर सबसे प्रथम मार्ष्टिः तथा कंकण का अपमान किया मार्ष्टिः राजपत्नी का मुख्य आभूषण है। कंकण वीर क्षत्रिय का मुख्य आभूषण है। प्रचीन काल में कांच की चूरियां भारत वर्ष में नहीं थीं किन्तु शंख तथा हाथी दांत की चूरियां पहिनी जाती थीं। संस्कार और महूर्तक ग्रन्थों में दंत शंख का ही पाठ है। जैसेः—

पौष्ण ध्रुवाश्वि कर पंचक वासवेज्या दित्ये प्रवाल रद्द शंख सुवर्ण वस्त्रम्। धार्यं त्रिरिक्त शनि चन्द्र कुजेन्हि रक्तं भौमे ध्रुवादिति युगे न दद्यात्। (मु० चि० मा)

इस श्लोक में दांत और शंख का ही नाम आया है फिर संस्कार विधान रहित तिलरा डोरा कांधे में लटकाया इससे विशेष पतित हो गये। कुछ दिनों के बाद उमराव वंशीय कूर्मि क्षत्रिय महासभा, की; तबसे जाति च्युत लोग मुसल्मानी नाम (उमराव) कल्पना करके अपने को उमराव कहने लगे। कुछ वर्षों तक इस प्रकार उमरहारों को धोका देते रहे सभायें करते रहे। जब उमरहारों पर दबाव डाला कि तुम लोग डोरा कांधे में डालो और मार्ष्टि कंकण स्त्रियों से उतरवा डालो कांच की चूरियां पहिनाओ तब उमरहार (रामचेला आदिक) भी कुछ पण्डितों के पास गये और कह सुन कर सनातन धर्म सभा की परन्तु नाम अपनी जाति का शुद्ध उमरहार न रखकर जाति च्युतों का कल्पित उमराव ही पुकारा। तब तो जाति च्युतों ने उमरहारों के साथ बड़ी गड़बड़ी मचाई धमकियां भी दीं सभायें न होने दी। तब ये उमरहार लोग (रामचेला आदिक) मेरे पास आये और कहा कि हमारी जाति का नाश हुआ जाता है। यह सुन कर मैंने वन्शावली तैयार कर लेने की सलाह दी और एक "श्रीउमरहार कुर्मी वंश प्रकाश' नामक पुस्तक तैयार करदी जिसमें वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, कोष और इतिहासों के प्रमाणों द्वारा उमरहार कुर्मियों को वास्तव में यदुवंशी क्षत्रिय सिद्ध पाया। फिर 'कुर्मी वंशोद्धारक' नाम की महासभा की गई जिसमें ग्राम २ से जातीय प्रतिनिधि चुने गये वे लोग सभा में आये बाबूपुर निवासी लक्ष्मण उमरहार सभापति चुने गये उनके सभापतित्व में समस्त उमरहारों

ने इन जाति च्युतों को परित्याग कर दिया । कार्यकारिणी सभा तथा कुर्मी वंशोद्धारक सभा का लेख प्रथम लिखा जा चुका है । उमरहार कुर्मी वंशावली में शुद्ध उमरहारों का वंश है । पतित और सांसर्गिकों का वंश नहीं लिखा गया क्योंकि वे लोग जातिच्युत हो चुके हैं । हठ धर्म से जाति च्युत होने के कारण व्रात्य संस्कार द्वारा अब वेलोग शुद्ध नहीं किये जा सकते हैं । हठी का प्रायश्चित नहीं होता । केवल त्याग ही होता है । जिन लोगों ने मार्ष्टिः कंकण का अपमान नहीं किया और तिलरा डोरा भी नहीं धारण किया केवल सांसर्गिक ही हैं । वे लोग व्रात्य संस्कार द्वारा शुद्ध हो सकते हैं । सांसर्गिकों में भी जेहा धर्मी हैं वे लोग नहीं शुद्ध हो सकते हैं वे हठ से पतित हो गये । उनमें से जगन्नाथ धनसिंहपुर का विशेष हठी है । यह तो पतितों से भी अधिक पतित है । इसी प्रकार और भी हैं । उमरहारों को उचित है कि वे अपनी शुद्ध वंशावली के लिखित वंश की हर प्रकार से रक्षा करें ताकि अब न कोई उमरहार जाति च्युतों में मिल सके । प्रायश्चित्त भ्रान्ति से पतित अथवा आपत्काल में पतित का ही होता है । जो मूढ़ हठ से धर्म त्यागता है उसका प्रायश्चित्त अनेक जन्मों तक में भी नहीं हो सकता है । प्राचीन काल में कांच की चूरी नहीं थीं किन्तु शंख तथा हाथी दांत की चूरी थीं । इनके अभाव में लाख की जोरिया अर्थात् लखौटी जोरा पहिरे जाते थे । यावनीय राज्य शासन काल में अत्यन्त अपवित्र कांच की चूरी चली हैं । इस समय तो काचही काच फैल रहा है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य की स्त्रियों के लिये तो काच की चूरी अत्यन्त ही अपवित्र हैं । उमरहार कुर्मियों में यदुवंशी होने का प्रमाण बताने वाली केवल मार्ष्टिः (माठो) है । कंकण तो बीर क्षत्रियों का आभूषण है । विधवा विवाह ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य जाति के लिये अत्यन्त दूषित व्यवहार है । इसे द्विज कभी भी न करें । उमरहारों में विद्या का अभाव सा देखा जाता है । हिन्दी भाषा का थोड़ा थोड़ा ज्ञान किसी को है परन्तु वर्णाश्रम धर्म की तो चर्चा भी नहीं है । इसी कारण आर्य समाजियों के बनावटी धोखे में बहुत से उमरहार फँस गये और फँस कर जाति च्युत हो गये हैं । हठी होने के कारण इन जाति च्युतों का प्रायश्चित्त अथवा व्रात्य संस्कार भी नहीं हो सकता । विवश होकर त्यागना पड़ा । आगे उमरहारों को समुचित होगा कि ये लोग

अपना शुद्ध सदाचार बनाये रहैं तथा सदाचार रक्षा करने के निमित्ति अपनी जाति में देववाणी (संस्कृत भाषा) का प्रचार करके विद्वान बनें और अपने आचार्यों को भी विद्वान बनावें। यदि हो सके तो जातीय संस्कृत पाठशालायें प्रचलित करें जिसके द्वारा आचार्य सहित संस्कृत वाणी के जानकार हो जावें।

उमरहारों की स्त्रियों को वीर क्षत्रिया जान कर पति व्रत का पालन करना परम धर्म है। आधुनिक काल में उमरहारों की स्त्रियाँ खेती का काम तो जानती हैं पशु पालन भी जानती हैं। परन्तु यदुवंश की रीति भाँति से तो अपरिचित सी हो रही हैं। मांगलिक कंकण को रक्षा में भली भांति प्रतिज्ञा बद्ध हैं। साधारण क्षत्रियोचित खान पान व्यवहार सुरक्षित किये हैं। उमरहार कुर्मी समुदाय में कुलाचार पालन तथा कुछ अंश में सदाचार पालन वर्तमान है इसी कारण ये लोग पतित होने से बच रहे हैं। यदि उमरहारों से कोई भी व्यक्ति जाति विषयक प्रश्न करेगा तो उमरहार कुर्मी सन्तान अपने को अपने पिता पितामह प्रपितामह से ऊपर को बतलाते हुये कुर्मी को बतायेंगे। कुर्मी के वृद्ध कुविन्दक और कुविन्दक के वृद्ध भोज जो मथुरा छोड़ कर इस पंचाल देश (अन्तर्वेद) में आकर बसे। भोज के वृद्ध यदु और यदु के वृद्ध यजाति तिनके वृद्ध पुरुरवा और पुरुरवा के वृद्ध बुध हुये। बुध के वृद्ध अर्थात पिता चन्द्रमा हुये। चन्द्रमा के वृद्ध अत्रि और अत्रि के पिता ब्रह्मा हुये। ब्रह्मा विष्णु की नाभि कमल से उत्पन्न हुये। विष्णु रुद्र से रुद्र प्रणव (ओंकार 'ॐ') से प्रणव प्रकृत से तथा प्रकृत पुरुष से उत्पन्न हुई। पुरुष शक्ति से शक्ति शिव से उत्पन्न हुई। शिव परंब्रह्म से हुये। परंब्रह्म अलक्ष्य (अलख) से हुवा। अलक्ष्य परमात्मा का निर्वाण पद है। परमात्मा नित्य शुद्ध बुद्ध अजर अमृत अभय निरालम्ब शान्त अद्वितीय एकही वस्तु है। परमात्मा में विवर्त स्वरूप समस्त विश्व की कल्पना है। परमात्मा ही इस विश्व का अभिन्न निमितोपादान कारण है। "सईक्षांकक्रे" इत्यादिक अनेकों श्रुतियां वेद वेदान्त में प्रमाण करती हैं। आशा है कि उमरहार कुर्मी लोग इस 'श्री उमरहार कुर्मी वंश प्रकाश' नामक ग्रन्थ की रक्षा धन बल विद्या बुद्धि द्वारा भली भाँति करेंगे।

भक्ष्या भक्ष्य का विचार रखना परम श्रेयस्कर द्विजाति मात्र के निमित्त जानना चाहिये। उमरहार भक्ष्या भक्ष्या के विचारशील तथा सदाचार प्रतिपालक

सदा से चले आते हैं। स्त्री बहिन फूफू आदि के माया मोह में फँसे हुये उमरहार बहुत से लोग पतित सांसर्गिक दोष को नहीं देखते व चोरी करके पतितों से संसर्ग रखते हुये पाये जाते हैं। उमरहारों को ऐसा नहीं करना चाहिये। क्योंकि ऐसा संसर्ग उनके त्याग, शौर्य, धैर्य और पराक्रम में हानिकारक होता है। भारत वासियों के नाते से समस्त भारतवासियों के साथ सहयोग रखना उमरहारों का क्षत्रियत्व प्रमाण करता है। बाजार, मेला, तीर्थ, सभा, देवदर्शन और युद्ध में समस्त भारतवासी शिखाधारी मात्र (ब्राह्मण से आदि लेकर चाण्डाल पर्य्यन्त) छुवा छूत में विवेक न करें। समान जाति कुलादिक में ही सह भोज्यता रखनी समुचित है। जो कोई भी भारत वासी शिखा धारी यवनु ईसाई और म्लेच्छों को स्पर्श करते हों तो चाण्डाल के हाथ का जल तक पान करें तो अनुचित न होगा। "न नीचो यवनात्परः" यवन से नीच और कोई नहीं है केवल ईसाई, म्लेच्छ ही नीच हैं। क्यों कि ईसाई और म्लेच्छ दोनों यवनों का बनाया भोजन खाते हैं। भारतवासियों को समुचित है कि यवन संग तथा म्लेच्छ, ईसाई आदि भ्रष्टाचारियों का भी संग कभी न करे तब भी होली के भोर धुरेठी को चाण्डाल स्पर्श अवश्य करें। इस प्रकार संसार चक्र में परिवर्तित जातीय धर्म की रक्षा करने वाला श्री उमरहार कुर्मी वंश प्रकार नामक ग्रन्थ समाप्त किया गया है जिसे क्षत्रिय जाति के अन्तरंग में उमरहार कुर्मी यदुवंशियों में अनुराग होवे वे लोग इस ग्रन्थ के आद्योपान्त आलोचन करें। उमरहारों में जिस कन्या का पाणिग्रहण हो आया हो परन्तु द्विरागन (चौक) नहीं हुवा हो यदि वह वर मृत हो जावे तो पुनर्भू होने में दूसरे वर के साथ द्विरागन (चौक) कर सकेंगे। परन्तु पुनर्भू होना यह वीर क्षत्रिया को समुचित नहीं है। पुनर्भू स्त्री की लोक निन्दा तो होती ही है। तथा जिस कन्या का विवाह (पाणिग्रहण) होकरके फिर उसका पतिधर्म भ्रष्ट होगया हो तो वह अपने पति के साथ चली जावे तो अच्छा है। यदि कुमार्गी पति को वह वीर क्षत्रिया त्याग करे तो फिर वह पुनर्भू कदापि न होने की इच्छा करे। अन्यथा कुल कलंक लग जाता है। अतएव यह श्री उमरहार कुर्मी वंश प्रकाश का ग्रन्थोपसंहार स्वरूप पराक्रम समाप्त किया जाता है। सज्जन वृन्द तथा उमरहार कुर्मी यदुवंशी क्षत्रिय इस ग्रन्थ को पढ़ कर अपनी मर्यादा, सदाचार, और कुलाचार की भली भाँति रक्षा किये रहेंगे। किसी भी

आर्यसमाजी इत्यादिक जाति भ्रष्ट के कहने से अपने जातीय व्यवहार सदाचार और कुलाचार का परित्याग न करेंगे। अस्तु जहां तक वेद, वेदान्त, दर्शन, इतिहास, पुराण और कोषादिक व्याकरण पर्यन्त प्रमाण मिल सके हैं उनके द्वारा इस यदुवंश का समुद्धार किया गया है। यदि प्रमादवश कोई त्रुटि होगई हो सज्जन जन उसकी पूर्ति प्रमाणों द्वारा कर लेवेंगे। यदि लेख में भूल से कोई अशुद्धि रह गई हो तो सुधार कर पाठ करेंगे। किंबहुतयासुज्ञेषुशमिति।

इति पराक्रमः समाप्तः

विद्युत्प्रमोद कोऽवधूतः।

आत्मानन्द सरस्वती.

स्थान-सोरही, जहानाबाद,

थानो व पोष्ट कोड़ा जहानाबाद,

प्रान्त-फतेहपुर, यू० पी०

लेख सहायक—

शिवनारायण उमरहार,

स्थान बेहटा, पो० अमोली,

प्रान्त फ़तेहपुर, यू० पी०

उमरहार कुर्मी वंशावली।

गोत्र कौडिल परंपरागत (कौड़िहा) ये लोग धनसिंहपुर में बसे। उमहार कुर्मी वंशान्तर्गत कौडिल गोत्र में परिज्ञात वृद्ध नान्हू हुये।

(१) नान्हू के एक पुत्र टीका हुये। टीका के सात पुत्र हुये-छब्बू, भूरा दीना, धन्नू, कल्लु, दो पुत्रों के नाम ज्ञात नहीं हैं। छब्बू के तीन पुत्र हुये-काशी, नारायण, लक्ष्मण, हुये। काशी के एक पुत्र—सुखना हुआ। भूरा के एक पुत्र—गुरुबकश हुआ। गुरुबकश के एक पुत्र—कुँवर हुवा। कुँवर के एक पुत्र जगन्नाथ हुवा। दीना के एक पुत्र—सप्सुख हुवा। सप्सुख के दो पुत्र—झन्डू, बदली हुये। बदली जहूपुर चला गया। झन्डू के तीन पुत्र—चेला, गयादीन, खुशाली हुये। गयादीन के एक पुत्र-नारायण हुवा। खुशाली के दो पुत्र-सोनवाँ सूर्यदीन हुये। धन्नू के तीन पुत्र—मन्नू, गोकुल, मथुरा, हुये। मन्नू के एक पुत्र—काली चरण हुवा। कालीचरण के एक पुत्र—मिहींलाल हुवा। गोकुल के दो पुत्र—रामचेला भुइयांदीन हुये, कल्लू के दो पुत्र—गयादीन, छक्की हुवे। गयादीन के दो पुत्र—बड़कन, दीनदयाल, हुये। बड़कन के एक पुत्र-बहरी हुवा। दीनदयाल के एक पुत्र- द्वारिका हुवा। छक्की के दो पुत्र—कन्धई, बद्रीप्रसाद, हुये। बद्रीप्रसाद के एक पुत्र—शिवप्रसाद हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध—असनी। असनी के एक पुत्र—गंगन हुवा। गंगन के चार पुत्र—सभा, गयादीन, लोधा, दीनदयाल हुये। सभा के एक पुत्र—लल्लू हुवा। लल्लू के तीन पुत्र—चतुरी, रामेश्वर, बेजनाथ हुये चतुरी के एक पुत्र रामधनी हुवा। दीनदयाल के एक पुत्र—पूरन हुवा। असनी का वंश मिखनीपुर में बसा है।

(३) तीसरा वृद्ध—कालीचरण धनसिंहपुर से जाकर कन्ठीपुर में बसे। कालीचरण के एक पुत्र—मिहींलाल हुवा।

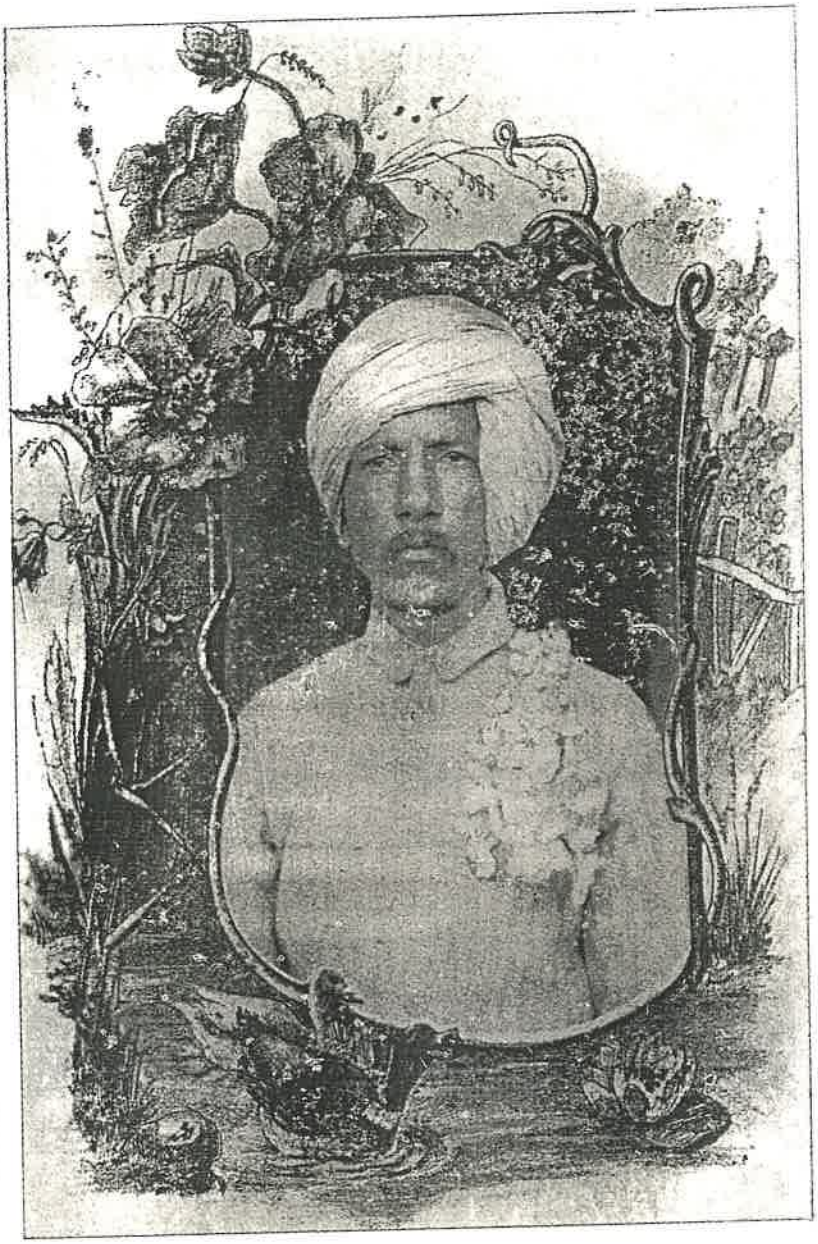

श्री रामचेला उमरहार धनसींहपुर निवासी

उपमन्त्री—कार्य्यकारणी सभा।

(४) चौथा वृद्ध—धनसूर दामोदरपुर में बसे। धनसूर के एक पु — काशी हुवा। काशी के तीन पुत्र—फकीरे, दनकऊ, दैना, हुये। फ़कीरे के चार त्र—अँगनू, खुशाली, खरगा, मयादीन हुये। अँगनू और खरगा रुसिया चले गये। खरगा के एक पुत्र—गंगाराम हुवा। खुशाली के एक पुत्र—रामनाथ हुवा। मयादीन के चार पुत्र—रामेश्वर, रामधनी, सुदामा, बदरी हुवे। दैना टरुवापुर चला गया। दैना के एक पुत्र—छब्बू हुवा। छब्बू के एक पुत्र—रामप्रसाद हुवा।

(५) पाँचवा वृद्ध—मन्नी दामोदरपुर मेंबसे। मन्नी के चार पुत्र-टटुवा भूरे, गुलजारी, गंगवा हुये।

(६) छठवाँ वृद्ध—लोचन दामोदरपुर में बसे।

(७) सप्तम वृद्ध—बदली धर्नसिंहपुर से जदूपुर में जाकर बसे। बदली के दो पुत्र—देवीचरण, महावीर हुये।

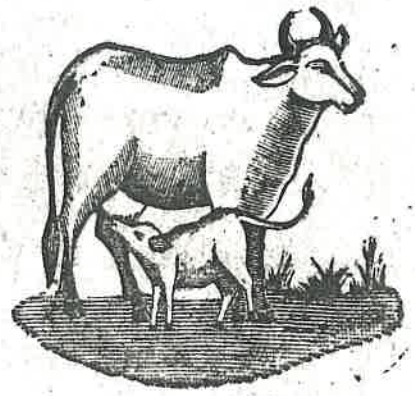

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (बेहटाखास)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत (बेहटाखास) गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

—:(o):—

(१) प्रथम वृद्ध—अँगनू बेहटा खुर्द में बसे। अँगनू के एक पुत्र-दुरगाप्रसाद हुवा दुर्गाप्रसाद के तीन पुत्र-भद्दू, ठाकुरप्रसाद, कालिका-प्रसाद हुये। भद्दू के एक पुत्र-रामप्रसाद हुवा। रामप्रसाद के चार पुत्र-छुन्नूलाल छोटेलाल, दीनदयालु, राधेलाल हुये। छुन्नूलाल के दो पुत्र-शिवनारायण, रामनरायण हुये दीनदयाल के एक पुत्र-भोलानाथ हुवा, राधेलाल के दो पुत्र-रामगोपाल, शिवगोपाल हुये ॥

(२) दूसरा वृद्ध—गोकुल बसन्त खेरा में जाकर बसे। गोकुल के एक पुत्र महादेव हुवा महादेव के एक पुत्र-सकटू हुवा। सकटू के दो पुत्र भोला, दूसरे का अज्ञात नाम हुये। गोत्र बेहटहा दूसरो हस्म हैं ॥

(३) तीसरा वृद्ध—बिहारी और लच्छो दो भाई हुये। बिहारी के एक पुत्र-मन्ना हुवा। मन्ना के चार पुत्र-राजाराम, शिवराज, महाराज और मोतीलाल हुये। लच्छो के तीन पुत्र-रामचरन, छोटेलाल और दुल्लू हुये। रामचरण के तीन पुत्र-हजारीलाल, दुर्गाप्रसाद और रामभरोसे हुये। यह बेहटा से जाकर नाथूखेर में बसे ॥

(४) चौथा वृद्ध—रामचेला यह बेहटा से जाकर नाथूखेर में बसे। रामचेला के एक पुत्र-सौनी हुवा। सौनी के दो पुत्र-कन्हई, और गंगाचरन हुये ॥

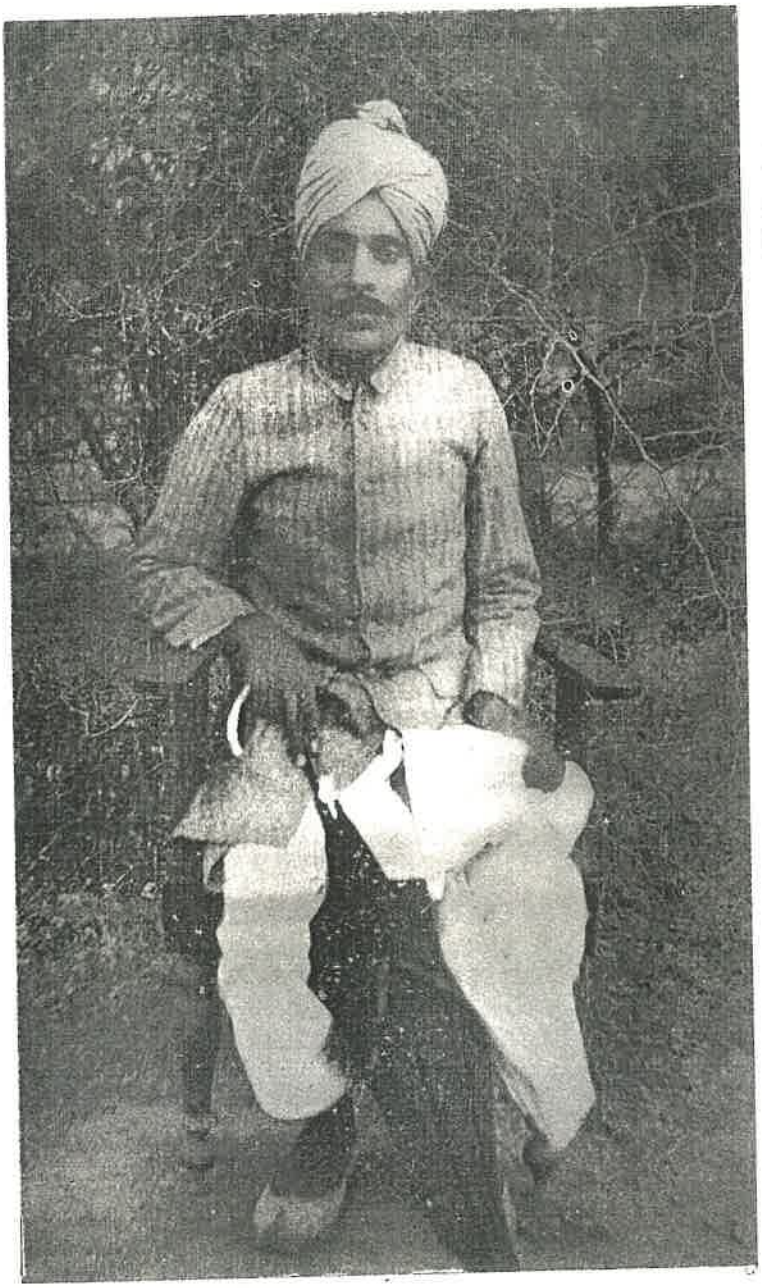

श्री छन्नूलाल उमरहार बेहटा निवासी

उपमन्त्री—उमरहार वंशोद्धारक महासभा ।

गोत्र कात्यानी परम्परागत (सुन्दरपुरिहा)
ये बंगला में रहते हैं।

(१) उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत सुन्दरपुरिहा गोत्र में सबसे परिज्ञात वृद्ध गगन हुआ। गगन के एक पुत्र दनकू हुआ। दनकू के चार पुत्र गप्पू, हनूमान, बेनीप्रसाद, पद्मा हुये। हनूमान के एक पुत्र मेडू हुआ। मेडू के एक पुत्र अयोध्याप्रसाद हुआ। गप्पू के पांच पुत्र—महादेव, मथुरा, मिट्ठीलाल, लोधा, मनियां, हुये। मथुरा के एक पुत्र—भदई हुआ। मनियां के दो पुत्र भगवानदीन, देवीदयाल हुये।

(सेवक ये लोग सुन्दरपुर में रहते हैं।)

(२) दूसरो वृद्ध सेवक। सेवक के दो पुत्र बिहारी, अम्बादीन हुये। अम्बादीन के दो पुत्र रंगीलाल, ब्रजलाल हुये। रंगीलाल के दो पुत्र—केदारनाथ, गंगाचरण हुये। केदारनाथ के एक पुत्र ब्रजमोहन हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध-लाला। लाला के एक पुत्र—भूरेलाल हुआ। भूरेलाल के तीन पुत्र-गडोला, पीताम्बर, नन्दलाल हुये। पीताम्बरके तीन पुत्र-बद्रीप्रसाद, घसीटेराम, छोटेलाल हुये।

(लाला सुन्दरपुर में आबाद हैं)

(४) चौथावृद्ध -कल्लू। कल्लू के तीन पुत्र—परम, गजोधर, जियालाल हुये। कल्लू सुन्दरपुर में आबाद हैं।

(५) पांचवां वृद्ध। तेजा भलिगवां में आकर बसे। तेजा के दो पुत्र—मंगली, बदलू हुये। मंगली के एक पुत्र गंगाचरण हुवा।

(६) छठवां वृद्ध। मैका और गोकुल सुन्दरपुर से जाकर किशोरपुर में बसे। मैका के एक पुत्र—लकट्ठू हुआ। गोकुल के दो पुत्र दुर्गा और बाबूलाल हुये।

(७) सातवां वृद्ध। ठाकुरदीन और पैंगा पैंगा सुन्दरपुर से जाकर किशोरपुर में बसे। ठाकुरदीन के दो पुत्र मनोहर और अज्ञात नाम हुये। मनोहर के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये। पैंगा के एक पुत्र छेदना हुआ। छेदना के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ पैंगा के एक पुत्र नारायण हुआ।

(८) आठवां वृद्ध—छंगा सुन्दरपुर से जाकर किशोरपुर में बसे। छंगा के एक पुत्र राजा हुआ। राजाराम के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

गोत्र धनञ्जय परम्परागत (लठहा)

(१) उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत धनञ्जय गोत्र में परिज्ञात वृद्ध—धनसिंह । धनसिंहपुर को आबाद करके धनसिंहपुर में बसे धनसिंह के एक पुत्र—रिग्घू हुआ। रिग्घू के तीन पुत्र—रंगीलाल, बाबूलाल, दनकू हुये। रंगीलाल के एक पुत्र—चिरंजू हुआ। दनकू के दो पुत्र—गयादीन मथुरा हुये। गयादीन के दो पुत्र भगवानदीन, लालजी हुये। भगवानदीन के एक पुत्र—अज्ञात नाम।

(२) दूसरा वृद्ध। थान, भउना, दहना, सहाय ये चारों भाई अम्बरपुर में आबाद हैं। थान के तीन पुत्र—रामचरण, गजुआ कांरा हुये। रामचरण के दो पुत्र—गोकुल, और मथुरा, जो दोनों पतित होगये।

कारा के दो पुत्र रामलाल, बदरीप्रसाद हुये। रामलाल के तीन पुत्र—जगन्नाथ, लठहा, तीनो का अज्ञात नाम हुवा।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (बंगलहा)

(१) उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध। पचई बंगला में जाकर बसे, पचई के दो पुत्र-सहांय, भैयाराम हुये। सहांय के एक पुत्र—रजवा हुआ। रजवा के एक पुत्र—धनीराम हुवा। भैयाराम के तीन पुत्र—शिवराम, शिवलाल, शिवभजन हुये ॥

(२) दूसरा वृद्ध—झंडू और मत्थू दोनों भाई रामपुर कुरमी में आकर बसे। झंडू के तीन पुत्र—मन्ना, भीखन, सुदयाल हुये, भीखन के एक पुत्र रंगीलाल हुवा, रंगीलाल के एक पुत्र—सुत्तीदीन हुवा, सुदयाल के एक पुत्र गजोधर हुवा जो कमासिन चलागया।

(३) तीसरा वृद्ध—जराखन और दुरगा दो भाई बंगला में बसे। दुरगा के दो पुत्र—रामचरण और गजोधर हुये। रामचरण के एक पुत्र मनोहर हुये,

(४) चौथा वृद्ध—बेनी और बदल दो भाई हुये बदल के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा। भगवानदीन के तीन पुत्र—शिवप्रसाद, शिवनरायण और मेवालाल हुये। शिवप्रसाद के दो पुत्र—रामनरायण और दूसरे का अज्ञात नाम हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध—बिहरी, अनसा और पुसुवा तीन भाई हुये। यह बंगला में बसे हैं। बिहारी के तीन पुत्र—दुल्ला, बद्रीप्रसाद और जगंनाथ हुये दुल्ला के तीन पुत्र—गौरी, भूरा, और सुखलाल हुये गौरी के एक पुत्र—अज्ञात नाम हुवा। भूरा के दो पुत्र—भवानीदीन और अज्ञात हुये। जगन्नाथ के एक पुत्र-अज्ञात हुवा मंसा के एक पुत्र-बहलन हुवा। पुसुवा के एक पुत्र-घसीटे हुवा

(६) छठवाँ वृद्ध—काशी हुये। यह बंगला में बसे। काशी के ३ गोकुल बोलवा, टीकाराम हुये। गोकुल के एक पुत्र—देवीदयाल हुवा। देवीदयाल के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा॥

सातवां वृद्ध—मथुरा और बलदेव बंगला में बसे। बलदेव के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

(२९) उन्नतीसवां वृद्ध । काशी मधियाखेरे में जाकर बसे । काशी के एक पुत्र-ईश्वरी हुआ । ईश्वरी के दो पुत्र-शीतल, मन्नू हुये मन्नू के तीन पुत्र-ब्रह्म, जगन्नाथ, शिवपाल हुये । यह तीनों पतित हो गये ।

(३०) तीसवाँ वृद्ध । गिरवर और दैना दोनो भाई बबई में जाकर बसे । दैना के एक पुत्र मैइका हुआ ।

(३१) इकतीसवां वृद्ध । धरमा बबई में जाकर बसा । धरमा के तीन पुत्र-बदूदूं, माखन, साखन हुये । बदूदूं के एक पुत्र भदईं हुआ । भदईं के दो पुत्र-हनूमान, दयाराम हुआ । साखन के एक पुत्र-भगवानदीन हुआ । यह बड़िगवाँ में जाकर बसा और पतित हो गया ।

(३२) बत्तीसवां वृद्ध । भोखा बबई में जाकर बसे भीखा के एक पुत्र हीरा-हुआ । हीरा के दो पुत्र—छेदा, भूरा हुये । छेदा के दो पुत्र रामदयाल, दलीप हुये । रामदयाल के १ पुत्र-मेवालाल हुआ । भूरा के दो पुत्र-भदईं लल्लू हुये । भदईं के एक पुत्र-रामरतन हुआ । लल्लू के एक पुत्र—बदरीप्रसाद हुआ ।

(३३) तैंतीसवां वृद्ध । गैरा बबई में जाकर बसा । गैरा के दो पुत्र-लछिमन, तगली हुय । लछिमन के दो पुत्र—पुतियां, गोकुल हुये । पुतियां के दो पुत्र हजारीलाल, भिखारीलाल हुये । हजारीलाल के एक पुत्र-छेदालाल हुआ । भिखारीलाल के एक पुत्र—रमाशंकर हुआ । भिखारी जो कि पतित हो गया । गोकुल के दो पुत्र—गुलजारीलाल, शिवरतन हुये । तगली के एक पुत्र—अशर्फीलाल हुआ । अशर्फीलाल के एक पुत्र-देवीदीन हुआ ।

(३४) चौंतीसवाँ वृद्ध । महादेव लखनीपुर में जाकर बसे । महादेव के दो पुत्र-बदल और भदईं हुये । बदल के एक पुत्र-मैका हुआ ।

(३५) पैंतीसवाँ वृद्ध आलम धर्नासिंहपुर में जाकर बसे । आलम के तीन पुत्र-भिखारी, गंगी और लाला हुये । भिखारी के दो पुत्र-सहकी, भीमा हुये । गंगी के दो पुत्र-गोबरा और दनका हुये । दनका के एक पुत्र-छेदू हुआ छेदू के एक पुत्र-हीरालाल हुआ । हीरालाल के एक पुत्र-छोटन हुआ । छोटन के एक पुत्र मज्जू हुआ ।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (मौहाखेरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञातवृद्ध,

(१) पहला वृद्ध।—दुलीचंद धमाना में आकर बसे। दुलीचंद के एक पुत्र-नङ्कू हुवा। नङ्कू के दो पुत्र-शिवप्रसाद, अज्ञातनाम हुये।

(२) दूसरा वृद्ध।—भगवती मौहाखेरा में बसे। भगवती के एक पुत्र—गंगादीन हुवा गंगादीन के एक पुत्र-सुद्धू हुवा। सुद्धू के तीन पुत्र लछिमन, देवनन्द, लोटन हुये। लछिमन के एक पुत्र—रामलाल हुवा, लोटन के एक पुत्र—कामताप्रसाद हुवा।

(३) तीसरा वृद्ध।—शिवचरण-मौहाखेरा में बसा। शिवचरण के एक पुत्र—ईश्वरनन्द हुवा। ईश्वरनन्द के दो पुत्र—घसीटे, गोविंद हुये। घसीटे के एक पुत्र—पूसू हुवा।

(४) चौथा वृद्ध।—बदला मौहाखेरा में बसा। बदला के दो पुत्र झाँडू, रहला हुये। झाँडू के दो पुत्र—शिवनाथ, भैरका हुये

(५) पाँचवाँ वृद्ध। देवीदीन मौहाखेरा में बसे। देवीदीन के दो पुत्र कल्लू, शिवबकस हुये। कल्लू के एक पुत्र—हजारी हुवा। जहारी के दो पुत्र हीरा, महावीर हुये।

(६) छठा वृद्ध।—गंगादीन मौहाखेरा में बसा। गंगादीन के एक पुत्र—रामसेवक हुवा। रामसेवक के एक पुत्र—बिहारीलाल हुवा. बिहारीलाल के तीन पुत्र जगन्नाथ, भदई, मेवालाल हुये।

(७) सप्तम् वृद्ध।—मन्ना मौहाखेरा में बसा। मन्ना के एक पुत्र दालचन्द हुवा। दालचन्द के एक पुत्र—भूरा हुवा। भूरा के तीन पुत्र सुधुका, सुधुवा, सधुवा हुये।

(८) आठवाँ वृद्ध।—सिद्धा मौहाखेरा में बसे। सिद्धा के दो पुत्र गुलजारी, परसाद हुये। परसाद के तीन पुत्र-भरोसा, बालकृष्ण रामकृष्ण हुये।

(९) नवाँ वृद्ध।—सुदीन मौहाखेरा में बसे। सुदीन के दो पुत्र भरमू, जगनी हुये। जगनी के दो पुत्र—दरियाव, भुलुवा हुये। भुलुवा के दो पुत्र-गिरधारी, सधारी हुये। गिरधारी के दो पुत्र-रामप्यारे, पराग हुये।

(१०) दसवाँ वृद्ध।—इसुरी मौहाखेरा में बसे। इसुरी के तीन

हुये । मन्ना के तीन पुत्र-गंगाचरण, रामचरण, शिवचरण हुये । सीताराम के चेला हुआ । चेला के दो पुत्र—पराग, नारायण हुये ।

(११) ग्यरवां वृद्ध—बुद्धों कुन्देरामपुर में बसे । बुद्धो के दो पुत्र-मथुराप्रसाद, चतुरी हुये । मथुरा के एक पुत्र जेठू हुआ । जेठू के दो पुत्र बंशीधर, रामनाथ हुये ।

(१२) बारवां वृद्ध—गुन्नू कुन्देरामपुर में बसे । गुन्नू के एक पुत्र-गंगादीन हुआ । गंगादीन के दो पुत्र-दल्लू, दूबरि हुये । दूबरि के तीन पुत्र-रामदयाल, खुशाली, बद्रीप्रसाद हुये । रामदयाल के दो पुत्र—रामराज, शिवराज हुये । खुशाली के एक पुत्र-मुन्शी हुआ ।

(१३) तेरहवां वृद्ध—नैन और तेजा दोनो भाई कुन्देरामपुर में बसे । नैन के पांच पुत्र—थान, उमराय, पूसू, गयादीन पञ्चम, हुये । थान के दो पुत्र हरीलाल, भगवानदीन हुये । पूसू के एक पुत्र—रामबालक हुआ । रामबालक के एक पुत्र—देबीदयाल हुआ । गयादीन के दो पुत्र—रामप्यारे देवनन्दन हुये । रामप्यारे के एक पुत्र-भिखारी हुआ । देवनन्दन के एक पुत्र देवीचरण हुआ ।

(१४) चौदवां वृद्ध । दुर्जन, भिखारी, थान तीनो भाई कुन्देरामपुर में बसे ।

(१५) पन्द्रवां वृद्ध । सबूरी कुन्देरामपुर में बसा । सबूरी के तीन पुत्र—मैकू, मथुरा, जगन्नाथ हुये । मैकू के एक पुत्र—रजना हुआ । रजना के के एक पुत्र अज्ञात नाम हुआ । जगन्नाथ के एक पुत्र—असीटे हुआ ।

(१६) सोलवां वृद्ध-कुंवर कुन्देरामपुर में बसा । कुंवर के एक पुत्र पुन्ना हुआ । पूरन के एक—पुत्र मैइकू हुआ । मैइकू के दो पुत्र—गजोधर जगन्नाथ हुआ ।

(१७) सत्तरवां वृद्ध । भवानीदीन कुन्देरामपुर में बसा । भवानीदीन के दो पुत्र—तेजा, हरदेव हुआ । तेजा के एक पुत्र—बालगोविन्द हुआ । बालगोविन्द के एक पुत्र—बैजनाथ हुआ ।

(१८) अठारवाँ वृद्ध । पूसू कुन्देरामपुर में बसे । पूसू के दो पुत्र सहाँय, खेवान हुये । सहाँय के दो पुत्र—रामप्यारे गजोधर हुये । रामप्यारे के एक पुत्र—भजनी हुआ ।

(१६) उन्नीसवां वृद्ध। मुन्नू और कँधई दोनो भाई कुन्देरामपुर में बसे ।

(२०) बीसवां वृद्ध । भदई कुन्देरामपुर में बसे । भदई के तीन पुत्र-मोहन, बदलू, माखन हुये । माखन के एक पुत्र—रामपाल हुआ । रामपाल के चार पुत्र—हजारी, जुगराज, राजाराम, केवल हुये। हजारी के दो पुत्र—केदार अज्ञात नाम हुये। राजाराम के एक पुत्र—अज्ञात नाम हुआ।

(२१) इक्कीसवाँ वृद्ध। परमसुख कुंदेरामपुर में बसे। परमसुख के एक पुत्र—खरगा हुआ । खरगा के एक पुत्र—छेदू हुये। छेदू के एक पुत्र—भगवानदीन हुआ ।

(२२) बाइवाँ वृद्ध-सल्हू कुंदेरामपुर में बसे । सल्हू के एक पुत्र मैइकू हुआ।

(२३) तेइसवां वृद्ध। देवान, छबीले, माखन तीनों भाई कुंदेरामपुर में बसे। छबीले के एक पुत्र- लाला हुआ । लाला के एक पुत्र छेदा हुआ। छेदा के तीन पुत्र—भगवानदीन, देवीचरण, रामनारायण हुये । माखन के एक-पुत्र ईश्वरनंद हुआ। ईश्वरनंद के दो पुत्र रामरतन, दयाराम हुये ।

(२४) चौबीसवाँ वृद्ध । गनेस, बलदा, खुमान, उमराव ये चारो कुरमी रामपुर में जाकर बसे । गनेस के दो पुत्र-मट्ठू मथुरा पुये। मट्ठू के दो पुत्र-अज्ञात नाम। मथुरा के दो पुत्र अज्ञात नाम ।

(२५) पच्चीसवां वृद्ध । भिखारी कुर्मी रामपुर में जाकर बसे। भिखारी के दो पुत्र-सांवल, बदली हुये । सांवल के तीन पुत्र भगवान-दीन, रामा, भैरम हुये। रामा के तीन पुत्र-पराग, छोटा, रामलाल हुये। रामलाल के एक पुत्र- बगाड़ हुआ । भैरम के दो पुत्र-रामनारायण गिरधर हुये ।

(२६) छब्बीसवाँ वृद्ध। बज्जी जो कि रामपुर आकर फरीदपुर में जा बसे। बज्जी के एक पुत्र-रामशंकर हुआ ।

(२७) सत्ताइसवां वृद्ध। कल्लू माझे के पुरवा में जाकर बसे। कल्लू के एक पुत्र-महँगा हुआ। महंगा के चार पुत्र-जगन्नाथ यह रामपुर से माझे के पुरवा में आया। जगन्नाथ के दो पुत्र-प्रहलाद, खेला हुये।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (कुन्देरामपुर)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध-

(१) पहला वृद्ध-चन्दी पतारी में जाकर बसे। चन्दी के एक पुत्र-रामचरण हुवा। रामचरण के एक पुत्र-महादेव हुवा। महादेव के एक पुत्र-बदलू हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध-भैरम लखनीपुर में जाकर आबाद हुआ। भैरम के एक पुत्र गयादीन हुआ। गयादीन के दो पुत्र-देवीचरण, चौबा हुये जो दोनों पतित हैं।

(३) तीसरा वृद्ध-चिन्ता दिलावलपुर में जाकर बसे, चिन्ता के तीन पुत्र दीना, लल्लू, माखन हुये। दीना के एक पुत्र जुरावन हुआ। जुरावन के एक पुत्र—ठाकुरदीन हुआ। लल्लू के एक पुत्र—बबुली हुआ। बबुली के एक पुत्र—मूडू हुआ। मूडू के एक पुत्र—रामाधीन हुआ। माखन के एक पुत्र भिखारी हुआ। भिखारी के तीन पुत्र—दीनदयाल, महादेव, मन्नू हुये दीनदयाल के एक पुत्र—शिवप्रसाद हुआ। महादेव के एक पुत्र—रामरतन हुआ। मन्नू के एक पुत्र—सुखलाल हुआ।

(४) चौथा वृद्ध—सुक्खा बाबूपुर में जाकर बसे। सुक्खा के दो पुत्र मैइना, अर्जुन हुये। मैइना के तीन पुत्र—मनोहर, रामप्रसाद, देवीचरण हुये मनोहर के एक पुत्र—द्वारिका हुआ। अर्जुन के चार पुत्र अयोध्याप्रसाद, बदरीप्रसाद, मुरलीधर बंशीधर हुये। मुरलीधर के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुआ।

(५) पाचवां वृद्ध भागीरथ कुन्देरामपुर में जाकर बसे, भागीरथ के दो पुत्र—रत्तू हरिकिसुन हुये। रत्तू के दो पुत्र—धसिलावन गोपाल हुये। धसिलावन के दो पुत्र—फगुना फकीरे हुये। फगुना के एक पुत्र-हजारीहुआ। हजारी के एक पुत्र-महावीर हुआ। गोपाल के पांच पुत्र-राजाराम, सुखलाल, कामताप्रसाद, बेनीप्रसाद, गजोधरलाल हुये। राजाराम के तीन पुत्र—पूरन, भगवानदीन, रंगीलाल हुये। पूरन के दो पुत्र—प्रताप, भागीरथ हुये।

भगवानदीन के एक पुत्र-जगमोहन हुआ । सुखलाल के एक पुत्र-श्यामलाल हुआ। कामताप्रसाद के एक पुत्र-खुशालीराम हुआ। खुशालीराम के दो पुत्र-लालजी, मदारी हुये । बेनी के तीन पुत्र-मेडू, जगन्नाथ, रामरतन हुये। मेडू के एक पुत्र-शिवराज हुआ । गजोधरप्रसाद के दो पुत्र-गुलजारीलाल, भदाली हुये । गुलजारीलाल के तीन पुत्र—मोहनलाल, गंगाचरण, मेवालाल हुये ।

(६) छठा वृद्ध-भर्दई कुन्देरामपुर में बसे। भर्दई के तीन पुत्र-पञ्चम, काशी, दनक हुये। पञ्चम के दो पुत्र-हुलासी, लछिमनप्रसाद हुये । लछिमन के एक पुत्र सकठू हुआ। सकठू के तीन पुत्र-साहुन, द्वारिकाप्रसाद, शिवराम हुये। साहुन के दो पुत्र-मेवालाल, मिठ्ठलाल हुये। द्वारिकाप्रसाद के एक पुत्र-शिवराज हुआ। काशी के तीन पुत्र-तुलाराम, मुन्ना, रामचरण हुये। तुलाराम के दो पुत्र-चन्दी, बन्दी हुये । चन्दी के एक पुत्र-मन्नू हुआ । मन्नू के एक पुत्र-गयाप्रसाद हुआ। दनक के एक पुत्र गिरधारी हुआ । गिरधारी के दो पुत्र-दुरजा, चेला हुये ।

(७) सप्तम् वृद्ध-हल्लू कुन्दे रामपुर में बसे । हल्लू के एक पुत्र-रामप्रसाद हुआ। रामप्रसाद के दो पुत्र—विश्वनाथ, भगवानदीन हुये । विश्वनाथ के दो पुत्र—पूसू, घसीटे हुये । घसीटे के एक पुत्र-बैजनाथ हुआ।

(८) आठवाँ वृद्ध—बोधी कुन्देरामपुर में बसे । बोधी के दो पुत्र नारायण, बुलाकी हुये । बुलाकी के तीन पुत्र-मोहकम, सिद्धनाथ, साहुनलाल हुये। मोहकम के दो पुत्र-रामाधीन बल्देव हुये। रामअधीन के दो पुत्र-सुखदेव, प्रसादी हुये। बल्देव के दो पुत्र-मेवालाल, मोतीलाल हुये। साहुन के तीन पुत्र—रामरतन, शिवरतन, राजाराम ।

(९) नवां वृद्ध—काशी कुन्देरामपुर में बसे । काशी के दो पुत्र भोला, तुला हुये । भोला के एक पुत्र जियालाल हुआ। तुला के दो पुत्र लछिमन, निवाजी हुये । निवाजी के तीन पुत्र—मुखलाल, शिवलाल, शिवराज हुये ।

(१०) दसवां वृद्ध-मोती कुन्दे रामपुर में बसे। मोती के चार पुत्र छबीले, भवानीदीन, माखन, खेमान, हुये। खेमान के दो पुत्र-मन्ना, सीताराम

पुत्र-बदला, बरजोरा, कामता हुये। बरजोरा के दो पुत्र—दयाराम, रामेश्वर हुये। रामेश्वर के दो पुत्र—गंगाचरण, देवीचरण हुये।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध।-छीटू मौहाखेरा में बसे। छीटू के तीन पुत्र—कालिका, कल्लू, लाला हुये। कालिका के एक पुत्र-मैइका हुवा। लाला के दो पुत्र-छेदा, परसदिया हुये,। छेदा के एक पुत्र-सुकुरू हुवा। सुकुरू के एक पुत्र-रामगोपाल हुवा। परसादी के दो पुत्र-शिवबालक, रामनारायण हुवे।

(१२) बारहवाँ वृद्ध-ईश्वरी हुये यह मौहाखेरा में बसे। ईश्वरी एक पुत्र-गोकुल हुवा। गोकुल के एक पुत्र-छेदालाल हुवा।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (असदांनहा)

उमरहार कुर्मी वंशांतर्गत भरद्वाज गोत्र में प्रथम परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहला वृद्ध—मोती मौहाखेरा में जाकर बसे। मोती के तीन पुत्र—बल्दी, सिखारी, भवानी हुये। भवानी के चार पुत्र—मैइका, दीनदयाल, रामचरण, रद्धू हुये। मैइका के दो पुत्र—पूसू, रघुबर हुये। पूसू के दो पुत्र-चेला, बैजनाथ हुये। रामचरण के दो पुत्र-कृपालु, भूरा हुये। कृपालु के तीन पुत्र—नारायण, भगवानदीन, सीताराम हुये। रद्धू के तीन पुत्र—लछिमन, गजोधर, पूरन हुये। पूरन के पांच पुत्र—बदरी, किदार, पराग, रमाशंकर, रामाधार हुये।

(२) दूसरा वृद्ध—दीनदयाल जियनपुर में जाकर बसे। दीनदयाल के चार पुत्र-कालीचरण, छोटा, रामकृष्ण, मन्नीलाल हुये।

(३) तीसरा वृद्ध-भोंड़े और भैरम दो भाई धनसिंहपुर में बसे। भोंड़े के एक पुत्र-लाला हुवा। लाला के एक पुत्र- गंगाचरण हुवा।

(४) चौथा वृद्ध-जवाहिर, रामबकस, हीरा, तीन भाई थे जो कि धनसिंहपुर में जाकर बसे। जवाहिर के एक पुत्र- खुमान हुवा। हीरा के एक पुत्र-बल्लु हुवा।

(५) पांचवाँ वृद्ध-बकतावर फिरोजपुर में जाकर बसे। बकतावर के दो पुत्र-पँगा, पुत्ती हुये। पुत्ती के दो पुत्र-गिरधारी, मंगली हुये।

(६) छठवां वृद्ध-दीनदयाल रुसिया में जाकर बसे। दीनदयाल के पांच पुत्र-मन्नो, रामाधीन, कालीचरण, छोटा, बालकिशुन हुये। मन्नो कालीचरण, बालकिशुन औरछोटा ये सब जियापुर में रहते हैं।

(७) सप्तम वृद्ध-चूरामणि दिलापुर में जाकर बसे। चूरामणि के एक पुत्र-महादेव हुवा। महादेव के दो पुत्र-रामलाल, श्यामलाल हुये। रामलाल के तीन पुत्र-विंदा, जगमोहन, अयोध्या हुये।

(८) आठवां वृद्ध-दम्मा धिरजाया में जाकर बसे। दम्मा के एक पुत्र-धन्नू हुवा। धन्नू के चार पुत्र-गयादीन, बहादुर, मँहगू, झाड़ू, हुये। बहादुर के एक पुत्र-चेला हुवा। चेला के चार पुत्र-देवीदयाल, देवीचरण, मुरली, मिरचई हुये। महँगू के चार पुत्र-राजा, ठाकुरदीन, बच्चा, छोटेलाल हुये। झांडू के एक पुत्र-प्रहलाद हुवा। प्रहलाद के एक पुत्र-भल्लूराम हुआ राजा के दो पुत्र अज्ञात नाम।

(९) नवां वृद्ध-दुरगा धिरजापुर में जाकर बसे। दुरगा के एक पुत्र-मन्नू हुवा। मन्नू के एक पुत्र- देवीदीन हुवा। देविया के दो पुत्र-श्यामलाल बैजनाथ हुये। श्यामलाल के एक पुत्र-महावीर हुवा।

(१०) दशवां वृद्ध। बख्श और पूरन दो भाई असधना में ही बसे। पूरन के तीन पुत्र—भिखारी, तुलाराम और केवल हुये। भिखारी के दो पुत्र नरोत्तम और मानसिंह हुये। नरोत्तम के एक पुत्र-मिट्ठूलाल हुआ मिट्ठू लाल के तीन पुत्र—गयाप्रसाद, सूरजप्रसाद और रामकिशोर हुये। तुला के दो पुत्र बैजनाथ और दालचन्द्र हुये। बैजनाथ के दो पुत्र-कालिका और नारायण हुये। केवल के चार पुत्र परमसुख, मन्नी, मनोहर और मनऊं हुये। परमसुख के दो पुत्र—तुलसीराम और कन्हई हुये। तुलसीराम के दो पुत्र—बेना और रामनारायण हुये। रामनारायण के एक पुत्र—द्वारिकाप्रसाद हुआ। कन्हई के दो पुत्र—जोधा और सीताराम हुये। जोधा के एक पुत्र-शिवनारायण हुआ। मन्नी के तीन पुत्र गोविन्दप्रसाद, रामसहाय और जगतनारायण हुये। गोविन्दप्रसाद के एक पुत्र राजाराम हुआ। राजा के दो पुत्र—रामबकस, और रामभजन हुये। जगतनारायण के दो पुत्र निवजी और रज्जन हुये। मनोहर के तीन पुत्र—काशीप्रसाद, विशेश्वर और गंगाप्रसाद हुये। विशेश्वर के दो पुत्र-शिवरतन और फतेहचंद हुये।

शिवरतन के तीन पुत्र—यह खानपुर में जाकर बसे । गंगाप्रसाद के दो पुत्र रामस्वरूप और बैजनाथ हुये । मनऊ के दो पुत्र दालचन्द और शिवप्रसाद हुए ।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध । दलीपा असधना में बसे । दलीपा के दो पुत्र—मयादीन और दयाराम हुये । गयादीन के पांच पुत्र-लोके, तारापति, धरई, भीम, और भवानीदीन हुये । तारापति के तीन पुत्र-जगन्नाथ, हृदयाल और रामेश्वर हुआ । यह पतित हो गये । भीम के एक पुत्र—रामरतन हुआ पतित हो गया । दयाराम के दो पुत्र—ठाकुरदीन और भवानीदीन हुये । यह पतित हो गये ।

(१२) बारवां वृद्ध । घनश्याम असधना में बसे । घनश्याम के के तीन पुत्र-बिजुआ, दलीप और टुइंयाँ हुये बिजुआ के एक पुत्र—मदारी हुआ । मदारी के दो पुत्र—चद्रभूषण और अज्ञात नाम है । काशी के एक पुत्र-कालिका हुआ । कालिका के एक पुत्र—देवीदयाल हुये । देवीदयाल के दो पुत्र—राजाराम और शिवप्रसाद हुये । गयादीन के दो पुत्र प्रहलाद और शिवचरण हुये । प्रहलाद के दो पुत्र-गिरवर और नैनसुख हुये । गिरवर के दो पुत्र-श्यामलाल और रामेश्वर हुये । नैनसुख के चार पुत्र-रामलाल, रामसेवक, रामकुबेर और चौथे का नाम अज्ञात है ।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध । मथुरा असधना में बसा । मथुरा के एक पुत्र बदरी हुवा ।

(१४) चौदहवाँ वृद्ध । बिन्दा और छेदू दो भाई असधना में बसे बिन्दा के दो पुत्र—द्वारिका, और दूसरे का नाम अज्ञात हुवा । द्वारिका के तीन पुत्र अयोध्या, बाबूलाल, और बंशलाल हुये । छेदू के दो पुत्र-दीनदयालु, और रंगीलालाल हुये ।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध । बैजनाथ असधना में बसा बैजनाथ के दो पुत्र—कालिका और नारायण हुये यह पतित हो गये ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (मकन्दीपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहला वृद्ध । भदई जो नयापुरवा में जाकर बसा । भदई के एक पुत्र कन्हई हुवा । यह मकन्दीपुर से आकर नयापुरवा में बसा । कन्हई के दो पुत्र जगन्नाथ, चैतुवा हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । पूरण यह जाकर मौहाखेरा में बसे । पूरण के दो पुत्र सोनी, जेठूप्रसाद हुये ।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (झरहाखेरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) जुराखन दरियापुर से धमना चला गया ।

(२) दूसरा वृद्ध । भइयाराम धमना में बसे । भइयाराम के एक पुत्र राजा हुवा राजा के दो पुत्र रामरतन, दूसरे का अज्ञात नाम हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । गनेश महुवाखेरे में बसे । गनेश के एक पुत्र रद्धू हुवा । रद्धू के तीन पुत्र कालिका, ख्याली, भूरा हुये । भूरा के दो पुत्र छोटन, मोतीलाल हुये ।

(४) चौथा वृद्ध । आशादीन हुये । यह झरहाखेर से जाकर गुलाबपुर में बसे । आशादीन के दो भाई भिखारी और भगवानदीन हुये ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (गोंदहा वाले)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहला वृद्ध । फक्कीरे मौहाखेरे में जाकर बसे । फक्कीरे के एक पुत्र—रामनाथ हुवा । रामनाथ के एक पुत्र—राजा हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । अर्जुन गोंदहा से जाकर श्यमबांखेरा में बसे । अर्जुन के एक पुत्र-दिकपाल हुवा । दिकपाल के एक पुत्र-बदरी हुवा । बदरी के दो पुत्र-शिवनारायण, दूसरे का अज्ञात नाम हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । कल्लू गोंदहा में बसे । कल्लू के तीन पुत्र-जवाहिर पन्नू, बैजनाथ हुये । पन्नू के एक पुत्र-ठाकुरदीन हुवा । ठाकुरदीन के एक पुत्र भवानीप्रसाद हुवा । भवानीप्रसाद के दो पुत्र-रामनाथ, होमनाथ हुये । बैजनाथ के एक पुत्र-गयादीन हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । हीरालाल गोंदहा में बसे । हीरालाल के दो पुत्र दुर्जा, सुर्जा हुये । दुर्जा के तीन पुत्र—गंगा, भदई, पीतम हुये । गंगा के दो पुत्र छेदू, पञ्चा हुये छेदू के दो पुत्र—भगवानदीन, लाल जी हुये । पीतम के दो पुत्र महँगू, बसन्ता हुये । महँगू के एक पुत्र—महादेव हुवा । सुरजा के एक पुत्र साँवल हुवा । साँवल के एक पुत्र—रामलाल हुवा ।

(५) पाँचवाँ वृद्ध । छङ्गा गोंदहा में बसा । छङ्गा के दो पुत्र–नारायण, अज्ञात नाम हुये ।

(६) छठवाँ वृद्ध । मेड़ू गोंदहा में बसा । मेड़ू के चार पुत्र–धौकल, खेमना, कड्डड़ा, भगावन हुये । धौकल बुधौली चला गया । खेमना के एक पुत्र बदला हुवा । बदला के दो पुत्र–राजाराम, सुखनन्दन हुये । राजाराम के दो पुत्र –दयाराम, दूसरे का अज्ञात नाम हुये ।

(७) सातवाँ वृद्ध । सदियाँ गोंदहा में बसा । सदियाँ के एक पुत्र ठाकुरराम हुवा । ठाकुरराम के तीन पुत्र–गयादीन, अहिदा, महदी हुये । गयादीन के तीन पुत्र—दीनदयाल, रामसेला, भगवानदीन हुये । दीनदयाल के दो पुत्र—भोखू, देवीचरण हुये । रामसेला के दो पुत्र—रामपाल, अज्ञात नाम हुये । महदी के चार पुत्र—रामा, बल्दी, राजाराम, मोहन हुये । रामा के एक पुत्र—बाबूलाल हुवा ।

(८)आठवाँ वृद्ध । गंगू गोंदहा में बसा । गंगू के तीन पुत्र—घासिल गजोधर, अयोध्या हुये । घासिल के तीन पुत्र-चिरन्जू, गोकुल, भागीरथ हुये । गोकुल के एक पुत्र—बद्रीप्रसाद हुवा भागीरथ के दो पुत्र—सेवक, देवीदयाल हुये । गजोधर के एक पुत्र--कालीचरण हुवा ।

(९) नवाँ वृद्ध । भवानी गोंदहा में बसे । भवानी के दो पुत्र गंदेत सेवक हुये । गेन्दा के दो पुत्र आलिम, मक्खा हुये । मक्खा के पुत्र अम्बादीन, जुराखन हुये । अम्बादीन के दो पुत्र रामगोपाल, जगन्नाथ हुये । जुराखन के दो पुत्र हनूमान, प्रहलाद हुये ।

(१०) दसवाँ वृद्ध । कौंरा और शिवप्रसाद दोनों भाई गोंदहा में बसे । कौंरा के एक पुत्र–ईश्वरी हुवा । ईश्वरी के एक पुत्र-बदला हुवा । बदला के दो पुत्र-दुलीचन्द, छोट्टू हुये । शिवप्रसाद के एक पुत्र—घुरमू हुवा । घुरमू के एक पुत्र—खेदू हुवा ।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध । सिद्ध और पुत्तिया ये दोनों भाई गोंदहा में बसे ।

(१२) बारहवाँ वृद्ध । भदई गोंदहा से जाकर किसरि में बसे । भदई के दो पुत्र–कल्लू और रामकिशोर हुये । कल्लू के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा । भगवानदीन के तीन पुत्र मेवालाल और दो के नाम अज्ञात हुये ।

गोत्र कश्यप परम्परागत (सीतापुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहला वृद्ध। बदलू सीतापुर से जाकर लखनीपुर में बसे। बदलू के एक पुत्र सिलोका हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। दम्मर डिघरुवा में जाकर बसे। दम्मर के दो पुत्र कामता, छोटेलाल हुये। कामता के एक पुत्र—छेदालाल हुवा। छेदालाल के तीन पुत्र—मैकूलाल, गंगाचरण तीसरे का अज्ञात नाम हुये (नयेपुरवा चला गया है)।

(३) तीसरा वृद्ध। भोला सीतापुर में बसा। भोला के एक पुत्र—दसुरी हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। राजा फरीदपुर में सीतापुर से जाकर बसा। राजा के दो पुत्र—गोपाल, बंशगोपाल हुये।

गोत्र भरद्वाज पम्परागत (बड़िगँवँहा)

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहिला वृद्ध। गंगादीन बड़िगवाँ में बसा गंगादीन के तीन पुत्र- तुलवा, भगवन्त, सुखवा हुये। तुलवा के एक पुत्र—बक्सी हुआ। भगवन्त के दो पुत्र-ठाकुरदीन, भगवानदीन हुये। ठाकुरदीन के एक पुत्र—गंगाचरण हुआ। भगवानदीन के एक पुत्र-गंगादीन हुआ। सुखवा के चार पुत्र—उमराव बबोले, महादेव, लछिमन हुये। उमराव के दो पुत्र—रामनारायण, शिवनारायण हुये। बबोले के एक पुत्र—कालीचरण हुआ। महादेव के एक पुत्र-बदरी हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। दंगी बड़िगवाँ में बसा। दंगी के दो पुत्र-दीनदयालु, छुन्नूलाल हुये। दीनदयाल के तीन पुत्र—छेदू, दुर्जा, खुशाली हुये। छेदू के दो पुत्र—दोनो का अज्ञात नाम हुये। दुर्जा के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुआ। छुन्नू के पुत्र-चन्द्रभूषण हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। घोघी बड़िगवाँ में बसे घोघी के तीन पुत्र-बदल पराग, [illegible] हुये। बदल के दो पुत्र-[illegible], [illegible] हुये। [illegible] के एक पुत्र-[illegible] हुये।

(४) चौथा वृद्ध । त्रिलोका बड़िगवाँ में बसे । त्रिलको के दो पुत्र-देबीदीन, शिवबकस हुये। यह पतित हो गये ।

(५) पाचवाँ वृद्ध । गिरधारी बड़िगवां में बसे । गिरधारी के एक पुत्र--पितम्बर हुआ । पितम्बर के तीन पुत्र-पतित हो गये ।

(६) छठवाँ वृद्ध । बैरागी बड़िगवाँ में बसे । बैरागी के एक पुत्र--लोचन हुआ। लोचन के दो पुत्र-पतित हो गये ।

(७) सातवाँ वृद्ध जवाहिर बाड़िगवाँ में बसे । जवाहिर के तीन पुत्र--आसवा, विसुआ, पुत्तियाँ हुये ।

(८) आठवां वृद्ध । रामलाल मडिग्रहुआ में अबाद है। रामलाल का का दूसरा भाई कल्लू यह बड़िगवाँ से घमना में रहता है। कल्लू के तीन पुत्र-परसराम, बेनी, दयाराम हुये। यह तीनों पतित हो गये ।

(९) नवाँ वृद्ध । पराम बड़िगवां से घमना चले आये और पतित हो गया ।

(१०) दसवाँ वृद्ध । खुशाली बड़िगवाँ से जाकर सीतापुर में आवाद हुये । खुशाली के दो पुत्र-कल्लु, भूषण हुये। भूषण के एक पुत्र-गयादीन हुआ ।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध । कालिका, पगला, रामचरण, भगावन चार भाई हुये। यह लोग खाईपुर में बसे ।पगला और उसके भतीजे पतित हो गये।

(१२) बारहवाँ वृद्ध । मूनू बड़िगवाँ से जाकर दिलावलपुर में बसे । मूनू के एक पुत्र बैजनाथ हुआ । बैजनाथ के तीन पुत्र-फकीरे, बोड़े, चिनगा हुये ।फकीरे के एक पुत्र-गोपाली हुआ। गोपाली के एक पुत्र-मैकू हुआ । चिनगा के एक पुत्र-लल्लू हुआ । लल्लू के दो पुत्र-बदरी और देबीदयाल हुये। देबीदयाल के एक पुत्र—मेवालाल हुआ ।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध । नन्दा और जोधा दोनों भाई भगौनापुर (सलेमपुर) में जाकर बसे । नन्दा के दो पुत्र-दीनदयाल, भगवन्त हुये। भगवन्त के एक पुत्र—विदेशिया हुआ । विदेशिया के एक पुत्र-बासदेव हुआ। जोधा के १ पुत्र—परसाद हुआ । परसाद के एक पुत्र—महाराजा हुआ । महाराजा के दो पुत्र-गजोधर, मोहनलाल हुये ।

(१४) चौदवाँ वृद्ध । तेजा बड़िगवाँ से जाकर भाजीताला में बसे। तेजा के दो पुत्र—जवाहिर, गनेश हुये। गनेश के दो पुत्र—छक्कू दुल्लू हुये।

(१५) पद्रहवाँ वृद्ध। रम्मा बड़िगवाँ से जाकर पारा में बसे। रम्मा के दो पुत्र—सरयू और जगन्नाथ हुये। सरयू के तीन पुत्र-बदरी, सेफला, रामनारायण हुये । सेफला के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये।

(१६) सोलहवाँ वृद्ध। गहरा और लाला दो भाई पारा में जाकर बसे। लाला के दो पुत्र-द्वारिका और प्रथ्वीराज हुये।

(१७) सत्रहवाँ वृद्ध। लल्लू बड़िगवाँ से जाकर हिम्मतपुर में बसे। लल्लू के एक पुत्र—मन्ना हुआ। मन्ना के तीन पुत्र—चेला, हजारी, गया हुये। चेला के तीन पुत्र-रामलाल, श्यामलाल और तीसरे का नाम अज्ञात हुये। हजारी के एक पुत्र—संकठा हुआ।

गोत्र कश्यप परम्परागत (बकिया पुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञातवृद्ध

(१) पहला वृद्ध। तेजा बकियापुर में बसे। तेजा के दो पुत्र—सतान, निहाल हुये। निहाल के एक पुत्र—चौवा हुआ। चौवा के दो पुत्र—जेठू, अज्ञात नाम हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। छिद्दा बकियापुर में बसे। छिद्दा के तीन पुत्र जजागर, दलीप, वैजू हुये। दलीप के दो पुत्र—टिकया, बदरी हुये, बदरी के एक पुत्र—कुंवर हुवा। बैजू के दो पुत्र—सिद्धा, रामलाल हुये। सिद्धा के दो पुत्र—गयाप्रसाद, दुर्गाप्रसाद हुये, रामलाल के दो पुत्र—शिवनाथ, रघुनाथ हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। दुर्जन बकियापुर में बसा। दुर्जन के एक पुत्र जवाहिर हुवा। जवाहिर के एक पुत्र—केवल हुवा। केवल के एक पुत्र—देवीदयाल हुवा।

(४) चौथा वृद्ध—खुशाली बकियापुर में बसे। खुशाली के तीन पुत्र रामसहाँय, रामदयाल, दनकऊ हुये। रामसहाँय के दो पुत्र—जुराखन, चिरंजू हुये। जुराखन के दो पुत्र—असोटे, प्यारेलाल हुये। चिरंजू के दो पुत्र—बिन्दा रोशन हुये। रामदयाल के दो पुत्र-दालचन्द, नवल हुये। नवल के दो पुत्र जगन्नाथ, श्यामलाल हुये। जगन्नाथ के दो पुत्र-फदाली शिवप्रसाद हुये।

श्यामलाल के दो पुत्र-भगवान, नारायण हुये। इनकऊ सीतापुर चले गये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। चन्दी बकियापुर में बसा। चन्दी के एक पुत्र चैतू हुवा। चैतू के एक पुत्र-रामेश्वर हुवा।

(६) छठा वृद्ध मदई बकियापुर में बसे। मदई के तीन पुत्र मैका, सैका, साँवले हुये। मैका के एक पुत्र—भैरम हुवा। भैरम के दो पुत्र-हेमनाथ, महाबीर, हुये। महाबीर के दो पुत्र—दयाराम, दयाशंकर हुये। सैका के दो पुत्र-गनेश, कङ्गला हुये।

(७) सातवाँ वृद्ध। खुशाली बकियापुर से सीतापुर में बसे। खुशाली के एक पुत्र-पञ्चम हुवा। पञ्चम के तीन पुत्र—रामचरण, मानू, रामजी हुये। मानू के एक पुत्र-राजाराम हुवा। रामजी के एक पुत्र—रामलाल हुवा।

गोत्र काश्यप परम्परागत [हिम्मतपुरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध,

(१) पहला वृद्ध। दूबरि हिम्मतपुर से सीतापुर जाकर बसे। दूबरि के एक पुत्र-तोन्दा हुवा। तोन्दा के तीन पुत्र-प्यारेलाल, महाबीर, तीसरे का अज्ञात नाम हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। कालिका हिम्मतपुर से रवाईपुर में जाकर बसे कालिका के एक पुत्र-भंगड़ हुवा। भंगड़ के तीन पुत्र देवीचरन, प्रहलाद, तीसरे का अज्ञात नाम हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। सधारी हिम्मतपुर से जाकर खदरा में बसे। सधारी के एक पुत्र-छेदू हुवा। छेदू के एक पुत्र-कामता हुवा। कामता के चार पुत्र-गजोधर, बिन्दा, सूरजदीन, जगन्नाथ हुये। बिन्दा के एक पुत्र नाम अज्ञात हुवा।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत [आशापुरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहला वृद्ध। मेडुवा और कल्लू दो भाई थे। जो कि आशापुर से जाकर सीतापुर में बसे। मेडू के एक पुत्र—चेला हुवा। चेला के एक पुत्र अज्ञात नाम हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध । धन्नू आसापुर से जाकर ममनापुर में बसा । और गयादीन भी चला गया । धन्नू के एक पुत्र—दुल्लू हुवा । दुल्लू के दो पुत्र जुराखन, जोला हुये । जुराखन के एक पुत्र—महादेव हुवा । महादेव के दो पुत्र दर्शन. बड़कू हुये । गयादीन के पाँच पुत्र—गनेश, जवाहिर, दुर्गा, भवानीदीन, साँवल हुये । गनेश के तीन पुत्र-मलूक, कल्लू बाबाजी हुये । जवाहिर के एक पुत्र-दनका हुआ । दुर्गा के चार पुत्र—शम्भू, शीतल, मितला, गोपाल हुये । शम्भू के दो पुत्र—मैका, मन्ना हुये । मैका के तीन पुत्र-रघुनाथ, बदरी, रघुनन्दन हुये । शीतल के दो पुत्र—भदईं, सदईं हुये भदईं के दो पुत्र चन्द्रनारायण शिवनारायण हुये । सेदईं के एक पुत्र—रामनारायण हुवा । मितला के एक पुत्र दुलारे हुवा । गोपाल के एक पुत्र—रामप्रसाद हुवा । भवानी के चार पुत्र—मन्नू, लाला, झूरी, रामचेला हुये । लाला बाबूपुर चला गया । मन्नू के एक पुत्र—छोटा हुवा । झूरी के एक पुत्र—बल्देव हुवा । बल्देव के दो पुत्र—शिवराम, शिवभजन हुये । रामचेला के तीन पुत्र-लछिमन, रामरतन, शिवरतन हुये । साँवल के एक पुत्र—जियालाल हुवा । जियालाल के तीन पुत्र-चन्ना, ईश्वरी, मौला हुये । चन्ना के दो पुत्र—हजारी, महाबीर हुये । ईश्वरी के एक पुत्र—गयाप्रसाद हुवा ।

(३) तीसरा वृद्ध । मेडू आशापुर से जाकर मेढ़ापाटी में बसे । मेडू के एक पुत्र दयाराम हुवा । दयाराम के एक पुत्र—भिखारी हुवा । भिखारी के एक पुत्र—ज्वालाप्रसाद हुवा । ज्वाला के एक पुत्र—गजोधर हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । बैजनाथ आसापुर से जाकर श्यमवाँखेरे में बसे । बैजनाथ के दो पुत्र-दुर्जन, पञ्चम हुये । दुर्जन के एक पुत्र—भैरम हुवा । भैरम के एक पुत्र-मान हुवा । पञ्चम के एक पुत्र-लाला हुवा । लाला के दो पुत्र चतुरी, परम हुये । परम के एक पुत्र-जगन्नाथ हुवा ।

(५) पांचवाँ वृद्ध । भल्लू और कल्लू दोनों भाई आसापुर से जाकर फरीदपुर में बसे । भल्लू के एक पुत्र-छेदू हुवा । छेदू के एक पुत्र—गुलजारी गुलजारी के तीन पुत्र-मेडू, सुर्जपाल, तीसरे का अज्ञात नाम हुये । कल्लू के तीन पुत्र-बदली, चन्दी, बन्दी हुये । बन्दी के एक पुत्र—जियालाल हुवा । जियालाल के दो पुत्र-गयादीन देवीप्रसाद हुये ।

(६) छठाँ वृद्ध-रामचेला आशापुर से आकर फरीदपुर में बसा। रामचेला के दो पुत्र—मनियाँ, जगन्नाथ हुये। मनियां के एक पुत्र मथुरा हुवा।

(७) सातवां वृद्ध-भवन हुये। यह आसापुर में बसे। भवन के तीन पुत्र-भद्दू, ठाकुरदीन, और रामदीन हुये। भद्दू के दो पुत्र—दमरा, और लूला हुये। दमरा के तीन पुत्र-दुरगा, बदला और लछिमन हुये। दुरगा के तीन पुत्र-जियालाल, मैइका और गयादीन हुये। मइका के एक पुत्र-बैजनाथ हुवा। गयादीन के एक पुत्र-रामचेला हुवा। रामचेला के एक पुत्र-मोतीलाल हुवा बदला के एक पुत्र-चतुरा हुवा। चतुरा के एक पुत्र—रामसहांय हुवा। रामसहांय के पुत्र-सत्तीदीन हुवा। लूला के तीन पुत्र—कुदना, गोकुल, अज्ञात नाम हुवा। ठाकुरदीन के एक पुत्र-गुलमां हुवा। गुलमां के तीन पुत्र-मनसुखा, गुलजी और लइया हुये। मनसुखा के एक पुत्र-भीखम हुवा। भीखम के दो पुत्र-बलदेव तथा मनियां हुये। गुलजारी के दो पुत्र-छोटा और छन्नूलाल हुये। रामदीन के एक पुत्र-दनक हुवा। दनक के दो पुत्र-छेदालाल और दयाली हुये। छेदू के एक पुत्र-टेढ़वा हुवा। टेढ़वा के दो पुत्र राजाराम और हीरालाल हुये। हीरालाल के एक पुत्र-बाबूलाल हुआ। दयाली के एक पुत्र—लल्लू हुआ। लल्लू के एक पुत्र-खुशाली हुआ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत [धनसिंहपुरिहा]

उमरहार वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) पहला वृद्ध-मचला धनसिंहपुर से जाकर छोटेपुर में बसे। मचला के तीन पुत्र—गुरदीन महादेव सुदयाल हुये। गुरदीन के दो पुत्र जगन्नाथ, और मन्नू हुये। जगन्नाथ बसन्तखेरे में रहता है।

(२) दूसरा वृद्ध-रामदीन धनसिंहपुर से जाकर सैंठी में बसे। रामदीन के एक पुत्र—मंजू हुआ। मंजू के एक पुत्र—आसादीन हुआ। आसादीन के एक पुत्र—राजाराम हुवा।

गोत्र कश्यप परम्परागत (बहुबहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहिला वृद्ध। लेखी बहुआ से जाकर छोटेपुर में बसे। लेखी के दो पुत्र-साखन. साखन हुये। साखन के तीन पुत्र-बेनी, बदलू और मंगली हुये। बदलू के दो पुत्र-छोटू और सकठू हुये। छोटू के एक पुत्र-मोतीलाल हुआ। मंगली के तीन पुत्र-बन्दी, मेवा और मिथीलाल हुये। साखन के एक पुत्र-भोला हुआ। भोला के दो पुत्र-मनोहर और लालजी हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। भिखरा बहुआ से जाकर छोटेपुर में बसा। भिखरा के दो पुत्र-कन्धा और द्वारिका हुये। कन्धा के एक पुत्र—रामचेला हुआ। रामचेला के दो पुत्र-देवीदयाल और पराग हुये। द्वारिका के एक पुत्र—देवीचरण हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। मदारी और दूबरि दो भाई हुये जो बहुवा से जा कर जमुनियाँखेरा में बसे। मदारी के दो पुत्र-सरूप और लच्छू हुये। सरूप ममनापुर चला गया। लच्छू के एक पुत्र हजारी हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। घनश्याम बहुवा से जाकर जमुनियाँखेरा में बसे। घनश्याम के पाँच पुत्र- निवाजी, हीरा, रिंगला, पच्चू और पाचवें का नाम अज्ञात हुये। नेवाजी के एक पुत्र—लछिमन हुआ। हीरा के एक पुत्र-दुर्गा हुआ यह दरियापुर चला गया। रिंगला के दो पुत्र मैका और हजारी हुये। हजारी के एक पुत्र-परसाद हुआ।

(५) पाचवाँ वृद्ध। बुद्धू बहुवा से जाकर जमुनियाँखेरे में बसे। बुद्धू के एक पुत्र-जंगली हुआ।

(६) छठा वृद्ध। नवल और केवल बहुआ से जाकर हाता में बसे। नवल के एक पुत्र-घासिल हुआ। घासिल के एक पुत्र-लोचन हुआ। लोचन के तीन पुत्र-मंगली, भउआ और लउवा हुये। मंगली के एक पुत्र-मन्नी हुआ। मन्नी के एक पुत्र मुरली हुआ। केवल के तीन पुत्र—दुर्गा, भवानीदीन और मट्टू हुये। दुर्गा के तीन पुत्र-लछिमन रामा और तिलोक हुये। लछिमन के एक पुत्र-भगवानदीन हुआ। भगवानदीन के दो पुत्र-जगन्नाथ और बैजनाथ हुये। रामा के पुत्र-गंगाप्रसाद हुआ। गंगाप्रसाद के एक पुत्र-भरोसा हुआ। भरोसा

के दो पुत्र-सीताराम और शिवराज हुये। सीताराम के एक पुत्र-विश्वनाथ हुआ मुन्नू के एक पुत्र-बरजोर हुआ। बरजोर के पांच पुत्र-मथुरा, सुखलाल, बृजलाल नन्दलाल और अज्ञात नाम हुये। मथुरा के एक पुत्र-रामप्रसाद हुआ।

(७) सतवाँ वृद्ध। नत्थू, झींगुर और कालिका तीनों भाई बहुवा से जाकर हाता में बसे। नत्थू के एक पुत्र-बदलू हुआ। बदलू के तीन पुत्र-शंकर बुद्धू और गया हुये शंकर के एक पुत्र—बाबूराम हुआ।

(८) आठवाँ वृद्ध। अनहसा और अज्ञात नाम दो भाई बहुवा रामपुर से जाकर हाता में बसे। अनहसा के दो पुत्र-सूखन और दीनदयालु हुये। सूखन के एक पुत्र-गज्जा हुआ। गज्जा के १ पुत्र—शिवनन्दन हुआ। दीनदयालु के एक पुत्र-माखन हुआ। माखन के एक-पुत्र—गंगाचरण हुआ।

(९) नवाँ वृद्ध। भवन बहुवा से जाकर ममनापुर में बसे। भवन के दो पुत्र-मदारी और दूबरि हुये। मदारी के दो पुत्र—सरूप और लच्छू हुये। सरूप के छः पुत्र-रामलाल, हनूमान, देवीचरण, दुलारे, छङ्गू और मन्ना हुये।

(१०) दशवां वृद्ध। शिवना बहुवा (रामपुर) से जाकर दिलावलपुर में बसा। शिवना के एक पुत्र-ठाकुरदीन हुये। ठाकुरदीन के दो पुत्र-जोधा और जगन्नाथ हुये। जोधा के एक पुत्र—श्यामलाल हुवा। जगन्नाथ के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुवा।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध। छेदू बहुवा (रामपुर) से जाकर दिलावलपुर में बसे। छेदू के तीन पुत्र-रामलाल, रामदीन और मनियाँ हुये। रामलाल के दो पुत्र-रजना और रघुराथ हुये। मनियाँ हसोलेखेरे चला गया।

(१२) बारहवां वृद्ध। तेजा हुवा तेजा बहुवा (रामपुर) से जाकर मंझनपुर में बसा। तेजा के एक पुत्र—हीरालाल हुवा। हीरालाल के एक पुत्र-खलभल हुवा। खलभल के एक पुत्र—रामआसरे हुवा।।

(१३) तेरहवां वृद्ध। गयादीन, मथुरा और मच्चू तीन भाई हुये। ये सब बहुवा (रामपुर से जाकर मंझनपुर में बसे। मच्चू के एक पुत्र दुलीचन्द हुवा।

(१४) चौदहवां वृद्ध। मेडू बहुवा से जाकर दरियापुर चला गया। मेडू के तीन पुत्र-भग्गू, गयादीन, और अज्ञात नाम हुये। भग्गू के एक पुत्र

मर्दन हुआ। मर्दन के एक पुत्र-जब्बर हुवा। जब्बर के दो पुत्र-पितना और रजवा हुये। पितना के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुआ। गयादीन के एक पुत्र पराम हुवा। अज्ञात नाम वाले के सात पुत्र-नारायण, तुलसी, जोधा, परसादी, काशी, मथुरा और बैजनाथ हुये। नारायण के एक पुत्र—बदला हुआ। बदला के एक पुत्र-दुर्गा हुआ। दुर्गा के एक पुत्र-रामरतन हुआ। जोधा के दो पुत्र—शिवबक्स और रामबक्स हुये। शिवबक्स के एक पुत्र-वृन्दावन हुआ। रामबक्स के दो पुत्र—रामचेला, मूलचन्द हुये। काशी के दो पुत्र-गंगाचरण और टिर्रा हुये। गंगाचरण के दो पुत्र—खुशाली और अज्ञात नाम हुये। टिर्रा के एक पुत्र-कालीचरण हुआ।

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध। सुजान बहुवा से जाकर गौरा में बसे। सुजान के चार पुत्र-धौकल, पूरन, जवाहर और भवानीदान हुये। धौकल के एक पुत्र-कल्लू हुआ। कल्लू के दो पुत्र—जुराखन और माखन हुये। माखन के तीन पुत्र—बुद्धू, शिवराम, तुलुवा हुये। बुद्धू के दो पुत्र—छोटा और देवीदयाल हुये। देवीदयाल के तीन पुत्र—शिवराज, श्यामलाल और अज्ञात नाम हुये। तुलवा के दो पुत्र-छेदालाल और अज्ञात नाम हुये। पूरन के तीन पुत्र रामसहांय, नोते और बिसनू हुये। रामसहांय के तीन पुत्र—रामदयाल, दीनदयाल और महादेव हुये। रामदयाल के दो पुत्र-भगवानदीन और बैजनाथ हुये। भगवानदीन के एक पुत्र-बदरी हुआ। नोते के तीन पुत्र—बिन्दा, मथुरा, और गोकुल हुये। बिन्दा के तीन पुत्र-राजा, रामधीन, भूरा, हुये। मथुरा के एक पुत्र—हीरालाल हुआ। हीरालाल के एक पुत्र—अज्ञात नाम हुआ। बिसनू के एक पुत्र रिग्गू हुआ। रिग्गू के दो पुत्र-चेला सुखलाल हुये। जवाहिर के एक पुत्र-भिखारी हुवा भिखारी के एक पुत्र-नारायण हुआ। नारायणके एक पुत्र—छेदालाल हुआ। छेदालाल के एक पुत्र-गयादीन हुआ।

(१६) सोलहवां वृद्ध। मोहन हुआ यह बहुवा से गुलाबपूर चले गये मोहन के दो पुत्र-मन्नू और देवीचरण हुये। देवीचरण के दो पुत्र-बिहारी और अज्ञात नाम हुये।

(१७) सत्रहवां वृद्ध। बिहारी हुये यह बहुवा से आकर गुलाबपूर में बसे। बिहारी के तीन पुत्र-पराग, जगन्नाथ, और बैजनाथ हुये। पराग के

एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। जगन्नाथ के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। बैजनाथ के एक पुत्र—नाम अज्ञात।

(१८) अठारहवां वृद्ध। रामप्रसाद और हरीप्रसाद दो भाई हुये। यह गुलाबपुर में आकर बसे। रामप्रसाद के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। हरीप्रसाद के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

(१९) उन्नीसवां वृद्ध। दम्मा बहुवा से आकर पहरवापुर में बसे। दम्मा के तीन पुत्र। मंगादीन, मथुरा और भदई हुये। मथुरा के एक पुत्र छेदू हुवा। छेदू के तीन पुत्र—मुक्का, भगवानदीन और दयाराम हुये। भगवान के दो पुत्र-रामभरोसे और रामेश्वर हुये।

गोत्र कार्तिक परम्परागत (बुद्धौलिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कार्तिक गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहिला वृद्ध। भिखारी बुद्धौली से आकर हफ्सापुर में आकर बसे भिखारी के तीन पुत्र—पूसू, अंगनू, महादेव हुये। पूसू के दो पुत्र—तोंदा, और लाला हुये।

(१) दूसरा वृद्ध। मथुरा बुद्धौली से आकर कुन्देरामपुर में बसे। मथुरा के दो पुत्र—कालिका, भीमसेन हुये। भीमसेन के तीन पुत्र—बलदेव, रामदयाल और जगन्नाथ हुये।

(३) तीसरावृद्ध। शम्भू बुद्धौली से आकर वज्झोलवा में बसा। शम्भू के एक पुत्र—देवीचरण हुवा। यह पतित होगया।

(४) चौथा वृद्ध। लदुवा बुद्धौली से आकर वज्झोलवा में बसा। लदुवा के दो पुत्र-राजा और मनुआ हुये। राजा के दो पुत्र—भगवानदीन और रघुनाथ हुये। वह दोनों पतित होगये मनुवाँ डेबरी चला गया।

(५) पांचवाँ वृद्ध। ढाकन बुधौली से आकर रामपुर में बसे। ढाकन के एक पुत्र—मिजाजा हुवा। मिजाजी के एक पुत्र फोसा हुवा।

गोत्र काश्यप परम्परागत (भैरमपुरिहा) सैंठिहा

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्ग काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । कुड़िहा भैरमपुर से जाकर सैंठी में बसे । कुड़िहा के दो पुत्र—कल्लू और बल्लू हुये । कल्लू के एक—पुत्र बदलू हुवा । बदलू के दो पुत्र—गुरदीन और अयोध्या हुये । गुरदीन के तीन पुत्र —छेदू, सुखुवा, परसाद हुये । छेदू के एक पुत्र—जगन्नाथ । अयोध्या के तोन पुत्र—पूसू, भरोसा और चन्दी हुये । बल्लू के एक पुत्र—रामचेला हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । देबिया भैरमपुर से जाकर सैंठी में बसा । देबिया के एक पुत्र-सकटू हुवा ।

(३) तीसरा वृद्ध । पूरन भैरमपुर से जाकर रामपुर कुरमी में बसे । पूरन के तीन पुत्र—जुराखन, भोला और रामबक्स हुये । जुराखन के दो पुत्र रामचरण, सवनियाँ हुये । भोला के दो पुत्र—ख्याली और भिखारी हुये । ख्याली के एक पुत्र—गजोधर हुवा । भिखारी के एक पुत्र-रामप्रसाद हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । लछिमन भैरमपुर से जाकर रामपुर कुर्मी में बसे । लछिमन के दो पुत्र—छोटेलाल और दीनदयाल हुये । छोटेलाल के तीन पुत्र द्वारिका, मुरली और रामपाल हुये । द्वारिका के दो पुत्र—राजाराम और अज्ञात नाम हुये ।

गोत्र कश्यप परम्परागत [तबलहा] वहरौलिहा

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत गोत्र कश्यप में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । छीटन रामपुर में बसे । छीटन के दो पुत्र—कामता, और गोकुल हुये । गोकुल के एक पुत्र—देबीदयाल हुआ । देबीदयाल के दो पुत्र—मन्नू और छुन्नू हुये ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (झाड़िहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । कल्लू मकन्दीपुर में बसे । कल्लू के पाँच पुत्र-शिवगुलाम, परागी, माखन, नारायण और भूरा हुये । माखन के एक पुत्र

बलदेव हुआ। बलदेव के दो पुत्र - रामप्रसाद और शिवप्रसाद हुये। नारायण के तीन पुत्र—रामचेला, शिवराम और गयाप्रसाद हुये। रामचेला के दो पुत्र गंगाचरण और राजाराम हुये। शिवराम के एक पुत्र—मोतीलाल हुआ। गयाप्रसाद के एक पुत्र—श्यामलाल हुआ। भूरा के तीन पुत्र-जगन्नाथ, द्वारिका और गजोधर हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। दूबरि दमोदरपुर में बसे। दूबरि के दो पुत्र-भदई और सदई हुये। भदई के दो पुत्र-मन्नू और गज्जू हुये। मन्नू के एक पुत्र चौबा हुआ। गज्जू के तीन पुत्र-सेवक, बिजलाल और अज्ञात नाम हुये। सदई धनसिंहपुर चला गया। सदई के एक पुत्र जगन्नाथ हुआ।

गोत्र वत्स परम्परागत (खटहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत वत्स गोत्र परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। ठाकुरदीन खूटाझाले से जाकर जहूपुर में बसे। ठाकुरदीन के तीन पुत्र-प्रभू, बल्लू और लीला हुये। बल्लू के दो पुत्र-चेला और सुखलाल हुये। चेला के दो पुत्र—दुलारे और अज्ञात नाम हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। जवाहिर खूटा से जाकर मकन्दीपुर में बसे। जवाहिर के एक पुत्र—कालिका हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। कन्हई खूटा से जाकर सरिगवाँ में बसे। कन्हई के तीन पुत्र—भगवानदीन, महादेव, और सहादेव हुये। भगवान दीन के तीन पुत्र—बाबूलाल, जगन्नाथ और अज्ञात नाम हुये। महादेव के दो पुत्र-स्वदीन और रामलाल हुये। सहदेव के दो पुत्र-गुरदीन और श्यामलाल हुये।

(४) चौथा वृद्ध। पराग खूटा से जाकर गौरीपुर में बसे। पराग के एक पुत्र—गोला हुवा। गोला के दो पुत्र—नाम अज्ञात।

(५) पाचवाँ वृद्ध। पूसू खूटा से जोकर अमौलो में बसे। पूसू के एक पुत्र—परसादी हुआ। परसादी के एक पुत्र—गयादीन हुआ। गयादीन के तीन पुत्र—गंगाचरण, देवीचरण और वृन्दावन हुये।

श्री रामलाल उमरहार भाजीताला निवासी

प्रतिनिधि महासभा।

(६) छठा वृद्ध। काशीराम खूटा से जाकर मझनपुर में बसे। काशीराम के तीन पुत्र-सेवक, कल्लू और कन्हई हुये। सेवक के तीन पुत्र-शिवदास, भूज्जे और मुचुनू हुये। भूज्जे के दो पुत्र—पूरन और पञ्चा हुये। पूरन रामपुर चला गया। पञ्चा के एक पुत्र—प्रहलाद हुवा। मुचुनू के दो पुत्र-तुला और मनियाँ हुये। तुलवा के एक पुत्र-साधू हुआ। कल्लू के एक पुत्र लक्छी हुआ। लक्छी के पाँच पुत्र—बदली, सदला, चतुरा दयाल और गोकुल हुये बदली के दो पुत्र-राजा और रामनाथ हुये। राजा के दो पुत्र—अजोध्या और रामबक्स हुये। सदला रामपुर चला गया चतुरा एक पुत्र-शिवनाथ हुआ। दयालु के एक पुत्र-द्वारिका हुआ। द्वारिका के १ पुत्र—भगवानदीन हुआ गोकुल के एक पुत्र-रघुनाथ हुआ रघुनाथ के एक पुत्र—बन्शनारायण हुआ।

(७) सातवाँ वृद्ध—गयादीन खूटा से जाकर पतेवरा में वसा गयादीन के दो पुत्र-छेदू और विशम्भर हुये। छदू के एक पुत्र—गुलजारी हुआ। गुलजारी कुम्हखरा में चला गया विश्वम्भर के चार पुत्र-रघुनन्दन जेठू, बटिया और पञ्चा हुआ। रघुनंदन के एक पुत्र—रामलाल हुआ।

(८) आठयाँ वृद्ध—मातादीन खूटा से जाकर फ़रोदपुर में जाकर बसे मातादीन के चार पुत्र-रामचेला, रामचरण, बलदेव और नोखा हुये रामचेला के दो पुत्र—बद्री और विश्वनाथ हुये। बदरी के दो पुत्र—बिहारी और मिट्ठूलाल हुये। विश्वनाथ के दो पुत्र, चन्द्रपाल आनन्दपाल हुये। रामचरण के दो पुत्र—बाबू और पूतान हुये बाबू के ३ पुत्र—रामनाथ, मेवालाल और अज्ञातनाम हुये।

(९) नवाँवृद्ध— फत्ते खूटा में बसे—फत्ते के चार पुत्र—भूपाल, शम्भू, बैजनाथ, समाधाम हुये। शम्भू के एक पुत्र-बदलू हुआ। समाधान के एक पुत्र-देवी हुआ। बैजनाथ के तीन पुत्र-कामता, सहाँय और जानकी हुये। कामता के तीन पुत्र—तिलोक, खुशाली और रामनारायण हुये तिलोक के एक पुत्र—रामधीन हुआ। रामधीन के दो पुत्र—बुदियाँ और तुतियाँ हुये। खुशाली के एक पुत्र—मंगली हुआ। मंगली के दो पुत्र—सुखलाल और लालू हुये रामलाल के एक पुत्र—बोधीलाल हुआ।

(१०) दशवाँ वृद्ध बिहारी खूटा में रहे-बिहारी के तीन पुत्र—देवान् बल्लू और गहबर हुये। देवान के तीन पुत्र-कल्लू भूरे और अज्ञात नाम हुये

कल्लू के दो पुत्र—धन्नू और रिग्गा हुये। रिग्गा के तीन पुत्र—रामचरण, हज़ारी और सधारी हुये। रामचरण के चार पुत्र—बदरी बुद्ध, द्वारिका और लाला हुये। हजारी के चार पुत्र बैजनाथ, जगन्नाथ, रामचेला और प्यारेलाल हुये। बैजनाथ के एक पुत्र-महावीर हुआ। भूरे के एक पुत्र पच्चू हुआ। पच्चू के दो पुत्र-छेदू और भवानी दीन छेदू के एक पुत्र मैका हुआ। भवानी दीन के एक पुत्र—गन्नू हुआ। गन्नू के एक पुत्र सूरजबली हुआ। गहबर के एक पुत्र गजोधर हुआ। गजोधर के एक पुत्र—बिन्दा हुआ। बिन्दा के एक पुत्र—घसीटे हुआ।

(११) गेरहवा बृद्ध पोल खुटा में रहे पौले के पुत्र दूबरि हुआ। दूबरि के दो पुत्र-चतुरी और रामबक्स हुये। चतुरी के दो पुत्र—सिद्धगोपाल और रामगोपाल हुये।

(१२) बारवां बृद्ध—पूसू खूटा से जाकर बरवा में रहे। पूसू के तीन पुत्र—कन्हई, सुजान और शिवराम हुये। कन्हई के तीन पुत्र—भगवानदीन, महादेव और सहदेव हुये। भगवानदीन के तीन पुत्र—बाबूलाल, जगन्नाथ और मेवालाल हुये। महादेव के तीन पुत्र—स्वदीन, बलदेव और द्वारिका-प्रसाद हुये। सहादेव के दो पुत्र—गुरदीन और श्यामलाल हुये। शिवराम के दो पुत्र—काशी और माधो हुये। काशी के एक पुत्र-राजाराम हुआ। माधौ के एक पुत्र चन्द्रपाल हुआ।

(१३) तेरहवां बृद्ध—गिरवर खूटा से जाकर बरवा में रहे। गिरवर के एक पुत्र—गुंगा हुआ। गुंगा के एक पुत्र-जियालाल हुआ। जियालाल के एक पुत्र-रामधार हुआ। रामधार के तीन पुत्र देवीचरण महावीर और मंगली हुये।

(१४) चौदवां बृद्ध - भगवान खूटा से जाकर बरवा में रहे भगवान के दो पुत्र—लीला और मनसुख हुये। लीला के दो पुत्र—रघुवर और दुल्लू हुये। रघुवर के दो पुत्र-रामलाल और श्यामलाल हुये। मनसुख के चार पुत्र—गिशेश्वर, रामपाल शिवपाल और गोपाल हुये-गिशेश्वर के एक पुत्र असरफीलाल हुआ। रामपाल के दो पुत्र—सुखदेव और रामरतन हुये।

(१५) पन्द्रहवां वृक्ष-लछिमन, जेठू-खूटा से आकर इच्छापुर में बसे लछिमन के एक पुत्र-पगला हुआ। और पगला के दो पुत्र-नन्हू और मक्खनो हुये। जेठू के पांच पुत्र- भैरम, गोकुल, दुर्गा, बच्चू और जोधा हुये। दुर्गा के एक पुत्र-भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र अज्ञात नाम हुआ। बच्चू के तीन पुत्र-भगवानदीन, राधाचरण और बनवारी हुये। भगवानदीन के दो पुत्र—अज्ञात नाम हुये। जोधा के एक पुत्र रामाधीन हुआ।

(१६) सोलहवां वृक्ष—छेदू कुमभरा में बसे। छेदू के एक पुत्र-मूड़ हुआ। मूड़ के दो पुत्र-गोला और शिवराम हुये।

(१७) सत्रहवां वृक्ष—गोविन्द और लछिमन दो भाई हुये। यह खूटा ग्राम से जाकर सठिगवां में बसे। लछिमन के एक पुत्र- द्वारिका हुआ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (मकरहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृक्ष।

(१) प्रथम वृक्ष। सुदीन मकन्दीपुर में बसे। सुदीन के दो पुत्र बिझुवा और गोबरा हुआ। बिझुवा के चार पुत्र—लच्छी, कइय्याँ, दईला और बच्ची हुये। बच्ची के दो पुत्र—काशी और राजा हुये। काशी के पांच पुत्र-फदाली, छोटा, बन्शी, मुरली और बद्री प्रसाद हुये। राजा के तीन पुत्र-रामप्रसाद, किदार और धूल्ली हुये। बच्ची के तीन पुत्र-माखन, जवाहिर और पूसू हुये। गोबरा के एक पुत्र-जगन्नाथ हुआ। जगन्नाथ के एक पुत्र-रामप्रसाद हुआ।

(२) दूसरा वृक्ष। गंगादीन मकन्दीपुर में रहे। गंगादीन के एक पुत्र गप्पू हुआ। गप्पू के एक पुत्र—भैरम हुआ। भैरम के दो पुत्र—मथुरा, वृन्दावन हुये। मथुरा के एक पुत्र—वैकल हुआ। वृन्दावन के एक पुत्र-बद्री प्रसाद हुआ बद्री प्रसाद के एक पुत्र—रामरतन हुआ।

(३) तीसरा वृक्ष। शम्भू, अजगर, जबर तीनों भाई मकन्दीपुर में बसे। अजगर के एक पुत्र—छोटा हुआ। छोटा के एक पुत्र-छेदू हुआ। जो पतित होगया। जबरा के एक पुत्र-किशनू हुआ। किशनू के दो पुत्र-राम और नारायण हुये। नारायण के दो पुत्र—सूरजदीन और भोड़ा हुये।

(४) चौथा वृद्ध। खुमान मकन्दीपुर में बसे। खुमान के दो पुत्र कामता और तुला हुये। कामता के एक पुत्र-दलीपा हुआ। दलीपा के दो पुत्र देवीदयाल और रामलाल हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। फूनू हरजनपुर में बसे। फूनू के दो पुत्र-रामचरण बदलू हुये। रामचरण के एक पुत्र-छोटा हुआ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (हरजनपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। सिवदीन हरजनपुर में रहे। सिवदीन के एक पुत्र पूरन हुआ। पूरन के एक पुत्र-भिखुवा हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। दूर्वार हरजनपुर में रहे। दूर्वार के एक पुत्र-जवाहिर हुआ। जवाहिर के दो पुत्र-केवल और भुय्यांदीन हुये। भुय्यांदीन के एक पुत्र-रामेश्वर हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। माधो हरजनपुर में बसे। माधो के एक पुत्र छेदालाल हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। रत्तू हरजनपुर से आकर फरीदपुर में बसे। रत्तू के दो पुत्र—गंगाराम और मन्ना हुये। मन्ना के दो पुत्र—बदली और दुर्गा हुये। बदली के दो पुत्र-महादेव और रामलाल हुये। महादेव के चार पुत्र-राजाराम गंगाचरण, रामधनी और बनवारीलाल हुये। गंगाराम के एक पुत्र-भगवान दीन हुवा। यह पतित होगया।

(५) पाचवाँ वृद्ध। दुर्गा हरजनपुर से आकर स्यामखेर में बसा। दुर्गा के दो पुत्र—कामता और बाबू हुये। कामता के दो पुत्र—गुरुदयालु और बैजनाथ हुये। गुरुदयालु के एक पुत्र—लक्ष्मीनारायण हुवा। बाबू के एक पुत्र अतिबल हुवा यह कुरौली चला गया।

(६) छठवाँ वृद्ध। कल्लू, कालिका और कन्हई तीनों भाई हरजनपुर से आकर नाथू खेरा में रहे। कालिका के एक पुत्र—लल्लू हुवा। लल्लू के एक पुत्र—ठाकुरदीन हुवा।

गोत्र काश्यप परम्परागत (दोनहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत्र परम्परा में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। हीरा सठिमवाँ में जाकर बसे। हीरा के एक पुत्र गंगाराम हुवा। गंगाराम के चार पुत्र-पूरन, चरन, मन्ना और मंगली हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। जुराखन इटर्रा में रहे। जुराखन के चार पुत्र इन्दल, देवीप्रसाद, दौलत और सुक्खन हुये। देवीप्रसाद के पांच पुत्र-द्वारिका, शिव-प्रसाद, दुलीचन्द, मोतीलाल और पाँचवें का अज्ञात नाम। सुक्खन के दो पुत्र किशोर और जगन्नाथ हुये। किशोर के दो पुत्र—बद्दो और बदरीप्रसाद हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। मलंगू इटर्रा में बसे। मलंगू के एक पुत्र—छोटा हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। सदान इटर्रा में रहे। सदान के एक पुत्र पँगवा हुवा।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। जगन भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे। जगन के एक पुत्र-चतुरी हुवा। चतुरी के एक पुत्र- गयादीन हुआ। गयादीन के दो पुत्र—देवनन्द और अनरुद्ध हुये।

(६) छठा वृद्ध। सेवक बेहटी में रहे। सेवक के एक पुत्र-जगन्नाथ हुवा। जगन्नाथ के एक पुत्र—इसुरी हुवा। इसुरी के दो पुत्र-गयादीन और गंगाचरण हुये। गंगाचरण के दो पुत्र—दुर्जा और सुरजा हुये।

(७) सातवाँ वृद्ध। मिसिरी जो दमोदरपुर से आकर काशीपुर में आबाद हुआ। मिसिरी के तीन पुत्र—रामगोपाल, बंशगोपाल और सिद्धि-गोपाल हुये।

(८) आठवाँ वृद्ध। जयसुख धिरजापुर में रहे। जयसुख के दो पुत्र चन्दी और अलुहा हुये। चन्दो के तीन पुत्र—गहरा, भरोसा, और लछिमन हुये। गहरा के तीन पुत्र—लाला, प्रसाद और खुशाली हुये। प्रसाद के तीन पुत्र गंगाचरण, सुदाम और चिरकुवा हुआ। अलुहा के एक पुत्र-आसादीन हुवा।

(९) नवाँ वृद्ध। माखन हिम्मतपुर में बसे। माखन के पाँच पुत्र रामलाल, पुत्तू, चिनियाँ, भैरम और ललुवा हुये। भैरम के एक पुत्र-रघुबर-दयाल हुवा। ललुवा के एक पुत्र-चेला हुवा। चेला के दो पुत्रदयानारायण दूसरे का अज्ञात नाम हुये।

(१०) दसवाँ वृद्ध। छेदू हरसापुर में जाकर बसे। छेदू के एक पुत्र आलम हुवा। आलम के तीन पुत्र - रघुबर, मुसे और सुक्खन हुये। रघुबर के एक पुत्र—ख्याली हुआ। ख्याली के दो पुत्र—गयाप्रसाद और सियाराम हुआ।

(११) गेरहवाँ वृद्ध। लछिमन धिरजापुर से भोजेपुर चला गया। लछिमन के एक पुत्र—चिन्ता हुआ। चिन्ता के एक पुत्र-बिहारी हुवा।

(१२) बारहवाँ वृद्ध। जुराखन फरीदपुर में आबाद रहे। जुराखन के एक पुत्र-रिगुवा हुवा। रिगुवा के दो पुत्र-कन्हई और अतिबल हुवा।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध। पुत्ती दामोदरपुर में रहा। पुत्ती के पाँच पुत्र रामदयालु, दीनदयालु, मिसिरीलाल, बख्शी और सुदयाल हुये। रामदयालु के तीन पुत्र-मुन्शी, युगराज और रामनारायण हुये। मुन्शी पढ़नो चला गया। दीनदयालु के तीन पुत्र—राजाराम, रामरतन और रामगुलाम हुये। राजाराम के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। रामरतन धिरजापुर चला गया। बख्शी के दो पुत्र विशुनदयालु और दूसरे का अज्ञात नाम यह असघना चले गए। और पतित होगये। सुदयालु के एक पुत्र—रामपालु हुवा।

(१४) चौदहवाँ वृद्ध। गयादीन यह बेहटी से बबई चले आये।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध। भगवानदीन बेहटी से बबई चले आये।

(१६) सोलहवाँ वृद्ध। पग्गल रुसिया चले गये। पग्गल के एक पुत्र गजोधर हुवा। गजोधर के एक पुत्र-बदरी हुआ। बदरी के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुवा।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (रूसियहा)

उमरदार कुर्मी वंशान्तर्गत रुसिअहा गोत्र परम्परा में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध-बीचू रुसिया से जाकर लैठी में रहे। बीचू के तीन पुत्र- धर्मो छियालाल और मनसा हुये धर्मो के चार पुत्र-मन्ना मतोला दल्लु और कन्हई हुये। मन्ना के तीन पुत्र-दलीपा, बेनी और जगन्नाथ हुये। दलीपा के एक पुत्र-बजारीलाल हुआ। बेनी के एक पुत्र रामेश्वर हुआ। रामेश्वर के एक पुत्र-चेला हुआ। दल्लू रामपुर चला गया मतोला के एक पुत्र—महादेव हुआ।

महादेव के पुत्र- महाजन और मोहनलाल हुये। महाजन के तीन पुत्र-बाबूलाल, बदली और मेवालाल हुये। मोहन के एक पुत्र देवीचरण हुआ। जियालाल के दो पुत्र-कालिका और छेदू हुये। कालिका के दो पुत्र-चिंता और गयादीन हुये। चिंता के एक पुत्र—शिवबालक हुआ। छेदू के एक पुत्र भिखारी हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध-नारायण रूसिया से आकर सैंठी में रहे। नारायण के एक पुत्र पूसू हुआ। पूसू के एक पुत्र-बरछा हुआ। बरछा के दो पुत्र-गंगाप्रसाद और रामप्रसाद हुये।

(३) तीसरा वृद्ध—मोतीलाल रूसिया से आकर सठिगवां में बसे। मोतीलाल के दो पुत्र—गुही और अज्ञात नाम हुये। गुही के दो पुत्र कल्लू और मन्नी हुये। कल्लू के दो पुत्र-दीन दयालु और मैका हुये। दीनदयाल के एक पुत्र-महाबीर हुआ। मन्नी के पाँचपुत्र-रामचंदर पुरन, चतुरी पंचा और भगवानदीन हुये। चतुरी के एक पुत्र श्यामलाल हुआ। अज्ञात नाम वाले के दो पुत्र—छेदू और चैना हुये। छेदू के एक पुत्र-महादेव हुआ। महादेव के एक पुत्र-हजारीलाल हुआ।

गोत्र भरद्वाज परम्परा गत (बबईहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तीत भरद्वाज गोत्र परम्परा परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध-मेड़ू बबई से आकर सठिगवां में बसा। मेड़ू के एक पुत्र- कुबरा हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध-देवान बबई से आकर दामोदरपुर में रहे देवान के एक पुत्र-भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र-द्वारिका हुआ। द्वारिका के तीन पुत्र—रामकिशोर, बाबूलाल और शुगुलकिशोर हुये।

(३) तीसरा वृद्ध—हीरा बबई से आकर दामोदरपुर में रहे। हीरा के चार पुत्र-जवाहिर, झन्डू, जियालाल और दल्लू हुये। जवाहिर मंझनपुर चले गये। झन्डू के तीन पुत्र-रामसहाय, मनसुख, और देवीचरण हुये। रामसहाय मंझनपुर चला गया। मनसुख के दो पुत्र—औसेरी और रामलाल हुये यह किशैरपुर में जा बसे दुल्लू के तीन पुत्र—मुन्ना रामसुख और रामप्रसाद हुये। रामसुख मंझनपुर में जा बसे।

(४) चौथा वृद्ध—चिरंजू बबई से जाकर गौरा में बसे । चिरंजू जवाहिर दो भाई । चिरंजू के दो पुत्र-भगवानदीन और गुंगा हुये । गुंगा के एक पुत्र-शम्भूदयाल हुआ । जवाहिर के एक पुत्र-रामसहाय हुआ । रामसहाँय के तीन पुत्र हुलसी, बोधी और रामचरण हुये । बोधी के एक पुत्र-ब्रम्हा हुआ । रामचरण के दो पुत्र-बुद्धुवां और टिर्रा हुये । बुद्धुवां के एक पुत्र-नाम अज्ञात ।

(५) पाचवां वृद्ध । थानो बबई में रहे । थानो के १ पुत्र नारायण हुआ । नारायण के तीन पुत्र-मुक्का, दीबीदीन और दीनदयालु हुये । मुक्का के चार पुत्र—जगन्नाथ, चिंता, जुङ्गा और गोपाल हुये । चिंता के दो पुत्र—चोखे और पूरन हुये । चोखे के एक पुत्र—बाबू हुआ । बाबू के दो पुत्र—पृथ्वीपाल और अज्ञात नाम हुये । पूरन के एक पुत्र—बृजलाल हुआ । बृजलाल के एक पुत्र-मेवालाल हुआ । जुङ्गा के एक पुत्र—तीतम हुआ । गोपाल के एक पुत्र—फगुन हुआ । फगुन के चार पुत्र—रतनलाल, मुन्नू, मथुरा, और रामप्रसाद हुवे । देवीदीन के दो पुत्र-मोहनलाल और बदली हुये मोहनलाल के एक पुत्र-गुलजारीलाल हुये । गुलजारीलाल के एक पुत्र—बसन्तलाल हुये । बदली के एक पुत्र हजारीलाल हुआ । दीनदयालु के तीन पुत्र—भिखारी, मंगली और गोकुल हुये । भिखारी के एक पुत्र—महादेव हुआ । महादेव के एक पुत्र-श्यामलाल हुआ । गोकुल के एक पुत्र-छेदालाल हुआ । छेदालाल के एक पुत्र-राधेलाल हुआ ।

(६) छठवां वृद्ध । बदेली बबई में बसे । बदली के दो पुत्र—सीतल और सभा हुये । सीतल के दो पुत्र—जवाहिर और घनश्याल हुये । जवाहिर के तीन पुत्र-ख्याली, भवानीदीन और गोपाल हुये । ख्याली के एक पुत्र—भगवन्त हुआ । भगवन्त के दो पुत्र—मेड़ालाल और भिखारीलाल हुये । गोपाल के एक पुत्र—छोटेलाल हुआ । छोटेलाल के एक पुत्र-रामचेला हुआ । घनश्याम के एक पुत्र—मुल्ला हुआ । मुल्ला के दो पुत्र-अट्टी और पूरन हुये । सभा के तीन पुत्र-नन्दराम, सेवक और प्रेम हुये । नन्दराम के एक पुत्र—नाथूलाल हुआ । नाथू के दो पुत्र—मन्नालाल और पत्ती हुये । मन्नालाल के एक पुत्र—कलुण हुये । पत्ती के एक पुत्र—रामलाल हुआ ।

प्रेम के तीन पुत्र—मावाराम, घासीराम, रणजीत हुये। घासीराम के दो पुत्र—जोधा और बदल हुये। बदल के चार पुत्र—सुखनन्दन, हजारीलाल, गुलजारीलाल और भगवानदीन हुये। सुखनन्दन के चार पुत्र-श्यामलाल, रामप्रसाद, शिवप्रसाद और सियाराम हुये। हजारी के एक पुत्र—रामशंकर हुये। गुलजारीलाल पतित हो गया। रणजीत के दो पुत्र दुर्जन और दुलीचन्द हुये। दुर्जन के दो पुत्र—मैका और बैजनाथ हुये। मैका के तीन पुत्र-पराग, परसाद और रामगोपाल हुये। बैजनाथ पतित हो गया। दुलीचन्द के एक पुत्र—राजाराम हुआ। राजाराम के एक पुत्र—जगन्नाथ हुआ।

(७) सातवाँ वृक्ष। औसेरी रामलाल बबई से जाकर किशोरपुर में बसे। औसेरी के एक पुत्र—रामदयाल हुआ। रामलाल के तीन पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

(८) आठवाँ वृक्ष। अयोध्या भगोनापुर (सलेमपुर) में बसे। अयोध्या के एक पुत्र-गोकुल हुआ। गोकुल के एक पुत्र-बनवारी हुआ।

(९) नवां वृक्ष। अचल बबई में रहे। अचल के दो पुत्र—बिहारी और लछिमन हुये। बिहारी सरहन चला गया। लछिमन के दो पुत्र—रामबकस और गोकुल हुये। गोकुल के एक पुत्र-पन्थनाथ हुआ।

(१०) दसवाँ वृक्ष। केवल बबई में रहे केवल के दो पुत्र-भदई और कल्लू हुये। कल्लू के एक पुत्र बलदेव हुआ।

(११) ग्यारहवाँ वृक्ष। लाला बबई में रहे। लाला के तीन पुत्र-खरग उमराव और चूरा हुये। उमराव के एक पुत्र-गयादीन हुआ। चूरा के एक पुत्र गंगादीन, हुआ।

(१२) बारहवाँ वृक्ष। कोला बबई में रहे कोला के तीन पुत्र—शिवचरण धर्मा और रामचरण हुये। शिवचरण के दो पुत्र—पूसू और चतुरी हुये। चतुरी के दो पुत्र—श्यामलाल और अयोध्यापुसाद हुये।

(१३) तेरहवाँ वृक्ष। कल्लू, डरिया और कोल्हा तीनों भाई बबई में रहे। कल्लू के दो पुत्र-नारायण और देवीदीन हुये।

(१४) चौदहवाँ वृक्ष। दल्लू बबई से जाकर पड़नी में बसे। दल्लू के एक पुत्र-रामाधार हुये। रामाधार के दो पुत्र-जगन्नाथ और बदरीप्रसाद हुये।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध। दूधू बबई से जाकर अम्बरपुर में बसे। दूधू के तीन पुत्र–कल्लू, जुराखन और देवन हुये। देवन के एक पुत्र–भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र-द्वारिकाप्रसाद हुआ। द्वारिकाप्रसाद के तीन पुत्र–नाम अज्ञात हुये। यह दमोदरपुर में हैं।

(१६) सोलहवां वृद्ध। हीरालाल बबई से जाकर अम्बरपुर में बसे। हीरालाल के चार पुत्र–झाड़ू, जवाहिर, दल्लू और जियालाल हुये। झाड़ू के तीन पुत्र-मनसुख, रामसहाँय और देवीचरण हुये। मनसुख के दो पुत्र-अवसेरी और रामराम जो किशोरपुर चले गये। रामसहाँय के दो तिलोक और पराग हुये। पराग के एक पुत्र–रामबकस हुआ।

(१७) सत्रहवां घासीराम बबई से आकर सगरा में बसे। घासी राम के एक पुत्र-गुरुदयालु हुआ। गुरुदयालु के पांच पुत्र--साधोराम, शिवचरण, भुजाली, गोकुल और छोटेलाल हुये। छोटेलाल के एक पुत्र--ठाकुर-दीन हुआ। ठाकुरदीन के एक पुत्र--शिवबालक हुआ।

(१८) अठारहवाँ वृद्ध। हीरा बबई से जाकर महूपुर में बसे। हीरा के छः पुत्र--लछिमन, लीला, रामा दयाली, पंचम और चेत हुये। लछिमन के एक पुत्र--भवानीदीन हुआ। भवानीदीन के दो पुत्र-छेदालाल, भैरम हुये। छेदालाल के एक पुत्र--मोहनलाल हुआ। भैरम के एक पुत्र-बेदेसी हुआ। रामा के दो पुत्र--हजारीलाल, गुलारीलाल हुये। हजारीलाल के दो पुत्र--जौहरी और गंगाचरण हुये। जौहरी के दो पुत्र–बाबूलाल और शिवलाल हुये। गुलजारी के चार पुत्र--फगुना, सउनियाँ, चिफुरिया और राजाराम हुये।

(१९) उन्नीसवाँ वृद्ध। जवाहिर और दल्लू दमोदरपुर से मझनपुर बसे। जवाहिर के तीन पुत्र--चुन्नू, केवल सुदयाल हुये। चुन्नू के दो पुत्र--चन्दीलाल और हरीलाल हुये। केवल के एक पुत्र--छेदू हुये। छेदू के एक पुत्र–बाबू हुआ। शिवदयाल के दो पुत्र--प्यारेलाल और रंगीलाल हुये। दल्लू के तीन पुत्र--मुन्ना, रामप्रसाद और सुक्खू हुये। मुन्ना रामपुर चला गया सुक्खू के तीन पुत्र--चेला, रामेश्वर और शिवराम हुये। चेला के एक पुत्र--शंकरलाल हुये।

(२०) बीसवाँ वृद्ध । लोचन बबई से दिलावलपुर में जाकर बसे । लोचन के एक पुत्र—मटर हुआ मटर के एक पुत्र—नन्दा हुआ । नन्दा के एक पुत्र-रघुनाथ हुआ ।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध । पूरन बबई से जाकर डिघरुआ में बसे । पूरन के छः पुत्र-गजोधर, देवीचरण, कामता और तीन के नाम अज्ञात हुये ।

(२२) बाइसवाँ वृद्ध । कन्हई बबई से जाकर सुल्तानगढ़ में बसे । कन्हई के चार पुत्र-देवमन, दासी, द्वन्द और चौथे का नाम अज्ञात हुआ । देवमन के एक पुत्र-मनियार हुआ । मनियार के एक पुत्र-बरियार हुआ । बरियार के एक पुत्र—केशवदीन हुआ । केशवदीन के एक पुत्र—सत्तीदीन हुआ । सत्तीदीन के तीन पुत्र—रामभजन, कल्लू और भरोसा हुये । कल्लू के एक पुत्र—रामाधीन हुआ । भरोसा के एकपुत्र—गुरुदयाल हुआ ।

(२३) तेइसवाँ वृद्ध । खुमान बबई से जाकर सुल्तानगढ़ में बसे । खुमान के एक पुत्र पूसू हुआ । पूसू के तीन पुत्र—गयादीन, बगड़ और चिरंजूलाल हुये । बगड़ के एक पुत्र—रामबकस हुआ । चिरंजू के दो पुत्र-सेवक और छंगू हुये ।

(२४) चौबीसवाँ वृद्ध । बदली बबई से जाकर सुल्तानगढ़ में बसे । बदली के एक पुत्र—चत्ती हुआ । चत्ती के दो पुत्र-मेड़ू और मातादीन हुये । मेड़ू के दो पुत्र-सिपाहीलाल और प्यारेलाल हुये । सिपाहीलाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ ।

(२५) पच्चीसवां वृद्ध । फेरू बबई से आकर सुल्तानगढ़ में बसे । फेरू के एक पुत्र—भिखारीलाल हुआ । भिखारी के दो पुत्र—बन्दी और अनन्ता हुये । बन्दी के दो पुत्र—सूरजदीन और अयोध्याप्रसाद हुये । सूरजदीन के दो पुत्र—पराग और शिवराम हुये । अनन्ता के एक पुत्र—गयादीन हुआ ।

(२६) छब्बीसवां वृद्ध । भोला बबई से जाकर सुल्तानगढ़ में बसे । भोला के एक पुत्र—पटुआ हुआ ।

(२७) सत्ताइसवाँ वृद्ध । अयोध्या बबई से जाकर भगोनापुर (सलेमपुर) में बसे अयोध्या के एक पुत्र—गोकुल हुआ । गोकुल के एक पुत्र—बनवारीलाल हुआ ।

(२८) अट्ठाइसवां वृद्ध। बिहारीलाल बबई से जाकर सरहन में बसे। बिहारीलाल के एक पुत्र—फदाली हुआ। फदाली के तीन पुत्र—सूरजदीन, शम्भू और बाबूलाल हुये। सूरजदीन के तीन पुत्र—शिवगोपाल और दो के नाम अज्ञात हुये।

गोत्र कश्यप परम्परा गत (भेउलिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध—सतान भ्योली से जाकर धमना में बसे। सतान के तीन पुत्र-भूरा, हीरालाल, रामचरण हुये। हीरा के एक पुत्र-केशरी हुआ। केशरी के तीन पुत्र-बाबूलाल, बन्सलाल और बराती लाल हुये।

(२) दूसरा वृद्ध-घसीटे भेवली से जाकर रवाईपुर में बसे। घसीटे के एक पुत्र मनोहर हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध—नथवा भेवली से जाकर रवाईपुर में बसे। नथवा के दो पुत्र-छेदा और प्रयाग हुये। छेदा के एक पुत्र-महादेव हुआ। पराग के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(४) चौथा वृद्ध—गोपाल भेवली से जाकर सुल्तानगढ़ में बसे। गोपाल के एक भाई भोला। भोला के एक पुत्र-छेदालाल हुआ। छेदालाल के दो पुत्र-बदला और ईश्वरीप्रसाद हुये। बदला के एक पुत्र—रघुनंदन हुआ। ईश्वरी के दो पुत्र—कन्हई और पूतीलाल हुये।

(५) पाचवाँ वृद्ध—गहरू भ्योली में रहते हैं-गहरू के दो पुत्र-छेदू और बिरजू हुये। छेदू के दो पुत्र-महादेव और लछिमन हुये। महादेव के दो पुत्र-दीनदयाल और भरोसाप्रसाद हुये। दीनदयाल के एक पुत्र-रामलाल हुआ। लछिमन के तीन पुत्र-सुदयाल जागेश्वर और कामताप्रसाद हुये।

(६) छठा वृद्ध। पच्चू भ्योली से जाकर कनेरा में बसे। पच्चू के एक पुत्र-जियालाल हुआ। जियालाल के दो पुत्र—भुदयांदीन और गिल्ला हुये। भुदयांदीन के दो पुत्र—महगू और दासचन्द हुये। महगू के एक पुत्र-भिखारी हुआ। गिल्ला किशोरपुर चला गया।

गोत्र काश्यप परम्परागत (अलियापुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध-गजोधर अलियापुर में बसे। गजोधर के एक पुत्र-दयाराम हुआ। दयाराम के तीन पुत्र—रामरत्न, बल्लू और रामनारायण हुये। रामरतन के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध—मोहन अलियापुर में रहे। मोहन के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। शिवरतन और हीरा दो भाई हुये। जो अलियापुर में रहते हैं।

(४) चौथा वृद्ध। शिवलाल अलियापुर से जाकर खानपुर में बसा। शिवलाल के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। अज्ञात नाम के एक पुत्र-कालिका हुआ। कालिका के तीन पुत्र-रामेश्वर, दौलत और रामलालाल हुये। रामेश्वर के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये। रामलाल के एक पुत्र नाम अज्ञात हुवा।

(५) पाँचवां वृद्ध। लछिमन अलियापुर से जाकर खानपुर में बसे। लछिमन के तीन पुत्र मंगली, रामचरण और सुदयाल हुये मंगली के दो पुत्र नाम अज्ञात हुये। रामचरण के दो पुत्र गौरी और भिखारी हुये। सुदयाल के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ।

(६) छठा वृद्ध। गुरदीन भ्योली अलियापुर से जाकर नयेपुर में बसे। गुरदीन के दो पुत्र-बदलू और जेठू हुये।

(७) सातवां वृद्ध। धन्नू रामपुर (कुन्दे) में जाकर बसे। धन्नू के एक पुत्र-बदलू हुये। बदलू के दो पुत्र-छेदू और जवाहिर हुये। छेदू के दो पुत्र कालिका और पूरन हुये। कालिका के एक पुत्र—पहलाद हुआ। पूरन के दो पुत्र-मनोहर और श्यामलाल हुये। मनोहर के तीन पुत्र-बच्ची, महावीर और बदलू हुये।

(८) आठवां वृद्ध। कीरति अलिपुर से जाकर मोजेपुर में बसे। कीरति के दो पुत्र-झाडू और दनक हुये। झाडू के चार पुत्र-मैकू, पूरन, मुन्ना और दूबरि हुये। मन्ना के एक पुत्र—सवानी हुआ। दनक के एक पुत्र-भगवान दीन हुवा भवानीदीन के दो पुत्र—खलभाल और सकठू हुये।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (बञ्झोलबहा)

उमरहार कुर्मी बंशान्तर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । गोपाल बञ्झोलवा से आकर अलियापुर में बसे। गोपाल के एक पुत्र—रघुबरदयालु हुआ। रघुबरदयालु के एक पुत्र चौरा हुआ।

(२) द्वितीय वृद्ध। रघुनाथ, शोभा तीसरे का नाम अज्ञात है, बंझोलवा से आकर अलियापुर में बसे रघुनाथ के तीन पुत्र—रामसेवक और दो के नाम अज्ञात भये।

(३ तृतीय वृद्ध। बदली बञ्झोलवा से आकर अलियापुर में बसे। बदली के दो पुत्र—कामता और मुरली हुये। कामता के एक पुत्र रामाधीन हुआ।

(४) चतुर्थ वृद्ध। मन्नू बञ्झोलवा से आकर डेवरी में रहा। मन्नू के दो पुत्र—दयाराम और दूसरे का नाम अज्ञात है।

गोत्र काश्यप परम्परागत (आंवरखेरिहा)

उमरहार कुर्मी बंशान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। बिहारी आंवरखेरे से आकर अलियापुर में बसे। बिहारी के दो पुत्र-शिवनाथ और रामनारायण हुये।

(२) द्वितीय वृद्ध। मूसे आंवरखेर से आकर जद्दूपुर में बसे। मूसे के दो पुत्र—भगवन्त और माखन हुये। माखन के दो पुत्र—देवीदयालु और रामेश्वर हुये। यह दोनो पतित हो गये।

(३) तृतीय वृद्ध। गनेश आंवरखेरे से आकर दरियापुर में बसे। गनेश के दो पुत्र—छोके और लाला हुये। लाला के एक पुत्र—रणजीत हुआ। रणजीत के चार पुत्र-चेला, किदार, बद्री और लछिमन हुये। चेला के एक पुत्र-रघुनन्दन हुआ। बद्री के एक पुत्र-महावीर हुआ।

(४) चतुर्थ वृद्ध । भिक्खव और छिपरा अंगनाखेर में बसे । भिक्खन के एक पुत्र- बाबुल हुआ । छिपरा के एक पुत्र-कलिका हुआ । कलिका के एक पुत्र-फगुना भया यह दरियापुर चला गया ।

(५) पञ्चम वृद्ध । केशव और हिरदै दो भाई आँवरखेरे में बसे । हिरदै के चार पुत्र-धनसूर, भदई, दुर्गा और पच्चू हुये । धनसूर के एक पुत्र-नत्थू हुआ । भदई के दो पुत्र-वाले और चूरा हुये । चूरा के एक पुत्र-लछिमन हुआ । लछिमन के एक पुत्र—नन्दा हुआ । नन्दा के तीन पुत्र-काशीचरण, देवीचरण और देवीदीन हुये । दुर्गा के दो पुत्र - नाम अज्ञात हुये । बदलू के दो पुत्र—लालाराम और मंगली हुये ।

(६) षष्टम वृद्ध । भदई आँवरखेरे से भगौनापुर (नदीपार) में बसे । भदई के तीन पुत्र—भोला, दुर्गा और मेघा हुये । भोला के चार पुत्र-कल्लू, लछिमन, मन्नू और दूबरि हुये । कल्लू के एक पुत्र—रैला हुआ । रैला के एक पुत्र—बुधुआ हुआ । लछिमन के एक पुत्र-गुलजारी हुआ । मन्नू के एक पुत्र - बदरी हुआ । मेघा के दो पुत्र—जेठू और दूसरे का नाम अज्ञात हुये । जेठू के तीन पुत्र—थानी, मनई और भगवादीन हुये । थानी के एक पुत्र-चौबा हुआ ।

(७) सप्तम वृद्ध । चूरा आँवरखेरे से जाकर गोंदहा में बसा । चूरा के तीन पुत्र—मन्ना, बदला और पन्नू हुये । मन्ना के तीन पुत्र-छेदू, मका, सैका हुये । छेदू के दो पुत्र—गजराज और भीखू हुये मैका के एक पुत्र शिवबालक हुआ । सैका के दो पुत्र—गुरुदयाल और बाबूलाल हुये ।

(८) अष्टम वृद्ध । मेघा आंवरखेरे से जाकर गोंदहा में बसे । मेघा के दो पुत्र—जगन्नाथ और पूरन हुये । जगन्नाथ के एक पुत्र-श्याम हुआ । पूरन के एक पुत्र-भदई हुआ ।

(९) नवाँ वृद्ध । चैन आँवरखेरे से जाकर पहाड़ीपुर में बसे । चैन के तीन पुत्र - मुक्का, रामचरण और दनक भये । मुक्का के दो पुत्र-राजाराम और भदई हुये । राजाराम के दो पुत्र—रामलाल और श्यामलाल हुये ।

(१०) दसवाँ वृद्ध । नोते आँवरखेरे से जाकर बकुरिहापुर में बसे । नोते के एक पुत्र जगन्नाथ हुआ । जगन्नाथ के एक पुत्र-द्वारिका हुआ ।

द्वारिका के दो पुत्र—रामलाल और रामनाथ हुये। रामलाल के एक पुत्र दयाप्रसाद हुआ। रामनाथ के चार पुत्र—बदलू, पूरन, बदरी और बिहारीलाल हुये।

(११) ग्यारहवाँ वृक्ष। दूबरि आँवरखेरे से जाकर मंझनपुर में बसे। दूबरि के दो और भाई, दयालु और नाम अज्ञात हुये। नामअज्ञात वाले के एक पुत्र-मैकू हुआ। मैकू के एकपुत्र—मनोहर हुआ। मनोहर के एक पुत्र बदलू हुये।

(१२) बारहवाँ वृक्ष। दुर्गा, दूबरि, उजागर और चत्तो आँवरखेरे से जाकर कुमखरा में बसे दुर्गा के तीन पुत्र—हजारीलाल, गिरधारीलाल और गुलजारीलाल हुये। हजारीलाल के एक पुत्र-बल्देव हुआ। बल्देव के दो पुत्र-रामबकस और सीताराम हुये। गिरधारी के एक पुत्र-गुरुदयालु हुआ। गुरुदयालु के एक पुत्र-जियालाल हुआ। जियालाल के एक पुत्र-हरीलाल हुआ। गुलजारीलाल के एक पुत्र—रामदीन हुआ। दूबरि के दो पुत्र-मथुरा और दुल्ला हुये। मथुरा के एक पुत्र-रघुवर हुआ। रघुवर के चार पुत्र रामरतन, रामअधार, रामपाल और रामप्रसाद हुये। चत्तो के दो पुत्र—बबोले और गोकुल हुये। गोकुल के दो पुत्र—श्यामलाल और रामलाल हुये। रामलाल के एक पुत्र—रामगोपाल हुआ।

(१३) तेरहवाँ वृक्ष। गिरवर भगौनापुर (नदीपार) में बसे गिरवर के दो पुत्र-ईंदल और पञ्चा हुये। ईंदल के दो पुत्र-खुशाली और दलीपा हुये। दलीपा के दो पुत्र चैत् और मिथीलाल हुये। चैत् के तीन पुत्र प्रल्हाद, और अशर्फी और अज्ञात हुये। खुशाली के एक पुत्र-दयाराम हुआ। दयाराल के दो पुत्र—मेवालाल और जमुवा हुये। पञ्चा के एक पुत्र-देवी हुआ। देवी के दो पुत्र-चन्दी और बैजनाथ हुये। चन्दी के एक पुत्र-राजाराम हुआ। बैजनाथ के दो पुत्र-मोतीलाल और प्यारेलाल हुये।

गोत्र भारद्वाज परम्परागत [डेवरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। सहीद, गयादीन दो भाई डेवरी में बसे। सहीद के दो पुत्र-लालाराम और शिवदयालु हुये। लालाराम के दो पुत्र— फुलुवा और टेनी भये। फुलुवा के एकपुत्र—नाम अज्ञात हुये। शिवदयालु के तीन पुत्र- श्यामलाल, छोटेलाल और तीसरे का नाम अज्ञात हुये। श्यामलाल के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये। छोटेलाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

(२) द्वितीय वृद्ध। कालीदीन बेहटी से डेवरी में जाकर गयादीन के साथ रहा। कालीदीन के तीन पुत्र-भरोसा, सुखलाल और तीसरे का अज्ञात नाम हुये।

(३) तृतीय वृद्ध। कृपाल डेवरी से आकर आँवरखेरा में बसे। कृपाल के तीन पुत्र—रामबकस, भदई, और दुर्गा भये। भदई के एक पुत्र-केशव हुवा। केशव के एक पुत्र—मूसे हुवा। दुर्गा के पाँच पुत्र-चैतू, रंगीलाल, गोकुल, लछिमन और जियालाल हुये। रंगीलाल के दो पुत्र—मिट्ठूलाल, और द्वारिका प्रसाद हुये। मिट्ठूलाल के चार पुत्र—महाबली, रामलाल, श्यामलाल, और हीरालाल हुये। द्वारिका प्रसाद के एक पुत्र—रामेश्वर हुआ। लछिमन के एक पुत्र-छेदालाल हुवा। जियालाल के दो पुत्र—नारायण, और मथुरा प्रसाद हुये। नारायन के दो पुत्र—बन्शी और जयराम हुये। मथुराप्रसाद के एक पुत्र बिहारालाल भये।

(४) चतुर्थ वृद्ध। हीरा डेवरी से आकर झुरहाखेरा में बसे। हीरा के एक पुत्र-चिरञ्जू हुवा। चिरञ्जू के तीन पुत्र—रामलाल, गिरधारी और छवीला हुये।

(५) पन्चम वृद्ध। गिरवर डेवरी से आकर खानपुर में बसे। गिरवर के एक पुत्र—ढाकन हुवा। ढाकन के दो पुत्र-स्वामीदीन, नाम अज्ञात हुये।

(६) षष्टम् वृद्ध। दीनदयालु डेवरी से जाकर खानपुर में बसे। दीन- दयालु के एक पुत्र-इन्दुवा हुवा।

(७) सप्तम् वृद्ध । कल्लू डेवरी से जाकर खानपुर में बसे । कल्लू के दो पुत्र—सहाय और राजाराम हुये । सहाय के चार पुत्र—कालिका, बेनी, मिट्ठू, और लल्लू हुये । कालिका के एक पुत्र—बदरी हुवा । बदरी के दो पुत्र नाम अज्ञात हुये । बेनी के चार पुत्र-मनोहर, बाबू, शिवराम और शिवपाल हुये । मनोहर के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा । मिटठू रुसिया चला गया । लल्लू के दो पुत्र—नयन और दूसरे का अज्ञात नाम भये । मिट्ठू के एक पुत्र पराग हुवा ।

(८) अष्टम् वृद्ध । ईक्षन डेवरी से जाकर धर्मपुर में बसे ईक्षन के एक पुत्र—अर्जुन हुवा । अर्जुन के दो पुत्र—जवाहिर और हीरा हुये । हीरा के दो पुत्र-भारत और अंगद हुये । अंगद के चार पुत्र—राजाराम, मथुरा, जगन्नाथ और गोकुल हुये । जगन्नाथ के एक पुत्र-श्यामलाल हुवा ।

(९) नवां वृद्ध । भवानीदीन डेवरी से जाकर धर्मपुर में बसे । भवानीदीन के दो पुत्र-दुर्गा और हनूमान हुये । दुर्गा के एक पुत्र—रामसहाय हुवा । हनुमान के एक पुत्र-मूसे हुवा । मूसे के दो पुत्र-ज्वाला और भोला हुये । ज्वाला के एक पुत्र—रामलाल हुवा ।

(१०) दसवाँ वृद्ध । छुन्नू डेवरी से जाकर धर्मपुर में बसे । छुन्नू के एक पुत्र—नारायण हुवा । नारायण के एक पुत्र—दुर्जा हुवा । दुर्जा के तीन पुत्र-काशीराम, देवीचरण और महावीर हुये ।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध । मैकू डेवरी से जाकर हिम्मतपुर में बसे । मैकू के एक पुत्र—रामसहाय हुवा । रामसहाय के तीन पुत्र—बदलू, सदलू और तीसरे का नाम अज्ञात हुये ।

(१२) बारहवाँ वृद्ध । किशुनू डेवरी से जाकर हबसापुर में बसे । किशुनू के दो पुत्र—देवीदयालु और राजाराम हुये । देवीदयालु के दो पुत्र-अशर्फीलाल और रामगोपाल हुये ।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध । लछिमन डेवरी से जाकर पूरेदान में बसे । लछिमन के एक पुत्र-चिनगा हुवा चिनगा के छः पुत्र—धनसा, चतुरी, मोहन,

रजना, मनुवा और मनियाँ हुये। मोहन के तीन पुत्र—रामचरण, शुकदेव और सीताराम हुये। रजना के एक पुत्र-भुय्यांदीन हुवा।

(१४) चौदहवाँ वृद्ध। अनैसा और मैकू दो भाई डेवरी से जाकर रोटो में बसे। मैकू के एक पुत्र—रामसहायँ हुवा यह हिम्मतपुर में बसे। अनैसा के तीन पुत्र-दयानन्द, रघुनन्द और शिवनन्द हुये। रघुनन्द के चार पुत्र-श्यामलाल, हजारीलाल, परसाद और चौथे का नाम अज्ञात हुवा। देवनन्द के एक पुत्र—देवीचरण हुवा।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध। कल्याण डेवरी से जाकर बाबूपुर में बसे। कल्याण के तीन पुत्र—माखन, ओरी, और मुचुनू हुये। माखन के दो पुत्र दालचन्द और छोटा हुये। छोटा के दो पुत्र जगन्नाथ और सरयूप्रसाद हुये। ओरी के एक पुत्र—भवानी हुवा। भवानी के एक पुत्र—परसाद हुआ।

(१६) सोलहवाँ वृद्ध। सदासुख, भवानी दो भाई हुये। यह डेवरी से जाकर कनैसा में बसे। सदासुख के तीन पुत्र—जवाहिर, रतीराम और जुराखन हुये। रतीराम के दो पुत्र-सेफला और सहाई हुये। सेफला के एक पुत्र-भिखारी हुवा। भिखारी के तीन पुत्र-बन्शी, श्यामलाल और सांवला हुवे। जुराखन के एक पुत्र-दुर्गा हुवा। दुर्गा के एक पुत्र- रामलाल हुआ। रामलाल के दो पुत्र रामचेला और दयाली हुये।

(१७) सत्रहवाँ वृद्ध। गूलम डेवरी से जाकर गड़वा में बसे। गूलम के एक पुत्र- हीरा हुआ। हीरा के दो पुत्र—कालिका और छोटा हुये। कालिका के दो पुत्र-माखन और परसाद हुये। माखन के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। छोटा के एक पुत्र-रामरत्न हुवा।

(१८) अठारवाँ वृद्ध। पुत्ती डेवरी से जाकर पहाड़ीपुर में बसे। पुत्ती के दो पुत्र—चीफुर और धनी हुये। चीफुर के दो पुत्र-धसीटे और रामप्रसाद हुये। धसीटे के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। रामप्रसाद के एक पुत्र इसुनन्दा हुवा।

(१९) उन्नीसवाँ वृद्ध। दुर्गा डेवरी से जाकर माझेपुर में बसे। दुर्गा के दो पुत्र-सहायँ और धनसा हुये। सहायँ के दो पुत्र-मल्हार और गयादीन हुये। मल्हार के दो पुत्र—राजाराम और बसदेव हुये। धनसा के एक पुत्र

मन्नू हुआ। मन्नू के तीन पुत्र—दर्शन, छोटा, और देवीचरण हुये दर्शन रुसिया चला गया। छोटा के एक पुत्र—क्षत्रपाल हुआ।

(२०) बीसवाँ वृद्ध। लाला डिवरी से जाकर धमना में बसे। लाला के एक पुत्र-मोहन हुआ। मोहन के पांच पुत्र—मेधे, ठाकुर, पूरन, गहँगू और भदईं हुये। मेधे के एक पुत्र—बदलू हुआ। बदलू के एक पुत्र—कालिका हुआ। ठाकुर के दो पुत्र-भवानीदीन और कन्हैया हुये। भवानीदीन के दो पुत्र-नारायण और बदरी हुये। महँगू के दो पुत्र-समाधान और बिहारी हुये। समाधान के दो पुत्र-रामसेवक और रामप्रसाद हुये। रामसेवक के दो पुत्र सूरजदीन और मेवालाल हुये। बिहारी के एक पुत्र-रामेश्वर हुआ। रामेश्वर के दो पुत्र- शिवराम और रामनाथ हुये। भदईं के तीन पुत्र- बैजनाथ और रामचरण तीसरे का नाम अज्ञात हुआ। बैजनाथ के दो पुत्र- नारायण और गयादीन हुये। नारायण के तीन पुत्र-रामलाल, श्यामलाल, और लालमणि हुये। गयादीन के चार पुत्र- रामदयालु, राजाराम, महाराज, शिवराज हुये। रामदयालु के एक पुत्र-बकैया हुवा।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध। बतनू डेवरी में बसे। बतनू के तीन भाई और हुये। दुन्दा, बिन्दा और बौरा। बतनू के एक पुत्र-क्यारा हुआ। क्यारा के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ। दुन्दा के दो पुत्र- भैका और नाम अज्ञात हुये।

(२२) बाइसवां वृद्ध। सेवकी डेवरी से जाकर बाबूपूर में बसे। सेवक के एक पुत्र-सुदयालु हुआ। सुदयालु के दो पुत्र-चिरंजू और रज्जू हुआ। चिरंजू के दो पुत्र- शिवनारायण और जगदम्बा हुये।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (अलमापुरिहा)

उमरहार कुर्मी वन्शातर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। चन्दी अलमापुर में बसे हैं। चन्दी के तीन भाई और हुये। बत्ती, घनईं और दीनदयालु। घनईं के दो पुत्र हरो और सहादेव हुये। सहादेव के एक पुत्र—ठाकुरदीन हुआ। ठाकुरदीन के एक पुत्र-कालीचरण हुआ। कालीचरण के एक पुत्र—दूबरि हुआ। दीनदयाल के चार पुत्र-मेड़ा,

योधा, कल्लू, और केशरी हुये। मेड़ा के एक पुत्र—रामचरण हुआ। रामचरण के तीन पुत्र—गजोधर, मथुरा और चौवा हुये। गजोधर के एक पुत्र—रामरत्न हुआ। कल्लू के एक पुत्र सांवल हुआ। सांवल के चार पुत्र सिंहा, रघुवर, भोला और भदई हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। हीरा आलमपुर में बसे। हीरा के दो पुत्र—गुरुदीन और बच्चीदीन हुये। गुरुदीन के एक पुत्र—पूसू हुये। पूसू के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये। बच्चो के तीन पुत्र-सीताराम, बल्देव और गंगा हुये। सीताराम के दो पुत्र—मिट्ठ और दूसरे का नाम अज्ञात हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। गोपाल आलमपुर में बसे। गोपाल के दो पुत्र तुलसी और कामता हुये। कामता के एक पुत्र रामलाल हुआ। रामलाल के एक पुत्र - बदरी, यह पतित हो गया।

(४) चौथा वृद्ध। दरियाव आलम में बसे। दरियाव के एक पुत्र-राउर हुआ। राउर के तीन पुत्र—जानकी, शिवराज और जम्मा हुये। जानकी के एक पुत्र - नाम अज्ञात हुआ। शिवराम के एक पुत्र-दयाराम हुआ। यह सानसरंगिक पतित हो गये।

(५) पांचवां वृद्ध। झींगुर आलमपुर में रहे। झींगुर के एक पुत्र नथूमल हुआ। नथूमल के दो पुत्र-दुलारेलाल और गौरीशंकर हुये। दुलारेलाल के एक पुत्र रामेश्वर हुआ, जो सानसरंगिक पतित हो गया।

(६) छठवां वृद्ध। गयादीन आलमपुर में बसे। गयादीन के दो पुत्र महादेव और देवीदयाल हुये। देवीदयाल के दो पुत्र—श्यामलाल और रामलाल हुये। यह सान सरंगिक पतित हैं। और कन्टीपुर में आबाद हैं। श्यामलाल के एक पुत्र—सरजूप्रसाद हुआ और रामलाल के दो पुत्र—पूसू और शम्भू हुये।

(७) सातवां वृद्ध। फल्लू आलमापुर से खदरा में जाकर आबाद हुये। फल्लू के एक पुत्र—महावीर हुआ।

गोत्र कश्यप परम्परागत (रतवाखेरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। दनकू रतवाखेर में बसे। दनकू के एक पुत्र-मैका हुआ। मैका के तीन पुत्र-गन्ना, भगवानदीन और देवीदयाल हुये। देवीदयाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध । विसनू रतवाखेरा में बसे । बिसनू के एक पुत्र-टिर्रा हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। भवन रतवाखेरे से आकर मलिगवाँ में बसे। भवन के दो पुत्र—धौकल और गनेश हुये। धौकल के चार पुत्र—मनसुख, दुर्गा, रजधा, और भारत हुये। भारत के एक पुत्र-युगराज हुआ ।

गोत्र भारद्वाज परम्परागत (मेहँदिया)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भारद्वाज परिज्ञात वृद्ध।

(१) वंश, हंश और गनेश ये तीन भाई। मेहदिया से आकर मलिगवाँ में बसे। वश के एक पुत्र-भवन हुआ। भवन के दो पुत्र-महादेव और पतखा हुये। महादेव के दो पुत्र-लक्ष्मण और द्वारिकाप्रसाद हुये। पतखा के चार पुत्र-गोसाईं, वृंदावन, कन्हैया और महाबली हुये। गनेश के एक पुत्र-हीरालाल हुआ। हीरालाल के एक पुत्र-बन्दीदीन हुआ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (पतरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। प्रेम और छीटन दो भाई पतारी में बसे। प्रेम के एक पुत्र-दिलगर हुवा। दिलगर के छः पुत्र—रामनारायण, मंगली प्रसाद, रामरत्न, शिवरत्न, शिवराम और छोटेलाल हुये। रामनारायण के पाँच पुत्र रामचेला, द्वारिका प्रसाद, मथुरा प्रसाद, बाबूलाल और बंशनारायण हुये। रामरत्न के एक पुत्र—इशुनन्दन हुवा। छीटन के एक पुत्र—पन्थनाथ हुवा। पन्थनाथ के एक पुत्र-रामप्रसाद हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। कल्लू पतारी में बसे। कल्लू के चार पुत्र-जवाहिर ईश्वरी प्रसाद, सांवल और योधा हुये। जवाहिर के दो पुत्र-बचोला, और

पूरन हुये। यह सान्सारिक पतित होगये। ईश्वरी के एक पुत्र-भगवानदीन हुवा। सांवल के एक पुत्र – मैकू हुवा। मैकू के तीन पुत्र—गुलज़ारी, रामप्रसाद और रामचेला हुये। यह भी सान्सर्गिक पतित होगये।

(३) तीसरा वृद्ध। पूसू पतारी से आकर कमासी में बसे। पूसू के दो पुत्र-छेदू और बोड़ा हुये। छेदू के दो पुत्र—परम और भिखारी हुये। परम के दो पुत्र-मन्नू और बदरी हुये। बदरी के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। बोड़ा के एक पुत्र—बाटू हुवा। बाटू के दो पुत्र – श्यामलाल और लल्लू हुये। श्याम-लाल के दो पुत्र-रामरत्न और शिवरत्न हुये।

(४) चौथा वृद्ध। लछिमन हुये। जो पतारी से आकर सुल्तानगढ़ में बसे। लछिमन के एक पुत्र-सत्तीदीन हुवा। सत्तीदीन के दो पुत्र-सीताराम और बेणी हुये। सीताराम के तीन पुत्र जगन्नाथ, बैजनाथ और बालकृष्ण हुये। बेणी के तीन पुत्र—बाबूलाल, दुलारे और गिरधारी लाल हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। मैका पतारी से पढ़िनी में आकर बसा। मैका के एक पुत्र—गणेश हुवा। गणेश के एक पुत्र-भिखारी हुवा।

(६) छठा वृद्ध। गंगादीन पतारी से बुद्यौली गये और बुद्यौली से पहरवापुर में बसे। गंगादीन के एक पुत्र-ठाकुरदीन हुवा। ठाकुरदीन के दो पुत्र-मतोल और महादेव हुये।

गोत्र काश्यप परम्परागत (धमनहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। दुन्द धमना से आकर सरहीन में बसे। दुन्द के तीन पुत्र-शिवबकस, मन्नी और पूरन हुये। शिवबकस के दो पुत्र-रामभरोसे, और रामबली हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। भवन, गनेश दो भाई धमना से आकर बिजौली में बसे। गनेश के दो पुत्र-लालाराम और बिन्दा हुये। लाला के दो पुत्र-गंगाचरण रामाधार हुये। गंगाचरण के चार पुत्र—बदलू, तीन के नाम अज्ञात हुये।

राजाराम पतित होगया। बिन्दा के दो पुत्र-शिवनाथ और रामनाथ हुये। शिवनाथ के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। रामनाथ के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

(३) तोसरा वृद्ध। लाई धमना से आकर मिर्जापुर में बसे। लाइ के तीन पुत्र-झुरियाँ, पंगू और पूसू हुये। झूरी के एक पुत्र-भगवान हुवा।

(४) चोथा वृद्ध। कामता, दुर्गा, दयालो, तीन भाई धमना से जाकर मिर्जापुर में बसे। दुर्गा के तीन पुत्र—बुलाकी, राजाराम और गिरधारी हुये। राजाराम के दो पुत्र-गंगाचरण और दूसरे का नाम अज्ञात हुये। दयालो के दो पुत्र—मैका और मन्ना हुये। मैका के दो पुत्र—दुलीचन्द और भीखू हुये।

(५) पांचवां वृद्ध। तुलवा धमना से जाकर पतारी में बसे। तुलवा के तीन पुत्र—पूरन, भगवानदीन, और प्रहलाद हुये। पूरन के एक पुत्र-बदलू हुवा। भगवानदीन के एक पुत्र—पूसू हुवा। पूसू के एक पुत्र-रामचरण हुवा। प्रहलाद के एक पुत्र-रामगोपाल हुवा।

(६) छठवाँ वृद्ध। गंगू धमना में बस हैं। गंगू के भाई रहतुवा और भीखा हुये। गंगू के दो पुत्र—ठाकुरदीन अज्ञात नाम हुये। भीखा के एक पुत्र-देवीदीन हुये। देवीदीन के एक पुत्र—मंगली हुआ।

(७) सातवां वृद्ध। मिहीलाल धमना में रहा। मिहीलाल के दो पुत्र रमसा और परमसुख हुये। रमसा के एक पुत्र—रामचेला हुआ। रामचेला के पांच पुत्र—भागीरथ, सितलू, शिवरतन, शिवनारायण और महाबीर हुये। भागीरथ के एक पुत्र- नाम अज्ञात हुआ।

गोत्र गर्ग परम्परागत (दरियापुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत गर्ग गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। काशी दरियापुर से जाकर पतारी में बसे। काशी के दो पुत्र-भरोसा और रामसहायँ हुये। भरोसा के चार पुत्र—रामदुलारे, श्यामलाल, देवीदयाल और गोविंद हुये। रामसहायँ के तीन पुत्र-महीलाल रामाधार और कैलाशनारायण हुये। महोलाल के एक पुत्र—मनुवा हुवा। रामाधार के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

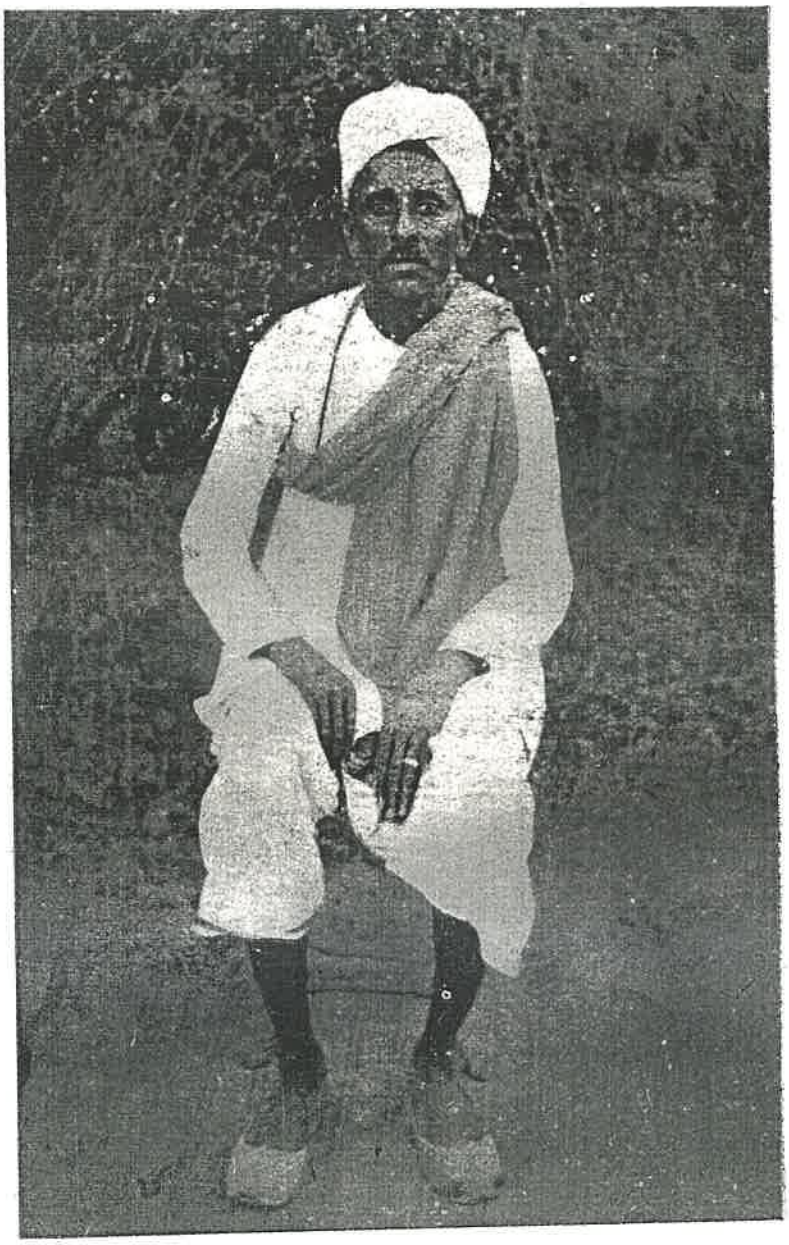

श्री गहवर उमरहार रुसिया निवासी

प्रतिनिधि महासभा ।

(२) दूसरा वृद्ध। बच्छन, लच्छो दो भाई यह दरियापुर में बसे। बच्छन के दो पुत्र-मानसिंह और धनीसिंह हुये। मानसिंह के पांच पुत्र बिहारी, चुरा, कालिका, अम्बादीन और इसुरीप्रसाद हुये। बिहारी के दो पुत्र-उमराव और तोदे हुये। उमराव के तीन पुत्र—रघुवर, रघोली, और संत्री हुये। रघुवर के दो पुत्र—गंगा और लाला हुये। गंगा के दो पुत्र-वंशलाल और रामदयाल हुये। तोदे के एक पुत्र—ज्वालाप्रसाद हुये। ज्वालाप्रसाद के एक पुत्र-नाम अज्ञात। चूरा के एक पुत्र—मकरूलाल हुआ। कालिका के पाँच पुत्र-प्यारेलाल, बदली, रामलाल, दुब्बा और बालक हुये। प्यारेलाल के दो पुत्र-गुलाबी और राजाराम हुये। गुलाबी के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। बदली के एक पुत्र—मथुरा हुआ। रामलाल के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ। दुब्बा के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये। बालक के एक पुत्र अज्ञात हुवा। धनसिंह के एक पुत्र-नवल हुये। नवल के एक पुत्र-बिन्दा हुआ। बिन्दा के दो पुत्र-पराग और भरोसा हुये। भरोसा के चार पुत्र अजोध्या, जगन्नाथ, रामनाथ, सुदामा हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। कल्लू दरियापुर में बसे। कल्लु के दो पुत्र-हेमान और साधू हुये। हेमान के तीन पुत्र-दुब्बा, दीनदयाल और मातादीन हुये। दीनदयाल के एक पुत्र—रामपाल हुवा। मातादीन के एक पुत्र-देवीचरण हुये। देवीचरण के एक पुत्र-जगन्नाथ हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। कक्का बाबा दरियापुर में रहे। कक्का के एक पुत्र बेनी हुवा। बेनी के एक पुत्र-घासिल हुआ। घासिल के चार पुत्र-दिलगर नारायण, दौलत और गयादीत हुये। दिलगर के एक पुत्र-भिखारी हुआ।

(५) पांचवां वृद्ध। दम्मर यह दरियापुर में बसे। दम्मर के एक पुत्र देवी हुआ। देवी के एक पुत्र छक्को हुवा।

(६) छठां वृद्ध। कुलकुतिया दरियापुर में बसे। कुलकुतिया के एक पुत्र—देवनन्द हुआ। देवनन्द के एक पुत्र- जगन्नाथ हुवा।

(७) सातवां वृद्ध। जेठू दरियापुर में बसे। जेठू के चार पुत्र-पुसू, मजुवा, मनोहर और मेवालाल हुये। पुसुवा के दो पुत्र—बन्धनाथ और सुखुवा हुये। मजुवा के एक पुत्र फैलुवा हुआ। मेवालाल और मनोहर खदरा चला गया।

(८) आठवां वृद्ध । पुन्ना दरियापुर में रहा । पुन्ना के एक पुत्र-कन्हई हुवा । कन्हई के एक पुत्र—धौरा हुवा ।

(९) नवां वृद्ध । भिखारी दरियापुर से आकर बसेकियां में बसा । भिखारी के एक पुत्र—धौकल हुआ । धौकल के एक पुत्र—महादेव हुवा । महादेव के दो पुत्र-रमाशंकर और रामनारायण हुये । रमाशंकर के एक पुत्र—भोला नाम हुवा ।

(१०) दशवां वृद्ध । गनेश दरियापुर से आकर सैठी में बसे । गनेश के दो पुत्र—मैधुवा और गिल्ला हुये । मैधुवा के दो पुत्र-भिखारी और गिरधारी हुये । गिल्ला के दो पुत्र—पूरन और माधो हुये । यह महमदपुर में आ बसे ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत [डिघरुवहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । लोटन, देवीदीन दो भाई डिघरुवा से आकर रेवाड़ो में बसे । देवीदीन के एक पुत्र-सीतलप्रसाद हुआ । सीतलप्रसाद के तीन पुत्र चन्द्रिका, रामदीन और रामलाल हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । जियालाल डिघरुवा से आकर नयेपुरवा में बसे। जियालाल के एक पुत्र-शिवनन्दन हुआ ।

(३) तीसरा वृद्ध । कामता डिघरुहा से आकर नदेपुरवा में बसा । कामता के एक पुत्र—छेदालाल हुवा । छेदा के तीन पुत्र-मैका, गंगाचरण और पगाली हुवा । मैका के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये । गंगाचरण के एक पुत्र नाम अज्ञात हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । बैजनाथ डिघरुवा से आकर गोंदहा में बसा । बैजनाथ के एक पुत्र—बदलू हुवा बदलू के तीन पुत्र छेदू, रामधीन और लछिमन हुये ।

गोत्र काश्यप परम्परागत (मुरुकुटहा)

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञान वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । मतई मुरुकुटा से आकर ममनापुर में बसे । मतई के चार पुत्र—भिखारी, सीताराम, ठाकुरदीन और गोकुल हुये । सीताराम के एक पुत्र—द्वारिका हुआ । गोकुल के एक पुत्र रामप्रसाद हुवा ।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (भैंसहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहिला वृद्ध । ठाकुर धनसिंहपुर में बसे । ठाकुर के एक पुत्र ईश्वरीप्रसाद हुवा । ईश्वरी प्रसाद के एक पुत्र—लछिमन हुवा । लछिमन के दो पुत्र—शिवनाथ, और रामनाथ हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । दनकू अहपुर में बसे । दनकू के एक पुत्र-धमोला हुवा । धमोला के दो पुत्र—जगन्नाथ और रघुनाथ हुये ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (कपिलिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहिला वृद्ध । योधा कपिलिया से जाकर खानपुर में बसे । योधा के दो पुत्र -दुल्लू और देवीदयाल हुये । दुल्लू के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये ।

गोत्र काश्यप परम्परागत (छोटेपुरिहा

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । तुला छोटेपुर से जाकर नसेनिया में बसे । तुला के दो पुत्र-सहाँय और ढाकन हुये । सहाँय के दोपुत्र-दीनदयालु और रामदयालु हुये । दीनदयालु के एक पुत्र—बदलू हुवा । रामदयालु के एक पुत्र भिखारी हुवा । भिखारी के दो पुत्र—छोटेलाल और छन्नूलाल हुये । छोटेलाल के एक पुत्र—रामरत्न हुवा । ढाकन के एक पुत्र-फोसा हुवा यह रामपुर में रहता है ।

गोत्र वत्स परम्परागत (मेढ़ापाटी वाले)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर वत्स गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

१ (क) प्रथम वृद्ध । जगन्नाथ मेढ़ा से जाकर कनैरा में बसे । जगन्नाथ के एक पुत्र-दम्मर हुवा । दम्मर के तीन पुत्र—पूरन, मधुर और चिरञ्जू हुये । चिरञ्जू के दो पुत्र—रामपाल और महाबीर हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । दुर्गा मेढ़ा से जाकर कनैरा में बसे । दुर्गा के तीन पुत्र-जेठू, तेजा और मेदा हुये । जेठू के चार पुत्र-मन्ना, बदल, गोकुल और देवीचरण हुये । बदल के दो पुत्र-लल्लू और मनोहर हुये । गोकुल के दो पुत्र हजारी और गुलजारी हुये । हजारी के एक पुत्र-रामबकस हुवा । देवीचरण के दो पुत्र—बाबू और महावीर हुये । मेदा के तीन पुत्र-बंशी, मुरली और जगन्नाथ हुये । बंशी के एक पुत्र—शिवराम हुवा । मुरली के चार पुत्र—बैजनाथ,राजाराम भूरा और चौथे का नाम अज्ञात हुये । जगन्नाथ के दो पुत्र-शिवनारायण और रामरत्न हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । भवन मेढ़ा पाटी से जाकर कनैरा में बसे । भवन के चार पुत्र-लोती, मैका, सदानन्द और पन्चम हुये । पन्चम के दो पुत्र-भगवानदीन और गिरधारी हुये । भगवानदीन के तीन पुत्र—मन्नी, परागू और ठाकुरदीन हुये । पराग के एक पुत्र—सुन्दर लाल हुवा । ठाकुरदीन के एक पुत्र-रामाधीन हुवा ।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (मथुरापुरिहा)

१ (ख) पहिला वृद्ध । सभा मेढ़ा में बसे । सभा के दो पुत्र-मल्हू और दनक हुये । मल्हू के एक पुत्र-बबुली हुवा । बबुली के दो पुत्र—हजारी और गुलजारी हुये । हजारी के तीन पुत्र—राजाराम, बदरी प्रसाद और बच्चा हुये । राजाराम के एक पुत्र—प्यारेलाल हुवा । बदरी प्रसाद के एक पुत्र-शिवरत्नलाल हुवा । बच्चा के एक पुत्र-शिवनाथ हुवा । दनक के दो पुत्र—जेठू और कल्लू हुये । जेठू के एक पुत्र—छेदालाल हुवा । छेदालाल के एक पुत्र-बालगोविंद हुवा । बालगोविंद के एक पुत्र—रामनारायण हुवा । कल्लू के एक पुत्र भिखारी लाल हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । छीटन हुये । यह मेढ़ा पाठी में बसे । छीटन के एक पुत्र—मलग हुये । मलग के एक पुत्र-गौरी हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । भोला मेढ़ापाटी में बसे । भोला के एक पुत्र-बोधी हुये । बोधी के तीन पुत्र—भूरा, पोले और बदल हुये । पोले के दो पुत्र-मन्नू और महादेव हुये । मन्नू के एक पुत्र-भोड़े हुये । भोड़े के तीन पुत्र-रामचेला, जगन्नाथ और रामरत्न हुये । रामचेला के एक पुत्र—शिवलाल हुवा । जगन्नाथ

के दो पुत्र-रामनारायण और दूसरे का अज्ञात नाम हुये। रामरत्न के दो पुत्र लक्ष्मीनारायण और श्यामलाल हुये। महादेव के एक पुत्र—तोंदे हुवा। तोंदे के दो पुत्र-सुखनन्दन और सुदामा हुये। बदल के तीन पुत्र-सुकुल गिरधारी और दुर्गाप्रसाद हुये। गिरधारी के एक पुत्र—भजनीराम हुवा दुर्गाप्रसाद के तीन पुत्र—छक्कीलाल, हनुमान और बेणीमाधव हुये। छक्कीलाल के एक पुत्र बाबूलाल हुवा।

(४) चौथा बृद्ध। पूसू हुये। यह मेढ़ापाटी में बसे। पूसू के भाई मैकू हुये। मैकू के एक पुत्र-चौबे हुवा। चौबे के एक पुत्र-कालीचरण हुवा।

(५) पचवाँ बृद्ध। गयादीन मेढ़ा में बसा। गयादीन के एक पुत्र-मथुरा हुवा। मथुरा के एक पुत्र-कालिका हुवा। कालिका के एक पुत्र रामलाल हुवा।

(६) छठवाँ बृद्ध। बैजनाथ यह मेढ़ापाटी में बसे। बैजनाथ के एक पुत्र-दुर्जा हुवा। दुर्जा के एक पुत्र-सकठू हुवा। सकठू के दो पुत्र-लालाराम और भवानीदीन हुये। लालाराम के तीन पुत्र—गयाप्रसाद, द्वारिका प्रसाद और रामप्रसाद हुये।

(७) सातवाँ बृद्ध। बिहारी मेढ़ापाटी में बसे। बिहारी के एक पुत्र-जेठू हुवा। जेठू के दो पुत्र-धंगड़ और चिरंजूलाल हुये। धंगड़ के एक पुत्र-गंगाराम हुवा। चिरंजूलाल के दो पुत्र-रामभरोसा और प्रहलाद हुये।

गोत्र कश्यप परम्परागत (मांझेपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात बृद्ध

(१) प्रथम बृद्ध। लोचन और माधौ दो भाई, मांझेपुर से जाकर हँसोले खेरे में बसे। लोचन के दो पुत्र—मनोहर और दूसरे का नाम अज्ञात हुवा। माधव के एक पुत्र—बलदेव हुवा जोकि पतित होगया।

(२) दूसरा बृद्ध। बोड़ा के दो पुत्र मोहन और सुक्खू हुये। यह मांझे के पुरवा से जाकर बसन्त खेरे में बसे। सुक्खू के तीन पुत्र-झाँडू कामताप्रसाद और अयोध्याप्रसाद हुये। झाँडू के एक पुत्र-गयाप्रसाद हुवा।

(३) तीसरा बृद्ध। चुन्नीलाल मांझे के पुरवा से जाकर धमना में बसे चुन्नी के दो पुत्र—रामलाल और श्यामलाल हुये। रामलाल बोधीपुर चला गया।

(४) चौथा वृक्ष। छोटेलाल हुवा। यह मांझे के पुरवा से घमना चला गया। छोटेलाल के एक पुत्र—जगन्नाथ हुवा। जगन्नाथ के दो पुत्र—रामरतन और नाम अज्ञात हुये।

(५) पांचवां वृक्ष। जियालाल मांझे के पुरवा से जाकर धर्मसिंहपुर में बसे। जियालाल के चार पुत्र—छेदू, घम्नू, कन्हैयालाल और बलदेव हुये। छेदू के दो पुत्र-गंगाचरण और रामचरण हुये। गंगाचरण के एक पुत्र—बदलुप्रसाद हुये। रामचरण के एक पुत्र—नारायण हुआ। कन्हैया के एक पुत्र रामप्रसाद हुवा।

(६) छठवां वृक्ष। दैनी मांझे के पुरवा से आकर बकियापुर में बसे। दैनी के तीन पुत्र—पीतम, मन्नी और भोला हुये। पीतम के एक पुत्र—फयुला हुवा। मन्नो के चार पुत्र-चुन्ना, रामदयाल, छोटा और पुत्तुवा हुये। चुन्ना के दो पुत्र—रामलाल और श्यामलाल हुये। रामलाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। छोटा के एक पुत्र-जगन्नाथ हुआ। जगन्नाथ के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

(७) सातवां वृक्ष। छोटन और सेवकी दो भाई मांझे के पुरवा में बसे। छोटन के पांच पुत्र—चतुरी, ठाकुर, मैना, केशव और गंगाराम हुये। ठाकुर के दो पुत्र-महादेव और सहादेव हुये सहादेव के दो पुत्र—झुक्खा और रामलाल हुये। झुक्खा के पांच पुत्र—बद्रीप्रसाद, मानाप्रसाद, शिवनाथप्रसाद रघुनाथप्रसाद और श्यामलाल हुये। मानाप्रसाद के एक पुत्र—मेवालाल हुवा। रामलाल के दो पुत्र—शिवपाल और रामनाथ हुये। मैना के चार पुत्र—पुसू, बलदेव, देवान, और झुकुरू हुये। पुसू के तीन पुत्र—छेदू, कुवर, और मूले हुये। छेदू के एक पुत्र—दुलीचंद हुआ। दुलीचंद के दो पुत्र—रामनारायण और शिवनारायण हुये। कुवर के दो पुत्र—रामभरोसा और रामरतन हुये। मूसे के एक पुत्र—राजाराम हुआ। बलदेव के तीन पुत्र- कालिका, मतई और भरत हुये। कालिका के चार पुत्र—शम्भूदयालु, रामप्रसाद, रामरतन और बाबूलाल हुये। शम्भूदयालु के दो पुत्र-रामगोपाल और रामऔतार हुये। रामप्रसाद के दो पुत्र-रामसहाय दूसरे का नाम अज्ञात हुआ। देवान के तीन पुत्र—कल्लू, रामदयालु और भगवानदीन हुवा। कल्लू के दो पुत्र-बदली और बंशीधर हुये। बदली के एक पुत्र-बुद्धू हुआ। झुकरू के दो पुत्र-अंगनूप्रसाद और लछिमनप्रसाद हुये। लछिमनप्रसाद के पांच पुत्र- शिवरतन, राजाराम,

महाराज, शिवराज और मक्खीलाल हुये। शिवरतन के एक पुत्र- सुखलाल हुवा राजाराम के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये। गंगा के दो पुत्र—मन्ना और पितना हुये। मन्ना के चार पुत्र- यह यहां नहीं बसे हैं। सेवकी के पांच पुत्र-बरियार बोड़े, मत्ता, छत्ता, और जेठू हुये। बरियार के दो पुत्र- मैका और गुलमा हुये। मैका के तीन पुत्र- बसन्ता, तुलसी और मथुरिया हुये। बसन्ता के तीन पुत्र गंगाचरण, रामचेला और दीनदयालु हुये। रामचेला के दो पुत्र- गयाप्रसाद और मन्नीलाल हुये। तुलसी के एक पुत्र-मुडुवा हुवा। यह पतित होगया और अवधना चला गया। मथुरिया के एक पुत्र-फतुवा हुवा। यह पतित होगया और बंजकोलवा चला गया। बोड़े के तीन पुत्र- जियालाल, सुखलाल और मोहनलाल हुये। जियालाल धनसिंहपुर चला गया। सुखलाल बसन्त खेरा चला गया। मोहनलाल के दो पुत्र- देवीदीन और तुलाराम हुये। देवीदीन के एक पुत्र- भूरा हुवा। मत्ता के एक पुत्र- ईश्वरीप्रसाद हुआ। ईश्वरी के तीन पुत्र गया पूरन और मनुवा हुआ। मनुवा के तीन पुत्र-खुशाली, बबुली और छक्की लाल हुए। छत्ता के दो पुत्र- सहादेव और महादेव हुये। महादेव के एक पुत्र भवानीदीन हुआ। भवानीदीन के दो पुत्र- बाबूलाल और रामप्रसाद हुये। जेठू के दो पुत्र- रामचरण और महावीर हुए। रामचरण के दो पुत्र- जगन्नाथ और बैजनाथ हुये। महावीर के दो पुत्र- रामेश्वर और सूरजदीन हुये।

(८) आठवाँ वृद्ध। हवल माझेखेरे से जाकर पढिना में बसे हवल के एक पुत्र- रामलाल हुआ। रामलाल के चार पुत्र- भगवानदीन, छोटा, उजागर और द्वारिका हुये। छोटा के चार पुत्र-यह पतित होगये।

गोत्र गर्ग परम्परागत [डेहरिया]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत गर्ग गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) पहिला वृद्ध। रमसा डेहरिया में बसा। रमसा के तीन पुत्र शिवदत्त, मदारीलाल और लाला हुये। शिवदत्त के एक पुत्र- भुन्ना हुआ। भुन्ना के दो पुत्र- गजोधर और महाबली हुये। मदारीलाल के एक पुत्र पचुवा हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध मूसे डेहरिया में बसा। मूसे के एक पुत्र- लछिमन हुआ। लछिमन के एक पुत्र-भीखू हुवा। और भीखू के एक पुत्र-गरीबे हुवा।

(३) तीसरा वृद्ध । गयादीन डेहरिया से जाकर दिलावलपुर में बसे । गयादीन के भाई जियालाल थे । जियालाल के तीन पुत्र-मनुवाँ, झुरियाँ और शिवरतन हुये ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (हरबस पुरिहा

डमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहिला वृद्ध । निधवा हरबसपुर से जाकर हंसोलेखेरे में बसा । निधवा के एक पुत्र—तुलवा हुवा । तुलवा के दो पुत्र—दुर्गा और लछिमन हुये । दुर्गा पतित होगया ।

(२) दूसरा वृद्ध इसुरी हरबसपुर से जाकर हंसोलेखेरे में बसे । इसुरी के एक पुत्र-बोंदी हुआ । बोन्दी के एक पुत्र-रघुवर हुवा । रघुवर के एक पुत्र—नाम अज्ञात ।

(३) तीसरा वृद्ध । सौनियाँ हरबसपुर से जाकर हंसोलेखेरे में बसे । सौनियाँ के एक पुत्र-बालक हुवा । बालक के एक पुत्र—महाबीर हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । लालमणि हरबसपुर से जाकर हंसोलेखेरे में बसा । लालमणि के तीन पुत्र—पहली, भिखारी और रघुनाथ हुये । पहली के एक पुत्र नाम अज्ञात हुवा ।

(५) पाँचवाँ वृद्ध । मनियाँ हरबसपुर से जाकर हंसोलेखेरे में बसे । मनियाँ के एक पुत्र—पितना हुवा । पितना के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुवा ।

(६) छठवाँ वृद्ध । भूरा हरबसपुर से जाकर हंसोलेखेरे में बसे । भूरा के एक पुत्र बदलू हुवा ।

(७) सातवां वृद्ध । मनसा हुवा यहहंसोलेखेरे में जाकर बसा । मनसा के दो पुत्र—रामदयाल और शिवभजन हुवा । शिवभजन के एक पुत्र-दुर्गा हुवा

(८) आठवाँ वृद्ध । दुलीवा हरबसपुर से जाकर हंसोले खेरे में बसे । दुलीवा के तीन पुत्र-तोला, लल्लू और दल्लू हुये । तोला के छः पुत्र-रामाधीन, किदारनाथ, रामरतन, रामशंकर, छोटेलाल और मथुरा हुये । लल्लू के दो पुत्र बदरी और अज्ञात नाम हुये ।

(९) नवाँ वृद्ध। महादेव हरजनपुर से जाकर हंसोलेखेरमें जाकर बसा। महादेव के एक पुत्र—भिक्खू हुवा। भिक्खू के दो पुत्र—महावीर और रंगीलाल हुये।

(१०) दसवाँ वृद्ध। लछिमन हरिजनपुर से जाकर हसोलेखेरे में बसे। लछिमन के एक पुत्र-गंगादीन हुआ। गंगादीन के एक पुत्र-राजाराम हुवा। राजाराम के एक पुत्र-शिवप्रसाद हुआ। शिवप्रसाद के चार पुत्र-शुकदेव, शेष तीन के नाम अज्ञात यह पतित होगये।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध। कल्लू हरजनपुर से हसोलेखेरे में आकर बसे। कल्लू के दो पुत्र—देवीदीन और खुशाली हुये। देवीदीन के एक पुत्र—रघुवा हुवा रघुवा के एक पुत्र—शुकदेव हुआ। खुशाली के एक पुत्र-मेडू हुवा। मेडू के एक पुत्र—रघुनन्दन हुआ जो पतित होगया।

(१२) बारहवां वृद्ध। छीटी हरबसपुर से सेमरखेर चले गये। छीटी के चार पुत्र—मैकू, सैकू, नवल और दयन हुये। मैकू के एक पुत्र—बिहारी हुआ। सैकू के दो पुत्र-लालदास और बकतौरा हुये। लालदास के दो पुत्र भदई और जेठू हुये। जेठू के चार पुत्र-पूसू, गजोधर, मेवालाल और मनोहर हुये। पूसे के दो पुत्र—पन्थनाथ और नाम अज्ञात हुये। दरियापुर चले गये। गजोधर के एक पुत्र-फैलू हुआ। मेवालाल और मनोहरलाल दोनों भाई खदरा चले गये। नवलकिशोर के पांच पुत्र-खुमान, हीरा, जवाहिर, सहाय, भदई हुये। खुमान के एक पुत्र—भैरम हुवा। भैरम के तीन पुत्र—रामदीन, भगवान-दीन और रामचरण हुये। रामचरण के एक पुत्र-साताराम हुवा। हीरालाल के चार पुत्र—ख्याली, कन्हई, मन्ना और बसन्ता हुये। ख्याली के दो पुत्र जितवा और चेत हुये। जितवा के एक पुत्र—रसपाल हुआ। कन्हई के एक पुत्र-दीनदयाल हुवा। मन्ना के एक पुत्र—गजोधर हुवा। जवाहिर के दो पुत्र घासिल और तिलोका हुये। घासिल के एक पुत्र-किरपा हुआ। भदई के एक पुत्र—सांवल हुआ। सांवल के एक पुत्र—द्वारिका हुवा। दयन के चार पुत्र-उमराय, लछिमन, दनक और पंचम हुये। उमराय के चार पुत्र जालिम, मन्नू, कालिक और राधे हुये। जालिम के एक पुत्र-भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र—रामदयाल हुआ। मन्नू के दो पुत्र-कल्लू और भदई हुये। कल्लू के तीन पुत्र-नारायण, बिन्दा और चतुरी हुये। बिन्दा के एक पुत्र

छेदीलाल हुआ। भदई के पाँच पुत्र—सुखलाल, रामधीन, सरयूप्रसाद, सूर्यप्रसाद और रामरत्न हुये। दनक के एक पुत्र—गोकुल हुआ। गोकुल के दो पुत्र—परसाद और साधू हुये।

(१३) तेरहवां वृद्ध पूरन हरबसपुर से जाकर मिर्जापुर में बसे। पूरन के तीन पुत्र—जगन, बिहारी और जुराखन हुये। बिहारी के दो पुत्र-बाबूराम और द्वारिका हुये। बाबूराम के एक पुत्र—शिवबालक हुआ। शिवबालक के एक पुत्र-राजाराम हुआ।

(१४) चौदहवां वृद्ध। चिरंजूलाल हरबसपुर से जाकर चिहुलपुर में बसे। चिरंजूलाल के तीन पुत्र—रामसहाय, मन्नूलाल और गयादीन हुये। रामसहाय के तीन पुत्र—मन्ना, बदला और रामपाल हुवा।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (जद्दूपुरिहा) (रायपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। बेनोमाधव जद्दूपुर से जाकर बाबूपुर में बसे। बेनोमाधव के दो पुत्र- रद्धू लोकन हुये। रद्धू के एक पुत्र-दुर्गा हुआ। दुर्गाप्रसाद के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। लोकन मंझनपुर में जाकर बसा। लोकन के एक पुत्र मिट्ठीलाल हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। दयाली जद्दूपुर से जाकर भाजीताला में बसे। दयाली के दो पुत्र—लछिमन और कालीचरण हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। सीताराम जद्दूपुर से जाकर पहाड़ीपुर में बसे। सीताराम के दो पुत्र-लालाराम और भिखारी हुये। लालाराम के दो पुत्र जानकी और भगवानदीन हुये। भिखारी के दो पुत्र—गिरधारीलाल और लछिमनप्रसाद हुये। लछिमन के चार पुत्र-रामचेला, रामलाल, सुदीन, मथुरा हुये। रामचेला के दो पुत्र—मेका और सैका हुये। रामलाल के तीन पुत्र गंगाचरन, पुत्तीं और अयोध्या हुये। मथुरा के दो पुत्र—गजोधर और कामता हुये।

(४) चौथा वृद्ध। सूरत जद्दूपुर से जाकर पहारीपुर में बसे। सूरत के एक पुत्र बदलू हुवा। बदलू के दो पुत्र-देवीदीन और मन्ना हुये। देवीदीन

के एक पुत्र—हजारी हुआ। हजारी के दो पुत्र—परसाद और जगन्नाथ हुये। परसाद के एक पुत्र-विजयबहादुर हुआ। मन्ना के दो पुत्र—कालिका और गुलजारी हुये।

(५) पांचवाँ वृद्ध। मन्नू जहूपुर में रहे। मन्नू के एक पुत्र-दीनदयाल हुआ। दीनदयाल के एक पुत्र—बैजनाथ हुआ। बैजनाथ के चार पुत्र-सरयू-प्रसाद राजाराम प्यारेलाल और रामपाल हुये।

(६) छठवां वृद्ध। दनूबूदी जहूपुर में बसे। दनूबूदी के एक पुत्र छोटा हुवा।

(७) सातवाँ वृद्ध। पूतन जहूपुर में बसे। पूतन के दो पुत्र-बदलू और मोहन हुये।

(८) आठवाँ वृद्ध। भगवानदीन जहूपुर में बसे। भगवानदीन के एक पुत्र—गेंदा पतित होगया।

(९) नवाँ वृद्ध। कल्लू हुआ। ये जहूपुर में बसे। कल्लू के एक पुत्र भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र-रामदास हुआ।

(१०) दसवां वृद्ध। जानकी जहूपुर में बसा है। जानकी के तीन पुत्र-बुद्धू, सुदधू और दालचन्द हुये। यह तीनो पतित होगये।

गोत्र परम्परागत (तेंदुलिहा)

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहिला वृद्ध। चैन तेंदुली से जाकर बाबूपुर में बसे। चैन के दो पुत्र-तोंदे और दुर्गा हुये। दुर्गा के एक पुत्र-भदई हुआ। भदई के दो पुत्र शिवरतन और बूंदीलाल हुये। तोंदे के दो पुत्र-पूसू, जंगली हुये। पूसू के एक पुत्र—कल्लू हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। भवानीदीन तेंदुली से जाकर बाबूपुर में बसे। भवानीदीन के चार पुत्र-दनका, मनुवा, बलिया और हीरा हुये। मन्नू के एक पुत्र-मैका हुआ। मैका के एक पुत्र—भिखारी हुवा।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (बिलरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। छेदू, थान, गयादीन और हनकऊ बिलारी में बसे। छेदू के एक पुत्र-बच्चा हुवा। बच्चा के पांच पुत्र—रघुबर, सेनी, युगराज, चौवा और रामनाथ हुये। रघुबर के एक पुत्र-मेधा हुआ। थान के दो पुत्र—मटरू रामलाल हुये। मटरू के चार पुत्र--जगन्नाथ, जेठू, सुन्दर और एक का नाम अज्ञात हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। रामदीन हुवा। रामदीन के दो पुत्र-होरीलाल और पुत्तू हुये। होरीलाल के तीन पुत्र—जो पतित होगये। वह बिलारी में बसे।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (लेंड़हा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। मधुराम धनसिंहपुर में बसे। मधुराम के एक पुत्र रामदीन हुवा। रामदीन के तीन पुत्र-गयादीन, कन्हई और दीनदयालु हुवा। गयादीन के एक पुत्र—मेधा हुवा। दीनदयालु के एक पुत्र-बिन्दा हुवा। बिन्दा के एक पुत्र—भैका हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। फकीरे बड़िगवाँ से जाकर सिकट्ठनपुर में बसे। फकीरे के एक पुत्र—रामचेला हुवा। यह पतित होगया।

(३) तीसरा वृद्ध। रामलाल अंगनाखेरे में बसा। रामलाल के दो पुत्र—भगवानदीन और राजाराम हुये। भगवानदीन के एक पुत्र-देवीचरण हुवा

(४) चौथा वृद्ध। जवाहिर बसन्तखेरे में बसे हैं। जवाहिर के दो पुत्र—मगदूम और झाँडू हुये। मगदूम के एक पुत्र—हनुमान हुवा। हनुमान के चार पुत्र—मथुरा, जगन्नाथ, बैजनाथ और रामेश्वर हुये। मथुरा के तीन पुत्र—ठाकुरदीन, महादेव, लछिमन हुये। महादेव के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये। जगन्नाथ के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। बैजनाथ के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये। लछिमन के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। झाड़ू के एक पुत्र-मनियाँ हुवा। मनियाँ के एक पुत्र—कल्लू हुवा।

(५) पाचवाँ वृद्ध । रामलाल बड़िगवाँ से जाकर डिघरवा में बसा। रामलाल के दो पुत्र—राजा, और भगना हुये । भगना आंवर खेर में बसा है। राजा के तीन पुत्र—दयाराम और दो के अज्ञात नाम हुये ।

(६) छठवाँ वृद्ध । दिलवरी पतारी में बसा है। दिलवरी के दो पुत्र रघुवर और परिमालिक हुये । रघुवर के चार पुत्र-नारायण, शिवनाथ, सीताराम और जगन्नाथ हुये। शिवनाथ के दो पुत्र-रामदीन और गयाप्रसाद हुये ।

(७) सातवाँ वृद्ध । किशुन विलारी में बसे। किशुन के दो पुत्र-घनश्याम और मैका हुये । घनश्याम के एक पुत्र—मनबोधन हुवा । मनबोधन के तीन पुत्र-शिकदार, सुन्दर और तीसरे का नाम अज्ञात हुये । मैका के तीन पुत्र—छेदू, घसीटे और अम्बर बासी हुये ।

(८) आठवाँ वृद्ध । लोचन असधना में बसे । लोचन के एक पुत्र गोधना हुवा । गोधना के एक पुत्र-छोटा हुवा ।

(९) नवाँ वृद्ध । किरपा, पुत्ती और भिखरा असधना में बसे। किरपा के दो पुत्र—परसाद और बालकृष्ण हुये। पुत्ती के दो पुत्र—भोला और मुन्नीदीन हुये । भिखरा के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा ।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत [जमुनियाँ खेरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । भिखारी जमुनियां खेरे से जाकर रामपुर में बसे । भिखारी के एक पुत्र-भुंजवा हुवा। भुंजवा के तीन पुत्र-हीरा, गोकुल और गोपाल हुये । हीरा के एक पुत्र—चेतराम । चेतराम के दो पुत्र—नाम अज्ञातहुये

(२) दूसरा वृद्ध । भिखारी जमुनियाँखेरे से जाकर कुन्दे रामपुर में बसे। भिखारी के दो पुत्र-बदला और लालाराम हुये। बदला के एक पुत्र दयालु हुवा । लालाराम के एक पुत्र—गंगाराम हुवा । गंगाराम के एक पुत्र गजोधरलाल हुवा ।

(३) तीसरा वृद्ध । बदलू जमुनियाँखेरे से जाकर कुन्दे रामपुर में बसे। बदलू के एक पुत्र—कालिका हुवा । कालिका के चार पुत्र—भरोसा, रामदीन, ओय और भगवानदीन हुये ।

(४) चौथा वृद्ध । मचल जमुनियाँखेरे से जाकर बसन्तखेरे में बसे । मचल के तीन पुत्र—गुरुदीन, महादेव और शिवदयाल हुये । गुरुदीन के दो पुत्र-जगन्नाथ और मन्ना हुये ।

(५) पांचवाँ वृद्ध । बोड़ा जमुनियाँ खेरे से जाकर डिघरुवा में बसा ।

(६) छठवां वृद्ध । घनसूर जमुनियाँ खेरे से जाकर बबई में बस । घनसूर के भाई काशी हुये । घनसूर के एक पुत्र—दूबरि हुवा । दूबरि के तीन पुत्र—पल्हा, पराग और मन्नू हुये । पल्हा के एक पुत्र जगन्नाथ हुवा ।

(७) सातवाँ वृद्ध । भोला जमुनियाँखेर से जाकर बोधीपुर में बसे । भोला के दो पुत्र—भूरा और योधा हुये । भूरा के एक पुत्र—खुशाली हुवा । खुशाली के दो पुत्र—गोपाली, शिवनारायण हुये । योधा के एक पुत्र चन्द्रिका प्रसाद हुवा ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत [सांखेवाले]

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । दयाराम सांखे से जाकर रामपुर में बसे । दयाराम के एक पुत्र-कल्लू हुआ । कल्लू के दो पुत्र—दुलीचन्द और रूपचन्द हुये । दुलीचन्द के एक पुत्र—मेवालाल हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । फगुना साँखे में बसा । फगुना के एक पुत्र—शम्भू हुवा । शम्भू के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुवा ।

(३) तीसरा वृद्ध । लालाराम सांखे में बसे । लालाराम के दो पुत्र कल्लु और सग्गा हुये । सग्गा के दो पुत्र-हजारी और हसुरी हुये । हजारी के दो पुत्र-बलदेव और नाम अज्ञात हुये ।

गोत्र कश्यप परम्परागत [नन्हूपुरिहा]

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहिला वृद्ध । मिहीलाल हुये । यह नन्हूपुर से जाकर भाजोताला में बसे । मिहीलाल के दो पुत्र-लल्लू और चैन हुये । लल्लू के तीन पुत्र-गोही-दीन, बोड़ा और दुर्जन हुये । दुर्जन के तीन पुत्र-टीकाराम, रिग्गा और खुशाली

हुये। टीकाराम के एक पुत्र—देवीदयालु हुवा। देवीदयालु के एक पुत्र-सुखई हुवा। चैन के दो पुत्र-झांड़ू और अंगद हुये। झांड़ू के एक पुत्र-दुर्गा हुवा। दुर्गा के तीन पुत्र-फैलू, पूरन और दुलीचन्द हुये। फैलू के एक पुत्र-शिवप्रसाद हुवा। पूरन के दो पुत्र—रामरतन और रामलाल हुये। अंगद के तीन पुत्रचतुरा मथुरा और पूसू हुये। चतुरा के तीन पुत्र-शिवरत्न, दालचन्द और शिवदयालु हुये। मथुरा के एक पुत्र—विशेश्वर दयालु हुवा। विशेश्वर के एक पुत्र रामप्रसाद हुवा। पूसू के एक पुत्र-रम्मा हुवा। रम्मा के एक पुत्र गणेधर हुवा

(२) दूसरा वृद्ध। गंगादीन नन्हूपुर से जाकर भाजीताला में बसे। गयादीन के एक पुत्र-शिवचरण हुवा। शिवचरण के एक पुत्र—बाउर हुआ। बाउर के एक पुत्र-भीखू हुआ। भीखू के चार पुत्र-राजा, सुन्दर, महाबीर और चौथे का नाम अज्ञात हुवा।

(३) तीसरा वृद्ध। मात्रा, गंगादीन दो भाई नन्हूपुर से जाकर खदरा में बसे। मात्रा के चार पुत्र-सांवल, बदलू,सदूलू और खेमान हुये। बदलू के एक पुत्र-भगवानदीन हुवा। भगवानदीन के तीन पुत्र-सुखालाल, देवीचरण और दयाशंकर हुये। सदलू के दो पुत्र— द्वारिका और गुलजारी हुये। गुलजार के एक पुत्र—मिट्ठीलाल हुवा। खेमान के दो पुत्र-बालक और जानकी हुये। बालक के एक पुत्र-रामरतन हुवा। जानकी के एक पुत्र-रघुनाथ हुवा। गंगादीन के दो पुत्र चिरंजू और रद्धू हुये। रद्धू के दो पुत्र-तिलोक और नन्हू हुये। तिलोक के एक पुत्र-भिक्खू हुवा। भिक्खू के दो पुत्र—जौहरी और परभू हुये।

(४) चौथा वृद्ध। अम्बादीन नन्हूपुर से जाकर खदरा में बसे। अम्बा दीन के एक पुत्र-खूंदन हुआ। खूंदन के एक पुत्र—बिजलाल हुआ। बिजलाल के एक पुत्र-गबादीन हुआ।

(५) पांचवाँ वृद्ध। बूंचे नन्हूपुर से जाकर खदरा में बसे। बूंचे के एक पुत्र—ब्रम्हा हुवा। ब्रम्हा के दो पुत्र-काशी और पनुवां हुये। काशी के एक पुत्र— सीताराम हुआ।

(६) छठवां वृद्ध। बिन्दा नन्हूपुर से जाकर खदरा में बसे। बिन्दा के दो पुत्र भूरे और चौबा हुये। भूरे के दो पुत्र-दलिया और तुलसी हुये। दलिया के दो पुत्र— गोकुल और धुनुरयां हुये। गोकुल के एक पुत्र-पतिराखन

हुवा। तुलसी के एक पुत्र—रघुबर हुआ। चौवा के दो पुत्र-मनोहर और मथुरा हुये। मनोहर के तीन पुत्र—जेठू, गंगादीन, और तीसरे का नाम अज्ञात हुये। मथुरा के दो पुत्र-भदई और घुन्धा हुये।

गोत्र कश्यप परम्परागत [खदरहा]

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। पंचम खदरा से जाकर खजुरिहा में बसे। पंचम के दो पुत्र-दुर्गा और चन्दी हुये। दुर्गा के दो पुत्र—कल्लू और पुसू हुये। कल्लू के एक पुत्र-सौनियाँ हुवा। चंदी के दो पुत्र-रामचरण और भूरा हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। महादेव जोकि खदरा से जाकर डेहरिया में बसा।

गोत्र कश्यप परम्परागत [गहरुखेरिहा]

कुर्मी वन्शान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। लल्लू गहरुखेरे से जाकर अलियापुर में बसे। लल्लू के एक पुत्र-भगावन हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। बोड़ा गहरूखेरे से जाकर पतारी में बसे। बोड़े के दो पुत्र—गोकुल और सुखलाल हुये। सुखलाल के एक पुत्र-अयोध्या हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध भगवत, मतिराम, दनका और रिग्गू और भवानीदीन पांच भाई हुये। यह बाबूपुर में जाकर बसे। भगवत के एक पुत्र-मेड्डू हुआ मेड्डू केएक पुत्र-मुन्नुनू हुवा। मतिराम के दो पुत्र-गंगाप्रसाद और राजा हुये। राजाके तीन पुत्र-चेला, लालजी और रामलाल हुये। चेला के दो पुत्र-गुठुवा और मुलुवा हुये। लालजी के एक पुत्र-गयाप्रसाद हुवा। रामलाल के दो पुत्र-गोरेलाल और प्यारेलाल हुये। दनका के एक पुत्र-छेदू हुआ। रिगुवा के एक पुत्र-बच्ची हुवा। बच्ची के चार पुत्र—ऊदन, गुलजारी, तुलई और धरमा हुये। तुलई के दो पुत्र-कालीचरण और रामचरण हुये।

(४) चौथा वृद्ध। बखत गहरूखेरे में बसे। बखत के चार पुत्र-सधारी मदारी, कलुवा और लच्छी हुये। सधारी के चार पुत्र-महादेव, धन्नू, बलदेव और मनी हुये। महादेव के एक पुत्र- रामचरण हुआ। रामचरण के एक पुत्र कल्लू हुआ। मनई के एक पुत्र- जगन्नाथ हुवा।

(५) पाचवाँ बृद्ध । दूबरि हुये यह गहरूखेरे में बसे । दूबरि के तीन पुत्र-लाला, रिग्गू और तुलसी हुये । रिग्गू के तीन पुत्र-शिवचरण, भोला और मन्ना हुये । मन्ना के दो पुत्र-तिलोका और रामसेवक हुये । मन्ना के एक पुत्र—पूसू हुवा ।

(६) छठा बृद्ध । तुलसी, चन्दी और चन्ना तीन भाई हुये । यह गहरू खेरे में बसे । तुलसी के एक पुत्र-मंगली हुआ । मंगली के दो पुत्र—मइका और दिवान हुये । मइका के एक पुत्र—भिखारी हुवा । चन्दी के एक पुत्र भग्गा हुवा । चन्नू के दो पुत्र-भरोसा और प्रसाद हुये । प्रसाद के एक पुत्र कल्लू हुवा ।

(७) सातवाँ बृद्ध । बैजू हुये । यह गहरूखेर में रहे । बैजू के दो पुत्र तुलई और अज्ञात नाम हुये । तुलई के दो पुत्र—बाबू और अज्ञात नाम हुये । बाबू के तीन पुत्र-भिखारी, गिट्टू और गुनई हुये । गिट्टू के छः पुत्र—हजारी, बुड़किया, भुल्लू, मिट्ठू, साहबदीन और गैंदा हुये । हजारी के एक पुत्र-घसीटे हुवा । भुल्लू के एक पुत्र—रामकृष्ण हुवा । गैंदा के एक पुत्र-मुन्शी हुवा ।

(८) आठवाँ बृद्ध । रिग्गू हुये । यह गहरूखेर में रहे । रिग्गू के दो पुत्र मथुरा और छक्की हुये । मथुरा के एक पुत्र—छेदू हुवा । छेदू के एक पुत्र राजा हुवा । राजा के दो पुत्र-मातादीन और रामचेला हुवा ।

(९) नवां बृद्ध । छबीले हुये । यह गहरूखेर में बसे । छबीले के दो पुत्र-पंगी और पूसू भये । पंगी के छः पुत्र-लच्छू, भग्गा, गहवर, ज्ञानी, रघुनाथ और मनोहर हुये । ज्ञानी के एक पुत्र-भरथरी हुआ । भरथरी के एक पुत्र राजाराम हुवा । रघुनाथ के तीन पुत्र-कल्लू, दीवान और बल्दी हुये । दिवान के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये । दिवान और बल्दी पतित होगये । मनोहर के दो पुत्र—शंकर और मन्ना हुये । शंकर के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ ।

(१०) दसवां बृद्ध । गनेश हुये यह गहरूखेरे में रहे । गनेश के दो पुत्र—मन्ना और भदई हुये । मन्ना के एक पुत्र—चतुरा हुआ । चतुरा के दो पुत्र-बुलाकी और अज्ञात नाम हुवा ।

(११) ग्यारहवां बृद्ध । दल्ली हुये । यह गहरूखेर में बसे । दल्ली के एक पुत्र-गयादीन हुये ।

(१२) बारहवां वृद्ध। गुरदयाल, रामदयाल दो भाई हुये। यह गहरू-खेर में बसे। गुरदयाल के एक पुत्र—महादेव हुआ। रामदयाल के छः पुत्र सहिबा, सुरजा, हनुमान और तीन अज्ञात नाम हुये।

(१३) तेरहवां वृद्ध। पंगी हुये यह रूसिया में जाकर बसे। पंगी के दो पुत्र-सुखना और रामदयालु हुये। सुखना के एक पुत्र—रामलाल हुआ। रामदयाल के दो पुत्र-द्वारिका और राजा हुये। रामलाल के चार पुत्र-परसाद केदार, बैजनाथ और सरयूप्रसाद हुये। प्रसाद के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ बैजनाथ के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

(१४) चौदहवाँ वृद्ध। मिट्ठूलाल हुये। यह गहरूखेर से आकर महमदपुर में रहा।

गोत्र उपमन्यु परम्परा (गौरीपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। गिरधारी हुये यह गारीपुर से जाकर जियापुर में बसे गिरधारी के तीन पुत्र—जगन्नाथ, बैजनाथ और रामनारायण हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। रूपन हुये। यह पतारी में जाकर बसे। रूपन के एक पुत्र-आलम हुवा। आलम के तीन पुत्र—भोला, इसुरी और मइका हुये। इसुरी के तीन पुत्र—मानधाता, तिलोका और मंगली हुये। मानधाता के दो पुत्र—गोब्बर और हजारी हुये। हजारी के एक पुत्र—बदरी हुये।

(३) तीसरा वृद्ध शिवलाल हुये। यह पतारी में जाकर बसे। शिव-लाल के दो पुत्र—भारत और कन्हैयालाल हुये। भारत के एक पुत्र—सेवक हुवा। सेवक के दो पुत्र—बलदेव और रामलाल हुये। बलदेव के दो पुत्र महाबीर और लक्ष्मीनारायण हुये। कन्हैया के एक पुत्र-रघुबर हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। धनसुख और अमदू दो भाई हुये। यह पतारी में जाकर बसे। धनसुख के तीन पुत्र—मखना, दनकू और हीरालाल हुये। माखन के एक पुत्र—लछिमन हुआ। लछिमन के दो पुत्र—बसन्ता और गोपाल हुये। बसन्त के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। दनकू के चार पुत्र—पगुवा, रामचरण, दीनदयालु और रामदीन हुये। पगुवा के एक पुत्र—बलभद्र हुवा। रामदीन के

एक पुत्र—रामगुलाम हुवा। अमदू के एक पुत्र—महका हुआ। महका के एक पुत्र—मन्ना हुआ। मन्ना के दो पुत्र-घसीटे और चुन्नीलाल हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। ठाकुर हुये। यह पतारी में जाकर बसे। ठाकुर के तीन पुत्र—दुरगा, शिवगुलाम और शिवराम हुये। शिवगुलाम के एक पुत्र प्रहलाद हुवा। प्रहलाद के तीन पुत्र—घसीटे, मनवाँ और छोटा हुआ। घसीटे क दो पुत्र—प्रभूदयाल और शम्भूदयालु हुये।

(६) छठवाँ वृद्ध। हुलासी हुये। यह पतारी में जाकर बसे। हुलासी के एक पुत्र—गरीबे हुवा। गरीवा के एक पुत्र-छेदा हुवा।

(७) सातवाँ वृद्ध। बहादुर यह गुड़ेलनपुर से आकर पतारी में रहे। बहादुर के दो पुत्र—भूरा और महादेव हुये। भूरा के एक पुत्र—गोदीलाल हुआ। महादेव के एक पुत्र—मोतीलाल हुआ।

(८) आठवाँ वृद्ध। सुदीन हुये। यह पतारी में जाकर बसे। सुदीन के दो पुत्र-रामनाथ लछिमन हुये। लछिमन के चार पुत्र—केदारनाथ, बचोला। खुशाली और मथुरा हुये। मथुरा के चार पुत्र-बैजनाथ, द्वारिका, रामेश्वर और अज्ञात नाम हुये जो कि सांसरगिक पतित हैं।

(९) नवाँ वृद्ध। छोटा हुये। यह पतारी में जाकर बसे। छोटा क दो पुत्र—मोहन और गंगा हुये। मोहन के एक पुत्र—भगवानदीन हुये। भगवानदीन के पाँच पुत्र—जो कि सानसरगिक पतित हैं। गंगा के एक पुत्र भिखारी हुवा। भिखारी के एक पुत्र-बालगोविंद हुआ यह पतित होगया।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (सकुरहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञातवृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। रामदीन हुये। यह सकूरा से जाकर कंठीपुर में बसे रामदीन के दो पुत्र—फकीरे और मल्हू हुये फकीरे के एक पुत्र- मन्ना हुआ मन्ना के तीन पुत्र-दुरगा बदलू और दीनदयाल हुये दुरगा के एक पुत्र-रामप्रसाद हुवा। बदलू के तीन पुत्र—मनियाँ, पराग और मथुरा हुये मनियाँ के एक पुत्र—बनवारी लाल हुवा। पराग के तीन पुत्र- बन्दी लाल, रामकुमार, और शिवकुमार हुये मथुरा के दो पुत्र—राधेलाल और सूरजदीन हुये।

(२) दूसरा वृद्ध । कालिका हुये । यह सरहन में जाकर बसे । कालिका के छः पुत्र—रघुवर, गुलजारी, मुरली, सीताराम, तुलसी और बेनी हुये । रघुवर के एक पुत्र- राजाराम, हुवा बाकी पाँचो भाई भांजीताला में रहते हैं ।

(३) तीसरा वृद्ध, चतुरी हुये । यह भाजीताला में जाकर बसे चतुरी के तीन पुत्र—दनक, भदई, मन्नू हुये दनक के दो पुत्र—कालिका, और माखन हुये । कालिका के छः पुत्र- गुलजारी, मुरली, सीताराम, और तुलसी बेनी हुये रघुवर के एक पुत्र— राजा हुवा । गुलजारी के एक पुत्र— नुग्गा हुवा । मुरली के तीन पुत्र—शिवराम और भइयाराम दयाराम हुये । सीताराम, के एक पुत्र—गंगाचरण हुवा । बेनी के दो पुत्र—ललवा और रामरतन हुये तुलसी के एक पुत्र— छोटा हुवा । माँखन के एक पुत्र—गजोधर हुवा । गजोधर के एक पुत्र-भगवादान हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । हरी हुये यह पढ़नी में जाकर बसे । हरी के एक पुत्र—भवानीदीन हुवा । भवानीदीन के चार पुत्र-दूबरि, आलम, दो के नाम अज्ञात हुये । दूबरि के तीन पुत्र-गयादीन, बाबू और अज्ञात नाम हुये । बाबू के एक पुत्र—गोव्वर हुवा गोव्वर के दो पुत्र-सिकदार और रूपन हुये । रूपन के दो पुत्र-सियाराम और विश्वम्भर हुवे । आलम के दो पुत्र—पुन्ता और जगन्नाथ हुये । पुन्ता के एक पुत्र— दुलुवा हुवा । दुलुवा के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा ।

गोत्र काश्यप परम्परागत (कण्ठीपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध तोंदे हुये । यह कंठीपुर जाकर बसे तोंदे के एक पुत्र मेंड़ा हुवा । मेंड़ा के दो पुत्र—छेदा और रामजियावन हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । नाथू हुये । यह गहरूखेर में बसे । नाथू के एक पुत्र-रामबकस हुआ । रामबकस के एक पुत्र-दीनदयाल हुआ । दीनदयाल के तीनपुत्र—प्रहलाद, श्यामलाल और गजोधर हुये । प्रहलाद के एक पुत्र बाबूलाल हुआ । श्यामलाल के दो पुत्र-मेवालाल और लछिमन हुये । गजोधर के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुआ ।

श्री खुशाली उमरहार बेहटी निव सी

प्रतिनिधि महा सभा।

(३) तीसरा वृद्ध। सभा हुये यह सुलतानगढ़ में जाकर बसे। सभा के तीन पुत्र-मूसे, बीरू और कुवँर हुये। बीरू के तीन पुत्र-दुलीचन्द कालिका और बदली हुये। दुलीचन्द के एक पुत्र-भिखारी हुवा। मूसे के तीन पुत्र गजोधर, सहाँय और गोपाल हुये। गजोधर के तीन पुत्र—सरूप, भूप और छेदू हुये। सरूप के एक पुत्र-नारायण हुवा। यह ममनापुर चला गया। छेदू के एक पुत्र-रंगीलाल हुआ। गोपाल के एक पुत्र—रामपाल हुवा। कुंवर के चार पुत्र-तोंदा, दुरगा, चन्ना और रामदीन हुये। दुरगा के एक पुत्र राजा हुवा। चन्ना के एक पुत्र-महावीर हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। बादल और सीतला दो भाई हुये। यह कंदौपुर से जाकर असधना में बसे। बादल के दो पुत्र-गुलजारी और हजारी हुये। गुलजारी के तीन पुत्र—बंशी, बाबूलाल और रामेश्वर हुये। हजारी के तीन पुत्र—रामनाथ, बजनाथ और नाम अज्ञात हुये। सीतला के एक पुत्र—मनऊ हुआ। मनऊ के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (ब्रेहटिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। भवानीदीन हुये। यह अंगनाखेर में बसे। भवानीदीन के दो पुत्र-भगौले और बबुली हुये। भगोले के दो पुत्र-पल्ली और बदली हुये। पल्ली के तीन पुत्र-शिवबस, भदई और सदई हुये। भदई सुन्दरपुर चला गया।

(दूसरा वृद्ध। रामबकस हुये। यह सालेपुर में जाकर बसे। रामबकस के एक पुत्र-माँखन हुये। माँखन के दो पुत्र-छक्कीलाल और प्रसाद हुये। यह पतित होगये।

(३) तीसरा वृद्ध। बेचू हुये। यह सालेपुर में बसे बेचू के एक पुत्र पूरन हुवा। पूरन के तीन पुत्र—चतुरी, देवीदीन और केशरी हुये। देवीदीन के एक पुत्र-छीटन हुआ। छीटन के दो पुत्र—पंथू और साधौं हुये पंथू के एक पुत्र-दयाराम हुआ। केशरी के चार पुत्र—बेचू, बदली, साँवल और शीतल हुये बेचू के दो पुत्र-भगवानदीन और रामचेला हुये। रामचेला के दो पुत्र-दुरगा

और विश्वनाथ हुये। शीतल के दो पुत्र-दुलारे और नारायण हुये। दुलारे के एक पुत्र—रामेश्वर हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। बबुली हुये। यह भमौनापुर (सलेमपुर) में जाकर बसे। बबुली के दो पुत्र-रामसहाँय और दुलारे हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। मेड़े हुये। यह बेहटी में रहते हैं। मेड़े के चार पुत्र-सूरजदीन, प्रसाद और दो के नाम अज्ञात हुये। सूरजदीन के तीन पुत्र मथुरा, अच्छू, सधार हुये। अच्छू के एक पुत्र—दीनदयाल हुवा। सधार के दो पुत्र—कालीदीन और डीलपाल हुये। कालीदीन के तीन पुत्र—भरोसा, सुक्खी और अज्ञात नाम हुये। परसाद के तीन पुत्र-रामकृष्ण, गोपाल और चंदी हुये। रामकृष्ण के चार पुत्र—टीकाराम, पेमन, उन्तू और दयाल हुये। टीका के एक पुत्र—टेड़ो हुआ। दयाल के चार पुत्र—भिखारी, करिबा, सरजू और बेधड़क हुये। भिखारी के चार पुत्र-राजाराम, छोटा, खुशाली और देवीचरण हुये। राजाराम के एक पुत्र—भगवानदीन हुये देवीचरण के एक पुत्र शिवराम हुआ। गोपाल के एक पुत्र—परमसुख हुआ। चंदो के चार पुत्र--माखन रामबकस, आशा और कल्लू हुये। रामबकस के दो पुत्र—पूरन और अयोध्या हुये। पूरन के एक पुत्र-महाबार हुआ। अजोध्या के दो पुत्र-ब्रम्हा और द्वारिका हुये। ब्रम्हा के एक पुत्र—पराग हुआ। कल्लू के एक पुत्र—रिग्गू हुआ। रिग्गू के दो पुत्र-मथुरा और रामचरण हुये।

(६) छठवाँ वृद्ध। पूरन हुये यह पतारी में जाकर बसे। पूरन के तीन पुत्र—चतुरी, केशरी और देवीदीन हुये। चतुरी के दो पुत्र-चिरंजू और दनकई हुये। चिरंजू के एक पुत्र—मुंशी हुआ। जो कि पढ़नी चला गया। दनकई पतारी चला गया। दनकई के तीन पुत्र-महावली, चेला और मनोहर हुये। महावली के तीन पुत्र—गंगा, मेवालाल और रामगोपाल हुये। मनोहर के दो पुत्र-रामनारायण और रामशंकर हुये। देवादीन और केसरी सालेपुर चले गये।

(७) सातवाँ वृद्ध। सउनी हुये। यह सुरहाखेर में जाकर बसे। सउनी के भाई रामचरण और गोपाल हुये। गोपाल के तीन पुत्र—खुशाली, बिसेश्वर और बाबूलाल हुये।

(८) आठवाँ वृद्ध । हम्माँ हुये । यह खंजालपुर में जाकर बसे । हम्माँ के एक पुत्र —नारायण हुआ । नारायण के एक पुत्र—दक्खन हुआ । दक्खा के एक पुत्र—पँगला हुआ ।

(९) नवाँ वृद्ध । देबुवा हुआ । यह खंजलपुर में बसे । देबुवा के एक पुत्र—दुलीचंद हुआ । दुलीचंद के दो पुत्र-कालीचरण और भगवानदीन हुये । कालीचरण टरुवापुर चला गया । भगवानदीन के एक पुत्र-रामाधीन हुआ ।

(१०) दसवाँ वृद्ध । मदारी हुआ । यह खाँनपुर में जाकर बसा । मदारी के दो पुत्र-छेदू और लाला हुये । छेदू के एक पुत्र-भोला हुआ ।

(११) ग्रेरहवाँ वृद्ध । दीनदयाल हुये । यह रामपुर कुन्दे में जाकर बसे दीनदयाल के तीन पुत्र-सउनी, सूक्खन और बृजभूषण हुये । बृजभूषण मेढ़ापाटी चले गये । बृजभूषण के दो पुत्र-कालीचरण और बालकृष्ण हुये ।

(१२) बारहवाँ वृद्ध । पूरन हुये । यह बेहटा खुर्द में जाकर बसे । पूरन के दो पुत्र—मंगलो और कामताप्रसाद हुये । मंगलो के तीन पुत्र सुक्खा, रजनी और पराग हुये । सुक्खा के तीन पुत्र-रामधनी बुन्दीलाल और रंगीलाल हुये । रजनी के एक पुत्र—खुशाली हुये । पराग के दो पुत्र घसीटे और अज्ञात नाम हुये । कामताप्रसाद के एक पुत्र-ईश्वरनन्द हुवा ।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध । तुलाराम हुये । यह बबई जाकर बसे । तुलाराम के दो पुत्र-भद्दू और गोपाल हुये । गोपाल के एक पुत्र-रामसहाँय हुवा । रामसहाँय के एक पुत्र-चेला हुआ । चेला के तीन पुत्र—शिवबालक दनक और रामाधीन हुये ।

(१४) चौदहवाँ । मुहकम हुये । यह बबई में जाकर बसे । मोहकम के एक पुत्र —खरगा हुआ । खरगा के एक पुत्र-दुलीचन्द हुवा ।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध । काशी हुवा । यह खानपुर चला गया ।

(१६) सोलहवाँ वृद्ध । रमन हुये । यह पढ़नी में जाकर बसे । रमन के एक पुत्र —शिवदयालु हुवा । शिवदयाल के दो पुत्र-शिवरतन और भरोसा हुये । शिवरतन के एक पुत्र--नाम अज्ञात हुआ । भरोसा के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ ।

(१७) सत्तरहाँ वृद्ध नंगू । यह पढ़नी में जाकर बसे । नंगू के एक पुत्र-खुशाली हुआ । खुशाली के दो पुत्र-रजवा और दुलुवा हुये ।

(१८) अठारहवाँ वृद्ध । धन्नू बेहटी से जाकर कुन्दे रामपुर में बसे। धन्नू के दो पुत्र-पूरन और त्रिभंजू हुये । पूरन के दो पुत्र-लल्लू और मातादीन हुये । लल्लू के दो पुत्र-बालमिन्त और शिवनाथ हुये ।

गोत्र उपमुन्यु परम्परागत (पाराहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । सुदीन और नैन दो भाई हुये । यह सुल्तानगढ़ में जाकर बसे । सुदीन के चार पुत्र-नत्थू, देवान, भूप और टेडे हुये । नत्थू के एक पुत्र-भगवानदान हुआ । देवन के एक पुत्र-मथुरा हुआ । मथुरा के एक पुत्र इसुरी हुआ । टेडे के दो पुत्र-मोहन और कुहुरुवा हुआ । मोहन के दो पुत्र साउनी और दुरगा हुआ । दुर्गा के दो पुत्र-नारायण और दयाराम हुये । कुहुरुवा के तीन पुत्र—महादेव, सहादेव और महावीर हुये नैन के दो पुत्र कन्हई और चरन हुये । कन्हई के एक पुत्र-सीताराम हुआ । सीताराम और चन्ना महमदपुर चले गये ।

(२) दूसरा वृद्ध हुये । यह महमदपुर चले गये । बिहारी के एक पुत्र कन्हई हुआ । कन्हई के एक पुत्र—सीताराम हुआ ।

(३) तीसरा वृद्ध । सिद्धा हुये । यह पारा में बसे हैं । सिद्धा के चार पुत्र-वृथ्वी, टीकाराम, नाम अज्ञात और पंचम हुये । वृथ्वी के दो पुत्र-रघोले और देवनन्द हुये । रघोली के दो पुत्र-गोकुल और पराग हुये । पराग के दो पुत्र गंगाचरण और बलदेव हुये । टीक के एक पुत्र—छेदू हुआ । अज्ञात नाम वाले के चार पुत्र-दीनदयालु, चूरामणि और दो के नाम अज्ञात हुये । चूरामणि के दो पुत्र-लाला और रज्जन हुये । रज्जन के तीन पुत्र-बदरी, किदार और मिश्रीलाल हुये ।

(४) चौथा वृद्ध । पंचम हुये । यह पारा में बसे । पंचम के तीन पुत्र समसेर, गयादीन और अज्ञात नाम हुये । समसेर के तीन पुत्र-रघुनाथ, जगन्नाथ और अज्ञात नाम हुये । रघुनाथ के एक पुत्र-गयादीन हुआ । गयादीन के एक पुत्र-कामता हुआ ।

(५) पाँचवाँ वृद्ध जवाहिर हुआ। यह पारा में बसे। जवाहिर के भाई मैकू और भिखारी हुये। मैकू के तीन पुत्र-भगवानदीन, महादेव और बन्दीलाल हुये। भिखारी के एक पुत्र-बलदी हुआ। बन्दी के चार पुत्र-रामलाल, गुलजारी हजारी और जगंनाथ हुये।

(६) छठवां वृद्ध। गुलजारी पारा में बसे। गुलजारी के एक पुत्र-काशी हुआ। काशी के एक पुत्र—देवीदयालु हुवा।

(७) सतवां वृद्ध। माखन पारा में बसे। माखन के तीन पुत्र—चेला दूसरे का नाम अज्ञात और तीसरे का नाम बाबूलाल हुवा चेला के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा। नाम अज्ञात वाले के एक पुत्र बदरी, हुवा। जो खान पुर चलागया। बाबूलाल के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

(८) आठवा वृद्ध। पूरन पारा में ही बसे। पूरन के एक पुत्र—नारायण हुवा।

(९) नवां वृद्ध। बिन्दा पारा में बसा। बिन्दा के एक पुत्र—मनियां हुवा मनियां के तीन पुत्र—बैजनाथ रामभजन और रामरतन हुये। बैजनाथ के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा।

गोत्र कश्यप परम्परागत [बिहूपुरिहा]

उपरहार कुर्मी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। महका, लंगड़ा और भगवानदीन तीन भाई हुये। यह दिलावरपुर में जाकर बसे। महका के एक पुत्र—राजाराम हुवा। राजाराम के तीन पुत्र-गंगाचरण, जगन्नाथ और दुलारे हुये। गंगाचरण के तीन पुत्र—सीताराम, माधव और रामकृष्ण हुये। लंगड़ा के तीन पुत्र—पुरई भरोसा और जुराखन हुये। जगन्नाथ और दुलारे झुरहाखेर में रहते हैं।

(२) दूसरा वृद्ध। धनसूर हुये। यह टरुवापुर में जाकर बसे। धनसूर के तीन पुत्र-मदारी, सधारी और अधारी हुये। सधारी झुरहाखेरे से आकर टरुवापुर में रहे। सधारी के एक पुत्र-फग्गुन हुवा। फग्गुन के एक पुत्र राजाराम हुवा।

(३) तीसरा वृद्ध। बच्ची और बोड़े दो भाई हुये। यह बाबूपुर में जाकर बसे। बच्ची के दो पुत्र—छीटू और नत्थू हुये। छिटुवा के तीन पुत्र भदई, चिरंजू और मन्ना हुये चिरंजू के एक पुत्र—कल्लु हुये। नत्थू के दो पुत्र—पुन्ना और दुरजा हुये। बोड़े के दो पुत्र—भीखू और बरियार हुये। भीखू के एक पुत्र-गोपाली हुआ। बरियार के दो पुत्र-दुल्लू और जुराखन हुये। दुल्लू के एक पुत्र—रामसेवक हुआ। रामसेवक के दो पुत्र-जगन्नाथ और बदरी हुये। जुराखन के दो पुत्र-सुखलाल और लक्ष्मीनारायण हुये।

(४) चौथा वृद्ध। शिवा हुये। यह बाबूपुर में जाकर बसे। शिवा के एक पुत्र-बोधीहुवा। बोधी के तीन पुत्र—गुलाम, द्वन्द और केवल हुये। हुये गुलाम के चार पुत्र-ईश्वरी, मन्सा, भिखारी और गनेश हुये। इश्वरी, के दो पुत्र—चरण और हरी हुये। हरी के एक पुत्र-बल्देव हुआ। बल्देव के एक पुत्र—गुरूदयालु हुवा। भिखारी के दो पुत्र—औसेरी और गयादीन हुये। औसेरी के एक पुत्र-रामाधीन हुवा। रामाधीन के एक पुत्र-मिसरी-लाल हुवा। गयादीन के दो पुत्र—छोटा और राजाराम हुये। द्वन्द के एक पुत्र—अछरू हुआ। अछरू के एक पुत्र—ठाकुर हुवा। ठाकुर के दो—पुत्र महका और छन्न हुये। केवल के दो पुत्र—गोबरा और दीनदयाल हुये। गोबरा के दो पुत्र—दालचंद और तोंदा हुये। दालचन्द के एक पुत्र-छेदू हुवा। छेदू के एक पुत्र-रघुनाथ हुवा। दीनदयाल के एक पुत्र—दम्मर हुवा। दम्मर के दो पुत्र—जगन्नाथ और बद्रीप्रसाद हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। मन्नू हुये। यह झुरहाखेर में जाकर बसे। मन्नू के दो पुत्र—छेदू और माधव हुये। छेदू के एक पुत्र-रामलाल हुआ। माधव के तीन पुत्र-द्वारिका, रामनाथ और बंजनाथ हुये। द्वारिका के एक पुत्र बाउर हुवा।

(६) छठवां वृद्ध। जवाहिर विहुपुर से जाकर झुरहाखेर में बसे। जवाहिर के तीन पुत्र-दुर्गा, रामप्रसाद और रामसहाय हुये। रामसहाय के तीन पुत्र—रामेश्वर, रामलाल और तीसरे का नाम अज्ञात हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (दानपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। छुद्धू और पीतम दो भाई हुये। यह कशियापुर में जाकर बसे। छुद्धू के दो पुत्र—राजा और अज्ञात नाम हुये। राजा के दो पुत्र रामचरण और मन्नू हुये। मन्नू के दो पुत्र—देवीदयाल और रामनाथ हुये। अज्ञात नाम वाले के एक पुत्र-खुशाली हुआ। पीतम के एक पुत्र-काशी हुआ काशी के तीन पुत्र—दयालु, अमान और ख्याली हुये। दयालु के चार पुत्र मन्ना, सहीद, लल्लु और रघुबर हुये। लल्लू के दो पुत्र—रामगुलाम और गंगाराम हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। शिवचरण पूरेदान से आकर टरुआपुर में बसे। शिवचरण के छः पुत्र-बुद्धू, सुक्खू, चौबे, दुलारे, शिवरतन और छोटा हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। बोड़े हुये। वह दानपुर में रहते हैं। बोड़े के दो पुत्र—छेदू और बदली हुये। छेदू के दो पुत्र-गौरी और घसिला हुये। गौरी के दो पुत्र-बेलई और मद्धू हुये। घसिला के दो पुत्र-रामप्रसाद और राजाराम हुये। बल्दी के दो पुत्र-नारायण और शिवचरण हुये। शिवचरण टरुआपुर चले गये। नारायण के एक पुत्र—भदई हुआ।

गोत्र उपमन्यु परम्परा (पिपरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। भीखन हुये। यह जद्दूपुर में जाकर बसे। भीखन के एक पुत्र—गोकुल हुआ। गोकुल के दो पुत्र-लछिमन और मोकुल हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। सउना हुये। यह जद्दूपुर में जाकर बसे। सउना के एक पुत्र-सीताराम हुआ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परा (खानपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शांडिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । बलदेव हुये । यह खानपुर में बसे हैं । बलदेव के एक पुत्र-गेदा हुवा । गेदा के दो पुत्र—पंथनाथ और भगवानदीन हुये यह दोनों पतित हो गये ।

(२) दूसरा वृद्ध । सहीद और रामचेला हुये । यह खानपुर में बसे सहीद के चार पुत्र—तिलोक, बदलू, दीनदयाल और चन्दी हुये । तिलोक के दो पुत्र—ठाकुदीन, और चोखे- हुये । बदलू के एक पुत्र चौफुर हुवा । चौफुर के दो पुत्र—अजोध्या और अज्ञात नाम हुये । अयोध्या के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा । दीनदयालु के तीन पुत्र-मथुरा बाउर और श्यामलाल हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । किशोर हुये । यह खानपुर में बसे । किशोर के एक पुत्र रामदयाल हुवा । रामदयाल के एक पुत्र श्यामलाल हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । शिवबकस हुये । यह नसेनियाँ में बसे । शिवबकस के दो पुत्र—भोला, और कल्लू हुये । कल्लु के दो पुत्र—शिवदयाल, और बत्तु हुये । शिवदयालु के दो पुत्र- केदार और बदल हुये । बत्तु के चार पुत्र-दिलगर, जगनाथ, गौरी और मथुरा हुये । मथुरा के दो पुत्र—गया, और रामप्रसाद हुये ।

(५) पाँचवा वृद्ध । ईश्वरी हुये यह नसेनिया में जा बसे । ईश्वरी के दो पुत्र—घसीटे, और हुलासी, हुये घसीटे के चार पुत्र— रामचरण, भोंदू, मुन्डू और मुन्नू हुये । रामचरण के एक पुत्र—देवीचरण हुवा । भोंदू के तीन पुत्र—मत्ते, रघुबर और द्वारिका हुये । मत्ते के एक पुत्र—गोविन्द-प्रसाद हुआ । रघुबर के एक पुत्र—गेंदा हुवा । मुंडू के चार पुत्र-ऊधो, गुरदीन, खुशाली और पंचा हुये । गुरुदीन के तीन पुत्र—शंकर, बाबूलाल और शिवलाल हुये । पंचा के एक पुत्र-बरातीलाल हुआ । मन्नू के एक पुत्र देवनन्द हुआ । देवनन्द के एक पुत्र-रामेश्वर हुवा ।

(६) छठवां वृद्ध । रक्खू हुये । यह धमना में जाकर बसे । रक्खू के दो पुत्र—महाबीर और महाबली हुये ।

(७) सातवां वृद्ध । शिवबकस हुये । यह खानपुर में बसे । शिवबकस के एक पुत्र-केवल हुआ । केवल के दो पुत्र-पेंगा और देवीचरण हुआ ।

(८) आठवाँ वृद्ध । नैन हुये । यह खानपुर में बसे । नैन के तीन पुत्र मनसुख, देवीचरण और बाउर हुये । मनसुख के एक पुत्र-मथुरा भया । मथुरा के एक पुत्र-नाम अज्ञात भया ।

(९) नवां वृद्ध । पंचम हुये । यह खानपुर में रहे । पंचम के एक पुत्र तुलसी हुये । तुलसी के एक पुत्र-दुर्जा हुआ ।

(१०) दसवां वृद्ध । ब्रम्हा हुये । यह खानपुर में रहे । ब्रम्हा के दो पुत्र पेमन और निधान हुये । पेमन के एक पुत्र-रक्खू हवा । रक्खू के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ । निधान के दो पुत्र-महादेव और सहादेव हुये । महादेव के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा ।

(११) ग्यारहवां वृद्ध । घनसूर खानपुर में बसे । घनसूर के एक पुत्र चन्ना हुआ । चन्ना के एक पुत्र—घासिलराम हुआ । घासिल के एक पुत्र नाम अज्ञात हुवा ।

गोत्र कश्यप परम्परा [दिलावरपुरिहा]

उमरहार कुरमी वंश के अंतरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । भद्दी हुवे । यह मदरी में जाकर बसे । भद्दी के एक पुत्र—रामदयाल हुआ । रामदयाल के एक पुत्र गनू हुआ । गंनू के तीन पुत्र बलदेव, मेवालाल और प्यारेलाल हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । छिट्टा हुये । यह दिलावरपुर में बसे । छिट्टा के दो पुत्र—खरगा और दुर्गा हुये । खरगा के दो पुत्र – सुद्दी और बच्ची हुये । सद्दी के दो पुत्र-कामता और बिपता हुये । विपता के एक पुत्र—दुरगा हुआ । दुरगा के दो पुत्र-रामनारायण और शिवनारायण हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । सुक्खा हुआ । यह दिलावरपुर में रहता है । सुक्खा के एक पुत्र - जवाहिर हुआ । जवाहिर के तीन पुत्र—भगवानदीन, तुलसी और बेनी हुये । बेनी के एक पुत्र--प्रह्लाद हुआ । प्रह्लाद के एक पुत्र शिवनाथ हुआ ।

[४] चौथा वृद्ध लल्लु हुये । यह दिलावरपुर में बसे । लल्लू के दो पुत्र हीरालाल, लछिमन हुये । लछिमन के तीन पुत्र – बड़े का नाम अज्ञात, गोकुल और रामेश्वर हुये । रामेश्वर के एक पुत्र—पीतम हुआ ।

[५] पाँचवाँ बृद्ध । सुदीन भये । यह दिलावरपुर में बसे । सुदीन के एक पुत्र-रामदयाल हुआ । रामदयाल के एक पुत्र—गुनुंवा भया । यह मदरी चला गया ।

[६] छठवाँ बृद्ध । गनेश भए । यह मेढ़ा में जाकर बसे । गनेश के एक पुत्र पूसू भया । पूसू के दो पुत्र--दुलीचन्द और रामनारायण भए । रामनारायण के एक पुत्र-घसीटे भया ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत (झंडहापुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात बृद्ध

(१) प्रथम बृद्ध । नंगू हुये । ये धमना में जाकर बसे नंगू के एक पुत्र-बोड़े हुवा । बोड़े के दो पुत्र-रामआसरे और रामाधीन हुये । रामधीन के तीन पुत्र-रामनारायण, रामगुलाम, और रामगोपाल हुये । रामगुलाम के तीन पुत्र-मुरली, रामपाल, और रामलाल हुये ।

(२) दूसरा बृद्ध । रामदयाल हुये यह साँखे में जाकर बसे । रामदयाल के पुत्र—रामनाथ और अज्ञात नाम हुये ।

(३) तीसरा बृद्ध । गंगादीन हुये । यह अलमापुर में बसे गंगादीन के एक पुत्र-भिखारी हुवा । भिखारी के एक पुत्र—पूसू हुवा ।

गोत्र काश्यप परम्परागत (महादेवपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत काश्यप गोत्र में परिज्ञात बृद्ध

[१) प्रथम बृद्ध परसाद हुये । ये धमना में जाकर बसे । प्रसाद के दो पुत्र- रामभजन और द्वारिका हुये ।

गोत्र कात्यायन परम्परागत [सिंहपुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कात्यायन गोत्र में परिज्ञात बृद्ध ।

(१) प्रथम बृद्ध । ठाकुर हुये । यह बेहटा में जाकर बसे । ठाकुर के दो पुत्र-सिरकृष्ण और तिवारीदीन हुये । सिरकृष्ण के पांच पुत्र—देवीचरण

रामलाल, श्यामलाल. रामेश्वर और रामकिशोर हुये। देवीचरण के तीन पुत्र वानदीन, छोटेभगलाल और महयादीन हुये।

[२] दूसरा वृद्ध। बसावन हुये। ये बसंतखेर में जाकर बसे। बसावन के तीन पुत्र-लौधा, अम्पच और भूरा हुए। लौधा के तीन पुत्र-भारत, लच्छू और बृन्दाबन हुये। लच्छू के एक पुत्र- तोला हुआ। तोला के एक पुत्र बदरीप्रसाद हुआ। बदरीप्रसाद के एक पुत्र-रामाधीन हुआ। बिन्दा के तीन पुत्र-लाला, दयाराम और भैरम हुए। लाला के दो पुत्र-भगवानदीन और सीताराम हुये। दयाराम के एक पुत्र-बेलन हुआ। बेलन के एक पुत्र-मोतीलाल हुआ। भूरे के एक पुत्र-पन्ना हुआ। पन्ना के दो पुत्र—भरोसा और प्रसाद हुये। भरोसा के एक पुत्र—टेढ़ा हुआ। अम्पच के दो पुत्र-दनकऊ और रामपाल हुये। दनकई के तीन पुत्र—रामप्यारे, सेवक और जगन्नाथ हुये। रामपियारे के एक पुत्र-चौबा हुआ। सेवक के दो पुत्र-प्रसाद और पुत्ता हुये। जगन्नाथ के दो पुत्र—गजोधर और देवीचरण हुये। रामपाल के एक पुत्र-रामसहाँय हुआ। रामसहाँय के तीन पुत्र—राजाराम, रामआसरे और अज्ञात नाम हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। ठाकुरदीन हुये। ये हिम्मतपुर में बसे। ठाकुरदीन के एक पुत्र—रामबकस हुआ। रामबकस के एक पुत्र-रिगुवा हुआ। रिगुवा के एक पुत्र-लाला हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। पोले हुये। ये खदरा में जाकर बसे। पोले के एक पुत्र-भूरे हुये। भूरे के दो पुत्र-तुला और भोंदा हुये। तुला के एक पुत्र-शिवनाथ हुआ। भोंदा के एक पुत्र-बहजा हुआ। बहजा के एक पुत्र-घसीटे हुआ।

(५) पाँचवां वृद्ध। दीना वसन्तखेरे में बसा। दीना के एक पुत्र मोती हुआ। मोती के तीन पुत्र-छुन्नू, बाबू और लाला हुये।

(६) छठां वृद्ध। सहिदा हुये। यह पहाड़ीपुर में बसे सहीद के एक पुत्र-मंगली हुये। मंगली के एक पुत्र- छोटा हुये।

(७) सातवां वृद्ध। लछमण हुये। यह पहाड़ीपुर में बसे। लछमण के एक पुत्र-पूसू हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत [पैकापुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। रामदीन हुये। यह बेहटा में जाकर बसे। रामदीन के एक पुत्र—भदई हुआ। भदई के छै पुत्र- सीताराम, प्रसाद, रिंगू, दुलासी, पंचा, छोटा हुये। प्रसाद, रिगुवा, पंचा मयापूर से बेहटा चले आये। प्रसाद के दो पुत्र- रामगोपाल और जगदम्बाप्रसाद हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। पनखोरा में बसे। रामदीन के दो पुत्र- चिन्ता और भदई हुये। चिन्ता के चार पुत्र—गोकुल, बलदेव, रामदयालु और बालकृष्ण हुये। गोकुल के दो पुत्र—जङ्गली और मङ्गली हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। रामचेला हुआ। यह पनखोरा में बसे। रामचेला के एक पुत्र-लालाराम हुआ। लाला के दो पुत्र—जवर और अयोध्या हुये। अयोध्या के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। बिहारी पैकापुर से जाकर बंगला में बसे। बिहारी के एक पुत्र -भरोसा हुवा। भरोसा के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(५) पांचवाँ वृद्ध। छत्ता पैकापुर से जाकर कुमखरा में बसा। छत्ता के एक पुत्र-चन्ना हुवा। चन्ना के दो पुत्र—जगन्नाथ और रघुनाथ हुये। जगन्नाथ के दो पुत्र—भगवानदीन और जौहरी हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (गुड़ेलनपुरिहा)

उमहार कुरमी वंशान्तर्गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

प्रथम वृद्ध। देवी जवाहिर हुये। यह सेमवांखेर में जाकर बसे। जवाहिर के तीन पुत्र—सिधवा, टिकवा और नन्दो हुये। नन्दो सठिगवाँ में जाकर बसा। टोकाराम के एक पुत्र—बदलू हुआ। बदलू के एक पुत्र बृजलाल हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। कन्हई हुवा। यह बाबूपुर में जाकर बसे। कन्हई के दो पुत्र-मदरा और अलमा हुये। मदरा के दो पुत्र-चन्दी और बन्दी हुये।

अलमा के दो पुत्र—रामकृष्ण और रामनाथ हुये। रामनाथ के एक पुत्र रामगोपाल हुये।

[३] तीसरा वृद्ध। भगवान हुये। यह भोत्रेपुर में जाकर बसे। भगवान के एक पुत्र-पूसू हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। बहादुर गुड़ेलनपुर से जाकर पतारी में बसे। बहादुर के दो पुत्र—भूरा और महादेव हुये। भूरा के एक पुत्र-गोदीलाल हुआ। महादेव के एक पुत्र—मोतीलाल हुवा।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। चाउन सैंठी में बसे। चाउन के दो पुत्र—जेठू और पूरन हुये। पूरन के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (नाथुखेरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर गत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। गप्पू हुये यह नाथूखेर में रहते हैं। गप्पू के दो पुत्र-गयादीन, और हीरालाल, हुये। गयादीन के दो पुत्र-मेवालाल और सौखीलाल हुये हीरालाल के एक पुत्र नाम अज्ञात हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध बहादुर ख्यावी हुये। यह नाथूखेरे में रहते हैं। बहादुर के एक पुत्र—प्रसाद हुवा।

(३) तीसरा वृद्ध। चेता हुये। यह नाथुखेर में रहते हैं। चेता के एक पुत्र-हजारी हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। गिल्लू हुये। यह नाथूखेर में जाकर बसे।

(५) पांचवाँ वृद्ध। चतुरा नाथूखेर में बसा। चतुरा के दो पुत्र रामचेला और भगवानदीन हुये। भगवानदीन के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। रामचेला के एक पुत्र—छेदालाल हुआ।

गोत्र परम्परा (मक्कीनयाँ खेरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। टोकाराम हुये यह रतवाखेर में जाकर बसे। टोकाराम के एक पुत्र-परसाद हुवे।

गोत्र शांडिल्य परम्परा [टरुवापुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शांडिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । छेदू हुये । यह टरुवापुर में रहते हैं । छेदू के दो पुत्र-गोकुल और ईश्वरी हुये । गोकुल के दो पुत्र-कल्लू और राजा हुये । इसुरी के एक पुत्र बंशगोपाल हुआ ।

[२] दूसरा वृद्ध । छीटन हुये । यह टरुवापुर में आकर बसे । छीटन के एक पुत्र-ठाकुर हुआ । ठाकुर के तीन पुत्र-मदई, सदई और पूसू हुये । पूसू के तीन पुत्र-मन्नी, जगन्नाथ और बदरी हुये । मन्नी के पांच पुत्र-रामलाल मंगली, महाँबीर, भगवानदीन और अज्ञात नाम हुये । अज्ञात नाम वाला मकन्दीपुर में जा बसा । बदरी के एक पुत्र-रामकुमार हुआ ।

[३] तीसरा वृद्ध । बल्देवराम हुये । यह सगरा में आकर बसे । बल्देव के दो पुत्र-गनेश और चन्दी हुये । गनेश के एक पुत्र जगन हुआ । जगन के चार पुत्र—बाबूराम, बदरी प्रसाद, भगवन्त और रामरत्न हुये । बाबूराम के तीन पुत्र-रामचरण, प्रसाद और नारायण हुये । रामचरण के एक पुत्र-घसीटे हुआ । प्रसाद के एक पुत्र-रामलाल हुआ । नारायण के एक पुत्र-राजाराम हुआ । रामरत्न के एक पुत्र—मन्नीलाल हुआ । मन्नीलाल के एक पुत्र—शिवराज हुआ । चन्दी के एक पुत्र-बल्ली हुआ । बल्ली के चार पुत्र गजोधर, रामसेवक, गंगाराम और राजाराम हुये । गजोधर के एक पुत्र-रामा हुआ । रामा के तीन पुत्र-बाबूलाल, हीरालाल और श्यामलाल हुये । रामसेवक के एक पुत्र-रामेश्वर हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । रिग्गू हुये । यह बोधीपुर में आकर बसे । रिग्गू के एक पुत्र—फकीरे हुआ । फकीरे के एक पुत्र-शिवप्रसाद हुआ । जो कि झंडहापुर से आकर बोधीपुर में रहता है ।

(५) पाँचवाँ वृद्ध । रामचरण टरुवापुर से आकर चिहुलपुर में बसे । रामचरण के एक पुत्र-घसीटेराम हुआ ।

गोत्र उपमन्यु परम्परा (सरहीवरहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। नत्थू हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। नत्थू के दो पुत्र-अजोध्या और नाम अज्ञात हुये। अज्ञात नाम के दो पुत्र-झांडू और मथुराप्रसाद हुये। मथुरा के एक पुत्र रामचरण हुवा। रामचरण के एक पुत्र बुधियाँ हुआ। रामचरण से ही पतित होगया अयोध्या के एक पुत्र बदलूप्रसाद हुवा। बदलुप्रसाद के चार पुत्र रामरतन, शिवरतन, मोहन और दुरगा हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। भिखारी हुये। यह फ़िरोजपुरा में जाकर बसे। भिखारी के एक पुत्र बाबू हुवा। बाबू के तीन पुत्र मन्नू, मखरा और जुराखन हुये। मन्नू के एक पुत्र—महदी हुवा। महदी के तीन पुत्र—बाल गोविंद, हनूमान और प्रहलाद हुये। जुराखन के एक पुत्र—चौधरी हुआ। चौधरी के दो पुत्र—अज्ञात नाम हुये।

(३) तीसरा वृद्ध—बदना हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। बदना के दो पुत्र—हीरालाल और दीनदयाल हुये। हीरालाल के दो पुत्र महाबीर और पुत्ती हुये। पुत्ती के दो पुत्र—परसाद और रामसेवक हुये।

(४) चौथा वृद्ध बखतावर हुये। यह फिरोजपुर में बसे। बखतावर के एक पुत्र—बद्दा हुआ। बद्दा के एक पुत्र—रामचरण हुवा। रामचरण के एक पुत्र-सुखलाल हुआ। सुखलाल के एक पुत्र—देवीचरण हुवा।

(५) पांचवाँ वृद्ध। कामता हुये। यह भगोनापुर (सलेमपुर) में जाकर बसे। कामता के दो पुत्र—रामचरण और श्यामलाल हुये। रामचरण के दो पुत्र-सेवानन्दन और रघुनन्दन हुये।

(६) छठवाँ वृद्ध। कँधई हुये। यह खाँडेदेउर में जाकर बसे। कँधई के एक पुत्र-भैरम हुवा। भैरम के दो पुत्र-लछिमन और दीनदयाल हुये लछिमन के एक पुत्र चौबा हुवा। दीनदयाल के दो पुत्र—रजवा और भजना हुये।

(७) सातवाँ वृद्ध। गंगादीन हुये। यह बबई में जाकर बसे गंगादीन के एक पुत्र-ऊधौ हुवा। ऊधौ के पाँच पुत्र-राजाराम, छोटेलाल, देवीदयाल

लल्लू और लाल जी हुये। राजाराम के एक पुत्र—जंगनाथ हुये देवीदयाल के दो पुत्र-तोंदे और मनसुख हुये। यह देवीदयाल हो से पतित हो गये। लल्लू के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा।

(८) आठवाँ वृद्ध। रामसहाँय हुये। यह बाबूपुर में जाकर बसे। रामसहाँय के चार पुत्र-देवीदीन, लालू, दनका, और ब्रम्हा हुये देवदीन के दो पुत्र-रामदत्त, और कुबेर हुये। कुबेर के दो पुत्र—महका और शंकर हुये महका के एक पुत्र-शिवबालक हुवा। शंकर के एक पुत्र-रामरतन हुवा। लालू के एक पुत्र-धुन्ना हुवा। धुन्ना के एक पुत्र-मथुरा हुवा दनका के एक पुत्र—पंछी, हुवा। ब्रह्मा के एक पुत्र—बादी हुवा बादी के एक पुत्र—तिलोका हुवा। तिलोका के दो पुत्र—चमरू और अज्ञात नाम हुये।

(९) नवाँ वृद्ध। घनसा हुवा। यह बाबूपुर में जाकर बसा। घनसा के दो पुत्र—सोमना और बैरागी हुये। बैरागी के तीन पुत्र-पचुवा, सिकदार और बल्देव हुये। बल्देव के दो पुत्र—भोंड़वा और राजाराम हुये।

(१०) दसवाँ वृद्ध। सुदीन धनसिंहपुर में बसे। सुदीन के एक पुत्र दनक हुआ। दनक के तीन पुत्र—कल्लू, जेठू और जुराखन हुये। जुराखन के चार पुत्र-हजारी, रामलाल, राजाराम और बाबूराम हुये।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परा (हसोलेखेरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। मुसुरू हुये यह बिलारी में जाकर बसे। मुसुरू के दो पुत्र—सुखलाल और गजराज हुये।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परा (मदिहाखेरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। माधौ हुये। यह सुल्तानगढ़ में जाकर बसे। माधौ के एक पुत्र—काशी हुआ। काशी के एक पुत्र—कल्लू हुआ। कल्लू के दो पुत्र लछिमन और अज्ञात नाम हुये। लछिमन के चार पुत्र—आसा, कुबेर, झुमेरा और भरोसा हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। रामदीन हुये। यह मधिहाखेरे में जाकर बसे। रामदीन के चार पुत्र—पांनू, गणेश, शंकर और माँखन हुये। पानू के एक पुत्र—शम्भू हुआ। गणेश के एक पुत्र—झाँडू हुआ। झाँडू के एक पुत्र-मदरी हुआ। शंकर के दो पुत्र—छेदू और घासी हुये। छेदू के एक पुत्र-रामसहाँय हुआ। रामसहाँय के एक पुत्र—श्यामलाल हुआ। श्यामलाल के दो पुत्र-ठाकुरदीन और बरसातीलाल हुये।

(३) वृद्ध। बल्लू हुये। यह मधिहाखेर में बसे। बल्लू के दो पुत्र-गजमा और तेजा हुये। तेजा के दो पुत्र—रामचरण और देवीचरण हुये। देवीचरण के तीन पुत्र—रामप्रसाद, गुलजारी लाल और हजारी हुये। यह देवीचरण ही से पतित होगये।

(४) चौथा वृद्ध भवानीदीन, चिन्ता दो भाई हुये। यह मधिहाखेरा में बसे। चिन्ता के तीन पुत्र—बिन्द्राबन, रामबकस और दीनदयाल हुये। बिन्द्राबन के चार पुत्र-जगन्नाथ, द्वारिका, सीताराम और रामनारायण हुये। द्वारिका के एक पुत्र—रामरतन हुआ। रामनारायण के तीन पुत्र-रामशंकर दयाशंकर और रामेश्वर हुये। रामशंकर के एक पुत्र—रामगोपाल हुआ। दीनदयाल के तीन पुत्र—बदरी, शिवरतन और शिवनाथ हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। दूबरि हुये। यह मधिहाखेरा में जाकर बसे। दूबरि के एक पुत्र—सतान हुआ सतान के तीन पुत्र—सधार गंगा और गोकुल हुये सधार के एक पुत्र—साँवल हुआ। साँवल के एक पुत्र-गयादीन हुआ। गोकुल के दो पुत्र-हेमलाल, गजोधर हुये। हेमलाल के तीन पुत्र-पराग रामेश्वर और बिहारीलाल हुये। गजोधर के दो पुत्र—रामरतन और अच्छेलाल हुये।

(६) छठवाँ वृद्ध। भोला हुये। यह मधिहाखेरा में बसे। भोला के एक पुत्र-बदल हुआ। बदल के एक पुत्र—लछिमन हुआ। लछिमन के दो पुत्र भुरयाँदीन और भगवानदीन हुये।

(७) सातवाँ वृद्ध। मुन्नू हुये। यह कुन्देरामपुर में जाकर बसे। मुन्नू के एक पुत्र—केशव हुआ। केसव के एक पुत्र-शिवरतन हुआ। शिवरतन के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुआ।

(८) आठवाँ वृद्ध। लाला हुये यह बंबुरिहापुर में जाकर बसे। लाला के एक पुत्र-छेदू हुआ। छेदू के एक पुत्र-मातादीन हुआ।

गोत्र कश्यप परम्परा (भाजीताला)

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । भदई हुये । यह भेडली में बसे । भदई के एक पुत्र—अज्ञात नाम हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । क्वांरा हुआ । यह बोधीपुर में जाकर बसे । क्वांरा के एक पुत्र—नन्द हुआ । नन्द के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ ।

[३] तीसरा वृद्ध । मदारी हुये । यह भाजीताला जाकर बसे । मदारी के भाई ठाकुरदीन हुये । मदारी के दो पुत्र-ईश्वरी और हरी हुये । ईश्वरी के एक पुत्र—गोकुल हुवा । गोकुल के एक पुत्र—हजारी हुआ । हजारी के दो पुत्र—बाबू और चिनकाई हुवा । ठाकुरदीन के तीन पुत्र-मेड़ा, दुरज और बदली हुये । बदली के एक पुत्र-छेदू हुआ ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परा [बँबुरिहापुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । दुरगा हुआ । यह भाजीताला में जाकर बसे । दुरगा के एक पुत्र-भिखारी हुवा । भिखारी के चार पुत्र—पूरन, शिवला, लछुवा और बलदी हुये । बलदी के चार पुत्र—मन्नू, फदाली, मल्हा और गंगाराम हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । बूजलाल हुये । यह बँबुरिहापुर में बसे । बूजलाल के एक पुत्र—बहोरा हुआ । बहोरा के एक पुत्र—नारायण हुआ । नारायण के तीन पुत्र—जंगनाथ, हरीलाल और पूसू हुये ।

गोत्र कश्यप परम्परा (पोखरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

[१] प्रथम वृद्ध । दनका हुये । यह खदरा में जाकर बसे । दनका के दो पुत्र-जियालाल और चिता हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध कल्लू हुये । यह गोदहा में जाकर बसे । कल्लू के एक पुत्र-मथुरा हुवा । मथुरा के दो पुत्र—गोकुल और राजाराम हुये । गोकुल के दो पुत्र-पूरन और केसरी हुये । केशरी के एक पुत्र-रामप्रसाद हुवा ।

(३) तीसरा वृद्ध। कढ़ीले हुये। कढ़ीले गोंदहा में जाकर बसे। कढ़ीले के एक पुत्र—दनका हुआ। दनका के एक पुत्र—सकठू हुआ। सकठू के दो पुत्र—रामलाल और सउनियाँ हुवा। रामलाल के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। बैजा किशोरपुर में जाकर बसे। बैजा के चार पुत्र-ज्वाला, दुर्गा, मोहन और चिनका हुये। चिनका के दो पुत्र—सौनियाँ और रामचेला हुये। सौनियां के दो पुत्र-जगन्नाथ और अयोध्याप्रसाद हुये। रामचेला के एक पुत्र-कालाचरण हुये।

गोत्र कात्यायन परम्परा (इच्छापरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कात्यायन गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। छोटा हुआ। यह डेहरिहा में जाकर बसे। छोटा के एक पुत्र—रामनाथ हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। रमुवाँ हुवा। यह सांखे में जाकर बसे। रमुवाँ के एक पुत्र-जुराखन हुआ। जुराखन के चार पुत्र—बघड़, मनियाँ, रामलाल और शिवराम हुये। मनियाँ के दो पुत्र—रघुनाथ और हीरालाल हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। इच्छा हुये। यह इच्छापुर में बसे। इच्छा के पाँच पुत्र-घासीराम, छुन्नँ, हीरा, उम्मीद और छोटा हुये। उम्मीद के एक पुत्र पुत्र-पच्चू हुआ। दनका के एक पुत्र—कालिका हुआ। पच्चू के एक पुत्र जेठू हुआ। हीरा के एक पुत्र-दुरगा हुआ। दुरगा के तीन पुत्र-लल्लू, राजा और दुली हुये। दुली के तीन पुत्र-मथुरा, गोकुल और द्वारिका हुये। गोकुल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। छोटे के दो पुत्र-कन्हैया और बदला हुये। कन्हैया के एक पुत्र-जुगराज हुये। जुगराज के तीन पुत्र-रघुनाथ, विश्वनाथ और शिवनाथ हुये।

(४) चौथा वृद्ध। सुक्खा हुआ। यह इच्छापुर में बसे। सुक्खा के तीन पुत्र-नेवजा, सेमन और भाँडू हुये। नेवजा के दो पुत्र-सहिदा और छोटा हुये। सहिदा के तीन पुत्र-सुरलीधर, बाबूलाल और भगवानदीन हुये।

(५) पाचवाँ वृद्ध । मन्नू हुये । यह इच्छापुर में जाकर बसे । मन्नू के चार पुत्र-मंगली, सुकुरू, लछिमन और रामदयाल हुये । सुकुरू के एक पुत्र-छेदा हुआ।

गोत्र गर्ग परम्परा (खनपगार)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत गर्ग गोत्र में सबसे परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । मंगली हुये । यह दरियापुर में जाकर बसे । मंगली के एक पुत्र-भरोसा हुआ । भरोसा के एक पुत्र-इसुरी हुआ ।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (अमिलिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । काशी हुये । यह फरीदपुर में जाकर बसे । काशी के एक पुत्र-रामचरण हुआ । रामचरण के दो पुत्र-दरसन और राजा हुये । दरसन के दो पुत्र-रामप्रसाद और रामनाथ हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । जवाहिर हुये । यह फ़रीदपुर में जाकर बसे । जवाहिर के तीन पुत्र—रामदयाल, धनी और दीनदयाल हुये । रामदयाल के चार पुत्र—रघुवर, जंगनाथ, भगवानदी और रामअधीन हुये । धनो के पाँच पुत्र—महादेव, लाला, श्यामलाल, पराग और छोटेलाल हुये । लाला के तीन तीन पुत्र देबोचरण, रामचरण और रामअधार हुये । श्यामलाल के एक पुत्र—बृजकिशोर हुवा । पराग के एक पुत्र—चन्द्रपाल हुवा । दीनदयाल के एक पुत्र—बदरी हुआ । बदरी के दो पुत्र- शिवलाल और शिवराज हुये ।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (निबौरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । इसुरी हुये । यह फरीदपुर में जाकर बसे । इसुरी के एक पुत्र-दुल्लू हुवा । दुल्लू के एक पुत्र-बुद्धू हुवा । बुद्धू के एक पुत्र महका हुआ । महका के एक पुत्र-लालजी हुवा ।

गोत्र शांडिल्य परम्परा [दसोदरपुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शांडिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । भवन हुये । यह धनसिंहपुर में जाकर बसे । भवन के दो पुत्र-रामबक्स और दूबरि हुये । दूबरि के दो पुत्र-भदई, सदई हुये । सदई के एक पुत्र-जगन्नाथ हुआ ।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (हाँड़ियहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । बच्ची हुये । यह धनसिंहपुर में जाकर बसे । बच्ची के दो पुत्र-चतुरी और गजोधर हुये । गजोधर के तीन पुत्र—महगा, वंशी और अजगर हुये । अजगर के दो पुत्र—गुरूदीन और अयोध्या हुये । गुरूदीन के एक पुत्र—रामजी हुआ ।

गोत्र भारद्वाज परम्परा [दढ़ियहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । नारायण हुये । यह बौहारा में जाकर बसे । नारायण के तीन पुत्र—मेंघा, लछिमन और अज्ञात नाम हुये । मेंघा के दो पुत्र भवानीदीन और छबीले हुये । लछिमन के एक पुत्र—जगन्नाथ हुवा ।

गोत्र गर्ग परम्परागत (विन्दकिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत गर्ग गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । रत्नू विन्दकी से जाकर डेहरिया में बसे । रत्नू के एक पुत्र—पितना हुआ । पितना के तीन पुत्र—मन्नू, मंगली और सौनियाँ हुये । मन्नू के एक पुत्र—विजई हुआ । मंगली के दो पुत्र—महावीर, राजाराम हुये । सौनियाँ के एक पुत्र—दर्शन हुआ ।

(२) दूसरा वृद्ध । पोले विन्दकी से जाकर डेहरिया में बसे । पोले के चार पुत्र-रामसहाँय, महादेव, मन्ना और अयोध्या हुये । रामसहाँय के एक

पुत्र—गजोधर हुआ। गजोधर के दो पुत्र—कालीचरण और बैजनाथ हुये। कालीचरण के तीन पुत्र—शिवराम, जैराम और दयाराम हुये। मन्ना के एक पुत्र-ज्वालाप्रसाद हुआ। अयोध्या के एक पुत्र—छेदालाल हुआ।

(३) तीसरा वृक्ष। लाले विन्दकी से आकर डिघरुवा में बसे। लाले के दो पुत्र—चरण और शिवदयाल हुये। चरण के दो पुत्र—गुलजारी और हजारी हुये। गुलजारी के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। हजारी के दो पुत्र भेड़ और कल्लू हुये।

(४) चौथा वृक्ष। दंगी विन्दकी से जाकर डिघरुवा में बसे। दंगी के दो पुत्र—लक्ष्मी और पोला हुये। पोला के चार पुत्र—रामसहाय, सहाँय, महादेव, और मन्ना हुये। रामसहाँय के एक पुत्र—गज्जा हुआ। जो कि देहरिया चला गया। मन्ना के एक पुत्र-ज्वालाप्रसाद हुआ।

(५) पांचवां वृक्ष। टीका विन्दकी से जाकर डिघरुवा में रहे। टीका के चार पुत्र - सुरवा, बहादुर चेला, और गोकल हुये। बहादुर के दो पुत्र कन्हैयालाल और गयाप्रसाद हुये। चेला के तीन पुत्र-फूलदोन, बड़कऊ, तीसरे का अज्ञात नाम हुये। —

(६) छठा वृक्ष। स्वादीन विन्दकी से जाकर डिघरुवा में रहे। स्वादीन के दो पुत्र-दीनदयाल और रामदयाल हुये। दीनदयाल के चार पुत्र-झुरिथ्याँ गयादीन, पचुवा और बंशीधर हुये झुरिथ्याँ के चार पुत्र-बाबूराम, तीन के अज्ञात नाम हुये। गयादीन दरियापुर चला गया। पचुवा के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ।

(७) सातवाँ वृक्ष ओरी विन्दकी से जाकर डिघरुवा में बसा। ओरी के एक पुत्र—ईशुरी हुआ। ईशुरी के दो पुत्र-बिजलाल और श्यामलाल हुये।

(८) आठवाँ वृक्ष। कलुवा विन्दकी से जाकर डिघरुवा में बसे। कल्लू के एक पुत्र-वल्लू हुआ।

(९) नवाँ वृक्ष। गयादीन डिघरुवा से जाकर दरियापुर में बसा। गयादीन के एक पुत्र-झडुवा हुआ।

(१०) दसवाँ वृक्ष। पूसू विन्दकी से जाकर भगोनापुर (नदीपार) में बसा। पूसू के एक पुत्र—कालिका हुआ। कालिका के तीन पुत्र-भिखारीलाल पगधीलाल और कन्हैयालाल हुये। भिखारी के एक पुत्र-द्वारिकाप्रसाद हुआ।

द्वारिकाप्रसाद के तीन पुत्र-शिवलाल, रामपाल और शिवनाथ हुये। कन्हैयालाल के तीन पुत्र-परसाद, बाबूलाल और रामेश्वर हुये।

(११) ग्यारहवां वृक्ष। जुराखन और दीपत दो भाई जो बिन्दकी से आकर हसिया में बसे। दीपत के एक पुत्र-युगराज हुआ।

गोत्र वत्स परम्परागत (नयापुरहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत वत्स गोत्र में परिज्ञात वृक्ष

(१) प्रथम वृक्ष। दुर्जन नयेपुरवा में बसे। दुर्जन के एक पुत्र-देवीदीन हुवा। देवीदीन के दो पुत्र-मातादीन और ज्वालाप्रसाद हुये। ज्वालाप्रसाद के चार पुत्र—बदली, रामगुलाम, रामलाल और बबुली हुये। बबुली के एक पुत्र-छेदालाल हुवा।

(२) दूसरा वृक्ष। लोके नयापुरवा में बसे। लोके के एक पुत्र भरोसा हुआ। भरोसा के दो पुत्र—भगवानदीन और रामप्रसाद हुये। भगवानदीन के एक पुत्र—गजोधर हुआ।

(३) तीसरा वृक्ष। सुद्दा नयापुरवा में बसे। सुद्दा के एक पुत्र केकवा के एक पुत्र—बच्ची हुआ। बच्ची के दो पुत्र-छेदवा और दल्ली हुये।

(४) चौथा वृक्ष। भिखारी नयापुरवा में बसे। भिखारी के एक पुत्र-अगनुवा हुआ। अगनुवा के एक पुत्र- देवीदीन हुआ।

गोत्र धनञ्जय परम्परागत [जियापुरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत गोत्र धनञ्जय में परिज्ञात वृक्ष

(१) प्रथम वृक्ष। लक्खू जियापुर से आकर हसिया में बसे। लक्खू के दो पुत्र-लछिमन और पूसू हुये। पूसू के चार पुत्र—अयोध्या, मथुरा, बिन्दा और बदरी हुये। अजोध्या के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये। मथुरा के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये।

(२) दूसरा वृक्ष। नैन के नौ भाई थे। जो जियापुर से आकर अम्बरपुर में बसे। नैन के तीन पुत्र-जुराखन, माखन और बदली हुये। माखन के एक पुत्र-पच्चू

हुआ। बदली के दो पुत्र—मूसे और आलम हुये। आलम के तीन पुत्र सत्तीदीन, भगवानदीन, गौरीशंकर हुये। सत्तीदीन के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। सत्तीदीन जियापुर चला गया।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत [धरमपुरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत गोत्र भरद्वाज में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। कलुवा धरमपुर से जाकर गोदहा में रहा। कल्लू के तीन पुत्र-शिवबालक, शंकर और सुखलाल हुये।

(२) प्रथम वृद्ध। वक्तावर के दो पुत्र झाडू और सांवल हुये। झाडू के एक पुत्र—भिखारीलाल हुवा। सांवल के दो पुत्र—छेदालाल और मनहयाँ-लाला हुये। छेदालाल के छः पुत्र—कल्लू, खुशाली, झाडू, माखन, बोरा और लक्ष्मन हुये। कल्लू गोदहा चले गये। खुशाली के एक पुत्र—बदलू हुवा। झाडू और माखन दिलावलपुर चले गये। झाडू के दो पुत्र-भगत और दूसरे का नाम अज्ञात।

(३) तीसरा वृद्ध पूसू धर्मपुर से जाकर सालेपुर में बसा। पूसू के एक पुत्र--बाबूराम भया। बाबूराम के दो पुत्र—बंशागोपाल और भगवानदीन हुये।

गोत्र वत्स परम्परागत [बोधीपुरिहा]

उमरहार कुरमी वन्शान्तर्गत गोत्र वत्स में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। लाला बोधीपुर में बसे। लाला के एक पुत्र- चैता हुआ। चैता के एक पुत्र--मंगली हुआ। मंगली के एक पुत्र--नाम अज्ञात हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। हीरा बोधीपुर में बसा। हीरा के एक पुत्र--जिया-लाल हुआ। जियालाल के तीन पुत्र--गजोधर, रामचेला और गंगाचरण हुये। रामचेला के दो पुत्र--पराग और दूसरे का नाम अज्ञात हुआ।

गोत्र काश्यप परम्परागत (गोंसाईपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वन्शान्तर्गत गोत्र काश्यप में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। बाबू गोंसाईपुर से सैठी में बसे। बाबू के दो पुत्र रामसहाँय और बदलू हुये। रामसहाँय के एक पुत्र-गोकुल हुआ। गोकुल के एक पुत्र-रामनाथ हुआ।

गोत्र धनञ्जय परम्परागत (ढोलकिहा)

उमरहार कुर्मी वन्शान्तरगत गोत्र धनञ्जय में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। नाथू अम्बरपुर में बसे। नाथू के चार पुत्र-मिट्ठू-लाल, कल्लू, बदलू और पन्चा हुये। मिट्ठू के दो पुत्र -शंकर और बीपत हुये। कल्लू के दो पुत्र—बाऊर और छोटेलाल हुवे।

गोत्र धनञ्जय पारम्परागत [अम्बरपुरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत धनञ्जय गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। ईश्वरीप्रसाद अम्बरपुर में बसे। ईश्वरीप्रसाद के एक पुत्र जगन्नाथ भया। जगन्नाथ के एक पुत्र-बाबूराम हुवा। बाबूराम के दो पुत्र- रामकृष्ण और बालकृष्ण हुये।

गोत्र धनञ्जय परम्परागत (लठहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत गोत्र धनञ्जय में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। थान भवन, देपन और सहाय चार भाई हुये। जो अम्बरपुर में बसे। थान के तीन पुत्र—रामचरण, जगन्नाथ और क्वारा हुये। रामचरण के दो पुत्र-गोकुल और मथुरा हुये। ये दोनों पतित होगये। क्वारा के दो पुत्र—रामलाल और बदरीप्रसाद हुये। रामलाल के तीन पुत्र जगन्नाथ, बरमा और तीसरे का नाम अज्ञात हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध । धनसिंह-धनसिंहपुर में बसे। धनसिंह के एक पुत्र—रिग्गू हुवा। रिग्गू के तीन पुत्र—रंगीलाल, बाबूलाल और दनकू हुये। रंगीलाल के एक पुत्र—चिरंजूलाल हुवा। दनकू के दो पुत्र—गयादीन और मथुरा हुये। गयादीन के दो पुत्र-भगवानदीन और लालजी हुये। भगवानदीन के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा।

गोत्र काश्यप परम्परागत [पह्यावापुरिहा]

उमरहार कर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । सन्त-ग्राम पह्यावा में बसे। संत के तीन पुत्र चीफुर, पूरन, और बल्लू हुये। चीफुर के चार पुत्र-परम, भदई, मस्तराम और गंगाप्रसाद हुये। भदई के दो पुत्र—मैका और कल्लू हुये। मैका के तीन पुत्र-खाखी, गहरा और रामपाल हुये। रामपाल के एक पुत्र—महावीर हुवा। कल्लू के एक पुत्र—मलंगा हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध । मेवाराम पह्यावा में बसे। मेवाराम के दो पुत्र भगवन्त और गोकुल हुये। गोकुल के तीन पुत्र—गंगाप्रसाद, लहरा और राजाराम हुये।

(३) तीसरा वृद्ध । भवन पह्यावा में बसे। भवन के दो पुत्र—दुर्गा और गंधा हुये। दुर्गा के एक पुत्र-जियालाल हुआ। जियालाल के दो पुत्र भिखारी और गणेश हुये। भिखारी के दो पुत्र-जौहरी और मन्नू हुये। मन्नू के पाँच पुत्र-रामअधार, राजाराम, सोननाथ, छोटेलाल और अज्ञात नाम हुये। गन्धा के एक पुत्र—शिवराखन हुवा। शिवराखन के एक पुत्र—मथुरी हुवा। मथुरी के दो पुत्र—झांडू और भगावन हुये।

(४) चौथा वृद्ध । चेता, बहादुर नाथूखेर चले गये।

(५) पांचवाँ वृद्ध । गंगुवा, द्वारिका मुसवापुर चले गये।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परागत [महमदपुरिहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। बिहारी महमदपुर में बसे। बिहारी के एक पुत्र रिमलाल हुआ। रिमलाल के एक पुत्र—लोई हुआ। लोई के तीन पुत्र-रामलाल सोन और सुखलाल हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। गोपाल हुआ। यह महमदपुर में बसे। गोपाल के एक पुत्र-पुसू हुआ। पुसू के दो पुत्र—नारायण और दुर्गा हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। उमराव, दत्तू और बख्तावर तीन भाई हुये। ये महमदपुर में बसे। उमराव के दो पुत्र-कन्हैयालाल और खुशाली हुये। खुशाली के एक पुत्र-भगवानदीन हुआ। बख्तावर के दो पुत्र— मैका और मथादीन हुये। मैका के दो पुत्र—रामचरण और कालीचरण हुये। रामचरण के एक पुत्र—द्वारिकाप्रसाद हुआ। द्वारिका प्रसाद के तीन पुत्र—रामऔतार, रामेश्वर और वंशनारायण हुये।

(४) चौथा वृद्ध मोहन महमदपुर में बसे। मोहन के एक पुत्र-रामसेवक हुआ। रामसेवक के एक पुत्र-चमन हुआ। चमन के दो पुत्र-बरभोला और लाल जी हुये। लाल जी लालेपुर चला गया।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। भोलई महमदपुर में बसे। भोलई के एक पुत्र ककोरे हुआ। ककोरे के पाँच पुत्र-जेठू, गंगादीन, गिरधारी, रिक्खी और परमम हुये। जेठू के चार पुत्र—छोटेलाल अंगनू, रामचेला और दालचन्द हुये। अंगनू के चार पुत्र—भगवानदीन, बेनी, शिवनारायण, और चौथे का नाम अज्ञात हुये। भगवानदीन के एक पुत्र-मेवाला हुआ। रामचेला के तीन पुत्र—रामलाल और रंगीलाल और पंगू हुये। दालचन्द के एक पुत्र-बालकृष्ण हुआ। गंगादीन के दो पुत्र-दुलीचन्द और छेदालाल हुये। दुलीचन्द के एक पुत्र-बाबूराम हुआ। गिरधारी के दो पुत्र-श्यामलाल और शुकदेव प्रसाद हुये। रिक्खी खजुरिहा चला गया।

(६) छठवाँ वृद्ध। मदारीलाल महमदपुर में बसे। मदारीलाल के एक पुत्र-मन्ना हुआ। मन्ना के दो पुत्र-केशरी और लल्लू हुये। केशरी के एक पुत्र बल्लू हुआ। लल्लू के दो पुत्र—[illegible] और [illegible] हुये।

(७) सातवाँ वृद्ध। सुदीन महमदपुर में बसे। सुदीन के दो पुत्र जगन्नाथ और महादेव हुये। जगन्नाथ के तीन पुत्र-नोखे, मातादीन और धर्मराज हुये। नोखे के एक पुत्र-महकू हुआ। मातादीन के एक पुत्र ईश्वरीप्रसाद हुआ। ईश्वरीप्रसाद सरहन चला गया।

गोत्र काश्यप परम्परा (गंगौलिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत काश्यप गोत्र के परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। राजा हुये यह जमुनियाँ खेरे में जाकर बसे। राजा के एक पुत्र-शिवकरण हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। सबसुख हुये यह हिम्मतपुर में जाकर बसे सबसुख के दो पुत्र-दुवरा और बाउर हुये। बाउर के तीन पुत्र—रंगीलाला भूरा और जेठू हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। सोभत हुये यह हिम्मतपुर में जाकर बसे। सोभत के तीन पुत्र-धन्नू, सउनी, दुलीचन्द, हुये। धन्नू के एक पुत्र-तेजा हुवा। तेजा के दो पुत्र-रामदयाल, और दूसरे का नाम अज्ञात हुये। सउनी के एक पुत्र-भिखारी हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। बली और जवाहिर दो भाई हुये यह हिम्तपुर में जाकर बसे बली के एक पुत्र-ईश्वरीप्रसाद, हुवा हसुरी के दो पुत्र-भुय्याँदीन, और छोटेलाल, हुये।

गोत्र शांडिल्य परम्परा [रहमत पुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। गंगाराम हुये। यह रहमतपुर में बसे। गंगाराम के एक पुत्र गंगादीन, गंगादीन के दो पुत्र-रामदयालु, और पीतम, हुये। रामदयालु के दो पुत्र-रूपन. और युगराज, हुये, रूपन के दो पुत्र-महावीर, गयाप्रसाद हुये। पीतम के दो पुत्र-प्रसाद और रघुनाथ हुये, प्रसाद के एक पुत्र-शिवरतन, हुये रघुनाथ के एक पुत्र-रामरतन हुये।

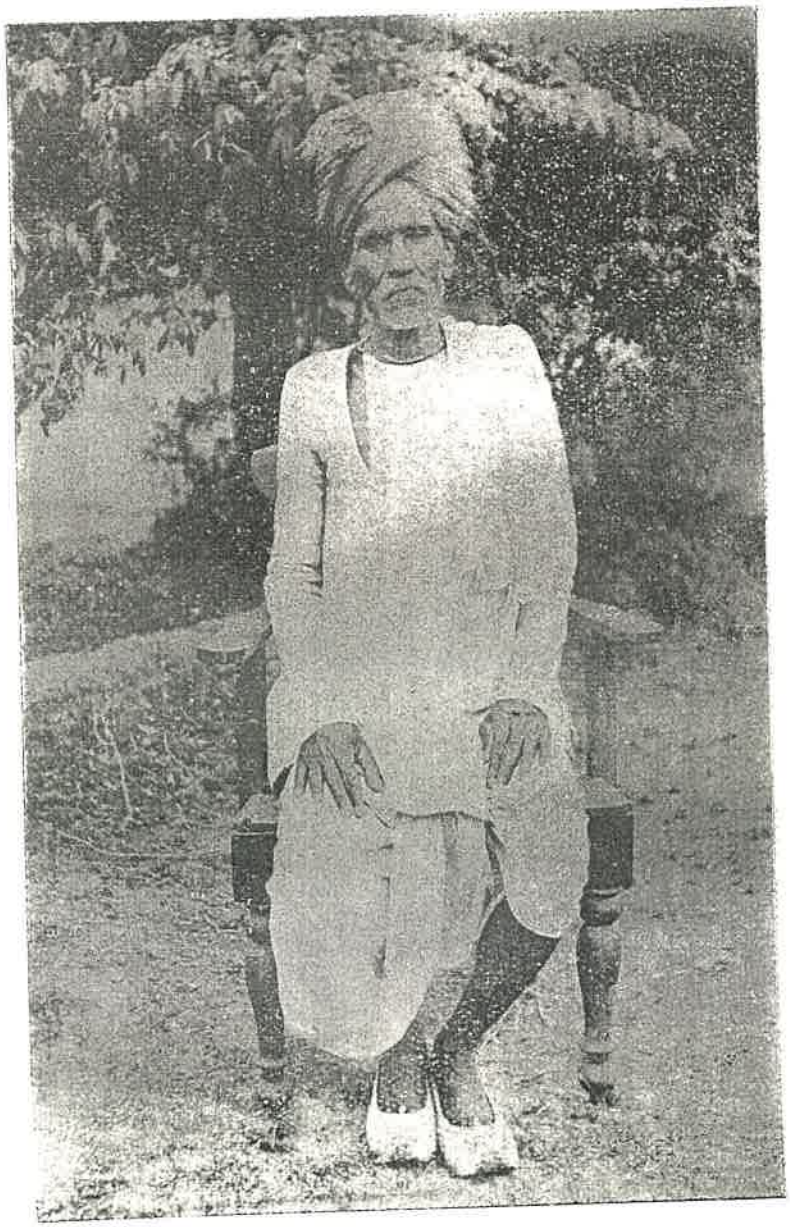

श्री रंगोलाल उमरहार भलिगवां निवासी

सभापति—कार्य्यकारणी सभा।

गोत्र उपमन्यु परमपरा (भलिगवहाँ)

उमरहार कुरमी वंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

[१] प्रथम वृद्ध । पूरन हुये यह भलिगवां में बसे । पूरन के दो पुत्र चतुर और दीनदयालु हुये । चतुर के चार पुत्र-हीरालाल, दौलत, रामचरण और रामबकस हुये । हीरा के दो पुत्र-रामचेला और दुरगा हुये । दुरगा के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा । हीरा की पहिली स्त्री का पुत्र-- गंगाप्रसाद हुवा । गंगा के दो पुत्र- भरोसा, और रघुबर हुये । रामचरण के तीन पुत्र जगन्नाथ कल्लू, और शिवबालक, हुये । जगन्नाथके दो पुत्र--घसीटे, और महावीर, हुय । कल्लू के एक पुत्र--रघुनन्दन, हुवा । रामबकस के दो पुत्र--नारायण, और रामपाल, हुये । नारायण के एक पुत्र--रघुनन्दन, हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । दीनदयाल हुये । यह भलिगवाँ में रहते हैं । दीन-दयाल के दो पुत्र—गजोधर और रंगीलाल हुये । गजोधर के दो पुत्र-छेदालाल और जुगराज हुये । छेदा के एक पुत्र—चमरू हुआ । जुगराज के एक पुत्र हुलासी हुआ । रंगीलाल के दो पुत्र—लल्लु और भगवानदीन हुये । लल्लु के दो पुत्र—भोंदू और महादेव हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । दान्दू और जगन दो भाई हुये । यह भलिगवां में बसे । दान्दू के एक पुत्र-हीरालाल हुये । हीरालाल के तीन पुत्र—गंगी, मरदन और बीनी हुये । गंगी के दो पुत्र—शिवदीन और उम्मेद हुये । शिवदीन के दो पुत्र-गयादीन और दनक हुये । गयादीन के तीन पुत्र-रामसहाय, शिवसहाय और गोकुलप्रसाद हुये । शिवसहाय के एक पुत्र—हजारीलाल हुआ । गोकुल के तीन पुत्र-कामताप्रसाद, द्वारिका और बच्चा हुये । दनक के छै पुत्र-लछिमन मथुरा, पराग, काशी, बेणीमाधव और जगन्नाथ हुये । मथुरा के एक पुत्र रामपाल हुये काशी के दो पुत्र—कालीचरण और अयोध्याप्रसाद हुये । बेणी-माधव के एक पुत्र-बद्रीप्रसाद हुआ । जगन्नाथ के एक पुत्र-बल्देव प्रसाद हुआ । बल्देव के एक पुत्र—रामआसरे हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । देवीदीन हुये । यह लखनीपुर में जाकर बसे । देवीदीन के एक पुत्र-जगन्नाथ हुआ । जगन्नाथ के दो पुत्र-रामदयाल और मथुरा हुये ।

(५) पांचवां बृद्ध । तेजी हुये । यह दिलावरपुर में जाकर बसे । तेजो के दो पुत्र—पहली और दिर्रा हुये ।

(६) छठवाँ बृद्ध । परानू हुये । यह कमासी में जाकर बसे । परानू के तीन पुत्र-पूरन, बृन्दाबन और चिस्ता हुये । पूरन के तीन पुत्र—बाबूलाल, छूनू और दनकू हुये । बाबू के तीन पुत्र-शंकर, गिरधारी और कल्लु हुये । कल्लु के दो पुत्र-दुरगाप्रसाद और द्वारिकाप्रसाद हुये । दुरगाप्रसाद के दो पुत्र-महाबीर, रामप्रसाद हुये । महाबीर के दो पुत्र—रामकिशोर और अज्ञात नाम हुये । द्वारिका के एक पुत्र—जगन्नाथ हुआ । छूनू के तीन पुत्र—मंगली बिहारी और अरजुन हुये । अरजुन के दो पुत्र—रामचरण और दुल्लू हुये । रामचरण के एक पुत्र-अयोध्याप्रसाद हुवा । दुल्लू के दो पुत्र—बंशीधर और बंशगोपल भये । दनक के एक पुत्र—झंडू हुआ । झंडू के चार पुत्र—गुरुचरण, शिवचरण, रामदयालु और दीनदयाल हुये । गुरुचरण के दो पुत्र—बैजनाथ तथा शिवराम हुये । रामदयाल के दो पुत्र-सत्तीदीन, शिवनारायण हुये । दीनदयाल के दो पुत्र-पराग और शिवनाथ हुये ।

(७) सातवाँ बृद्ध । बिधाता हुये । यह फिरोजपुर में जा बसे । बिधाता के दो पुत्र-मुन्नू, बुन्नू हुये । मुन्नू के एक पुत्र-चूरामणि हुवा । चरामणि के एक पुत्र-गंगाचरण हुवा । जो पतित होगया ।

(८) आठवाँ बृद्ध । बच्चा हुआ । यह फिरोजपुर में जा बसा । बच्चा के चार पुत्र—महादेव, सहादेव, बलदेव और बोला हुये । सहादेव के दो पुत्र—रम्मा और लच्छू हुये । रम्मा के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ । बलदेव के एक पुत्र-मथुरा हुवा ।

(९) नवाँ बृद्ध । नाथी हुये । यह हिम्मतपुर में जाकर बसे । नाथी के एक पुत्र-हरीलाल हुवा हरीलाल के एक पुत्र—रामधीन हुआ । रामधीन के एक पुत्र-भवन हुआ । भवन के दो पुत्र-भूरा और पन्थनाथ हुये । भूरा के चार पुत्र—चेतराम, बुधई, पूरन और छोटेलाल हुये । छोटेलाल के दो पुत्र—शिवदयालु और शिवराज हुये । पन्थनाथ के एक पुत्र-मन्ना हुआ ।

(१०) दसवाँ बृद्ध । शिवबकस हुये । यह रहमतपुर में रहते हैं । शिवबकस के एक पुत्र-चन्दी हुआ । चन्दी के दो पुत्र—छेदा, जवाहिर

हुये। छेदा के तीन पुत्र—बोरा, बुद्धू, और मंगली हुये। बोरा के एक पुत्र घासिलप्रसाद हुवा।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध। जवाहिर हुये। जवाहिर रहमतपुर में रहता है। जवाहिर के दो पुत्र—भदई और भिखारी हुये। भदई के दो पुत्र शिवराम अज्ञात नाम हुये।

(१२) बारहवाँ वृद्ध। छेदू हुये। यह मकन्दीपुर में जाकर बसे। छेदू के एक पुत्र—फोला हुआ।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध। साँवल हुये। यह भिखनीपुर में जाकर बसे। साँवल के भाई पतोला भी थे। पतोला के एक पुत्र—शिवराम हुआ। शिवराम के एक पुत्र अज्ञात नाम हुआ।

(१४) चौदहवाँ वृद्ध। चतुरी, भोड़ा दो भाई हुये। यह गोंदहा में जाकर बसे। चतुरी के दो पुत्र—मन्नू और लछिमन हुये। मन्नू के एक पुत्र जियालाल हुवा। जियालाल के एक पुत्र-देवीदयाल हुआ। देवीदयाल के एक पुत्र—दयाराम हुआ। लछिमन के दो पुत्र-गोपली और भिखारी हुये। भिखारी के एक पुत्र-महाबीर हुआ। बोड़ा के एक पुत्र-छिटुवा हुवा। छिटुवा के एक पुत्र-बदला हुआ।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध। गनेश हुये। यह मिरजापुर में जाकर बसे। गनेश के पाँच पुत्र—नन्दा, सुरवा, रघुबर, रमई और परसुराम हुये। रघुबर के तीन पुत्र—झँडू, भरोसा और नारायण हुये। और वही पतित होगये। रमई के एक पुत्र—घासिल हुआ। यह पतित होगया।

(१६) सोलहवाँ वृद्ध। दयाराम हुये। यह सैंठी में जाकर बसे। दयाराम के दो भाई केशव और जवाहिर हुये। जवाहिर के तीन पुत्र-बाबूराम दुल्लू और रणजीत हुये। रणजीत के तीन पुत्र—गुलजारी, छोटेलाल और खुशाली हुये। गुलजारी के दो पुत्र—रघुनन्दन और महाबली हुये। छोटेलाल के दो पुत्र-सुखना और रामरतन हुये। खुशाली के एक पुत्र-भागीरथ हुआ।

(१७) सत्रहवां वृद्ध। गणेश भलिगवाँ से जाकर बिधनापुर में बसे। गणेश के चार पुत्र-चिनका, भूरा, गोपालो और मुनैयां लाल हुये। मुनैयांलाल के एक पुत्र—ख्यालो हुआ। ख्याली के एक पुत्र-गंगाप्रसाद हुआ।

गोत्र शाण्डिल्य परम्परा (डेरहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत शाण्डिल्य गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । पिरथा, सुदाम, गोकुल तीन भाई हुये । यह डेरहा-खेर में जाकर बसे । पिरथा के तीन पुत्र –रणजीत टिर्रा, और प्रहलाद, हुये । टिर्रा के एक पुत्र—मुन्शी हुआ । यह बबई चला गया । प्रहलाद के तीन पुत्र बंशी, मेवालाल और रंगीलाल हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । जुराखन हुये । यह मदिहाखेर (दामोदरपुर) में जाकर बसे । जुराखन के दो पुत्र—सहाय और लाला हुये । सहाय के दो पुत्र दुरगा और रामचेला हुये । रामचेला के एक पुत्र—मेवालाल हुआ ।

(३) तीसरा वृद्ध । बैजनाथ हुये यह दामोदरपुर में जा बसे । बैजनाथ के दो पुत्र—साँवल और भोंदा हुये । साँवल के दो पुत्र—गोकुल और देवीदीन हुये । गोकुल के एक पुत्र—रामाधीन हुआ । देवीदीन के एक पुत्र-भगवानदीन हुआ । भोंदा के तीन पुत्र-मन्ना, पराग और खुशाली हुये । मन्ना गड़वा चला गया । पराग सैमसी चला गया ।

(४) चौथा वृद्ध । टिर्रा हुये । यह बबई चला गया । टिर्रा के एक पुत्र-मुन्शी हुआ । यह पतित होगया ।

(५) पाँचवाँ वृद्ध । थान हुये । यह बबई में जाकर बसे । और पतित होगये ।

(६) छठा वृद्ध । कल्लू हुये । यह मकन्दीपुर में जाकर बसे । कल्लू के तीन पुत्र-चतुरा, मथुरा और कालिका हुये । मथुरा के चार पुत्र-गुरुदीन, भगवानदीन, खुशाली और मंगली हुये । गुरुदीन के दो पुत्र—मिट्ठूलाल और मोहनलाल हुये । मिट्ठू के एक पुत्र-रामरतन हुआ । मोहन के एक पुत्र-रामनाथ हुआ । भगवानदीन के एक पुत्र—रामगोपाल हुआ । खुशाली के एक पुत्र बैजनाथ हुआ । मंगली के एक पुत्र—छेदालाल हुआ । कालिका के दो पुत्र केवल और रंगीलाल हुये । केवल के दो पुत्र—छक्कीलाल और राजाराम हुये । रंगीलाल के एक पुत्र—चन्द्रपाल हुआ ।

(७) सातवाँ वृद्ध । दुरगा हुये । यह मकन्दीपुर में जाकर बसे । दुरगा के एक पुत्र—जोधा हुआ । जोधा के एक पुत्र—बदला हुआ । बदला के दो पुत्र—छोटा और अयोध्या हुये ।

(८) आठवाँ वृद्ध। सिद्धनाथ हुये। यह मकन्दीपुर में जाकर बसे। सिद्धा के दो पुत्र-टीकाराम और गौर हुये। टीकाराम के एक पुत्र-शंकर हुआ गौरी के एक पुत्र—मक्कू हुये।

(९) नवाँ वृद्ध। घासी हुये। यह मकन्दीपुर में जाकर बसे। घासी के एक पुत्र—भोजा हुआ। भोजा के दो पुत्र—लछिमन और भारत हुये। लछिमन के तीन पुत्र-कालाचरण और भवानीनीन और जगन्नाथ हुये। कालीचरण के येक पुत्र—रामलाल हुआ।

(१०) दसवाँ वृद्ध। गनेश हुये। यह मकन्दीपुर में जाकर बसे। गनेश के दो पुत्र—कल्लू और मल्हा हुये। कल्लू के एक पुत्र—बदला हुआ। बदल के दो पुत्र- शिवरतन, देवीचरण हुये।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध। दुबरा हुआ। दुबरा के एक पुत्र—दनका हुआ। दनका के दो पुत्र—पूसू और झूरा हुये।

(१२) बारहवाँ वृद्ध। भैरम हुये। यह जरइलापुर में जाकर बसे। भैरम के दो पुत्र—गुलजारी और रामरतन हुये।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध। भैरम हुये। यह दिलावरपुर में जाकर बसे। भैरम के दो पुत्र-पूसू और बल्लू हुये। बल्लू के दो पुत्र-दूबरि और पूरन हुये। दूबरि के दो पुत्र—सुखलाल और पराग हुये।

(१४) चौदहवां वृद्ध। देवन हुये। यह दिलावरपुर में जा बसे। देउना के एक पुत्र-चतुरा हुआ। चतुरा के दो पुत्र-भदई और हुरगा हुये। भदई के एक पुत्र गजोधरलाल हुये।

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध। दुरजा हुआ। यह दिलावरपुर में जाकर बसे। दुरजा के एक पुत्र-चैतूराम हुआ। चैतूराम के दो पुत्र—बाऊटा और लछिमन हुये। लछिमन के दो पुत्र-दयाशंकर और शिवराम हुये।

(१६) सोलहवाँ वृद्ध। गोकुल हुये यह भोजेपुर में जाकर बसे। और गोकुल का भाई मथुरा भी वहीं रहा। मथुरा के एक पुत्र-रामलाल (कल्लू) हुआ।

(१७) सत्रहवाँ वृद्ध। माखन हुआ। यह सुल्तानगढ़ में जाकर बसे। माखन के तीन पुत्र-अयोध्याप्रसाद, मन्नू, और मथुरा हुये। अयोध्या के एक पुत्र-गोकुल हुआ। गोकुल के एक पुत्र-बनवारी लाल हुआ। मन्नू के एक पुत्र

गुरुदयाल हुआ। गुरुदयाल के एक पुत्र पन्थनाथ हुआ। मथुरा जमुनियाँ-खेरे चला गया।

(१८) अठारवां वृद्ध। वृन्दा हुये। यह सरहन चले गये। वृन्दा के तीन पुत्र- गोकुल, मथुरा और भूरा हुये। मथुरा के एक पुत्र—रामलाल हुआ। भूरा के तीन पुत्र-श्यामलाल, रामनाथ और शिवनाथ हुये। श्यामलाल के तीन पुत्र-मोतीलाल, मनोहरलाल और अज्ञात नाम हुये। रामनाथ के दो पुत्र—जगमोहन और जगन्नाथ हुये।

गोत्र गर्ग परम्परागत (हाटा वाले)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत गर्ग गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। दुल्लू हुये। यह मकन्दीपुर में आकर बसे। दुल्लू के दो पुत्र—भैरम और दुबरा हुये। भैरम के एक पुत्र—दुरजा हुवा। दुरजा के दो पुत्र—रामपाल और सकठू हुये।

गोत्र कश्यप परम्परा (बहरौलिहा)

उमरहार कुर्मी वंन्शान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। मयाराम हुये। यह मकन्दीपुर में आकर बसे। मयाराम के एक पुत्र—पितना हुवा। पितना के तीन पुत्र—जवाहिर, खुमान और हीरा हुये। जवाहिर के एक पुत्र-चिरंजूलाल हुये। चिरंजूलाल के एक पुत्र- बदला हुआ। बदला के एक पुत्र—बदरीप्रसाद हुये। खुमान के दो पुत्र—दुर्गा और रामबकस हुये। रामबकस के एक पुत्र-सौनी भया। हीरा के दो पुत्र—ठाकुरदीन और बेणीमाधव हुये। ठाकुरदीन के एक पुत्र अयोध्या हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। इसुरी हुये। यह ग्राम गौरीपुर में आकर बसे। ईश्वरी के चार पुत्र-शिवबकस, दूबरि, खुशाली, और रिग्गू भये। शिवबकस के एक पुत्र—जगन्नाथ हुआ। जगन्नाथ के दो पुत्र-परसाद और गजोधर हुये। दूबरि के दो पुत्र—मैका और हजारी हुये। मैका के तीन पुत्र

भगवानदीन, बलदेव और प्यारेलाल हुये। बलदेव के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। खुशाली, रिग्गू भाजीताला चले गये।

(३) तीसरा वृद्ध। लल्लू हुये। यह कण्ठीपुर में जाकर बसे। लल्लू के एक पुत्र-जगन्नाथ हुआ। लल्लू सिकट्ठनपुर से आकर कण्ठीपुर में बसा।

(४) चौथा वृद्ध। छिउल हुये। यह सिकट्ठनपुर में जाकर बसे। छिउल के दो पुत्र-भिखारी दनक हुये। भिखारी के तीन पुत्र-रामचरण, चतुरी और पूसू हुये। रामचरण के दो पुत्र-माधव, महादेव हुये। माधव के एक पुत्र-रामरतन हुये। चतुरी के एक पुत्र-चौथा हुआ। पूसू के एक पुत्र-गुमानी हुआ। गुमानी के दो पुत्र-कन्हैया, और शिवमंगल भये।

(५) पांचवां वृद्ध। नारायण हुये। यह सिकट्ठनपुर में जाकर बसे। नारायण के दो पुत्र-गयादीन और तिलोक भये। गयादीन के एक पुत्र-मुन्नू हुआ। मुन्नू के चार पुत्र-भदई, कालिका, रामदीन और भगवानदीन हुये। भदई के एक पुत्र-दयाराम हुआ। भगवानदीन के दो पुत्र- रामगोपाल, और शिवगोपाल हुआ। तिलोक के दो पुत्र- गोकुल और मथुरा हुये। मथुरा के एक पुत्र—मन्नू हुआ। मन्नू के एक पुत्र—रामप्रसाद भया।

(६) छठवां वृद्ध। लोकन हुये। यह सिकट्ठनपुर में जाकर बसे। लोकन के दो पुत्र—भगोले और भगने भये। भगोल के चार पुत्र-बेचू. छेनू. गहरू और चन्दी हुये। बेचू के चार पुत्र-घासी, छिउल, नारायण और गहबर भये। घासी के एक पुत्र-ठाकुर। ठाकुर के तीन पुत्र—दयालु, देबीदीन और काशी भये। दयालु के तीन पुत्र—रामबकस, रामलाल और रामभरोसे भये। रामबकस के दो पुत्र-शिवभजन, अयोध्या हुये। शिवभजन के चार पुत्र-ईश्वर दीन, सीताराम, रामबली, और शिवबली हुये। रामलाल के एक पुत्र-गेंदा हुआ। गेंदा के दो पुत्र-परसुराम और दूसरे का नाम अज्ञात हुये। रामभरोसे के तीन पुत्र-सूरजदीन, रामेश्वर और पराग भये। देबीदीन के चार पुत्र लल्लू, योधा, छेदालाल और रामदुलारे हुये। लल्लू के एक पुत्र जगन्नाथ हुआ। जोधा के दो पुत्र—सुदामा और गंगाराम हुये। काशी के एक पुत्र-खेलिया भया।

(७) सातवां वृद्ध। घना भये। यह रामपुर में जाकर बसा। घना के दो पुत्र-तिलोक और गल्दा भये। तिलोक के दो पुत्र—भोला, और

दुलारे लाल भये। भोला के एक पुत्र-भजनी हुआ। दुलारे के तीन पुत्र—मथुरा, मोती और चौथे का नाम अज्ञात हुये। गल्दा के एक पुत्र-चन्दी हुआ।

(८) आठवां वृद्ध। भवन भये। यह भाजीताला में जाकर बसे। भवन के दो पुत्र—ईश्वरीप्रसाद, विश्नू हुये। ईश्वरी के चार पुत्र-शिवबक्स, दूधरि रिग्गू और खुशाली हुये। रिग्गू, खुशाली भाजीताला चले गये। शेष भाई गोरीपुर में बसे। रिग्गू के एक पुत्र-रामलाल। खुशाली के तीन पुत्र—धनी, सुखलाल, मनी हुये। धनी के एक पुत्र-श्यामलाल हुआ।

(९) नवां वृद्ध। घसीटे हुये। यह मोजेपुर में जाकर बसे। ठाकुरदीन धनई, देवीदीन, गयादीन हुये। ठाकुर के एक पुत्र—खुमान हुआ। खुमान के एक पुत्र-कल्लू हुआ। कल्लू के दो पुत्र-दूबरि और श्यामलाल हुये। श्यामलाल के दो पुत्र रामरतन और नाम अज्ञात हुये। धनई के चार पुत्र बुद्धवा, बदलू, गोविंद और जोधा हुये। गोविन्द के दो पुत्र महका और दुरजा हुये। महका के एक पुत्र- महाबीर हुआ। जोधा के एक पुत्र- प्रहलाद हुआ। देवीदीन के एक पुत्र- गजोधर। गजोधर के तीन पुत्र- लाला, रामचरण और मन्नी हुये। लाला के दो पुत्र- बच्ची और बाबूलाल हुये। बच्ची के एक पुत्र- मेवालाल हुआ। मन्नी के एक पुत्र- उगन्नाथ हुआ। गयादीन के दो पुत्र कामता और लछिमन हुये। लछिमन के दो पुत्र- राजा, और बृजलाल हुये। राजा के दो पुत्र- चम्बल और जगन्नाथ हुये। जगन्नाथ पतित होगया।

(१०) दसवां वृद्ध। खुमान, बदली, मन्नू तीन भाई हुये। यह मोजेपुर में जाकरबसे। खुमान के एक पुत्र- गजराज हुआ। मन्नू के एक पुत्र- नारायण हुआ। नारायण के दो पुत्र- मंगली और भगवानदीन हुये।

(११) ग्यारहवां वृद्ध। गंगादीन हुये। यह अम्बरपुर में जाकर बसे। गंगादीन के तीन पुत्र- भोला, गयादीन और कन्हई हुये। भोला के एक पुत्र दुरगा हुआ। दुरगा के दो पुत्र- सहका और छोटा हुआ। सहका के दो पुत्र दीनदयालऔर पंचा हुये। दीनदयालु के तीन पुत्र—महाबीर, श्यामलाल और लक्ष्मीनारायण हुये। पंचा के तीन पुत्र—सुन्दरलाल, रामनारायण और बच्चीलाल हुये। गयादीन के एक पुत्र—सीताराम हुवा सीताराम के एक पुत्र—झाँडू हुवा।

———

गोत्र काश्यप परम्परा (बड़ी घराउर)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । नत्थू हुये । यह मकन्दीपुर में जाकर बसे । नत्थू के एक पुत्र—रामबकस हुआ । रामबकस के एक पुत्र-दीनदयाल हुआ । दीनदयाल के तीन पुत्र—प्रहलाद, श्यामलाल, और गञ्जोधर हुआ । प्रहलाद के एक पुत्र—बाबूलाल हुआ । श्यामलाल के दो पुत्र—मेवालाल और लछिमन हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । ओरी हुआ । यह कण्ठीपुर में जाकर बसे । ओरी के एक पुत्र—चन्दो हुआ । चन्दो के तीन पुत्र—रामप्रसाद, छबीले और बुधियाँ हुये । रामप्रसाद के तीन पुत्र—जवाहिर लाल, गोकुल प्रसाद और ठाकुरदीन हुये । जवाहिरलाल के दो पुत्र—दीनदयालु, रामदयालु हुये । दीनदयालु के चार पुत्र—मन्नू, रामचरण, कदाली और जगन्नाथ हुये । मन्नू के एक पुत्र रामप्रसाद हुआ । कदाली के एक पुत्र—बाबूराम हुआ । रामदयाल के एक पुत्र छेदालाल हुआ । गोकुल के तीन पुत्र-ईश्वरीप्रसाद, मुसई और पूरन हुये । ईश्वरीप्रसाद के चार पुत्र-देवनन्दन, रामनाथ, रघुनाथ और देवीदीन हुये । देवीदीन के एक पुत्र—दयाराम हुआ । मुसई के एक पुत्र—जगन्नाथ हुआ । ठाकुरदीन के एक पुत्र-पूसू हुआ । पूसू के एक पुत्र-मेवालाल हुआ । छबीले के दो पुत्र—दूबरि और मयादीन हुये । दूबरि के चार पुत्र-कल्लू, साँवल, पूसू और बच्चू हुये । कल्लू के दो पुत्र—भगवान और प्रताप हुये । प्रताप के एक पुत्र-बदलू हुये । साँवल के दो पुत्र-पतिराखन और रामरतन हुये । रामरतन के एक पुत्र-गंगाचरण हुआ । पूसू के दो पुत्र-रामलाल और बलदेवप्रसाद हुये । रामलाल के एक पुत्र-शिवबालक हुआ । मयादीन के एक पुत्र—छेदालाल हुआ छेदालाल के तीन पुत्र—महादेव, पराग और काशीप्रसाद हुये । प्रयाग के एक पुत्र-रामेश्वर हुआ । काशी के दो पुत्र—जगन्नाथ और राजाराम हुये । बुधियाँ के एक पुत्र—लछिमनप्रसाद हुआ । लछिमन के एक पुत्र-सहीद हुये । सहीद के एक पुत्र—भवानीदीन हुआ । भवानीदीन के तीन पुत्र-कालीचरण, गयाप्रसाद और देवीचरण हुये ।

(३) तीसरावृद्ध । पन्नू हुये । यह कण्ठीपुर में जाकर बसे । पन्नू के चार पुत्र-बीरू, लाला, दनका और चिंगा हुआ । बीरू के दो पुत्र-ज्वाला और

टेढ़ा हुये। ज्वाला के एक पुत्र—जैराम हुआ। जैराम के एक पुत्र—बिंदा हुआ टेढ़ा के एक पुत्र—दुरगा हुआ। दुरगा के एक पुत्र-कुबेर हुआ। लाला के एक पुत्र-नत्थूलाल हुआ। दंनका के तीन पुत्र—जुराखन, बल्लू और कल्लू हुये। चिनगा के एक पुत्र—भिखारी हुआ।

गोत्र काश्यप परम्परा (गढ़वहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। सुदीन हुये। यह फरीदपुर में जाकर बसे। सुदीन के एक पुत्र—लल्ला हुआ। लल्ला के दो पुत्र—प्रसाद और रामचरण हुये। रामचरण के दो पुत्र—रामकृष्ण और प्रहलाद हुये। रामकृष्ण के दो पुत्र सूर्यपाल और देशपाल हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। सुक्खू हुये। यह महमंदपुर में जाकर बसे। सुक्खू के एक पुत्र-नारायण हुये। नारायण के एक पुत्र - वंशगोपाल हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। दुरगा हुये। यह मकंदीपुर जाकर बसे। दुरगा के दो पुत्र-दुरजा और हजारी हुये। दुरजा के एक पुत्र-युगराज हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। छन्नू, मन्नू दो भाई हुये। यह अलियापुर में जाकर बसे। छन्नू के एक पुत्र—शिवराम हुये। मन्नू के दो पुत्र - रामनाथ और देवनन्दन हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। ईश्वरीप्रसाद गढ़ से जाकर किशोरपुर में बसे। ईश्वरी के एक पुत्र—जवाहिर हुआ। जवाहिर के एक पुत्र-पूरन हुआ। पूरन के तीन पुत्र—रामरत्न रामगोपाल और द्वारिका हुये।

गोत्र काश्यप परम्परा (विधनापुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। भदई हुये। यह हरजनपुर में जाकर बसे। भदई के दो पुत्र—लाँगड़ा और कल्लू हुये।

(२) दूसरा बृद्ध। लोधो विधनापुर में बसे। लोधी के पाँच पुत्र कन्हैयालाल, अयोध्याप्रसाद, बेणीप्रसाद, रघुबरदयाल और पंचा हुये। कन्हैयालाल के चार पुत्र—जियालाल, पौहा, गुलजारी और लल्लू हुये। गुलजारी के दो पुत्र—रामभजन और पूसू हुये। अयोध्याप्रसाद के तीन पुत्र—गयादीन राजाराम और भदई हुये। गयादीन के तीन पुत्र—ऊदन, सुन्दरलाल, और साधू हुये। बेणीप्रसाद के एक पुत्र-हजारीलाल हुआ। हजारीलाल के दो पुत्र रामदीन और सुखना हुये। रघुबर दयालु, के एक पुत्र—गोकुल हुआ। गोकुल के दो पुत्र छेदू और दुर्जनलाल हुये। पंचा के एक पुत्र-नन्दू हुआ।

गोत्र भारद्वाज परम्परा [जहानाबादी]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात बृद्ध।

(१) प्रथम बृद्ध। भिखारी हुये। यह भिखनीपुर में जाकर बसे।

गोत्र भारद्वाज परम्परा (भिखनीपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात बृद्ध

(१) प्रथम बृद्ध। केहरि हुये। यह भिखनीपुर में रहते हैं। केहरि के दो पुत्र—तुलसी और बदरिया हुये। तुलसी के एक पुत्र-हगुवा हुवा। बदरी के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(२) दूसरा बृद्ध-जूरा हुये। यह कसियापुर में जाकर बसे। जूरा के भाई अनूप हुये। जूरा के दो पुत्र—हीरालाल और राजाराम हुये। हीरालाल के एक पुत्र-भिखारी हुये। भिखारी के एक पुत्र-गन्नू हुआ। गन्नू के एक पुत्र—पूसू हुआ। राजा के दो पुत्र-दुरगा और ठाकुरदीन हुये। दुरगा के एक पुत्र-बदल हुवा। बदल के तीन पुत्र-भूरा, रघुबर और दीनदयाल हुये भूरा के एक पुत्र-भरोसा हुआ। भरोसा के दो पुत्र-शंकर और उमाशंकर हुये। रघुबर के एक पुत्र—रामप्रसाद हुवा। दीनदयाल के तीन पुत्र-सूरजदीन, गोपीनाथ और जगमोहन हुये। अनूप के दो पुत्र—बल्लू और कल्लू हुये। कल्लू के तीन पुत्र—घनसूर, दीनानाथ और छोटन हुये।

घनसूर के तीन पुत्र—तुलाराम, लछिमनप्रसाद और रामसहाय हुये। तुलाराम के दो पुत्र—नोखा और तेजा हुये। तेजा के एक पुत्र-राजा हुवा। लछिमन के पाँच पुत्र-चतुरी, गबादीन, विपतिया, बुद्धू और चेला हुये। चेला के दो पुत्र-सुखनन्दन और रामचन्द्र हुये। छीटन के एक पुत्र-आँगन हुये। आँगन के छः पुत्र भूरा, पूरन, पोतम, महँगू, सीताराम और सत्तीदीन हुये। सीताराम के दो पुत्र—राजा और महाराजा हुये। सत्तीदीन के दो पुत्र दुरगा और रामनाथ हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। परशुराम हुये। परशुराम के एक पुत्र-गयादीन हुआ। गयादीन के तीन पुत्र—बाबुल, बल्दू और सुक्खा हुये। बाबुल के दो पुत्र—तिलोक और महादेव हुये। यह कसियापुर में जा बसे।

(४) चौथा वृद्ध। दम्मर हुये। यह कसियापुर में जाकर बसे। दम्मर के तीन पुत्र-भैरम, मत्ते और लछिमन हुये। भैरम के एक पुत्र-सउनी सउनी के तीन पुत्र—रामबकस, रामलाल और श्यामलाल हुये। रामबकस के एक पुत्र—मथुरा हुवा। मथुरा के एक पुत्र-गंदुहा हुवा। श्यामलाल के एक पुत्र-जैराम हुवा। मत्ते के तीन पुत्र-मनुवाँ, सेफला और लुट्टू हुये। मन्नू के एक पुत्र-गयादीन हुआ। गयादीन के तीन पुत्र-वृन्दावन, सीताराम बदलू हुये। सेफला के चार पुत्र-दालचन्द्र, छोटा भगवानदीन और नारायण हुये। दालचन्द के दो पुत्र—रामदयाल और रामधनी हुये। रामदयाल के एक पुत्र जागेश्वर हुआ। भगवानदीन के तीन पुत्र—मनीराम, शिवराम और शिवराज हुये। नारायण के एक पुत्र—जगन्नाथ हुवा। लुट्टू के चार पुत्र अमरवासी, अतिबरण, सधू और खुरजन हुये। लछिमन के दो पुत्र गजोधर और रामदुलारे हुये। गजोधर के एक पुत्र—रामचरण हुआ। रामदुलारे के एक पुत्र-बल्देवप्रसाद हुवा।

(५) पांचवाँ वृद्ध। हरिकिसुन हुये। यह बौहारा में रहे। हरिकिसुन के दो पुत्र—पोले और लम्भू हुये। पोले के एक पुत्र—नारायण हुये। नारायण के एक पुत्र-छोटा हुआ। छोटा के दो पुत्र—रामशंकर और दवाशंकर हुये। लम्भू के एक पुत्र—पंगी हुवा। पंगी के दो पुत्र—भरोसा और चिन्नीलाल हुये।

(६) छठा वृद्ध । लाला हुये। यह बौहारा में जाकर बसे । लाला के दो पुत्र—फत्तूँ और दनकऊ हुये । दनकऊ के तीन पुत्र-वृन्दाचरण, गंगाचरण और रामचरण हुये। गंगाचरण के एक पुत्र—मथुरा हुये।

(७) सातवां वृद्ध । पंचम हुये। यह बौहारा में जाकर बसे। पंचा के दो पुत्र-मदारी और शतान हुये। मदारी के पाँच पुत्र--मातादीन, विधातादीन, ताराचन्द बुद्धूँ, और भगवानदीन हुये। मातादीन के पाँच पुत्र-सुखवा, रघुवा दुरगा, महाबीर, रामदयालु हुये। रामदयाल के दो पुत्र-गंगादीन और बासदेव हुये। बुद्धू के दो पुत्र-दीनदयाल और रामलाल हुये। शतान के एक पुत्र छेदालाल हुआ।

(८) आठवां वृद्ध भूरे हुये। यह बोहारा में जाकर बसे। भूरे के एक पुत्र-मइका हुआ। मइका के एक पुत्र-गुरदीन हुआ।

(९) नवाँ वृद्ध नाथू हुये। यह सैमिसी में जाकर बसे। नाथू के एक पुत्र भगवन्त हुये। भगवन्त के एक पुत्र-दम्मन हुआ। दम्मन के तीन पुत्र-भैरों मत्ते और लछिमन हुये। भैरव के एक पुत्र-सवनियाँ हुआ। सवनियाँ के तीन पुत्र—रामबकस, रामलाल और श्यामलाल हुये। रामबकस के एक पुत्र मथुरा हुआ। मथुरा के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। मत्ते के तीन पुत्र मन्न, सेफल, और नुतुआ हुआ। मन्नू के एक पुत्र-गयादीन हुआ। गयादीन के तीन पुत्र-वृन्दावन, सीताराम और बदलू हुये। सीताराम के एकपुत्र-रामप्रसाद हुये। सेफल के चार पुत्र—दालचन्द, छोटालाल, भगवानदीन और नारायण हुये। दालचन्द के दो पुत्र—रामदयालु और रामधनी हुये। रामदयालु के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये। भगवानदीन के चार पुत्र-मनोराम, शिवराम, रामेश्वर और चौथा नाम अज्ञात हुये। नुत्तू के चार पुत्र-आदिवरण, रामरण देवीदयाल और सत्यनारायण हुये। लछिमन के दो पुत्र—गदाधर और दुलारे हुये। गदाधर के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। दुलारे के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ।

गोत्र भारद्वाज परम्परा (सठिगवहाँ)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । पोला हुये यह सठिगवाँ में बसे । पोला के दो पुत्र दुबरा और पूसू हुये । पूसू के एक पुत्र—गयादीन हुआ । गयादीन के दो पुत्र अज्ञात नाम और रामजी हुये । गयादीन पतित होगया ।

(२) दूसरा वृद्ध । डेला हुये । यह सठिगवाँ में रहता है । डेला के दो पुत्र—रामबकस और पतिराखन हुये । रामबकस के तीन पुत्र—छेदालाल, हुरगाप्रसाद और फत्ते हुये । हुरगा के एक पुत्र—ब्रम्हा हुआ । ब्रम्हा के दो पुत्र-रामरतन और अज्ञात नाम हुये । फत्ते के एक पुत्र—बदरीप्रसाद हुआ बदरी के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ । पतिराखन के एक पुत्र—गंगाप्रसाद हुआ । गंगाप्रसाद के एक पुत्र—बसंतलाल हुआ ।

(३) तीसरा वृद्ध । मत्थी हुये । यह सठिगवाँ में रहते हैं । मत्थी के एक पुत्र—लालाराम हुआ । लालाराम के तीन पुत्र - शिवराम, राजाराम और अज्ञात नाम हुये ।

(४) चौथा वृद्ध । महादेव हुये । यह सठिगवाँ में रहे । महादेव के एक पुत्र—बृजलाल हुआ । बृजलाल के एक पुत्र—लंगड़ा हुआ ।

(५) पाँचवाँ वृद्ध । मेघा हुआ । यह सठिगवाँ में रहते हैं । मेघा के एक पुत्र—भुय्याँदीन हुआ ।

(६) छठवाँ वृद्ध—ओरी हुये । यह बेहटा में जाकर बसे । ओरी के तीन पुत्र—गनेश, भूरा और दनकऊ हुये । दनकऊ के दो पुत्र—रामचरण और रामदीन हुये । रामचरण के एक पुत्र—शिवबालक हुआ ।

(७) सातवाँ वृद्ध । लेखराम हुये । यह फिरोजपुर में जाकर बसे । लेखराम के दो पुत्र-मथुराप्रसाद और चिन्तामणि हुये । मथुरा के तीन पुत्र रामबकस, बदलू और लछिमन हुये । चिन्ता के एक पुत्र-महाबीर हुआ ।

(८) आठवाँ वृद्ध । भैरम हुये । यह फीरोजपुर में जाकर बसे । भैरम के दो पुत्र-हीरालाल और मन्नूलाल हुये । मन्नू के एक पुत्र—श्यामलाल हुआ ।

(९) नवाँ वृद्ध । लाला सठिगवाँ से जाकर कुमखरा में बसे । लाला के एक पुत्र—परसाद हुआ । परसाद के एक पुत्र-भुय्याँदीन हुआ ।

गोत्र कश्यप परम्परा (रसुलहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । परसाद छोटा और पुत्तियाँ हुये यह सठिगवाँ में जाकर बसे । परसाद के दो पुत्र—मनवाँ, और रामलाल, हुआ । मनवाँ के एक पुत्र—शिवरतन, हुवा । छोटा के एक पुत्र- तिलोक हुवा, । तिलोक के एक पुत्र-जगन्नाथ हुवा । पुत्तो के एक पुत्र-बृजलाल, हुवा ।

(२) दूसरा वृद्ध । गप्पू हुये । यह हुसेनाबाद में जाकर बसे । गप्पू के दो पुत्र-कल्लू और अजोधाप्रसाद हुये। कल्लू के तीन पुत्र—दुरजन, पूसू, मंना हुये । दुरजन धिरजापूर चला गया । मन्ना के दो पुत्र-- छेदालाल, और बदरी प्रसाद, हुये । बदरी के दो पुत्र-भंडू और रामरतन हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । पुत्तीं हुये । यह धमना में जाकर बसे पुत्तीं के पाँच पुत्र-मथुरा, लछिमन, और भूरे दनका, और खेमकरण, हुये । मथुरा के एक पुत्र रामचरण, हुवा । खेमकरण के चार पुत्र—जगन्नाथ, बजनाथ, रघुनाथ, और सीताराम हुये । रघुनाथ के एक पुत्र—भजन हुवा ।

(४)चौथा वृद्ध । बिहारीलाल हुये । यह बेहटा खुर्द में जाकर बसे बिहारीलाल के दो पुत्र-सूरजदीन और ठाकुरदीन हुये । सूरजदीन के दो पुत्र-रामसेवक और मेवालाल हुये ।

(५) पाँचवा वृद्ध । छत्ता हुये । यह रसूलपुर में रहते हैं । छत्ता के दो पुत्र-चन्ना, शिवबकस, हुये । चन्ना के दो पुत्र—रामसुख, और गंगाचरण हुये रामसुख के दो पुत्र-रामप्रसाद- गोकुल, हुये । रामप्रसाद के एक पुत्र-खुशाली हुये । खुशाली के तीन पुत्र-द्वरिका, जगन्नाथ, और बाबूलाल भये । गोकुल के चार पुत्र- रामनाथ, युगुलकिशोर, रामचरण और चौथे का नाम अज्ञात हुये । रामनाथ के एक पुत्र-रामेश्वर, भया । गंगाचरण के दो पुत्र-दीनदयालु धनकऊ भये । दीनदयालु के दो पुत्र-भिखारी, अशफोंलाल हुये । धनकऊ के चार पुत्र-रघुवरदयालु, छोटेलाल, प्रभू और देवीदयालु हुये ।

(६) छठवां वृद्ध । दुर्जन भये । यह रसूलपुर में रहते हैं । दुर्जन के एक पुत्र-गनेशी हुये । गनेशी के दो पुत्र-रामचरण, करण भये । रामचरण के तीन पुत्र-रामसहाय, रामसेवक और मन्नालाल हुये । रामसहाय के दो पुत्र ।

चेला और श्यामा भये। चेला के एक पुत्र-हनुमान हुये। जो पतित होगया। रामसेवक के एक पुत्र-लल्ला हुआ। लल्ला के एक पुत्र-महावीर हुआ; जो कि पतित होगया।

(७) सातवां वृद्ध। रामदीन भये। यह रसूलपुर में रहता है। रामदीन के दो पुत्र-मैकू और मन्ना हुये। यह पतित होगया।

(८) आठवां वृद्ध। गोपाल, गिरधारी दो भाई हुये। यह रसूलपुर में रहते हैं। गोपाल के एक पुत्र-छेदालाल हुआ। गिरधारी के एक पुत्र ब्रह्मा भया।

(९) नवां वृद्ध। देवीदीन भये यह रसूलपुर में रहते हैं। देवीदीन के एक पुत्र—दयालु भया जो कि पतित होगया।

(१०) दसवां वृद्ध। बोड़े भये। यह रसूलपुर में बसे हैं। बोड़े के दो पुत्र-महादेव और गयादीन भये। महादेव के तीन पुत्र-जगन्नाथ, बैदा और बच्चा हुये। जगन्नाथ के दो पुत्र—मटरू, भरोसिया हुये। बैदा के एक पुत्र—दुलीचन्द हुये जो पतित होगया। बच्चा के चार पुत्र-गोकुल, भगवानदीन, और दो के नाम अज्ञात हुये। गयादीन के दो पुत्र-विशेश्वर दयाल, लालाराम हुये।

(११) ग्यारहवां वृद्ध। गजोधर हुये। यह रसूलपुर में रहते हैं। गजोधर के एक पुत्र-रामेश्वर हुआ यह पतित होगया।

(१२) बारहवां वृद्ध। कल्लू भये। यह रसूलपुर में रहते हैं। कल्लू के चार पुत्र—चतुरी, गंगादीन, लालाराम और छोटेलाल हुये। चतुरी और गंगादीन इच्छापुर चले गये। छोटा पतित हो गया।

(१३) तेरवांवृद्ध। हीरलाल हुवा। हीरालाल के एक पुत्र-सुद्धू हुवा। यह पतित हो गया।

(१४) चौदवां वृद्ध। अयोध्याप्रसाद हुवा। यह रसूलपुर में बसे। हैं। अयोध्याप्रसाद के दो पुत्र-छीटन और कङ्गल भये छीटन मदिहासेर चला गया। और कङ्गल पतित हो गया। छीटन भी पतित हो गया।

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध। भिखारी भये यह रसूलपुर से हवशापुर चले गये। भिखारी के एक पुत्र गंगाप्रसाद हुवा। गंगाप्रसाद के चार पुत्र

बिन्दाप्रसाद, गोकुल, मथुरा, और द्वरिका, हुये। मथुरा के एक पुत्र—अजोध्या हुवा। द्वारिका के चार पुत्र-महाबीर, रामेश्वर, पन्थनाथ, और जगन्नाथ, हुये।

(१६) सोलहवां वृद्ध। कल्लू भये। यह धिरजापुर में जाकर बसे। कल्लू के भाई अयोध्या और अज्ञात नाम हुये। कल्लू के तीन पुत्र-दुर्जन, पूसू, मन्ना, भये। दुर्जन के चार पुत्र-बदला, जवाहिर तेजा, बिहारी, हुये। बदला के एक पुत्र-बिन्दा हुवा। बिन्दा के एक पुत्र-रामगुलाम हुवा तेजा के एक पुत्र युवराज, हुवा। बिहारी के दो पुत्र-सूरजदीन और ठाकुरदीन हुये। सूरजदीन बेहटा चला गया। ठाकुर के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा। अजोध्या के दो पुत्र छिटना, और कङ्गल, भये कङ्गल दमोदर पुर चला गया। मन्ना हुसेनाबाद चला गया।

(१७) सत्रहवां वृद्ध। मुल्ला रसूलपर से जाकर दमोदरपुर में बसे। मुल्ला के दो पुत्र-कल्लू, और अजोध्या, हुये। कल्लू धिरजापुर चला गया। अजोध्या के दो पुत्र-छोटन, और कङ्गला हुये। कङ्गला के चार पुत्र-रामचरण, रामचेला, शिवनाथ, और मनुवाँ हुये। रामचरण के एक पुत्र-मोतीलाल हुवा।

(१८) अठारवाँ वृद्ध। चौंकल रसूलपुर से जाकर दमोदरपुर में बसे। चौंकल के एक पुत्र—भरोसा हुवा। भरोसा के दो पुत्र-मइका और शिवराम हुये। मइका के एक पुत्र-शिवरतन शिवरतन के एक पुत्र, अज्ञात नाम हुवा। शिवराम के एक पुत्र-रामपाल हुआ।

(१९) ओनईसवाँ वृद्ध। लाला रसुलपुर से जाकर बबई में बसे। लाला पतित हो गये।

(२०) बीसवाँ वृद्ध। कल्लु रसूलपुर से जाकर इच्छापुर में बसे। कल्लु के चार पुत्र—चतुरी, छोटा, गंगादीन, और लाला, हुये। चतुरी के तीन पुत्र—पीतम, प्रसाद और भगवानदीन, हुये। पीतम के एक पुत्र—साधू, हुवा। प्रसाद के एक पुत्र—जगंनाथ, हुवा। भगवानदीन के एक पुत्र—अज्ञात नाम हुवा। गंगादीन के एक पुत्र—रामलाल हुवा।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध कल्लू रसूलपुर में बसा। कल्ल के १ पुत्र—तेजा, हुवा। तेजा के दो पुत्र—बुद्धां, और पराग, हुये। बुद्धां पतित हो गया। पराग के तीन पुत्र-श्यामलाल, रामलाल और दौलत, हुये

गोत्र कात्यायन परम्परागत (भद्दूपुरिहा)

डमरहार कुरमी वंशान्तरगत कात्यायन गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । पंचा भये । यह भद्दूपुर से जाकर जरैलापुर में बसे । पंचा के तीन पुत्र-तिलोक, गोपाल और खुशाली भये । तिलोक के तीन पुत्र-जगन्नाथ, शिवनाथ और भनवा भये । जगन्नाथ के तीन पुत्र-झुरियां, रामपतियां और अज्ञात नाम भये । शिवनाथ के तीन पुत्र-मन्नी, सुदामा और अज्ञात नाम भये । खुशाली के दो पुत्र—द्वारिका और राजाराम भये । द्वारिका के एक पुत्र-नाम अज्ञात भया ।

(२) दूसरा वृद्ध । असाढ़ भये । यह जरैलापुर में जाकर बसे ।

(३) तीसरा वृद्ध । अर्जुन भये । यह पतारी में जाकर बसे । अर्जुन के एक पुत्र—कल्लू भया । कल्लू के दो पुत्र—मथुरा और तेजा भया । मथुरा के एक पुत्र—राजाराम हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । महादेव भये । यह भद्दूपुर में रहते हैं । महादेव के एक पुत्र—बालगोविंद भये । । बालगोविंद के एक पुत्र—रामलाल भया ।

(५) पांचवां वृद्ध । गोबरा भया । यह भद्दूपुर ही में बसे । गोबरा के एक पुत्र—नारायण भया । नारायण के दो पुत्र—सहांय और जगन्नाथ भये । सहांय के एक पुत्र—लछिमन भया ।

(६) छठवां वृद्ध । शंकर भद्दूपुर से जाकर औंदहा में बसे । शंकर के एक पुत्र—बदला हुआ । बदला के चार पुत्र—ठाकुरदीन, तुलसी, दनका और मनसा हुये । ठाकुरदीन के तीन पुत्र—सहांय, लछिमन और रामगुलाम हुये । सहांय के चार पुत्र-धसिलावन, भगवानदीन, छोटा, रजना हुये । धसिलावन के दो पुत्र-बैजनाथ और गंगाचरण हुये । भगवानदीन के एक पुत्र गुरदयाल हुआ । रजना के एक पुत्र-गुरप्रसाद हुआ । लछिमन के दो पुत्र-रघुनन्दन और मन्नू हुये । रघुनन्दन के एक पुत्र-रामरतन हुआ । मन्नू के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुआ । तुलसी के तीन पुत्र—रम्भा, भरथा और सेवक हुये । रम्भा के एक पुत्र—महका हुआ । भरथा के दो पुत्र-पूरन और बदरी हुये । दनका के एक पुत्र-महदी हुआ । महदी के एक पुत्र-पराग हुआ । पराग के दो पुत्र-रामदीन और रामजी हुये ।

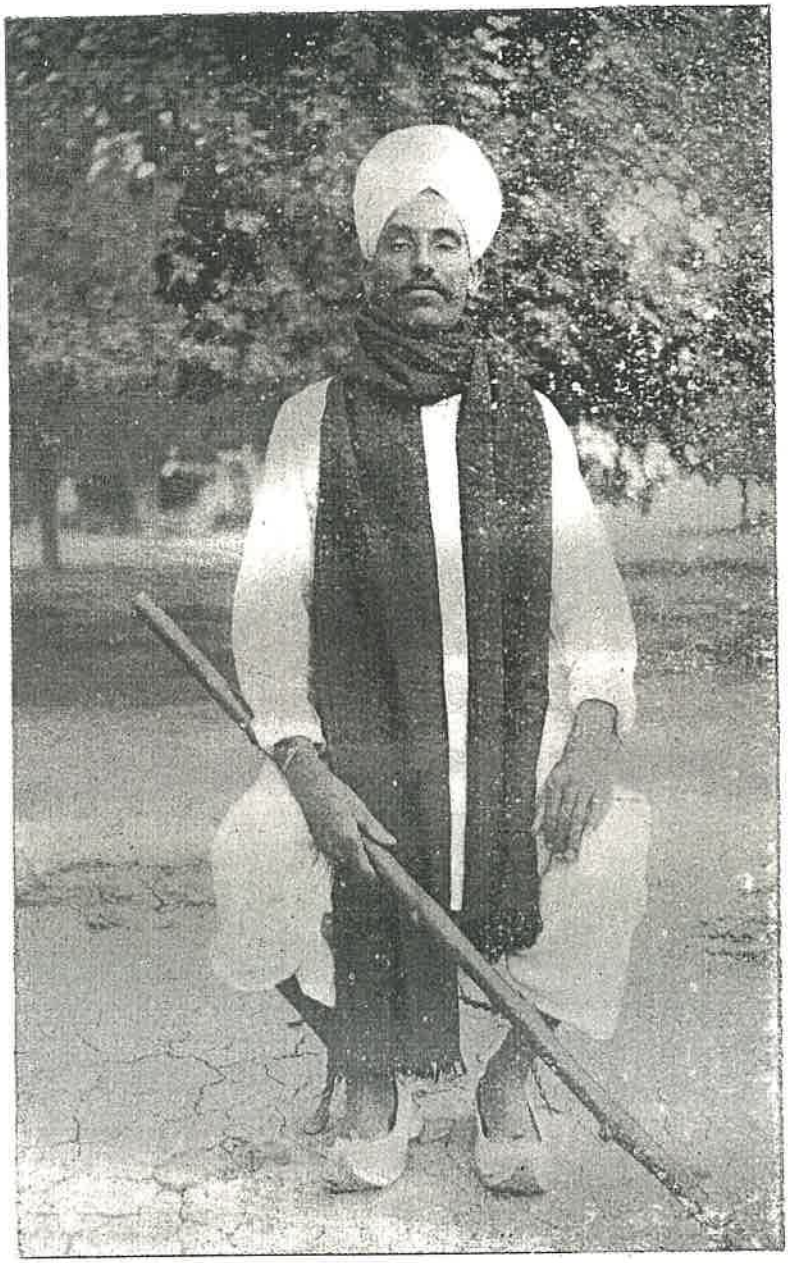

श्री भवानीदीन उमरहार बाबूपुर निवासी

मन्त्री कार्यकारिणी सभा।

(७) सातवां वृद्ध। जवाहिर भदूदूपुर से आकर कसिया में बसे। जवाहिर के तीन पुत्र-रामप्रसाद, लक्षी और छंगू हुये। लक्षी के दो पुत्र-पूसे और मूसे हुये।

(८) आठवां वृद्ध। बदरी भदूदूपुर से आकर बबई में बसे। बदरी के कोई नहीं।

(९) नवाँ वृद्ध। छबीले भदूदूपुर से आकर गुलाबपुर में बसे। छबीले के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (बाबू पुरिहा)

डमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। चिरंजू हुये। ये रवाईपुर में आकर बसे। चिरंजू के एक पुत्र-कालीदीन हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। जंगनाथ हुआ। जो कि बेहटी से आकर रवाईपुर में बसा।

(३) तीसरा वृद्ध। भगवान दीन हुये। यह बाबूपुर से आकर रवाईपुर में बसे। भगवानदीन के एक पुत्र-सीताराम हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। ठाकुर हुये। यह बाबूपुर से आकर कसिया में बसे। ठाकुर के दो पुत्र-मइका और छन्नूलाल हुये।

(५) पांचवां वृद्ध। माधौ हुये। यह बाबूपुर से आकर महमनपुर में बसे। माधौ के एक पुत्र—अज्ञात नाम हुआ।

(६) छठवां वृद्ध। बाले हुये। यह बाबूपुर में बसे। बाले के भाई लल्लू हुये। बाले के एक पुत्र—कुँवर हुआ। कुँवर के पांच पुत्र—गपरा, सोहन दनक, खरगा और जवाहर हुये। सोहन के तीन पुत्र-रामचन्द्र, लोला, छन्नू हुये। रामचन्द्र के तीन पुत्र-चुरवा, पचुवा और जंगनाथ हुये। चुरवा के एक पुत्र-इसूनंद हुआ। इसूनंद के एक पुत्र—गुलजारी हुआ। लोला के दो पुत्र गोकुल और रामप्रसाद हुये। गोकुल के दो पुत्र-देवीचरण और गंगाप्रसाद हुये। छन्नू के दो पुत्र—मथुरा और रामलाल हुये। लल्लू के तीन पुत्र-चिंता, चइना

और पंचा हुये। पिता के चार पुत्र-देवीदीन, बहादुर, दुरगा और ठाकुरदीन हुवे। देवीदीन के एक पुत्र-घसीटे हुआ। घसीटे के दो पुत्र-रामदयाल और पीताम्बर हुये। रामदयाल के एक पुत्र-मइका हुआ। मइका के एक पुत्र-महावीर हुआ। बहादुर के एक पुत्र-सुदीन हुआ। सुदीन के दो पुत्र-लछिमन और सहाय हुये। लछिमन के तीन पुत्र-महादेव, भवानीदीन और सीताराम हुये। महादेव के चार पुत्र-रामनारायण, लक्ष्मीनारायण, शिवनारायण और अज्ञात नाम हुये। रामनारायण के एक पुत्र-अज्ञात नाम। भवानीदीन के एक पुत्र रामबकस हुआ। सीताराम के दो पुत्र—हीरालाल, अज्ञात नाम हुये। पंचम के दो पुत्र-भगवानदीन और तिलोक हुये। तिलोक के दो पुत्र-गजोधर और गयाप्रसाद हुये। गजोधर के एक पुत्र- काशीप्रसाद हुआ। चइना के तीन पुत्र- नन्दा, धरमू और मोहन हुये। धरमू के दो पुत्र- आसादीन और गोकुल हुये। गोकुल के तीन पुत्र- महावीर, गजोधर और बुन्दीलाल हुये। महावीर के एक पुत्र- अज्ञात नाम हुआ।

(७) सातवाँ बृद्ध। दुरजा और अगना दो भाई हुये यह जाकर बाबूपुर में बसे। दुरजा के एक पुत्र—सलूहा, हुवा। सलुहा के दो पुत्र-भगोले और चरण, हुये। आँगन के एक पुत्र-माखन, हुवा। माँखन के दो पुत्र—ठाकुर और छेदू, हुवा। छेदू के एक पुत्र-नारायण हुआ। नारायण के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा।

(८) आठवाँ बृद्ध। फकीरे और पूसू दो भाई हुये। यह बाबूपुर से जाकर बेहटी में बसे। फकीरे के एक पुत्र-छेदू, हुवा। छेदू के दो पुत्र—हनुमान और भदई, हुये। हनुमान के दो पुत्र—रामनाथ, और बेइजू, हुये। भदई के दो पुत्र-बदलू, और अज्ञातनाम हुये। पूसू के एक पुत्र-गोकुल हुआ। गोकुल के एक पुत्र-रघुवर, हुवा। रघुवर के एक पुत्र—जगंनाथ, हुवा जगंनाथ के एक पुत्र-मोतीलाल हुवा।

(९) नवाँ बृद्ध। भूरे बाबूपुर से जाकर बेहटी में बसे। भूरे के दो पुत्र—इसुरी, और सुक्खू, हुये। इसुरी के एक पुत्र-फल्लू, हुवा फल्लू के दो पुत्र-भैरम, और अज्ञात नाम हुये

गोत्र उपमन्यु परम्परा गत (भगौना पुरिहा)

उमरहार करमोबंशान्तर्गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध । छेदू भये । छेदू के एक पुत्र—दयालु, । दयालु के दो पुत्र—मन्नी, राजा, । मन्नी के दो पुत्र-शिवराम, द्वारिका । राजा के दो पुत्र लाल जी अज्ञात नाम ।

(२) दूसरा वृद्ध । रामप्रसाद हुए । रामप्रसाद के एक पुत्र-शंकर, भये । शंकर के दो पुत्र-केशव, धन्नू हुये । केशवके एक पुत्र —तुलसी हुये । तुलसी के एक पुत्र —नाम अज्ञात हुये । धन्नू के एक पुत्र—रामलाल, हुआ । रामलाल के एक पुत्र महावीर हुआ। यह लोग ग्राम खजुरिया में बसे ।

(३) तीसरा वृद्ध । गुलजारी यह मउहा खेरे में बसा ।

(४) चौथा वृद्ध । बदलू हुये । बदलू के एक पुत्र-मूसे हुआ । यह लोग गुलावपुर में बसे ।

(५) पांचवां वृद्ध । कामता हुये । कमता के तीन पुत्र-मन्नू,खेरई, बिपाती, हुये बिपाती के तीन पुत्र-रामदीन, सुदीन, लछिमन, हुये ॥ यह खाई पुर में आकर बसे ।

(६) छठवां वृद्ध । बेचू हुये । बेचू के दो पुत्र—निहचन्द, कल्ल, हुये कल्लू के एक पुत्र-छेदालाल, हुआ । छेदालाल के दो पुत्र—वंशी, सीताराम, हुये । यह खानपुर में बस ।

(७) सातवां वृद्ध । तुलाराम हुये । तुलाराम के दो पुत्र-गंगा दीन, श्यामलाल, हुये । गङ्गादीन के दो पुत्र-गजोधर, माखन भये । श्यामलाल के दो पुत्र-बंशीधर, मुरलीधर, भये । बंशीधर के एक पुत्र—सीताराम, भया । यह लोग छेदिया दरिया पुर में बसे ।

(८) आठवां वृद्ध । सबसुख भये । सबसुख के दो पुत्र—जवाहिर, अड़ारू, हुये । जवाहिर के तीन पुत्र—लोधा, महादेव, शिवनाराण, हुये । लोधा के एक पुत्र-तोंदे हुआ । शिवनारायणके एक पुत्र-छोटा हुआ । यह लोग बिलारी में बसे ।

(९) नवां वृद्ध । बदलू भये । बदलू के दो पुत्र-तुलवा, दैला भये । दैला के एक पुत्र-भरोसा हुआ । भरोसा के चार पुत्र-चेला गयाप्रसाद शंकर, नाम अज्ञात भये . यह लोग बिलारी में बसे ।

(१०) दसवां वृद्ध। बछल हुये। यह भगौनापुर में बसे।

(११) ग्यारहवां वृद्ध। गनेश, भिखारी दो भाई हुये। गनेश के एक पुत्र- भगवानदीन हुआ। भगवानदीन के एक पुत्र- चन्द्रिका हुआ। यह लोग भगौनापुर में रहते हैं।

(१२) बारहवां वृद्ध। तुलीचन्द हुये। तुलीचन्द के एक पुत्र- मंगली हुआ। मंगली के एक पुत्र- रामबालक हुआ। यह लोग बेहटी में रहते हैं।

(१३) तेरहवां वृद्ध। भगवानदीन हुये। भगवानदीन के एक पुत्र मोहन हुआ। मोहन के एक पुत्र- झांडू हुआ। झांडू के चार पुत्र- महावीर, गहबर, चौबा, पंचा हुये। यह लोग नदीपार के भगौनापुर (नदीपार) बसे। महावीर के एक पुत्र- पराग हुआ। पराग के दो पुत्र- लाल जी, शिवप्रसाद हुये। गहबर के एक पुत्र—सुखलाल हुआ। सुखलाल के एक पुत्र—रामरतन हुआ। चौबा के दो पुत्र—देवीदयाल देवीचरण भये। देवीदयाल के दो पुत्र कन्हैयालाल, जगन्नाथ हुये। पन्चा के दो पुत्र—गयाप्रसाद, चम्मू हुये। गया-प्रसाद के तीन पुत्र—रघुनाथ, रामशंकर, दयाशंकर हुये।

(१४) चौदहवां वृद्ध। धानू हुये। धानू के चार पुत्र—जवाहिर, हीरा धीरा, माखन हुये। हीरा के एक पुत्र—गयादीन हुआ। गयादीन के एक पुत्र हनूमान हुआ। हनूमान के दो पुत्र—पन्नू, नाम अज्ञात हुये। धीरा के एक पुत्र कल्लू हुआ। कल्लू के चार पुत्र—भेदू, शिवरतन, रघुनन्द, चौथे का नाम अज्ञात हुये। माखन के दो पुत्र—भिखारी, सेफला हुये। भिखारी के एक पुत्र रिग्गू हुआ। सेफला के एक पुत्र—रामबेला हुआ। रामबेला के एक पुत्र शिवबकस हुआ। यह भगौनापुर (नदीपार) रहते हैं।

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध। चौबे फिरोजपुर में बसे। चौबे के दो पुत्र श्यामलाल और रामबेला हुये।

गोत्र उपमन्यु परम्परा गत (कौल्हुवहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। गङ्गादीन हुये। यह इटारी में बसे। गङ्गादीन के दो पुत्र—दुर्गा, सुक्खा, हुये। यह दुर्गापुर में बसे। सुक्खा के दो पुत्र—गङ्गा, मन्ना, हुये। मन्ना के एक पुत्र—मेवालाल हुवा।

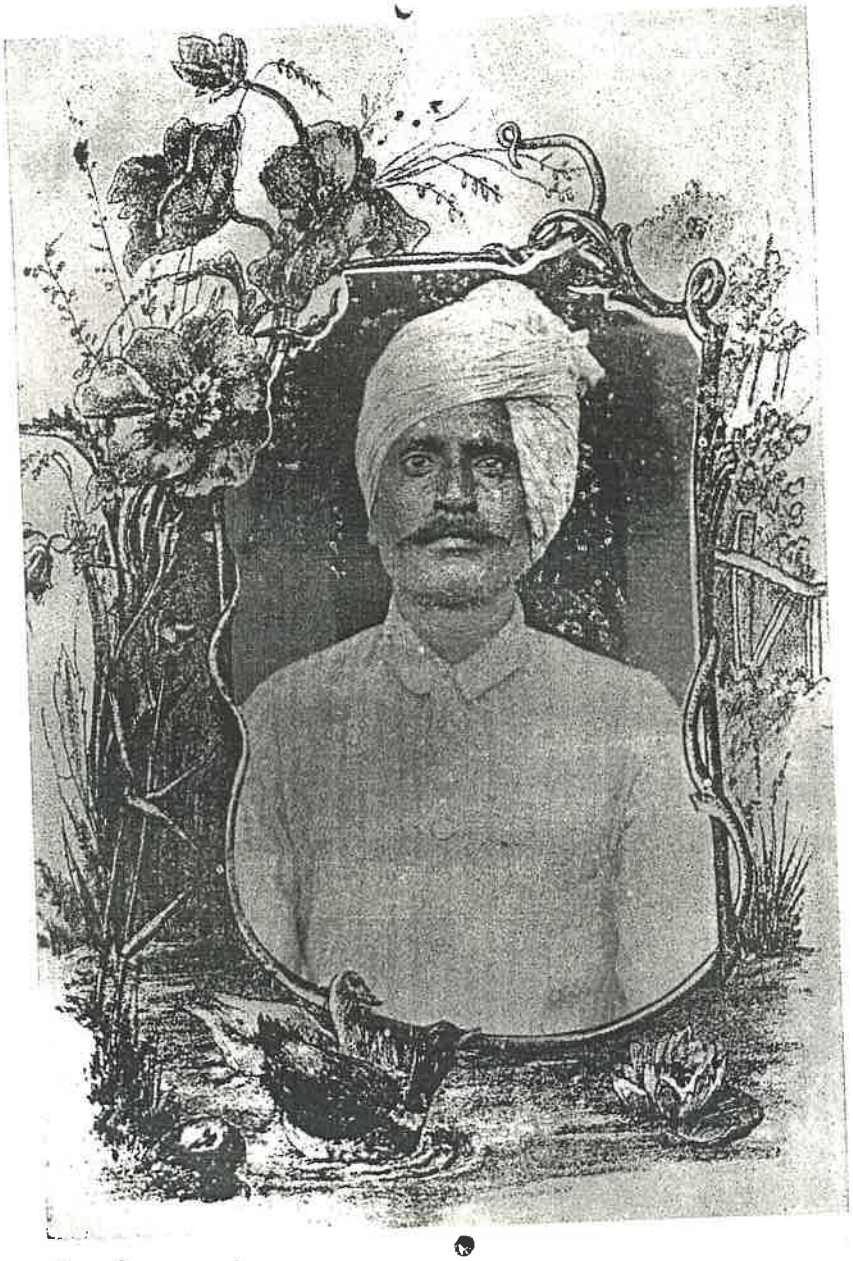

श्री भगवानदीन उमरहार रामपुर निवासी

मन्त्री उमरहार वंशोद्धारक महासभा।

(२) दूसरा वृद्ध । पूलू भये । यह इटरां में बसे । पूलू के तीन पुत्र । शम्भू, बद्लू, रामप्रसाद, हुये बद्लू के एक पुत्र-गोबरा हुवा ।

(३) तीसरा वृद्ध । सावलां भये । यह इटरां में बसे । सांवल के दो पुत्र-गोकुल, मधू, हुये । गोकुल के एक पुत्र—सत्तालुल, हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । नगेल भये । यह इटरां में बसे । नगेल के दो पुत्र चतुरी, पूरन, हुये । पूरन के दो पुत्र-कतारा, बुद्धू भये । कतारा के एक पुत्र-अज्ञात नाम हुये । बुद्धू के पांच पुत्र-खुशाली, बैजन, तीन के नाम अज्ञात हुय । नगेल के भाई बदली के तीन पुत्र-कुड़हा, रामचरण बिगू, हुये ।

(५) पांचवां वृद्ध । बेनी भये । यह बंगला में बसे । बेनी के एक पुत्र बोड़े हुआ । बोड़े के एक पुत्र-ठाकुरदीन, भया । ठाकुर के एक पुत्र-रामलाल हुवा ।

(६) छठवां वृद्ध । तिलोक हुये । यह बंगला में बसे । तिलोक के तीन पुत्र- मोहन, चतुरा, महंगू हुये ।

(७) सातवां वृद्ध । गोकुल चिहुलपुर में बसे । गोकुल के एक पुत्र सुखलाल हुवा ।

गोत्र कश्यप परम्परागत (औरहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । खरगा हुआ । खरगा के एक पुत्र-शम्भू हुआ शम्भू के चार पुत्र—चेला, छेदा, छोटा, रामचरण हुये । चेला के दो पुत्र-गयादीन, गङ्गाप्रसाद हुये । छेदा के एक पुत्र-सुदीन हुआ । रामचरण के तीन पुत्र जियालाल, देवीप्रसाद, चिनगू हुये यह बाबूपुर में बसे ।

(२) दूसरा वृद्ध । मोहन हुआ । यह बाबूपुर में आकर बसे । मोहन के एक पुत्र-सुक्खू हुआ । सुक्खू के दो पुत्र—गङ्गाचरण, बाबूलाल हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । बाले हुये । बाले के भाई गङ्गू, सुदीन, पञ्चम, बरियार हुये । यह कुरमी रामपुर में आकर बसे । बरियार के एक पुत्र-गनेश हुवा गनेश के एक पुत्र-भिखारी हुआ । भिखारी के एक पुत्र-रामआसरे हुआ । पंचम के दो पुत्र—मुक्ता, उमराव हुये । मुक्ता के दो पुत्र—जगन्नाथ, माखन हुये । जगन्नाथ के चार पुत्र-भगवानदीन, रामदीन, गोपाल, सुखलाल हुये ।

भगवानदीन के दो पुत्र-राजाराम, रामरतन हुये। माखन के तीन पुत्र-दुर्गा-प्रसाद, शिवदयाल, रामदयाल हुये। दुर्गाप्रसाद के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ

(४) चौथा वृद्ध। चमरू भये। यह कुर्मी रामपुर में जाकर बसे। चमरू के तीन पुत्र-छक्कीलाल, मुख्यादीन, अंगनू हुये। छक्कीलाल के दो पुत्र छोटा, बम्गड़ हुये।

(५) पांचवां वृद्ध। भदई हुये। यह कुर्मी रामपुर में जाकर बसे। भदई के दो पुत्र—कल्लू, शम्भू हुये।

(६) छठवां वृद्ध। जगन्नाथ हुये। यह सठिगवां में जाकर बसे। जगन्नाथ के एक पुत्र—गोपाल हुआ।

(७) सातवां वृद्ध। पंचम हुये। यह अज्ञातपुर में जाकर बसे। पंचम के तीन पुत्र-लछिमन, रघुवर, दुक्खी हुये। रघुवर के एक पुत्र—पराग हुआ।

(८) आठवां वृद्ध। शिवदीन हुये। यह लखनीपुर में जाकर बसे। शिवदीन के दो पुत्र—भिखारी, शिवगुलाम हुये। भिखारी के दो पुत्र-फतुवा, बुद्धा हुये। फतुवा के एक पुत्र-झींगुर हुआ। शिवगुलाम के पांच पुत्र-दल्लू, निहाल, लछिमन, भदई, सदई हुये। दल्लू के एक पुत्र- छेदालाल हुआ। निहाल के दो पुत्र—गुलजारी, बिन्दा हुये। ये दोनों पतित होगये। भदई के तीन पुत्र—कल्लू, शिववालक, जगन्नाथ हुये। कल्लू के एक पुत्र-बिहारी हुआ।

(९) नवां वृद्ध। गयादीन हुये। यह लखनो पुर जाकर बसे। गयादीन के दो पुत्र- बैलान, गोसाई, हुये। बैलान के एक पुत्र-भारत, हुवा। गोसाई खज्जात पुर चला गया

(१०) दसवां वृद्ध। मनियां हुये। यह धमना में जाकरव से। मनियां के तीन पुत्र—मोहन, मातादीन, देवादीन, हुये। मोहन के एक पुत्र—भगवान-दीन हुआ। भगवानदीन के तीन पुत्र-शिवरतन, देवीचरण, मनोहर हुये। शिवरतन के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा।

(११) ग्यारवां वृद्ध। भदई हुये यह डेहरिया में जाकर बसे। भदई के भई कुबेर हुये। भदई के दो पुत्र-नारायण, घासी, हुये नारायण के चार पुत्र-दुर्गा, पुद्दा, गिल्लू, बचनू, हुये। दुर्गा के एक पुत्र-मोगा हुआ। मोगा के दो पुत्र-रामदयाल, रघुवर, हुये कुबेर के एक पुत्र-भगवानदीन हुवा।

भगवानदीन के दो पुत्र -छेरा, चन्ना, हुये। छेरा के चार पुत्र-ठाकुरदीन, चोखे, नोखे, चौबे हुये। चोखे के एक पुत्र-जगदेव, हुवा। चन्ना के एक पुत्र-फकीरे, हुवा।

(१२) बारवां वृद्ध। भिक्खन चिपरा दो भाई हुये। भिक्खन के एक पुत्र -बाबुल, हुवा। यह याम अंगना खेरे में जाकर बसे। चिपरा के एक पुत्र—कालिका, हुवा। कालिका के एक पुत्र-फगुना हुवा। जो बकिया पुर में जाकर बसा।

(१३) तेरहवां वृद्ध। धीरज हुये। यह बेहटी में जाकर बसे। धीरज के एक पुत्र-बैलन, हुवा। बैलन के दो पुत्र-लछिमन, रामचेला हुये। लछिमन के एक पुत्र-गुङ्गा, हुवा। गुङ्गा के एक पुत्र-पूसू हुवा।

(१४) चौदवां वृद्ध। दुर्जन हुये। यह मदिहा खेरा में जाकर बसे। दुर्जन के दो पुत्र—जवाहिर, हीरा हुये। जवाहिर के एक पुत्र-बदल, हुवा। बदल के दो पुत्र—पराग, मान हुये। हीरा के तीन पुत्र—झोंगुर, दनकऊ, रेकखन हुये। दनकऊ के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा। भगवानदीन के दो पुत्र—शिवराम, पतरऊ, हुये। रेकखन के एक पुत्र-पन्थू हुवा। पन्थू के एक पुत्र—भगवतप्रसाद हुवा।

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध। दनकू हुये। यह रुसिया में जाकर बसे। दनकू के एक पुत्र-चूरामणि हुवा। चूरामणि के दो पुत्र-पन्थनाथ, मंगली, हुये। मंगली के तीन पुत्र-महाबोर, दुर्गा, जगन्नाथ, हुये। दुर्गा के एक पुत्र—कन्हैयालाल, हुवा)

(१६) सोलहवां वृद्ध। शम्भू हुये। यह रुसिया में जाकर बसे। इनके भाई का नाम रामदीन था रामदीन के एक पुत्र-माधव हुवा। माधव के एक पुत्र-दीनानाथ हुवा। दीनानाथ के दो पुत्र-मन्ना, रामदीन हुये।

(१७) सत्रहवां वृद्ध। गंगादीन भवानीदीन दो भाई हुये। यह रुसिया में जाकर बसे। गंगादीन के तीन पुत्र-गयादीन, लछिमन, बच्चो हुये। लछिमन के तीन पुत्र-शिवराम, लल्लू, रामदयाल हुये। शिवराम भलिगवां चला गया। बच्चो के एक पुत्र—चेला, हुवा।

(१८) अठारहवां वृद्ध। पन्नू, ठाकुर दो भाई हुये। यह रुसिया में आकर बसे। पन्नू के दो पुत्र—दुलीचन्द, वीरबल हुये।

(१९) उन्नीसवां वृद्ध। फदाली हुये। यह रुसिया में जाकर बसे। फदाली के दो पुत्र-महादेव, मंगली हुये। महादेव सठिगवां चला गया। मंगली के एक पुत्र—शिवप्रसाद हुवा। शिवप्रसाद के एक पुत्र –नाम अज्ञात हुवा।

(२०) बीसवां वृद्ध। ओरी हुये। यह मिर्जापुर में जाकर बसे। ओरी के एक पुत्र—ईश्वरी हुवा। ईश्वरी के तीन पुत्र-चमरू, कल्लू, केवल हुये। चमरू के तीन पुत्र-जगन्नाथ, बाबूराम, रामनाथ, हुये। कल्लू के दो पुत्र—मेवालाल, देवीदयाल, हुये। केवल के दो पुत्र—देवीचरण, रघुनाथ, हुये।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध। मोहन हुये। यह बिलारी में जाकर बसे। मोहन के चार पुत्र-छेदू,टूनू, लछिमन, बहादुर हुये। छेदू के एक पुत्र—कोदी, हुवा कोदी के एक पुत्र-श्यामलाल, हुवा टूनू के दो पुत्र –तिलोक, बच्ची हुये। लछिमन के एक पुत्र—बदला हुवा। बदला के चार पुत्र— रामलाल, किशोर, चौबा पन्ना हुये। बहादुर के दो पुत्र—बिन्दा, गजोधर, हुये। बिन्दा के तीन पुत्र—रामनाथ, शिवराम, मोतीलाल हुये। गजोधर के तीन पुत्र—रामाधीन, रामधार, रामसहाय हुये।

(२२) बाईसवां वृद्ध। भेरम हुये। यह बिलारी में जाकर बसे। भैरम के एक पुत्र—पूसू हुवा। पूसू के तीन पुत्र-मइका, मन्नी, और जगधारी हुये। मइका के दो पुत्र—बोधा, सुखनन्दन हुये। मन्नी के दो पुत्र—राजाराम, और मुराली हुये। जगधारी के तीन पुत्र—गोपाल, जवाहिर, और हीरा, हुये।

गोत्र वत्स परम्परागत (गड़वहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत वत्स गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। कल्लू हुये। यह बाबूपुर में जाकर बसे। कल्लू के एक पुत्र—बिन्दा हुआ। बिन्दा के दो पुत्र—कालीदीन, छोटा हुये। छोटा के एक पुत्र—मेडू हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। मोहन हुआ। यह गड़वा में बसे हैं। मोहन के तीन पुत्र—दनक, सुक्खन, दूबरि हुये। दनक के एक पुत्र—ईश्वरी हुये।

ईश्वरी के दो पुत्र—भिखारी, रामलाल हुये। भिखारी के दो पुत्र—देवीदयाल, गयाप्रसाद हुये। रामलाल के दो पुत्र—काशीप्रसाद, दूसरे का नाम अज्ञात हुये। सुक्खन के तीन पुत्र—नारायण, घासिल, रामसेवक हुये। नारायण के दो पुत्र—बदल, रामप्रसाद भये। घासिल के चार पुत्र—रामबकस, राजाराम, बाबूलाल, महाराज हुये। रामसेवक के दो पुत्र-छेदू, महाबीर हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। माखन हुये। यह गड़वा में बसे हैं। माखन के दो पुत्र—चिरंजू, कुबर हुये। चिरंजू के एक पुत्र—देवनन्द हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। गोबरा हुये। यह गड़वा में बसे हैं। गोब्बर के दो पुत्र—सदियां, भीखू हुये। सदियाँ के एक पुत्र -टीकाराम हुआ। टीकाराम के तीन पुत्र—रामचरण, जबर, मगली भये। रामचरण के तीन पुत्र-दयाराम, भैरम, परम हुये। जबर के एक पुत्र—गयादीन हुआ। भीखू के एक पुत्र-बुद्धू हुआ।

(५) पाँचवां वृद्ध। भोजे हुये। यह गड़वा में बसे हैं भोजे के दो पुत्र सुदीन, किशोर हुये। सुदीन के तीन पुत्र—राजाराम, लालाराम, छोटेलाल हुये। राजाराम के एक पुत्र-हजारी हुआ। हजारी के तीन पुत्र—कालीचरण, मन्नू, रामप्रसाद हुये। कालीचरण के एक पुत्र-नन्दा हुआ। मन्नू के दो पुत्र-शिवराज सुदयाल हुये। छोटालाल के पांच पुत्र-गजोधर, दुलीचन्द, गंगाप्रसाद, बिन्द्राबन बन्शीधर हुये। गंगाप्रसाद के दो पुत्र-मैका, कन्हैयालाल हुये।

(६) छठवां वृद्ध। रणजीत गड़वा से जाकर पचखोरा में बसे। रणजीत के दो पुत्र-मैका और जालिम हुये। मैका के एक पुत्र—नाम अज्ञात। जालिम के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

गोत्र पराशर परम्परागत (खेड़िहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत पराशर गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। सोनवा भया। यह बाबूपुर में जाकर बसा। सोनवा के दो पुत्र—बावन, मंगली हुये। बावन के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। मंगली के एक पुत्र-महाबीर हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। झांडू हुये। यह रहमतपुर में जाकर बसा। झांडू के दो पुत्र-बलदेव, गयाप्रसाद हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। कंधई, थान दो भाई हुये। ये कुर्मी रामपुर में जाकर बसे। कंधई के एक पुत्र—सांवल हुआ। सांवल के दो पुत्र—मन्नू, पराग हुये।

(४) चौथा वृद्ध। छेदू, भोले दो भाई हुये। यह कुरमी रामपुर में जाकर बसे। छेदू के दो पुत्र-खयाली, रामचरण हुये। खयाली के चार पुत्र-लोटन जगन्नाथ, युगराज, पहली हुये। लोटन के दो पुत्र-कन्चन दूसरे का नाम अज्ञात हुआ। जो सठिगवां चले गये। युगराज के चार पुत्र खुशाली, गुलजारी, हजारी, मोती हुये। हजारी के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये। रामचरण के एक पुत्र-भिखारी, जो कि पतित होगया। पहली के एक पुत्र साधू हुआ। साधू के दो पुत्र-नाम दोनों के अज्ञात हुये।

(५) पांचवां वृद्ध। ब्रम्हा हुये। यह मकन्दीपुर में जाकर बसे। ब्रम्हा के तीन पुत्र-भिखारी, गोबरा, हुकमा हुये। हुकुम के दो पुत्र-लेखा, बदलू हुये।

(६) छठवां वृद्ध। लोटन हुये। यह सठिगवाँ में जाकर बसे। लोटन के दो पुत्र-कंचन, पीतन हुये।

(७) सातवां वृद्ध। गोबरे, भवन दो भाई भये। यह कण्डीपुर में जाकर बसे। भवन के दो पुत्र-गंगवा, मन्ना हुये।

(८) आठवाँ वृद्ध। परम, पूसू, पूरन, और अज्ञात नाम, चार भाई हुये ये दिलावलपुर में जाकर बसे। परम के तीन पुत्र—थानी, रखानी, मथुरा हुये। थानी के दो पुत्र—दैला, दुबरि हुये। रखानी के दो पुत्र-छेदू, पागल हुये। मथुरा के दो पुत्र—रामचरण, बलदेव हुये। बलदेव के दो पुत्र-जगन्नाथ, चेला हुये। जगन्नाथ के दो पुत्र—मोहन, सोहन हुये।

(९) नवां वृद्ध। कल्लू पूरन दो भाई हुये। यह दिलावलपुर में जाकर बसे। कल्लू के दो पुत्र-इसुरी, छन्गू हुये। छन्गू के दो पुत्र-रामप्रसाद, रामा हुये। रामप्रसाद के दो पुत्र-महादेव, मन्नू हुये। महादेव के पांच पुत्र-बंशी, रामलाल, श्यामलाल, मोहनलाल, सोहनलाल हुये। मन्नू के दो पुत्र-बेणीमाधव सुदामा हुये। रामा के एक पुत्र-भगवानदीन, हुवा। पूरन के दो पुत्र-भीम, खुमान। भीम के एक पुत्र—छेदू, हुवा। छेदू के एक पुत्र—भरोसा हुवा।

(१०) दसवां वृद्ध । पञ्चम हुये । यह सुल्तानगढ़ में जाकर बसे । पञ्चम के तीन पुत्र-बाउर, दूबरि, बलुवा हुये । बाउर के एक पुत्र-बद्रीप्रसाद, हुवा । बद्री के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ ।

(११) ग्यारहवां वृद्ध । बहादुर । हुये । यह भगौनापुर (सलमपुर) में जाकर बसे । बहादुर के दो पुत्र-तुलसी, भूरा, हुये । तुलसी के एक पुत्र-हजारी हुआ । हजारी के दो पुत्र-रामदत्त जगन्नाथ हुये । भूरा के एक पुत्र-लछिमन हुआ

(१२) बारहवां वृद्ध । घासी हुये यह झुरहाखेरे में जाकर बसे । घासी के एक पुत्र—दुर्गा हुआ । दुर्गा के एक पुत्र-बंशी हुआ । बंशी के चार पुत्र गयाप्रसाद, रामप्रसाद, शिवप्रसाद, सीताराम हुये । गयाप्रसाद पतित होगया ।

(१३) तेरहवां वृद्ध । लल्लू हुये । यह झुरहाखेरे में जाकर बसे । लल्लू के तीन पुत्र-गोकुल, मोहन, भइयाराम हुये । गोकुल के दो पुत्र-भगवानदीन, कालीचरण हुये । भगवानदीन के दो पुत्र—शिवप्रसाद, अयोध्याप्रसाद हुये । मोहन के एक पुत्र देवीदयाल हुआ । भइयाराम के एक पुत्र—राजाराम हुआ । यह धमना में रहता है । राजा के दो पुत्र -रामरतन, और दूसरे का नाम अज्ञात हुये ।

(१४) चौदहवां वृद्ध । दुर्गा हुये यह रिवाड़ी में रहते हैं । दुर्गा के एक पुत्र-गनेश हुआ । गनेश के तीन पुत्र-भाऊ, लछिमन, दनकू हुये । लछिमन के दो पुत्र-बुद्धू, पराग हुये । बुद्धू के एक पुत्र—गोपाल हुआ । दनकू के एक पुत्र-लल्लू हुआ । लल्लू के एक पुत्र-रामदयाल हुआ ।

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध । दूबरि हुये । यह रेवाड़ी में रहते हैं । दूबरि के एक पुत्र-देवीदीन, हुवा । देवीदीन के चार पुत्र-गयादीन, जगन्नाथ, रामनाथ, लौंदा हुये गयादीन के एक पुत्र-दल्लू हुवा । दल्लू के चार पुत्र—डिरी, रघुनाथ रामेश्वर, जागेश्वर हुये । जगन्नाथ के एक पुत्र-जोधा हुवा । जोधा के दो पुत्र-मुख्यादीन बंशीधर हुये । रामनाथ के दो पुत्र- रामलाल, रंगीलाल, हुये ।

(१६) सोलहवां वृद्ध । बैजू सुदीन लल्लू तीन भाई हुये । यह रिवाड़ी में रहते हैं । सुदान के दो पुत्र -कुज्जा, मूसे, हुये । मूसे के एक पुत्र—धूनी हुवा । धूनी के दो पुत्र--लाला, मन्ना हुये ।

(१७) सत्रहवां वृद्ध । मुन्नी चतुरी दो भाई हुये ये रिवाड़ी में रहते हैं । मुन्नी के दो पुत्र—जगन्नाथ, मन्नू हुये । जगन्नाथ के चार पुत्र—

जेठू, भदई गङ्गादीन दुलीचन्द हुये। जेठू के दो पुत्र-लल्लू, हजारी हुये। लल्लू के एक पुत्र—रामपाल हुवा। भदई के एक पुत्र—बलदेव, हुवा। गयादीन के दो पुत्र-बनवारी, गिरधारी हुये। मन्नू के दो पुत्र—बदलू रघुवर हुये। बदलू के एक पुत्र-रामरतन हुवा। रामरतन के दो पुत्र—गंगाप्रसाद दूसरे का नाम अज्ञात हुये। चतुरी के एक पुत्र—ठाकुर, हुवा। ठाकुर के एक पुत्र-मनई हुवा। मनई के दो पुत्र-रामप्रसाद, देवीदयाल हुये। रामप्रसाद के एक पुत्र-शिवदयाल हुवा।

(१८) अठारहवां वृद्ध। चत्ता हुवा। यह रेवाड़ी में बसा। चत्ता के एक पुत्र—रामगुलाम हुवा। रामगुलाम के एक पुत्र-पुरबीदीन हुवा। पुरबीदीन, के दो पुत्र-बाबूलाल, छोटेलाल हुये।

(१६) उन्नीसवाँ वृद्ध। देवीदीन, भीखू दो भाई हुये। भीखू के एक पुत्र- लाला हुआ। लाला के एक पुत्र- बबुली हुआ। बबुली के दो पुत्र-भगवानदीन रघुनाथ हुये। भगवानदीन के एक पुत्र- शिवरतन हुआ। रघुनाथ के पांच पुत्र- बैजनाथ, जगन्नाथ, रज्जू, मनबोधन, देवीचरण हुये।

(२०) बीसवां वृद्ध। खयाली हुये। यह रुसिया में जाकर बसे। खयाली के एक पुत्र- भूषण हुआ। भूषण के एक पुत्र- फल्लू हुआ। फल्लु के दो पुत्र- जगन्नाथ, सूरजदीन हुये।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध। मंगली हुये। यह बोधीपुर में जाकर बसे। मंगली के दो पुत्र- मैकू, छोटा हुये। मैकू के दो पुत्र- बिदेशी, खुशाली हुये।

(२२) बाइसवाँ वृद्ध। लच्छी टरुवापुर से जाकर बिघनापुर में बसे। लच्छी के दो पुत्र—गज्जू और तुलाराम हुये। गज्जू के चार पुत्र—धुन्नू, भोला, मनियां और द्वारिका प्रसाद हुये। धन्नू ममनापुर चला गया। धन्नू के एक पुत्र-तिलोका हुआ। तिलोका के एक पुत्र—गंगाराम हुआ।

गोत्र उपमन्यु पम्पगगत (फ़िरोजपुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। बल्दी भये। यह मउहाखेरे में जाकर बसे। बल्दी के एक पुत्र—मैका हुआ। मैका के एक पुत्र—फगुना हुआ। फगुना के एक पुत्र-चेला हुआ। चेला के तीन पुत्र-सीताराम, रामधनी, दीनदयाल हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। गंगादीन हुये। यह मकन्दीपुर में जाकर बसे। गंगादीन के एक पुत्र—गिरधारी हुआ। गिरधारी के तीन पुत्र-मन्सा, दुबरा, दुर्गा हुये। दुबरा के तीन पुत्र—गोकुल, मथुरा, दलीप हुये। मथुरा के एक पुत्र चौबा हुआ। दलीप के एक पुत्र-तेजा हुआ। दुर्गा के तीन पुत्र-भदई, झांडू, जोधा हुये भदई के एक पुत्र-भोला हुआ जो कि मायापुर चला गया। जोधा के तीन पुत्र—गुलजारी, कामता, पंचा हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। घनसूर हुये। फिरोजपुर में जाकर बसे। घनसूर के दो पुत्र—निधवा, कल्लू हुये। निधवा के दो पुत्र—छेदालाल, भगवानदीन हुये। कल्लू के दो पुत्र-रणजीत, चन्दी हुये। चन्दी के चार पुत्र—गोकुल, वृन्दाबन, इश्वरी, पन्ना हुये। गोकुल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। वृन्दावन के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ।

(४) चौथा वृद्ध भिखारी हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। भिखारी के दो पुत्र-रुस्तम, डोड़िया हुये।

(५) पांचवां वृद्ध। होमनाथ, बहादुर, लछिपन तीन भाई हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। लछिपन के तीन पुत्र—मेवालाल, जगन्नाथ, बैजनाथ हुये। मेवालाल के एक पुत्र- हीरालाल हुआ।

(६) छटा वृद्ध। दालचन्द हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। दालचन्द के दो पुत्र-महावीर, दूसरे का नाम अज्ञात हुये।

(७) सातवां वृद्ध। पन्नू हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। पन्नू के एक पुत्र—दौलत हुआ। दौलत के तीन पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

(८) आठवां वृद्ध। बोड़े हुये। यह फिरोजपुर में बसे हैं। बोड़े के एक पुत्र-भउवा हुआ। भउवा के एक पुत्र-दुलीचन्द हुआ।

(९) नवाँ वृद्ध। जैसुख और ठाकुरदीन हुये। यह ममनापुर में जाकर बसे। जयसुख के तीन पुत्र-तोंदा, भोंदा, तुला हुये। तोंदा के तीन पुत्र—गोकुल ज्ञानी, खलखु हुये। भोंदा के एक पुत्र-रामलाल, हुआ। रामलाल के एक पुत्र कालीचरण, हुवा।

गोत्र वत्स परम्परा गत (कनैरहा)

उमरहारकुरमी वंशान्तर गत वत्स गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । समाधान हुये। यह सीतापुर में जाकर बसे। समाधान के तीन पुत्र-कामता, मनई, दुलारे, हुये। मनई के दो पुत्र—बदलू, भवानीदीन, हुये। भवानीदीन के दो पुत्र—रामनाथ, सिद्धा हुये। दुलारे के दो पुत्र-रामसहाय, दुर्गा हुये। रामसहाय के तीन पुत्र-रामगोपाल, रामपाल, श्यामलाल, हुये। दुर्गा के एक पुत्र—छोटालाल हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। वैयजू कनैरा से जाकर यह रवापुर में बसे। वैजू के तीन पुत्र सहीद, दानदयाल, और ललुवा हुये।

गोत्र उपमन्यु परम्परा (इर्टरहा)

कुरमीवंशान्तर गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

१) प्रथम वृद्ध कल्ला हुये। यह सीतापुर में जाकर बसे कल्ला के दो पुत्र-भवानीदीन, मन्नी हुये। मन्नी के तीन पुत्र-चीफुरि, मथुरा, गोकुल, हुये। चिफुरी के एक पुत्र-शिवपाल, हुवा। गोकुल के दो पुत्र-रामआसरे, दूसरे का नामअज्ञात हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। भग्गल हुये। यह सीतापुर में बसे। भग्गल के तीन पुत्र—झंखरिया, महादेव, भवन हुये। झखरिया के एक पुत्र—बिहारी हुवा। बिहारी के दो पुत्र-मेड़ू, भगवानदीन हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। धनसिंह हुये। यह सीतापुर में जाकर बसे। धनसिंह के दो पुत्र-इसुरी, बदल हुये। इसुरी के तीन पुत्र—रामलाल, बलोपा, मन्नू हुये। रामलाल के दो पुत्र-भुन्नू, गजोधर हुये। भुन्नू के तीन पुत्र-बाबू, लाल, मेवालाल, सत्यनारायण हुये। गजोधर के दो पुत्र—बदरी, बैजनाथ हुये। बदरी के एक पुत्र—रामेश्वर हुआ। बदल के दो पुत्र-मइका, लल्लू हुये।

(४) चौथा वृद्ध। पूरन हुये। यह सीतापुर में जाकर बसे। पूरन के एक पुत्र-पेटटा हुआ। पेटटा के एक पुत्र-पूसू हुआ। पूसू के दो पुत्र-मोतीलाल, मोहन हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। मैकू हुये। यह कुरमी रामपुर में जाकर बसे मैकू के एक पुत्र—दौलत हुवा। दौलत के एक पुत्र-दीनदयालु, हुवा। दीनदयालु के एक पुत्र—रामलाल हुवा।

(६) छठा वृद्ध। मन्नीलाल हुवा। यह रबाईपुर में जाकर बसे। मन्नीलाल के एक पुत्र—शीतलप्रसाद हुवा। शीतलप्रसाद के दो पुत्र—रामप्रसाद श्यामलाल, हुये। रामप्रसाद के दो पुत्र—रंगीलाल, मेवालाल हुये।

(७) सातवाँ वृद्ध। मैकू अंगनू दो भाई हुये। यह इटार्रा में बसे हैं। मैकू के एक पुत्र—जियालाल, हुवा। जियालाल के दो पुत्र—बिहारीलाल, गंगादीन हुये। बिहारीलाल के एक पुत्र—चिरंजू हुवा। चिरंजू के तीन पुत्र नारायति, द्वारिका, देवनन्द हुये द्वारिका के एक पुत्र-सुखलाल, हुवा। देवनन्द के एक पुत्र—रामप्रसाद, हुवा। गंगादीन के दो पुत्र—मनियां रामसहाय, हुये। मनियां के तीन पुत्र—मनोहर, खुशाली, राजाराम, हुये। मनोहर के दो पुत्र बाबूलाल देवीचरण, हुये। राजाराम के एक पुत्र—नामअज्ञात हुवा। रामसहाय के तीन पुत्र-श्यामलाल, रामलाल, बाबूलाल, हुये। श्यामलाल के एक पुत्र शिवराम हुवा।

(८) आठवां वृद्ध। भुरयांदीन हुआ। यह इटर्रा में बसा है। भुरयांदीन के एक पुत्र-रामचेला हुआ। रामचेला के तीन पुत्र भगवानदीन, बलदेवप्रसाद, बदरी प्रसाद हुये। भगवान दीन के एक पुत्र-शिवप्रसाद हुआ। बदरीप्रसाद के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(९) नवां वृद्ध। दुरगाप्रसाद हुआ। यह इटर्रा में जाकर बसा। दुरगाप्रसाद के एक पुत्र-शीतलप्रसाद हुआ।

(१०) दसवां वृद्ध। आँगन हुये। यह इटर्रा में जाकर बसे। आँगन के एक पुत्र-तुलसी हुआ।

(११) ग्यारहां वृद्ध। मतई हुये। यह इटर्रा में रहते हैं। मतई के एक पुत्र—ठाकुरदीन हुआ। ठाकुरदीन के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(१२) बारहवां वृद्ध। भिखारी हुये। यह इटर्रा में बसे हैं। भिखारी के एक पुत्र—चौंधा हुआ। चौंधा के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(१३) तेरहवाँ वृद्ध। दुरगा हुये। यह कुन्दे रामपुर में जाकर बसे। दुरगा के तीन पुत्र-किदवा, टीकाराम, छोटालाल हुये।

(१४) चौदहवां वृद्ध। रणजीत हुये। यह गड़वा में जाकर बसे। रणजीत के दो पुत्र-ब्रम्हा, जालिम हुये। ब्रम्हा के दो पुत्र-देवीचरण, भदई हुये। जालिम के एक पुत्र-महावीर हुआ।

(१५) पन्द्रहवाँ वृद्ध। मोहन, हिमान दो भाई हुये। यह अम्बरपुर में बसे। मोहन के दो पुत्र-कल्लू, बालगोविन्द हुये। कल्लू के एक पुत्र-लछिमन हुआ। बालगोविंद के तीन पुत्र-मन्नी, थान, मंगली हुये। मन्नी के एक पुत्र गुलजारी हुआ। यह रामपुर चला गया। थान के तीन पुत्र—गजोधर लाल, तेजा, भदई हुये। गजोधर के एक पुत्र—रामनारायण हुआ। भदई के एक पुत्र—शिवरतनलाल हुआ।

(१६) सोलहवां वृद्ध। गोकुल हुये। यह आँवरखेर में जाकर बसे। गोकुल के तीन पुत्र-मइका, घासिल, बब्बन हुये।

(१७) सत्तरहवाँ वृद्ध। मनसुख हुये। यह आँवरखेर में रहते हैं। मनसुख के एक पुत्र—भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र—मन्नू हुआ। मन्नू के एक पुत्र—जवाहिरलाल हुआ।

(१८) अठारहवां वृद्ध। मन्नी, कुन्जा दो भाई हुये। यह फिरोजपुर में जाकर बसे। कुन्जा के चार पुत्र—बदली, भिखारी, कुड़हा, नाम अज्ञात हुये। भिखारी के एक पुत्र—छेदा हुआ। यह इटर्रा में रहते हैं। मन्नी के एक पुत्र—छगिर हुआ। छगिर के दो पुत्र—रम्भू, खुमान हुये। खुमान के एक पुत्र कन्हैयालाल हुआ।

(१९) उन्नीसवां वृद्ध। ईश्वरी हुये। यह भगौनापुर (सलेमपुर) में जाकर बसे। ईश्वरी के एक पुत्र—मन्नू हुआ। मन्नू के दो पुत्र-हनुमान प्रसाद, शिवप्रसाद हुये।

(२०) बीसवां वृद्ध। गुलजारी हुये। यह भगौनापुर में जाकर बसा है।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध। मदारी हुये। यह मदरी में जाकर बसे। मदारी के चार पुत्र—गंगादीन, शिवलाल, मनसुख, लालाराम हुये। शिवलाल के एक पुत्र—शिवचरण हुआ। शिवचरण के एक पुत्र-भिखारी हुआ। मनसुख के एक पुत्र—भवानीदीन हुआ। भवानीदीन के दो पुत्र—पुत्तू, दुरगा हुये। पुत्तू के एक पुत्र—कालीदीन हुआ। कालीदीन के एक पुत्र—मुरली हुआ। लालाराम के तीन पुत्र-भोला, झाऊ, झींगुर हुये। झाऊ के दो पुत्र—बदला, मन्नू हुये। मन्नू के एक पुत्र-प्रसादी हुआ।

(२२) बाईसवां वृद्ध। सुक्खन हुये। यह पारा में जाकर बसे। सुक्खन के दो पुत्र-छेदा, गोकुल हुये। छेदा के दो पुत्र-गोपाल, दुल्लू हुये। गोपाल के पांच पुत्र-मन्नू, दालचन्द, महांबीर, हनुमान, पंचा हुये। मन्नू के एक पुत्र-रंगीलाल हुआ।

(२३) तेईसवां वृद्ध। रामनाराण हुये। यह रेवाड़ी में जाकर बसे। रामनारायण के तीन पुत्र—महादेव, भरोसा, गुरई हुये। महादेव के दो पुत्र महावीर,भदई हुये। महावीर के तीन पुत्र-रामजीवन देवीचरण रामसेवक हुये। भदई के एक पुत्र—रामप्रसाद हुवा। भरोसा के दो पुत्र-रजुवा और खुशाली हुये। गुरई के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा। भगवानदीन के तीन पुत्र हीरा रामरतन रामेश्वर हुये।

(२४) चौबीसवां वृद्ध। बोड़े हुये। यह रिवाड़ी में जाकर बसे। बोड़े के दो पुत्र-दुरगा. मुड़ू हुये। दुरगा के एक पुत्र-बदरी हुवा।

(२५) पचीसवां वृद्ध। कुड़हा हुये। यह इटार्रा से आकर खानपुर में बसे। कुड़हा के एक पुत्र—राजाराम हुवा।

(२६) छब्बीसवां वृद्ध। हीरालाल यह खानपुर में जाकर बसे। हीरालाल के एक पुत्र—गेल्हू हुवा। गेल्हू के दो पुत्र-प्रसाद राजाराम हुये।

(२७) सत्ताईसवां वृद्ध। परमसुख हुये। यह मेंढ़ापाटो में जाकर बसे परमसुख के चार पुत्र—रामसहाय, साहबदीन, माधव साधव हुये। रामसहाय के एक पुत्र-रिग्गू हुये। रिग्गू के दो पुत्र—मथुरा, गोकुल हुये। मथुरा के एक पुत्र-महावीर हुये। साहबदीन के एक पुत्र—मोहनलाल हुआ। मोहनलाल के एक पुत्र—मुरलीधर हुआ। मुरलीधर के तीन पुत्र-रामसेवक, सीताराम, रामअधीन हुये। साधवराम के एक पुत्र-रामनारायण हुये।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (अमौलिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। गूलम हुये। यह सीतापुर में जाकर बसे। गूलम के चार पुत्र-तेजा, फगुना, भरोसा, उजागर हुये। भरोसा के एक पुत्र-रामनाथ हुआ। उजागर के चार पुत्र-द्वारिका, रामरतन, दो के नाम अज्ञात हुये।

(२) दूसरा वृद्ध । तेजा हुये । यह अमौली ही में रहते हैं । तेजा के एक पुत्र-लछिमन हुआ । लछिमन के तीन पुत्र-राजाराम, सीताराम, रामचरण हुये । यह सब पतित होगये ।

(३) तीसरा वृद्ध । छबीले हुये । यह अमौली में बसे हैं । छबीले के एक पुत्र-शंकर हुआ । शंकर के दो पुत्र—दोनों पतित होगये ।

(४) चौथा वृद्ध । कंधई हुआ । यह अमौली में बसा है । कंधई के तीन पुत्र-मेड़ू, बदलू, बल्ली हुये । बदलू के दो पुत्र—दोनों के नाम अज्ञात हुये

(५) पांचवां वृद्ध । बुधई हुये । यह अमौली से रवाईपुर चला गया । बुधई के दो पुत्र—दुर्गा, दनक हुये । दनक के दो पुत्र-राजाराम, दूसरे का नाम अज्ञात हुआ ।

(६) छठवां वृद्ध । जवाहिर, चिरंजू दो भाई भये । यह मेढ़ापाटी में जाकर बसे । चिरंजू के चार पुत्र-दुर्गा, मैका, दयाराम, जानकीप्रसाद हुये । दुर्गा धरमपुर चला गया । दुर्गा के दो पुत्र—बंशीराम, और रामगुलाम हुये ।

(७) सातवां वृद्ध । चतुरा हुये । यह डेहरिया में जाकर बसे । चतुरी के एक पुत्र-द्वारिका प्रसाद हुआ । द्वारिका के एक पुत्र-रामभजन भया ।

(८) आठवां वृद्ध । दम्मा हुआ । यह धिरजापुर में जाकर बसा । दम्मा के दो पुत्र-भिक्खा, सिक्खा हुये । सिक्खा के चार पुः—प्रथम नाम अज्ञात, लछिमन, हुकुम, मथुरा हुये ।

(९) नवां वृद्ध । इसुरी भये । यह मदिहाखेरे में जाकर बसे । इसुरी के एक पुत्र- रामनाथ हुआ । यह पतित होगया ।

(१०) दसवां वृद्ध । कालिका हुये । यह मिर्जापुर में जाकर बसे । कालिका के दो पुत्र—दुर्गा, हजारी हुये । दुर्गा के चार पुत्र- रामचरण, गंगा-प्रसाद, महादेव, सहादेव हुये । रामचरण के एक पुत्र- जगन्नाथ हुआ । जो पतित होगया । सहादेव के तीन पुत्र- द्वारिकाप्रसाद, चिनगी, देवीचरण हुये । हजारीलाल के तीन पुत्र- मथुरा, मेवालाल, शिवराम हुये । मथुरा के तीन पुत्र रामदास, गोरेलाल, अज्ञात नाम हुये । शिवराम के एक पुत्र- रामरतन हुआ ।

गोत्र कश्यप परम्परागत (गौरहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध । हीरा भये । यह नेवादा में जाकर बसे । हीरा के चार पुत्र-कामता, पद्मी, चिनकऊ, तेजा हुये । कामता के दो पुत्र-छुन्गू, भारत हुये । भारत के दो पुत्र-मेवालाल, शंकरलाल हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । दुर्गा हुये । यह सीतापुर में जाकर बसे । दुर्गा के भाई जुराखन, भदई हुये । दुर्गा के एक पुत्र-अयोध्या हुआ । जुराखन के दो पुत्र—भिक्खू गिरधारी हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । बदरी भये । यह सठिगवां में जाकर बसे । बदरी के दो पुत्र—रामनाथ, शिवनाथ हुये ।

(४) चौथा वृद्ध । भीखम हुये । यह गौरीपुर में जाकर बसे । भीखम के तीन पुत्र—मेडू, शम्भू, लछिमन हुये । शम्भू के एक पुत्र-महादेव हुआ । महादेव के एक पुत्र-छोटा हुआ । लछिमन के एक पुत्र-लालमणि हुआ । लालमणि के दो पुत्र-रामाधीन, भोला हुये ।

(५) पांचवां वृद्ध । नरोत्तम हुये । यह गौरा में रहते हैं । नरोत्तम के एक पुत्र-बुन्दीलाल हुआ । बुन्दीलाल के दो पुत्र- धरम, मोहन हुये । धरम के चार पुत्र- भवानीदीन, गप्पू, छीटन, पत्तीं भये । भवानीदीन के एक पुत्र- घसिलावन हुआ । घसिलावन के चार पुत्र-गयादीन, टुन्नू, योधा, भिखारी भये । गयादीन के एक पुत्र-गोकुल हुआ । टुन्नू के एक पुत्र—मैका हुआ । मैका के दो पुत्र—छेदालाल, जियालाल हुये । योधा के तीन पुत्र-बिन्दा, मथुरा, बदरी भये । बिन्दा के दो पुत्र—नन्दकिशोर, अशर्फीलाल हुये । मथुरा के दो पुत्र सुखदेव, झूरी हुये । यह सैठी चले गये । बदरी के दो पुत्र—रामनाथ, शिवनाथ हुये । भिखारी के एक पुत्र—भगवानदीन हुआ । भगवानदीन के दो पुत्र-जगन्नाथ, उजागर हुये । गप्पू के दो पुत्र-इनका, रजना हुये । इनका के दो पुत्र लुस्सू, कल्लू भये । लुस्सू के एक पुत्र—कामताप्रसाद हुआ । कल्लू के एक पुत्र परसाद हुआ । परसाद के चार पुत्र-रामपाल, जगन्नाथ, चिनका, चौथे का नाम अज्ञात हुये । रजना के तीन पुत्र-बिन्दू, पूसू, फगुना हुये । बिन्दू के एक

पुत्र—कालीचरण हुआ। कालीचरण के दो पुत्र-रामरतन, शिवरतन हुये। पूसू के एक पुत्र-शिवबालक हुआ। शिवबालक के एक पुत्र—ज्वालाप्रसाद हुआ। पुत्ती के दो पुत्र-टर्कं परम. हुये। टर्कं के दो पुत्र-देवीदयालु, रामदयालु हुये। देवीदयालु के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। परम के एक पुत्र-दुल्लू. हुआ। दुल्लू के चार पुत्र—रामप्यारे, बालकृष्ण, रामकृष्ण, सूरजदीन हुये। मोहन के दो पुत्र-कालिका बदलू हुये। बदलू के एक पुत्र—छेदालाल भया।

(६) छठवां वृद्ध। पग्गल हुये। यह गौरा में बसा। पग्गल के एक पुत्र- सेफला हुआ। सेफला के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये।

(७) सातवां वृद्ध। हीरा भया। यह बम्बई में जाकर बसे। हीरा के छः पुत्र-लछिमन, लीला, चेत, पन्चा, रम्मा, दैला भये। लछिमन के एक पुत्र—भगवानदीन हुआ। भगवानदीन के दो पुत्र छेदालाल भैरम हुये। छेदालाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। भैरम के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। लीला के दो पुत्र-महदी, बहोरा हुये। रम्मा के दो पुत्र-हजारी, गुलजारी भये। हजारी के एक पुत्र-जवाहिर भया। जवाहिर के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ। गुलजारी के चार पुत्र-फगुना, चौफुरि, साहुनि, बैजनाथ हुये।

(८) आठवां वृद्ध। मथुरा हुये। यह सँठी में जाकर बसा। मथुरा के दो पुत्र—शुकदेव, सुरई हुये।

गोत्र काश्यप परम्परा (खँडदेउरिहा)

उमरहार वंशान्तरगत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। गप्पू सउनी दो भाई हुये। यह सिकट्ठन पुर में जाकर बसे। गप्पू के दो पुत्र—मासे, जियालाल हुये जियालाल के एक पुत्र चेला, हुवा। चेला के एक पुत्र—रंगीलाल हुवा। सउनी के दो पुत्र-छन्नू, गन्नू हुये। छन्नू के तीन पुत्र—दालचन्द, खुशाली रामपाल हुये। खुशाली के दो पुत्र-बाबूराम, देवीदयाल हुये। गन्नू के एक पुत्र—छोटेलाल हुवा। छोटेलाल के एक पुत्र—रामगुलाम हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध । छंगू हुये । यह सिकट्टन पुर में बसे । छंगू के भाई ठाकुर दीन हुये । छंगू के तीन पुत्र—जगन्नाथ, गयादीन दुरगा हुये । जगन्नाथ के दो पुत्र- गिरधारी, दनकऊ हुये । गिरधारी के एक पुत्र—पेमा हुवा । पेमा के एक पुत्र-नामअज्ञात हुवा । ननकऊ के दो पुत्र—नामअज्ञात हुये । ठाकुरदीन के एक पुत्र—श्रीकृष्ण हुवा । यह बेहटा चला गया ।

(३) तीसरा वृद्ध । केशी हुये । यह फिरोजपुर में जाकर बसे केशी के दो पुत्र-मन्नू, अयोध्या हुये । मन्नू के एक पुत्र-दुरगा, हुये । दुरगा के एक पुत्र-रामशंकर हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । दुरजन हुये । यह बुड़ैला में जाकर बसे । दुरजन के तीन पुत्र-गंगाप्रसाद, जवाहिर, हीरालाल हुये । जवाहिरलाल के तीन पुत्र दुरगा, कालिका, ओरी हुये । दुरगा के तीन पुत्र—पूसू रामदयाल, रामलाल, हुये । रामदयाल के दो पुत्र—शिवराम, सूरजदीन हुये । रामलाल के तीन पुत्र रामनारायण, पंचा, रामकुमार, हुये । कालिका के दो पुत्र-भगवानदीन, रामबकस, हुये । भगवानदीन के चार पुत्र-राजा, महाराज, सुदामा, बंशलाल हुये । महाराज के एक पुत्र—मोतीलाल, हुवा । रामबकस के तीन पुत्र-गंगाप्रसाद, मथुराप्रसाद, रामपाल, हुये ।

(५) पाँचवां वृद्ध । मतिराम हुये । यह बाबूपुर में जाकर बसे । मतिराम के एक पुत्र-कुवर, हुवा ।

(६) छठा वृद्ध । समाधान, तुला दो भाई हुये । यह भगौनापुर में जाकर बसे । तुला के एक पुत्र—रघुवरदयाल हुआ । रघुवरदयाल के एक पुत्र राजाराम हुआ ।

(७) सातवां वृद्ध । मदन हुये । यह भगौनापुर में जाकर बसे । मदन के एक पुत्र कामताप्रसाद हुआ । कामता के एक पुत्र-सदासुख हुआ ।

(८) आठवां वृद्ध । मूसे हुये । यह खाड़ेदेउर में बसे हैं । मूसे के तीन पुत्र—पग्गल, महादेव पुत्तीं हुये । महादेव के दो पुत्र - चेता, दुलारेलाल हुये ।

(९) नवां वृद्ध । भारत हुये । यह गड़वा में जाकर बसे । भारत के एक पुत्र —लच्छीराम हुआ । लच्छीराम के तीन पुत्र-फगुना, बदला दुरगा हुये

(१०) दसवां वृद्ध। लछिमन हुये। यह गड़वा में जाकर बसे। लछिमन के चार पुत्र—जिसमेंसे नारायण गड़वा में हैं। बाकी खदरा में रहते हैं। नारायण के एक पुत्र—रामनाथ हुआ।

गोत्र कश्यप परम्परा (सिकट्ठनपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। चंदी हुये। यह बुड़ैला में जाकर बसे। चंदी के दो पुत्र-जवाहिरलाल, मूसे हुये। जवाहिरलाल के पांच पुत्र-भिखारी, सउनी नहसी, प्रसाद, रामधीन हुये। सउनी के दो पुत्र-महादेव, सहादेव हुये। प्रसाद के दो पुत्र-बाबूराम, रामगोपाल हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। कुवर हुये। यह सिकट्ठनपुर से आनकर जद्दूपुर में बसे। कुवर के चार पुत्र-खुशाली, दुलारेलाल, हजारीलाल, बोधन हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। फकारे हुये। यह लखनीपुर में जा बसे। फकारे के दो पुत्र—महादेव, लछिमन हुये। लछिमन के दो पुत्र—हजारी, गुरदीन हुये। हजारी के चार पुत्र—छल्लू, तीन के नाम अज्ञात हुये।

(४) चौथा वृद्ध। जियालाल हुये। यह खानपुर में जाकर बसे। जियालाल के एक पुत्र-रामबेला हुआ। रामबेला के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ

(५) पांचवां वृद्ध। तेजा हुये। यह डेहरिया में जाकर बसे। तेजा के दो पुत्र-माधव, गिरधारीलाल हुये। माधव के एक पुत्र-रामप्रसाद हुआ। रामप्रसाद के दो पुत्र-रामरतन, शिवरतन हुआ।

गोत्र उपमन्यु परम्परा (चिहुलपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। पंचम हुये। यह खानपुर में जाकर बसे। पंचम के भाई भीखू हुये। पंचम के एक पुत्र-काशी, हुवा। काशी के एक पुत्र-रामसहाय, हुवा। भीखू के एक पुत्र-साभन हुवा। साभन के एक पुत्र-रघुवर, हुवा। रघुवर के तीन पुत्र-सुखलाल, पचुवा, और ननकू हुये।

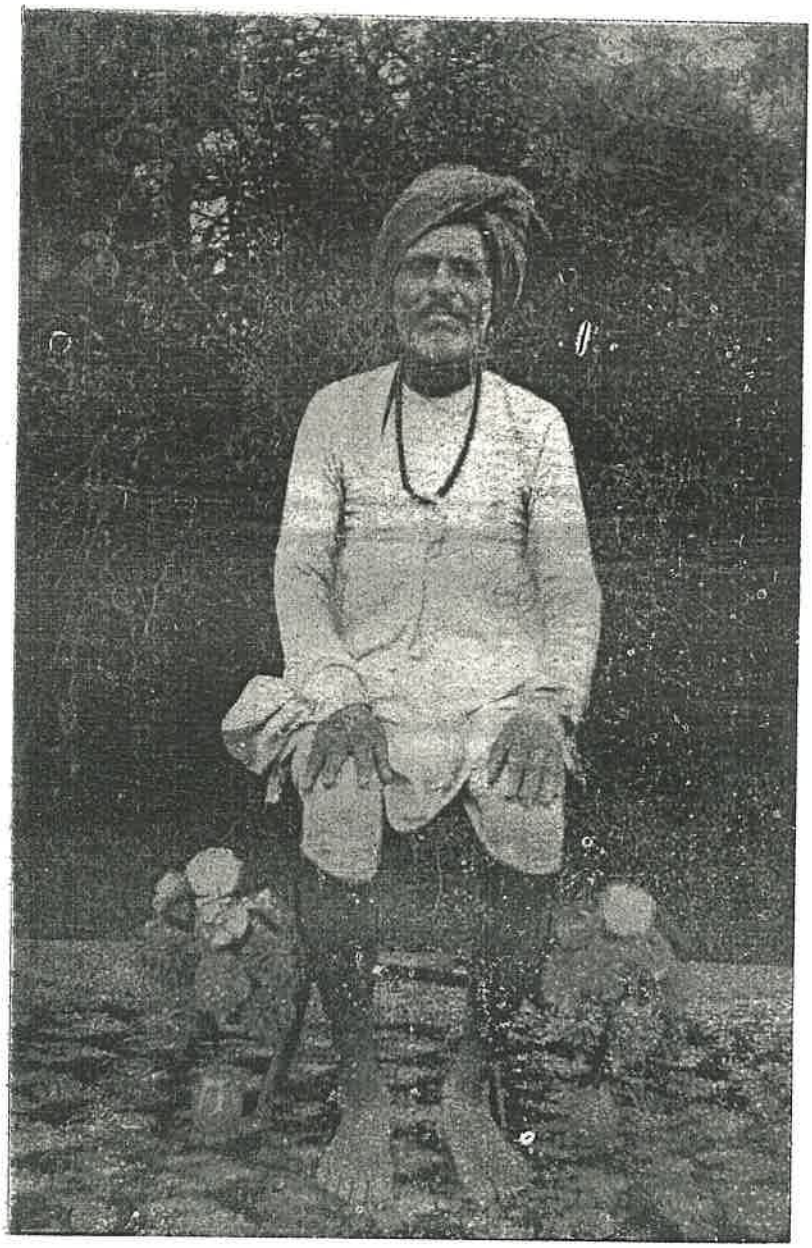

श्री मनई उमरहार बेहटा निवासी

प्रतिनिधि महासभा ।

(२) दूसरा वृद्ध । सोहन, मोहन, दोमाई हुये । यह लखनीपुर में जाकर बसे । सोहन के दो पुत्र-बउरा, तुलसी, हुये । बउरा के तीन पुत्र-भिउवा, शिवरतन, और सुधामा हुये यह पतित होगये ।

(३) तीसरा वृद्ध । झाँडू हुये । यह लखनीपुर में आ बसे । झांडू के दो पुत्र-साहब, भरोसा हुये । साहब के दो पुत्र-गोकुल और बिन्दा हुये । यह पतित होगये ।

(४) चौथा वृद्ध । मक्खी हुये । यह लखनीपुर में जाकर बसे । मक्खी के एक पुत्र-माधव हुआ यह पतित होगया ।

(५) पांचवां वृद्ध । चिरंजूलाल और महादेव दो भाई हुये । यह छोटेपुर में जाकर बसे । चिरंजू के तीन पुत्र-झंडू, सहाय और रामचरण हुये सहाय के दो पुत्र—मुंशी और छोटेलाल हुये । मुंशी भगौनापुर चले गये छोटेलाल पारा चला गया । रामचरण के दो पुत्र—पुत्तियां और रामदयालु हुये । रामदयालु के दो पुत्र—सरजू और रामेश्वर हुये । महादेव के एक पुत्र अयोध्याप्रसाद हुआ । अयोध्या के एक पुत्र-महावीर हुआ ।

(६) छटा वृद्ध-जैकिसुन हुये । यह रहमतपुर में जा बसे । जैकिसुन के दो पुत्र-थानी, और अज्ञात नाम हुये । थानी के एक पुत्र—ईश्वरीप्रसाद हुआ । ईश्वरी के तीन पुत्र—मथुरा, रघुवर, और रामाधीन हुये । रघुवर के एक पुत्र-रामेश्वर हुआ ।

(७) सातवां वृद्ध । छेदू हुये । यह अलमापुर में आकर बसे । छेदू के तीन पुत्र-बहला, मलुवा, और दुलासी हुये । बहला के एक पुत्र—भगवानदीन हुआ । भगवानदीन के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ । दुलासी के तीन पुत्र चन्ना, ममसा और दालचन्द हुये । दालचन्द के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये

(८) आठवां वृद्ध । सुदीन हुये । यह सुल्तानगढ़ में आकर बसे । सुदीन के पांच पुत्र—महादेव, नारायण, गोबिंद, अयोध्या और भगवानदीन हुये । महादेव के दो पुत्र- सभा, और जुराखन हुये । सभा के एक पुत्र-रघुवर हुवा । रघुवर के तीन पुत्र-सुखलाल, बच्चूलाल, महावीरप्रसाद हुये । जुराखन के एक पुत्र-दुरगा हुआ । दुरगा के तीन पुत्र—गंगाचरण, बद्रीप्रसाद और तीसरा अज्ञात नाम हुये । नारायण के एक पुत्र—काशीप्रसाद हुआ । यह

खानपुर चला गया। गोविंद के एक पुत्र-बल्देव हुआ। बल्देव के एक पुत्र मेहूलाल हुवा।

(९) नवां वृद्ध। भदई हुये। यह कंठीपुर में जाकर बसे। भदई के दो पुत्र—कुबर और जुराखन हुये। कुबर के दो पुत्र—दरलू और मुनगा हुये। मुनगा के एक पुत्र—मातादीन हुआ। मातादीन के एक पुत्र-भगवानदीन हुवा।

(१०) दसवां वृद्ध। मड़का हुआ। यह मिरजापुर में जाकर बसा। मड़का के एक पुत्र-मोहन हुवा। मोहन के एक पुत्र—छचा हुवा।

(११) ग्यारहवां वृद्ध। लल्लू हुये। यह बोधीपुर में जाकर बसे। लल्लू के दो पुत्र-पूरन और तेजा हुये। पूरने के दो पुत्र-कल्लू और दुल्लू हुये। तेजा के दो पुत्र-मंगली और भिक्खू हुये। मंगली के दो पुत्र—सेवक और बाबर हुये। बाबर के एक पुत्र नाम अज्ञात हुआ।

(१२) बारहवां वृद्ध। दुर्गा और सुदीन दोनों भाई त्रिहुलपुर में बसे। दुर्गा के एक पुत्र-पूसू हुआ। पूसू के एक पुत्र-ब्याली हुवा। ब्याली के एक पुत्र-भगवानदीन हुवा। सुदीन के दो पुत्र—चिनगा और शिवबकस हुये। चिनगा के दो पुत्र—झांडू और रैला हुये। झांडू के दो पुत्र—भदई और सबई हुये। भदई के दो पुत्र रामचरण और मेवालाल हुये। रैला के एक पुत्र रामचेला हुवा। शिवबकस के तीन पुत्र—घोधा, ईश्वरी और कन्हई हुये। कन्हई के एक पुत्र—बाबूराम हुआ।

(१३) तेरहवां वृद्ध। शिवबकस चिहुलपुर में, बसे। शिवबकस के दो पुत्र-चिरंजू और दुल्लू हुये। दुल्लू के एक पुत्र—छोटेलाल हुवा।

(१४) चौदहवां वृद्ध। गयादीन चिहुलपुर में बसे। गयादीन के दो पुत्र-तेगली और बदला हुये। तेगली के एक पुत्र-देवीचरण हुआ। देवीचरण के तीन पुत्र—रामरत्न, भोलानाथ और तीसरे का नाम अज्ञात हुवा। बदला के तीन पुत्र—कालीचरण, सीताराम और राजाराम हुये।

(१५) पंद्रहवां वृद्ध। दुर्जन चिहुलपुर में बसे। दुर्जन के एक पुत्र कन्हई हुआ।

(१६) सोलहवां वृद्ध। बबकल चिहुलपुर से जाकर पहरवापुर में बसे। बबकल के तीन पुत्र—मैका, लछिमन और गोकुल हुये। मैका के एक पुत्र

कलुवा हुवा। कलुवा के चार पुत्र-शिवदयालु कन्हई, पूरन और रामनारायण हुये। कन्हई के एक पुत्र-रामरतन हुआ। लछिमन के एक पुत्र—रामजीते हुआ गोकुल के दो पुत्र—मंगली और शंकर हुये। मंगली के तीन पुत्र लालजी सेवालाल और रामलाल हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (कल्याणपुरिहा)

डमरदाह कुरमी वंशान्तरगत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। धौंकल हुये। यह जमुनियाखेर में जाकर बसे। धौंकल के पांच पुत्र—हीरालाल, गंगूप्रसाद, चतुरी, निहाल और रामचरण हुये हीरा के एक पुत्र—राजा हुआ। चतुरी के दो पुत्र—इसुरी और पूरन हुये। रामचरण के एक पुत्र—चौबा हुआ। चौबा के चार पुत्र—गोपाल, बजनाथ, रामरतन और चौथे का नाम अज्ञात हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परा (पाढ़िनिहा)

डमरदार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। सुखई हुये। यह बेहटा खुर्द में जाकर बसे। सुखई के दो पुत्र- रामबकस और भारतदीन हुये भारत के एक पुत्र- गयाप्रसाद हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। गिरधारी और अज्ञात नाम दो भाई हुये। यह जमुनियांखेर में जाकर बसे। गिरधारी के एक पुत्र—भिखारी हुआ। भिखारी के एक पुत्र—सुन्दरलाल हुआ। अज्ञात नाम वाले के दो पुत्र—लछिमन और दुरगा हुये। लछिमन के दो पुत्र—सुखना और चेला हुये। दुरगा रेवाड़ी चला गया। चेला रहमतपुर चला गया।

(३) तीसरा वृद्ध। बद्दू, गयादीन दो भाई हुये। यह हरजनपुर चले गये। बद्दू के दो पुत्र—मन्नू और चन्दी हुये। चन्दी के तीन पुत्र—पन्चा, दीनदयालु और रामदयालु हुये। पंचा के दो पुत्र—जगन्नाथ और देवीचरण हुये। दीनदयालु के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये।

(४) चोथा वृक्ष । भगवान हुये । यह गोरीपुर में जाकर बसे । भगवान के दो पुत्र —लाला और छन्नू हुये । लाला के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये । छन्नू के दो पुत्र—छुक्कू और मन्नू हुये । छुक्कू के दो पुत्र—रामबक्स और भारतद्दीन हुये । रामबकस के तीन पुत्र—अयोध्याप्रसाद, द्वारिकाप्रसाद और बद्रीप्रसाद हुये । भारत के एक पुत्र—गयादीन हुआ ।

(५) पाँचवाँ वृक्ष । नाथू हुये । यह बसंतखेर में जाकर बसे । नाथू के तीन पुत्र—तुलसी, साहबदीन और केशवप्रसाद हुये । तुलसी के एक पुत्र मातादीन हुआ ।

(६) छठा वृक्ष । कल्लू हुये । यह डिघवआ में जाकर बसे । कल्लू के एक पुत्र-शीतल प्रसाद हुये । शीतल के चार पुत्र—पूरन, जियालाल, दुलाचन्द और छोटेलाल हुये । पूरन के तीन पुत्र-प्रयाग, काशी और तीसरा अज्ञात नाम हुये । जियालाल बाबूपुर चला गया ।

(७) सातवां वृक्ष जगन्नाथ हुये । यह हफ्तापुर चले गये । जगन्नाथ के एक पुत्र—महादेव हुआ । महादेव के दो पुत्र-सूरजप्रसाद और शिवराम हुये

(८) आठवाँ वृक्ष गंगादीन हुये । यह भद्दपुर में जाकर बसे । गंगादीन के एक पुत्र—रामदयाल हुआ । रामदयाल के तीन पुत्र—बहलन, गजोधर और गयादीन हुये । गजोधर के एक पुत्र-गोपाल हुआ ।

(९) नवाँ वृक्ष । शिवनारायण हुये । यह भद्दपुर में जाकर बसे ।

(१०) दसवां वृक्ष । शिवदयाल हुये । यह खजुरिहा में जाकर बसे । शिवदयाल के एक पुत्र—रामभरोसे हुआ । रामभरोसे के एक पुत्र—जगन्नाथ हुआ ।

(११) ग्यारहवाँ वृक्ष । छेदालाल हुये । यह उमरिहा में जाकर बसे । छेदालाल के दो पुत्र-गहबर और दीनदयालु हुये । गहबर के एक पुत्र- लौंदा हुये । दीनदयाल के एक पुत्र—दुरगा हुआ । दुरगा के दो पुत्र-रामनाथ और शिवनाथ हुये ।

(१२) बारहवाँ वृक्ष । गनेश हुये । यह टरवापुर में जाकर बसे । गनेश के चार पुत्र-मथुरा, मन्नू, चन्दीलाल और लालाराम हुये । मथुरा के तीन पुत्र—भिखारीलाल, पूरन और महगू हुये । पूरन के दो पुत्र—रामसेवक और

गंगाचरण हुये। चन्दी के दो पुत्र-ज्ञानी और तुलसी हुये। ज्ञानी के दो पुत्र
बिपता और गोपाल हुये। तुलसी के तीन पुत्र—पुसू, गंगाचरण और तीसरा
अज्ञात नाम हुये। लाला के एक पुत्र—बजरंग हुये। बजरंग के तीन पुत्र—राम-
रतन, दुरगा और द्वारिका हुये। रामरतन के एक पुत्र-रंगीलाल हुआ।

(१३) तेरहवाँ वृक्ष। कालिका हुआ। यह टक्वापुर में जाकर बसे।
कालिका के दो पुत्र—मेड़ू और मन्नी हुये। मेड़ू के दो पुत्र—चेला और
बाबूलाल हुये। मन्नी के एक पुत्र—रामदयाल हुआ।

(१४) चौदहवाँ वृक्ष। घसीटे हुये। यह टक्वापुर में जाकर बसे।
घसीटे के एक पुत्र—गयादीन हुआ।

(१५) पन्द्रहवाँ वृक्ष। दुरगा हुये। यह टक्वापुर में जाकर बसे। दुरगा
के दो पुत्र-लदई और भदई हुये। लदई के दो पुत्र—देवप्रसाद और बिहारी,
लाल हुये। देवप्रसाद के एक पुत्र-भगवानदीन हुआ। बिहारीलाल के एक पुत्र
साहबदीन हुआ साहबदीन के एक पुत्र—भगवतीप्रसाद हुआ।

(१६) सोलहवाँ वृक्ष। गयादीन हुये। यह टक्वापुर में जाकर बसे।
गयादीन के एक पुत्र—कन्हैयालाल हुआ। कन्हैलाल के दो पुत्र-छुच्चू, और
जेठू, हुये।

(१७) सत्राहवाँ वृक्ष। समाधान हुये। यह टक्वापुर में जाकर बसे
समाधान के चार पुत्र—भीम, रामनाथ, और दो के नाम अज्ञात हुये। भीम के
एक पुत्र—रिग्गू हुआ। रिग्गू के दो पुत्र—लालाराम, भरोसा, हुये। लाला के
दो पुत्र—रामचेला, और दुलीचन्द हुये। दुलीचन्द के एक पुत्र-नाम अज्ञात
हुआ। रामनाथ के एक पुत्र-दालचन्द हुआ। दालचन्द फिरोजपुर चला गया।

(१८) अठारवाँ वृक्ष। बिश्वम्भर हुये। यह पढ़नी में आकर बसे।
विश्वम्भर के दो पुत्र - हजारी, और मंगली हुये।

(१९) उन्नीसवाँ वृक्ष। गिरवर हुये। यह पढ़नी में जाकर बसे हैं
गिरवर के तीन पुत्र-रामप्रसाद, चेला, और सहाय हुये। चेला के दो पुत्र
रामदयालु और गुरुदयाल हुये। सहाय के तीन पुत्र—रामधीन, दतकवा, और
शिवदयाल हुये।

(२०) बीसवाँ वृद्ध । छेदा हुये । यह पढ़नी में बसे हैं । छेदू के दो पुत्र गयादीन, देवीचरण हुये । देवीचरण के दो पुत्र—जुगलु और बाबू हुये यह पतित हो गये ।

(२१) इक्कीसवाँ वृद्ध । भैरम हुये । यह पढ़नी में बसे हैं । भैरम के दो भाई लछिमन और बदलू हुये । भैरम के दो पुत्र—महादेव, और दुरगाप्रसाद हुये । दुरगा के एक पुत्र-महका हुवा । लछिमन के एक पुत्र—बिन्दा हुवा । बदलू के दो पुत्र-बलदेव, भगवानदीन हुये । भगवानदीन के दो पुत्र-पराग, काशो, हुये ।

(२२) बाईसवाँ वृद्ध । सहिवा हुये । यह पढ़नी में बसे हैं । सहिवा के एक पुत्र-मदई हुवा । मदई के दो पुत्र-मन्नू, और प्रहलाद, हुये । मन्नू के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा ।

(२३) तेईसवाँ वृद्ध । रंजीत पढ़नी से जाकर डमरिहा में बसे । रणजीत के चार पुत्र-खुमान, अमान, मदई, और सतई, हुये । खुमान के दो पुत्र-मनुवा, और पुसुवा हुये । अमान के दो पुत्र-सुखुवा, और दल्ला, हुये । सुखुवा के एक पुत्र—बलुवा, हुवा । दल्ला के एक पुत्र—छोटेलाल, हुवा । छोटेलाल के के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा । बलुवा के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुवा ।

(२४) चौबीसवाँ वृद्ध । मद्दू पढ़नी से जाकर गुलाबपुर में बसे । मद्दू के दो पुत्र—सदा और मदा हुये । सदा के एक पुत्र—दतका, हुवा । दतका के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुवा । मदा के एक पुत्र—जगन्नाथ हुवा ।

(२५) पचीसवाँ वृद्ध । धन्नू पढ़िनी से जाकर गुलाबपुर में बसे धन्नू के दो पुत्र-बदला और चन्दो हुये । बदला के दो पुत्र—तेजाराम, और महावीर हुये । चन्दो के एक पुत्र-कामताप्रसाद, हुवा ।

(२६) छब्बीसवाँ वृद्ध । किलकिली और मैका दो भाई पढ़िनी से जाकर गुलाबपुर में बसे । किलकिली के दो पुत्र—नारायण, और रघुवर, हुये । मैका के तीन पुत्र—गजा, हरीप्रसाद, और महादेव हुये । गजा के दो पुत्र-नाम अज्ञात हुये । हरीप्रसाद के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये महादेव के तीन पुत्र देवीदीन, प्यारेलाल, और श्यामलाल, हुये ।

(२७) सत्ताईसवाँ वृद्ध। मंगली पढ़िनी से आकर गुलाबपुर में बसे। मंगली के दो पुत्र—बल्देवप्रसाद, और मनोहरलाल हुये।

(२८) अट्ठाइसवाँ वृद्ध। मैका पढ़िनी से आकर गुलाबपुर में बसे। मैका के तीन पुत्र-महादेव, अयोध्या, और गजोधर, हुये। महादेव के एक पुत्र-छेदालाल, हुआ। छेदालाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये। अयोध्या के एक पुत्र द्वारिका, हुआ। गजोधर के एक पुत्र—घसीटे हुये।

(२९) उन्तीसवाँ वृद्ध। बद्लू पढ़िनी से आकर असधना में बसे। बद्लू के एक पुत्र फक्का हुआ। फक्का के तीन पुत्र—रामसहाय, देवीचरण, और अयोध्या हुये।

(३०) तीसवाँ वृद्ध। काशी परशुराम और छोटा तीन भाई पढ़िनी से आकर असधना में बसे। काशी के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ। परशुराम के एक पुत्र-नाम अज्ञात। छोटा के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुये।

गोत्र भरद्वाज परम्परागत (किरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) पहिला वृद्ध। भवानीदीन ग्राम किरार से आकर रहमतपुर में बसे। भवानीदीन के एक पुत्र—किशोरी हुआ। किशोरी के दो पुत्र-मन्नू और धन्नू हुये। मन्नू के एक पुत्र-कालिका हुआ। कालिका के दो पुत्र भदई और सदई हुये। धन्नू के तीन पुत्र-मथुरा, पुत्ता और गोकुल हुये। मथुरा के एक पुत्र-छुन्नू हुआ। पुत्ता के एक पुत्र-मन्नोदीन हुआ। गोकुल के एक पुत्र—लल्लू हुआ। लल्लू के पांच पुत्र—जागेश्वर, रामेश्वर, गिरिश्वर और दो के नाम अज्ञात हैं।

(२) दूसरा वृद्ध। गंगादीन किरार से आकर सठियावाँ में बसे। गंगादीन के तीन पुत्र-मेवा, दीवान और दुलारे हुये। मेवा के एक पुत्र चौबा हुआ। दीवान के तीन पुत्र—भरोसा, चौहरी और शिवदयालु हुये। भरोसा के दो पुत्र-घसीटे और अज्ञात नाम हुये। शिवदयालु के एक पुत्र अज्ञात नाम।

(३) तीसरा वृद्ध । लाला किरार से आकर सठिगवां में बसे । लाला के एक पुत्र-दीनदयालु हुआ ।

(४) चौथा वृद्ध । भरोसा किरार से आकर अरैलापुर में बसे । भरोसा के एक पुत्र—चन्द्रिका हुआ । यह पतित होगया ।

(५) पांचवां वृद्ध । जवाहिर किरार से आकर अरैलापुर में बसे । जवाहिर के चार पुत्र—भरोसा, रामदयाल, सुराखन और दुल्लू हुये । दुल्लू के दो पुत्र—गोपाल और चिरंजू हुये ।

(६) छठा वृद्ध । मन्साराम किरारसे आकर रवापुर में बसे । मन्साराम के दो पुत्र-दस्थर और खुमान हुये । खुमान के एक पुत्र—मंगली हुआ । मंगली के एक पुत्र-ईश्वरी हुवा । ईश्वरी के एक पुत्र-गंगाचरण हुवा ।

(७) सातवां वृद्ध । बख्तावर किरार से आकर रवाईपुर में बसे । बख्तावर के एक पुत्र-बरेती हुआ । बरेती के दो पुत्र- कुंजा और दल्लू हुये । कुंजा के एक पुत्र-जगन्नाथ हुये । जगन्नाथ के तीन पुत्र-श्यामलाल और मन्ना-लाल और अज्ञात नाम हुये । दल्लू पतित होगया । कुंजा का पुत्र—जगन्नाथ भी पतित होगया ।

(८) आठवां वृद्ध । गनेश किरार से आकर रवाईपुर में बसे । गनेश के दो पुत्र—ठाकुरदीन और दुर्गा हुये । ठाकुरदीन के एक पुत्र-दूबरि हुवा । यह पतित होगया । दुर्गा भी पतित होगया ।

(९) नवां वृद्ध । खुमान किरार में बसा । खुमान के दो पुत्र—जोधा और उमरांव हुये । जोधा के दो पुत्र—रामचरण और बच्ची हुये ।

(१०) दसवां वृद्ध । रघू किरार में बसे । रघू के एक पुत्र—वृन्दा हुआ । वृन्दा के तीन पुत्र—नाम अज्ञात हुआ ।

(११) ग्यारहवां वृद्ध । अहलाद किरार में बसे । अहलाद के एक पुत्र—हीरालाल हुआ ।

(१२) बारहवां वृद्ध । बदली किरार में बसे । बदली के दो पुत्र नारायण और भगवानदीन हुये । नारायण के दो पुत्र-नाम ज्ञात हैं ।

(१३) तेरहवां वृद्ध । रंगीलाल किरार में बसे ।

(१४) चौदहवां वृक्ष। लछिमन और द्वारिका दोनों भाई किरार में बसे। द्वारिका के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(१५) पन्द्रहवां वृक्ष। मातादीन किरार से जाकर कंडीपुर में बसे। मातादीन के एक पुत्र—भगवानदीन हुवा। वह पतित होगया।

(१६) सोलहवां वृक्ष। मोहन किरार से जाकर खानपुर में बसा। मोहन के दो पुत्र-टीका और चन्दा हुये। टीका के दो पुत्र—गोकुल और गुरुदयालु हुये। गोकुल के एक पुत्र—गजोधर हुआ। चन्दा के एक पुत्र रामजी हुआ। रामजी के एक पुत्र—बदरी हुआ। बदरी के एक पुत्र हीरालाल हुआ।

(१७) सत्रहवां वृक्ष। सांवल किरार से जाकर हुसेनाबाद में बसे। सांवल के तीन पुत्र-मतई, भिखारी और बुद्धू हुये।

(१८) अठारहवां वृक्ष। ठाकुर किरार से जाकर घर्ताजहपुर में बसे। ठाकुर के एक पुत्र-घसीटे हुआ। घसीटे के तीन पुत्र-जङ्गू, पन्नू और गुलजारी हुये। पन्नू के एक पुत्र- मदारी हुवा मदारी के एक पुत्र- रजवा हुवा।

(१९) उन्नीसवां वृक्ष। भोला किरार से जाकर धर्मसिंहपुर में बसा। भोला के एक पुत्र- जवाहिर हुआ। जवाहिर के दो पुत्र-सहाय और रामदीन हुये, सहाय के तीन पुत्र—भगवानदीन, श्रीपाल और शिवरतन हुये। श्रीपाल के एक पुत्र—मेवालाल हुवा। शिवरतन के एक पुत्र-नाम अज्ञात।

(२०) बीसवां वृक्ष। बन्दी किरार से जाकर दिलावलपुर में बसे। बन्दी के दो पुत्र-लल्लू और बल्लु हुये। लल्लु के एक पुत्र-लक्ष्मीनारायण हुवा।

(२१) इक्कीसवां वृक्ष। किशोरी किरार से जाकर छिबरुवा में बसे। किशोरी के दो पुत्र-धन्नू और मन्नू हुये। धन्नू के तीन पुत्र-गोकुल, मथुरा और पूरन, हुये। मथुरा और पूरन रहमतपुर में रहते हैं। गोकुल के एक पुत्र लल्लु हुवा। लल्लू के चार पुत्र- जागेश्वर, रामेश्वर, बिशेश्वर, और बैजनाथ हुये। मन्नू के एक पुत्र—कालिका हुवा। कालिका के तीन पुत्र—भदई सदई और दनकू, हुये।

(२२) बाईसवाँ वृद्ध । गयादीन किरार से जाकर सालेपुर में बसे । गयादीन के दो पुत्र—जवाहिर, और शिवचरण, हुये । जवाहिर के तीन पुत्र पूसू, गिरधारी और बदली हुये । पूसू के दो पुत्र-पराग, और गुरुदयाल, हुये पराग के दो पुत्र-हनुमान, और महावीर हुये शिवचरण के एक पुत्र-महादेव हुवा । महादेव के एक पुत्र- देवीचरण हुवा ।

(२३) तेईसवाँ वृद्ध । शिवगुलाम किरार से जाकर भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे । शिवगुलाम के एक पुत्र-खुशाली हुये । खुशाली के पाँच पुत्र-लछिमन, केवल, लालजी देवीचरण, और बलदेव हुये । लछिमन के तीन पुत्र-लालमन, गिन्नीलाल और हजारीलाल हुये । लालमन के दो पुत्र-मन्नीलाल और महीलाल हुये । गिन्नीलाल के दो पुत्र—रामसनेही, और मोतीलाल हुये । हजारीलाल के एक पुत्र-मोहनलाल हुवा । केवल के सात पुत्र-बुन्दीलाल चौधरी, प्रागनारायण, बाबू, सुदामा, सूर्जबली, पृथ्वीनाथ हुये । चौधरी के दो पुत्र-सोनेलाल, और रामबली हुये । प्रयागनरायण पतित हो गया । देवीचरन के दो पुत्र-गुलजारीलाल और प्यारेलाल हुये । प्यारे के एक पुत्र-रामानन्द हुआ ।

(२४) चौबीसवाँ वृद्ध । लिद्धा किरार से जाकर भगोना (सालेमपुर) में बसे । लिद्धा के एक पुत्र-जेठू, हुवा । जेठू के दो पुत्र भदई और शम्भू हुये । भदई के दो पुत्र-भरोसा और गलगल हुये । भरोसा के दो पुत्र-द्वरिका और राधू हुये । द्वारिका के एक पुत्र-रामधान हुवा । गलगल के एक पुत्र- जगन्नाथ हुवा ।

(२५) पच्चीसवाँ वृद्ध । गप्पू किरार से जाकर भगौनापुर (सालेमपुर) में बसे । गप्पू के एक पुत्र-माधो हुये ।

(२६) छब्बीसवाँ वृद्ध । मान किरार से जाकर भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे । मान के दो पुत्र-शीतल, और छेदू हुये । शीतल के एक पुत्र-देला, हुवा । छेदू के दो पुत्र-रामचेला और रामचरन, हुये । रामचेला के एक पुत्र मेवालाल हुवा । रामचरन और मेवालाल दोनों चाचा भतीजे पतित हो गया ।

(२७) सत्ताइसवाँ वृद्ध । बहोरी किरार से जाकर भगोना (सलेमपुर) में बसे । बहोरी के एक पुत्र-परशुराम हुवा । परशुराम के चार पुत्र-पुत्तीं, नन्हू

छोटा, हजारी, हुये। नन्हू के एक पुत्र-भभूती हुवा। भभूती के दो पुत्र-राजा और मनोहर, हुये। ये दोनों पतित होगये। छोटा के एक पुत्र-रामप्रसाद हुवा। हजारी के दो पुत्र-रामचरन और गंगाचरन हुये।

(२८) अट्ठाईसवाँ वृद्ध। शिवचरण किरार से जाकर भोगौनापुर (सलेमपुर) में बसे। शिवचरण के एक पुत्र मदारी हुवा। मदारी के एक पुत्र रामपाल हुवा।

(२९) ऊनतीसवां वृद्ध। तुलसी भूरा और ठाकुर ये तीनों भाई किरार से भगौनापुर (सलेमपुर) जाकर बसे। तुलसी के दो पुत्र-प्रसाद, और गयादीन हुये। गयादीन के एक पुत्र-रामरत्न हुवा। भूरा के एक पुत्र-गुलजारीलाल, हुवा।

(३०) तीसवां वृद्ध। मतवा किरार से जाकर भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे। मतवा के तीन पुत्र- बिहारी, गोकुल और मथुरा हुये। गोकुल के दो पुत्र- तिलोका और रामधीन हुये। तिलोका के एक पुत्र- नारायण हुवा। नारायण के एक पुत्र- जियालाल हुवा। मथुरा के एकपुत्र- बिशेश्वर हुआ। रामधीन बघुरिहापुर चले गये।

(३१) एकतीसवां वृद्ध। नारायण किरार से भगौनापुर में जाकरबसे। नारायण, मेदवा दो भाई। नारायण के एक पुत्र- गोबरा हुआ। गोबरा के एक पुत्र- शिवनाथ हुआ। मेदवा के तीन पुत्र- कस्तूरी, धनपति और दौलत हुये। धनपति के दो पुत्र-बिजलाल और रणजीत हुये। रणजीत के एक पुत्र- बिदेसिया हुआ। दौलत के दो पुत्र- बदला और छोटेलाल हुये।

(३२) बत्तीसवां वृद्ध। जैराम किरार से जाकर भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे। जैराम के एक पुत्र- गिरधारी हुवा। गिरधारी के दो पुत्र- रजन ओ बलभद्र हुये। रजन के दो पुत्र- भगवानदीन और रामधीन हुये।

(३३) तेतीसवां वृद्ध। रामबक्स और दमरा दो भाई किरार से जाकर दिलावलपुर में बसे। रामबक्स के एक पुत्र- छेदू हुवा। छेदू के दो पुत्र- भगवानदीन और रामदीन हुये। भगवानदीन के एक पुत्र- महावीर हुवा।

(३४) चौतीसवां वृद्ध। दयाली किरार से जाकर कनैरा में बसे। दयाली के एक पुत्र- पच्चू हुआ। पच्चू के एक पुत्र- बदल हुआ। बदल के

दो पुत्र- पूरन और तुलसीराम हुये। पूरन के चार पुत्र- रामरतन, सेवक मनोहर और परसाद हुये। तुलसीराम के एक पुत्र- गजराज हुवा।

(३५) पैंतीसवां वृद्ध। लछिमन किरार से जाकर बम्बुरिहापुर में बसे। लछिमन के दो पुत्र- बचोला और द्वारिका हुये। बचोला के दो पुत्र रामाधीन और बदला हुये। द्वारिका के एक पुत्र- राम अज्ञात।

(३६) छत्तीसवां वृद्ध। गनेश किरार से जाकर झरादपुर में बसे। गनेश के एक पुत्र—सकटू हुवा। सकटू के एक पुत्र- फकीरे हुवा। फकीर के दो पुत्र- बाबूलाल और मोतीलाल हुये।

(३७) सैंतीसवां वृद्ध। जवाहिर किरार से जाकर खूँटाझाल में बसा जवाहिरके चार पुत्र-रामभरोसे, रामदयालु, जुराखन, और दुल्लू हुये। जुराखन को छोड़कर शेष सब जरैलापुर चले गये। जुराखन के एक पुत्र--महाजन हुवा महाजन के एक पुत्र--रामआसरे हुवा।

गोत्र भार्गव परम्परागत (श्यमवाँखेरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भार्गव गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) पहिला वृद्ध। पीताम्बर, नीबी और रामदीन ये तीनों भाई श्यमवाँखेरे में बसे। नीबी के एक पुत्र-बोधी हुआ। रामदीन के चार पुत्र- धवकल, कन्हई, उदोत और दरियाव हुये। धवकल के एक पुत्र—बहादुर हुआ। उदोत के एक पुत्र—सहाँय हुआ। दरियाव के एक पुत्र—मदारी हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। पगला श्यमवाँखेरे से जाकर रतवाखेरे में बसे। पगला के एक पुत्र—सहाँय हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। भदई श्यमवाँखेरे से जाकर दरियापुर में बसे। और दरियापुर से जाकर खदरा में बसे। भदई के दो पुत्र—मनोहर और मेवालाल हुये। मनोहर के एक पुत्र-मैका हुआ। मेवालाल के दो पुत्र-कल्लू और दूसरे का नाम अज्ञात हुआ।

(४) चौथा वृद्ध। नन्दो श्यमवाँखेरे से जाकर सहिगवाँ में बसे।

(५) पाचवाँ वृद्ध । भोड़े श्यमवाँखेरे से जाकर भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे । भोड़े के एक पुत्र—लाला हुआ । लाला के दो पुत्र-तग्गली और दुल्ला हुये । दुल्ला के दो पुत्र-तिलोक और भोला हुये । तिलोक के एक पुत्र-कन्हई हुआ । भोला के एक पुत्र-अयोध्या हुआ ।

(६) छठा वृद्ध । भोंदा श्यमवाँखेरे से जाकर भगौनापुर (सलेमपुर) में बसे । भोंदा के दो पुत्र – मन्नू और झुरियाँ हुये । झुरियाँ के दो पुत्र-महावीर और अज्ञात नाम हुये ।

गोत्र उपमन्यु परम्परागत (मयापुरिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) पहिला वृद्ध । गुलाब मयापुरसे जाकर गौरीपुरमें बसे । गुलाबके एक पुत्र—मूसे हुआ मूसे के दो पुत्र-छेदालाल और बुद्धू हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । बाउर हुये । यह गौरीपुर में जाकर बसे । बाउर के एक पुत्र-गंगाचरण हुआ ।

(३) तीसरा वृद्ध । भदई मयापुर से गौरीपुर चले गये । भदई के छः पुत्र- सीताराम, परसाद, रिग्गू, हुलासी, पञ्चा और छोटा हुये । सीताराम के दो पुत्र- सूरजदीन, और सुदयाल हुये । परसाद, रिग्गू, और पञ्चा तीनों बेहटा चले गये । हुलासी भोजेपुर चला गया । छोटा गढ़ चला गया ।

(४) चौथा वृद्ध । दुर्गा मयापुर में बसा । दुर्गा के तीन पुत्र-पुत्तीलाल जोधा और झाड़ू हुये । पुत्तीलाल के एक पुत्र- भोलानाथ हुआ । भोलानाथ के एक पुत्र बाबूलाल हुआ । जोधा के तीन पुत्र- गुलजारीलाल, कामताप्रसाद और पञ्चा हुये ।

गोत्र काश्यप परम्परागत (सैंठिहा)

उमरहार कुर्मी वंशान्तरगत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध ।

(१) प्रथम वृद्ध बरजोर सैंठी से जाकर जरैलापुर में बसे । बरजोर के दो पुत्र-केशव और गोकुल हुये । गोकुल के एक पुत्र- नारायण हुआ ।

(२) दूसरा वृद्ध । देवी सैंठी से जाकर जरैलापुर में बसे । देवी के एक पुत्र—लछिमन हुआ । लछिमन के एक पुत्र—लिद्धा हुआ ।

(३) तीसरा वृद्ध । भदई सैंठी से जाकर जरैलापुर में बसे । भदई के दो पुत्र-दूबर और सुखलाल हुये ।

(४) चौथा वृद्ध । बदलू सैंठी से जाकर रवाईपुर में बसे । बदलू के एक पुत्र—छेदा हुआ । छेदा के एक पुत्र—द्वारिकाप्रसाद हुआ ।

(५) पांचवां वृद्ध । धरमू सैंठी से जाकर कुन्देरामपुर में बसा । धरमू के चार पुत्र-मन्नी, डल्ली, मुन्शी और अज्ञात नाम हुये । डल्ली के एक पुत्र—बदरी हुआ । बदरी के दो पुत्र—बलदेव और लछियन हुआ । बलदेव के दो पुत्र—ज्ञानी और भाई हुये लछिमन के एक पुत्र-मोतीलाल हुआ ।

(६) छठवाँ वृद्ध । टेढ़ा सैंठी से जाकर बँदरिहापुर में बसे । टेढ़ा के एक पुत्र-गयादीन हुआ । गयादीन के तीन पुत्र—हीरालाल, भगवानदीन और शिवबक्स हुये ।

(७) सातवाँ वृद्ध । बरियार सैंठी से जाकर रुसिया में बसे । बरियार के एक पुत्र—जसा हुआ । जसा के एक पुत्र—पोला हुआ । पोला के एक पुत्र लाला हुआ । लाला के दो पुत्र—रघुबर और गहबर हुये । रघुबर के दो पुत्र चेला और शुकदेव हुये ।

(८) आठवाँ वृद्ध अरजुन सैंठी से जाकर रुसिया में बसा । अरजुन के चार पुत्र—माँखन, पूसू चन्ना और सउनियाँ हुये । चन्ना के तीन पुत्र गोकुल, भगवानदीन और श्यामलाल हुये ।

(९) नवाँ वृद्ध । दरियाव सैंठी से जाकर रुसिया में जाकर बसे । दरियाव के एक पुत्र—सुक्खन हुआ । सुक्खन के दो पुत्र—गुलजारी और हजारी हुये । हजारी के तीन पुत्र-रामनारायण, शिवनारायण और जयनारायण हुये ।

(१०) दसवाँ वृद्ध । सदासुख और बोधी दोनों भाई सैंठी में बसे । सदासुख के एक पुत्र—मथुरा हुआ । मथुरा के तीन पुत्र—हुलासी, कवाँरा और बेनी हुये । बेनी के दो पुत्र—नारायण और भगवानदीन हुये । बोधी के दो पुत्र मूसे और पुत्तू हुये । मूसे के दो पुत्र-दुरगा और छेदा हुये । दुरगा के तीन

पुत्र-कुबेर, जवाहिर और शिवगुलाम हुये। कुबेर के एक पुत्र—भीखू हुआ। भीखू के एक पुत्र—रंगीलाल हुआ। जवाहिर के दो पुत्र—कल्लु और हजारी हुये। कल्लु के चार पुत्र-मथुरा, शिवचरण, प्रसाद और फगुना हुये। पुत्तू के तीन पुत्र-रामबकस, रामसरूप और खगोला हुये। रामबकस के दो पुत्र-भदई और मन्नू हुये। भदई के दो पुत्र—खपाली और बैजा हुये। मन्नू के दो पुत्र खुशाली और रजना हुये। रामसरूप के दो पुत्र—मंगली और गोकुल हुये। मंगली के तीन पुत्र-श्यामलाल, रामलाल और रामचरण हुये। गोकुल के दो पुत्र-गंगाराम और देबीचरण हुये।

(११) ग्यारहवाँ वृद्ध। भूरा सैंठी से जाकर लखनीपुर में बसे। भूरा के एक पुत्र-ठाकुरदीन हुआ। ठाकुरदीन के चार पुत्र—धन्नू, मंगली, रैल और सैंयाँ हुये। रैल के तीन पुत्र—सिपाल, रामपाल और पूरन हुये। सिपाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ सैंया का एक पुत्र—पतित होगया।

गोत्र कश्यप परम्परा (सालेरामपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। गंगादीन हुये। यह रसूलपुर में जाकर बसे। गंगादीन के दो पुत्र-जुराखन, और माखन हुये। जुराखन के दो पुत्र-आलादीन, और महादेव, हुये। माखन के चार पुत्र—काली, मिवाल, बदली और बेनी, हुये। काली के एक पुत्र-वसोटे हुवा। बदली के एक पुत्र—सीताराम हुवा।

गोत्र उपमन्यु परम्परा (रसरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तर गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। मइका हुवा यह सिकट्ठनपुर में जाकर बसे। मइका के दो पुत्र-दुरगा, और गोकुल, हुये। गोकुल के चार पुत्र-रवन्ना, जियालाल, पंचा, और जुराखन हुये। जियाल के एक पुत्र—रघुनन्दन हुवा। पंचा के चार पुत्र—रघुनन्दन, मइरा, शिवनन्दन और अज्ञात नाम हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। धनवाँ हुये। यह सिकट्ठनपुर में जाकर बसे। धनवाँ के तीन पुत्र—फुसल्लू, पन्नू, और कांरा हुये। फुसलु के दो पुत्र—चैतू, रामबकस हुये। पन्नू के दो पुत्र—पथई और छकू हुये। पथई के दो पुत्र गुलजारी और राजाराम हुये। गुलजारी के एक पुत्र-मैवालाल हुवा। राजाराम के दो पुत्र-सुखलाल, और शिवलाल हुये। कांरा के एक पुत्र-रामकृष्ण हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। भूरा सिकट्ठन पुर में जाकर बसा। भूरा के दो पुत्र मनुवा और दलका हुये। मनुवाँ के एक पुत्र-रैला हुवा। रैला के तीन पुत्र वृजलाल, घर्पू, और राजाराम हुयें। वृजलाल के एक पुत्र—मनबोधन हुवा।

गोत्र भारद्वाज परम्परा (खाईपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भरद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। आँगन हुये। यह अगनाखेर में रहे। आँगन के एक पुत्र—देवीदीन हुआ। देवीदीन के दो पुत्र- भैरम और सुखलाल हुये। सुखलाल के दो पुत्र—नन्दा और शिवनाथ हुये।

गोत्र कश्यप परम्परा (अटइहा, दिलावरपुर)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। वाले हुये। यह डिघरुवा में रहते हैं। वाले के दो पुत्र-कल्लु और रामबकस हुये। कल्लू के दो पुत्र-भवानीदीन और देवीदयाल भवानीदीन के एक पुत्र-रामसनेही हुआ। रामबकस के एक पुत्र—छुन्नूलाल हुवा। छुन्नू के एक पुत्र—जगन्नाथ हुआ। जगन्नाथ के एक पुत्र-रामभजन हुये।

(२) दूसरा वृद्ध। दुरगा हुये। यह डिघरुवा में रहते हैं। दुरगा के एक पुत्र-ईश्वरी, ईश्वरी के दो पुत्र-वेनीमाधव और लाला हुये। बेनी के चार पुत्र—देवनन्द, बद्री तीसरे चौथे का नाम अज्ञात हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। लछिमन बिहारी दो भाई हुये। यह डिघरुवा में जा बसे। बिहारी के दो पुत्र—कृष्ण और बदलू हुये। कृष्ण के एक पुत्र अज्ञात नाम हुवा। बदलू के दो पुत्र—राजाराम और अज्ञात नाम हुये।

गोत्र कश्यप (परम्परा (बावनखंभा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। सुखलाल हुये। यह सुल्तानगढ़ में जाकर बसे। सुखलाल के तीन पुत्र—रामकिशोर, रद्दू और प्रयाग हुये। रामकिशोर के दो पुत्र—गोकुल और दुरजा हुये। दुरजा के दो पुत्र—नुतुवा और रामभरोसे हुये। रामभरोसे के एक पुत्र-गजोधर हुवा। गजोधर के दो पुत्र-दीनदयाल और देवीदीन हुये। दीनदयाल के एक पुत्र—ईश्वरी हुये।

गोत्र भारद्वाज परम्परा (सालेपुरिहा)

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। लाला हुये। यह सालेपुर में रहते हैं। लाला के तीन पुत्र-खयाली, छेदू और लछिमन हुये। छेदू के एक पुत्र-द्वरिका हुवा। द्वारिका के एक पुत्र—जवाहिर हुवा। लछिमन के एक पुत्र—बदलू हुआ। बदलू के एक पुत्र-महावीर हुआ।

(२) दूसरा वृद्ध। भद्दा, बदला, और सल्हा हुये। यह सालेपुर में बसे। हैं। बदला के दो पुत्र-बेनी और भवानीदीन हुये। भवनीदीन के दो पुत्र—जगन्नाथ और राजा हुये। राजा के एक पुत्र—तोंदा हुआ। भद्दा के तीन पुत्र-लाधव, माधव और मतुवा हुये। मतुवा के एक पुत्र—परमा हुवा। परमा के दो पुत्र-मिठुवा और श्यामा हुवा। सल्हा के दो पुत्र-कामता और रामनाथ हुआ। कामता के पाँच पुत्र—सीताराम, बालकृष्ण रामकृष्ण और रामनारायण और शिवनारायण हुये। रामनाथ के एक पुत्र- रामगोपाल हुआ। कामताका तीसरा भाईभिखारी भी था। भिखारी के एक पुत्र—कालीचरण हुआ। कालीचरण के एक पुत्र- अज्ञात नाम हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध। बोड़ा हुआ। यह सालेपुर में बसे। बोड़ा के दो पुत्र-रघुवर और बाबू हुये। रघुवर के तीन पुत्र-रामबकस, रामपाल और शिवपाल हुये। रामबकस के एक पुत्र-शिवराम हुवा।

(४) चौथा वृद्ध। जुंगा और कुंवर दो भाई हुये। यह सालेपुर में बसे। जुंगा के एक पुत्र-देवी हुआ। देवी के तीन पुत्र-दुरगा, शिवदयाल और वंशी हुये। शिवदयाल के एक पुत्र-रामआसरे हुये। कुंवर के दो पुत्र-छेदू और गोपाल हुये। गोपाल के एक पुत्र-तेजा हुवा। तेजा के चार पुत्र-गुरुदयाल, द्वारिका, जगन्नाथ और अज्ञात नाम हुये।

(५) पांचवां वृद्ध। हीरा, राऊ और भाऊ हुये। यह सालेपुर में रहे हीरा के चार पुत्र-बैरागी, मान, रामगुलाम और साधव हुये। बैरागी के तीन पुत्र-बदरी, गयादीन और तेजा हुये, बदरी के दो पुत्र-मेढू और प्रसाद हुये। मेढू के एक पुत्र-जगन्नाथ हुआ। गयादीन के दो पुत्र—महाराज और राजा हुये। तेजा के एक पुत्र-अज्ञातनाम हुये। मान के एक पुत्र-गजोधर हुवा। गजोधर के पाँच पुत्र—गुरुदयाल, मोती, और अज्ञात नाम के हुये। रामगुलाम के तीन पुत्र—मंगली, चिरंजू, और मतिराम हुये। मंगली के एक पुत्र-घसीटे हुवा। मतिराम के एक पुत्र-दौंदा हुवा। राऊ के एक पुत्र-गंगाचरण हुवा। भाऊ के दो पुत्र—शिवरतन, और दुल्लू हुये। शिवरतन के तीन पुत्र चेला, सुखलाल, और नारायण हुये। सुखलाल के पुत्र-सीताराम हुवा। दुल्लू के एक पुत्र--बृजलाल हुवा। बृजलाल के एक पुत्र- महावीर हुवा!

(६) छठा वृद्ध। दनकू हुये। यह सालेपुर में रहे। दनकू के एक पुत्र—मुरयाँदीन हुवा। मुरयाँदीन के एक पुत्र--कालीचरण हुवा। कालीचरण के एक पुत्र--नाम अज्ञात हुवा।

(७) सातवाँ वृद्ध। फकीरे हुये। यह सालेपुर में में बसे। फकीरे के एक पुत्र- महादेव हुवा। महादेव को दो पुत्र--टीकाराम, और मातादीन, टीका के तीन पुत्र--भगवानदीन, छोटा, और गोपाल, हुये। छोटा के दो पुत्र राजा और महाराजा हुये। मातादीन को तीन पुत्र--सउजी, प्रसाद, और अयोध्या, हुये। सउजी के दो पुत्र--रघुवरदयालु रामदयालु हुये। प्रसाद के दो पुत्र--रामभजन और द्वारिका हुये।

(८) अठारवाँ वृद्ध। बोड़े कासी दो भाई हुये। यह सालेपुर में बसे। बोड़े के दो पुत्र--भदई और सहिदा हुये। सहिदा के एक पुत्र--बहादुर हुवा।

(९) नवाँ वृद्ध। सुखनन्दन और रामसहाय दो भाई हुये। यह साले पुर बसे। सुखनन्दन के दो पुत्र--रामनाथ, और वैजनाथ हुये। रामसहाय के एक पुत्र--राजाराम. हुवा। राजाराम के एक पुत्र--सउनी हुवा।

गोत्र कश्यप परम्परा [भोजेपुरिहा]

उमरहार कुरमी वंशान्तरगत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध लक्ष्मीनारायण हुये। यह सालेपर में जाकर बसे। लक्ष्मीनारायण के एक पुत्र—जियालाल हुआ जियालाल के दो पुत्र—प्रसाद और मन्नी हुये। मन्नी के एक पुत्र—रामसेवक हुआ। रामसेवक के दो पुत्र भवानीदीन और लक्ष्मीनारायण हुये।

गोत्र उपमन्यु परम्परा [चिफुरहा]

उमरहार कुर्मी वंशान्तर गत उपमन्यु गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१) प्रथम वृद्ध। थानी मैकू और दयाराम हुये। यह बेहटी में रहे। मैकू के तीन पुत्र- कालिका, बाले, और बेनी हुये। कालिका के एक पुत्र खेमान हुये। बाले के चार पुत्र--बोधो, गिरधारी, दुलीचन्द, और कल्लू हुये। बोधी के दो पुत्र-- गोकुल, और देवन, हुये। दुली के एक पुत्र--मौनी हुये। मौनी के दो पुत्र- हजारी और नामअज्ञात हुये। दुलीचन्द अलमापुर चला गया। दूनी के दो पुत्र--मन्ना, और रामचरण मन्ना के दो पुत्र--महादेव और दुलारे हुये। रामचरण के दो पुत्र--नत्थू, और रामलाल हुये। नत्थू के एक पुत्र--प्रसाद हुवा। रामलाल के तीन पुत्र--देवीचरण, रघुनाथ और अज्ञातनाम हुये।

गोत्र भारद्वाज परम्परा (पैहवार)

उमरहार कुरमी वंशान्तर गत भारद्वाज गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१ प्रथम) वृद्ध । बाले कल्लू और लोकई तीन भाई हुये । यह मदरी में रहे । बाले के तीन पुत्र—भिखारी देवीदीन और गोकुल हुये । भिखारी के दो पुत्र—छेदू और रामलाल हुये । गोकुल के दो पुत्र—रंगीलाल प्यारेलाल, हुये । कल्लू के दो पुत्र—रामादीन, और गजोधर हुये गजोधर के दो पुत्र बदरी, और गंगादीन, हुये । लोकई के दो पुत्र—गनेश, और महेश हुये । गनेश के दो पुत्र—चेला, और नन्दा, हुये ।

(२) दूसरा वृद्ध । रामनाथ और ठाकुरदीन हुये । असधना में बसे । रामनाथ के एक पुत्र—पुत्तों हुवा । पुत्तों के एक पुत्र—घसीटे, हुवा । घसीटे के दो पुत्र—बालकृष्ण, और पेशकार हुये । ठाकुरदीन के चार पुत्र—नाम अज्ञात हुये । गोपाल के दो पुत्र—गुलजारी, और रमचन्दी हुये ।

(३) तीसरा वृद्ध । बाबूलाल बाबूपुर में बसे । बाबूलाल के एक पुत्र रामदीन हुवा । रामदीन के छः पुत्र—मइका, मैना, हीरालाल, मनुवां, छबीले, पन्ना, हुये । मइका के एक पुत्र—तुलवा हुवा । मइना के दो पुत्र जवाहिर, और दनका, हुये । जवाहिर के दो पुत्र—लछिमन, और बुद्धू हुये । लछिमन के एक पुत्र—भदई हुवा दनक के एक पुत्र-चौबा, हुवा । चौबा के एक पुत्र-चमरू हुवा । हीरालाल के एक पुत्र-मदारीलाल, हुवा । मदारी के एक पुत्र—बजिया, हुवा । मनुवां के तीन पुत्र—तेजा दवनी, और दलिया, हुये । तेजा के दो पुत्र-बन्दी, और छेदा हुवा । छेदू के एक पुत्र—जगन्नाथ, हुवा । बदलिया के एक पुत्र—मेड़ हुवा । मेड़ के तीन पुत्र—बैजनाथ, केदार नाथ, और बन्दी, हुये । दलिया के दो पुत्र—शम्भू, और गप्पू, हुये । शम्भू के एक पुत्र-रघुनन्दन हुवा । गप्पू के एक पुत्र—गंगा हुवा । पंगू के एक पुत्र महावीर हुवा पंचा के एक पुत्र-मकरू हुवा ।

(४) चौथा वृद्ध । सुखलाल बाबूपुर में बसे । सुखलाल के एक पुत्र बदलू हुवा । बदलू के दो पुत्र—गुरुबकस, और टिकवा हुये । गुरुबकस के एक पुत्र—बदलू हुवा । बदलू के तीन पुत्र-शिवचरण, रामचेला, और भगवान-दीन हुये । शिवचरण के एक पुत्र—दयाराम, हुवा । रामचेला के एक पुत्र

श्री सूरजदीन उमरहार बेहटा निवासी
प्रतिनिधि महासभा ।

श्री गजोधरप्रसाद उमरहार खदरा निवासी
प्रतिनिधि महासभा ।

मोहन हुवा। भगवानदीन के एक पुत्र—सीताराम, हुवा। टीका के ए.
पुत्र—दीनदयालु, हुये।

(५) पाँचवाँ वृद्ध। जैराम बाबूपुर में बसे। जैराम के दो पुत्र—छेदा और जवाहिर हुये। छेदा के दो पुत्र—पशादीन और गजाधर हुये। गजाधर के एक पुत्र पूरन, हुवा। पूरन के एक पुत्र अयोध्या हुवा। जैराम बाबूपुर से बकियापुर चला गया।

गोत्र कश्यप परम्परा (सरहन वाले)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर गत कश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध।

(१ पहिला वृद्ध। बद्दल सद्दल दो भाई हुये। यह सरहन में बसे। बद्दल के पांच पुत्र-परसाद, भारत, चतुरी, लछिमन, और पंचा, हुये। प्रसाद के दो पुत्र—झाँड़ू और बाउर हुये। भारत के दो पुत्र—छुन्नू और बृजलाल हुये।

गोत्र काश्यप परम्परागत (अज्ञात)

उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत काश्यप गोत्र में परिज्ञात वृद्ध

(१) प्रथम वृद्ध। भग्गा मझोलवा में बसा। भग्गा के एक पुत्र ऊदन हुवा।

(२) दूसरा वृद्ध। चौबे बझोलवा में बसे। चौबे के चार पुत्र लल्लुवा, दुलीवा, रघुवर और रामाधीन हुये। लल्लुवा के एक पुत्र—रामचेला हुआ। चेला के दो पुत्र—बेजा दूसरे का नाम अज्ञात हुये। रामाधीन के छः पुत्र-हीरा, श्याम, पञ्चा और तीन के नाम अज्ञात हुये।

(३) तीसरा वृद्ध। रामसहाय मकन्दीपुर में बसे। रामसहाय के तीन पुत्र—रामदयालु, दीनदयालु और महादेव हुये। महादेव गौरा चला गया। रामदयालु के दो पुत्र-भगवान और दूसरे का नाम अज्ञाय हुये। भगवान के दो पुत्र—बदरीप्रसाद और अज्ञात नाम हुये।

(४) चौथा वृद्ध । चैन मकन्दीपुर में बसे । चैन के तीन पुत्र-चन्दी पूरन और भदई हुये । भदई के पांच पुत्र—कन्हैयालाल, कल्लू, मनोहर, मुनैयालाल, और रामसेवक हुये । कन्हैयालाल और पूरन नयेपुर चले गये । सेवक के एक पुत्र-प्रभूदयाल हुआ ।

(५) पांचवाँ वृद्ध । मदारी मकन्दीपुर में बसे । मदारी के दो पुत्र घनश्याम और काँरा हुये । घनश्याम के तीन पुत्र-महँगा, किन्ना और ख्याली हुये । किन्ना के एक पुत्र—देवीचरण हुआ । नारायण गौरीपुर में जाकर बसे । नारायण के दो पुत्र-ईश्वरी और दानचेला हुये । ईश्वरी के दो पुत्र—घसीटे और छोटेलाल हुये ।

(६) छठवाँ वृद्ध । परगल जरैलापुर में जाकर बसे ।

(७) सातवाँ वृद्ध । दल्लू रेवाड़ी में बसे । दल्लू के दो पुत्र—नसेल और भदई हुये । नसेल के पांच पुत्र—गयादीन, गयाप्रसाद, बाबूलाल श्यामसुन्दर और सुखलाल हुये ।

(८) आठवां वृद्ध । भदई मेढ़ापाटी से जाकर हाटा में बसे । भदइ के दो पुत्र-राजाराम और रामलाल हुये । राजाराम के तीन पुत्र—हनुमान, महावीर और रघुवर हुये । हनुमान के दो पुत्र-घसीटे और रामप्रसाद हुये । रामलाल के एक पुत्र-गजोधर हुआ ।

(९) नवां वृद्ध । मातादीन कसियापुर में बसे । मातादीन के दो पुत्र ठाकुर और तिलोक हुये । ठाकुर के तीन पुत्र—राजाराम, रणजीत और महावीर हुये राजाराम के एक पुत्र -वंशगोपाल हुआ । रणजीत के दो पुत्र—देवीदयालु और मोतीलाल हुये ।

(१०) दसवां वृद्ध । गंगादीन हुये । यह कसियापुर में बसे । गंगादीन के एक पुत्र-कल्ली हुआ । कल्ली के एक पुत्र—सेफला हुआ । सेफला के चार पुत्र-दुल्लू, सउनी, चंदन और पूरन हुये । दुल्लू के दो पुत्र—कन्धई और रामरतन हुये ।

(११) ग्यारहवां वृद्ध । सत्तन हुये । यह मेढ़ापाटी में बसे । सत्तन के तीन पुत्र—दनक, भदई और चतुरी हुये । दनक के तीन पुत्र-तुलसीराम, हजारीलाल और टीकाराम हुये । हजारीलाल के तीन पुत्र—मनियाँ, पूरन और

ंगाचरण हुये। मनियाँ गौरीपुर चला गया। टीकाराम के एक पुत्र—रामपाल हुआ।

(१२) बारहवां वृद्ध। भीखा हुये। यह पतारी में जाकर बसे। भीखा के छः पुत्र—बृजलाल, देवदत्त, चंद्री, पंन्नी, उजागर और हुलासी हुये। बृजलाल के एक पुत्र—जोधा हुआ। देवदत्त के दो पुत्र जियालाल और गोकुल हुये। जियालाल के एक पुत्र—गिलुवा हुआ। पंन्नी के तीन पुत्र—भगवान,पराग और महाराज हुये। भगवत के दो पुत्र—श्यामलाल, रामलाल हुये। श्यामलाल के दो पुत्र—गजोधर और अज्ञात नाम हुये। रामलाल के तीन पुत्र-रामेश्वर ...राव और अज्ञात नाम हुये। महाराज के एक पुत्र भिखारीलाल हुआ। उजाग... एक पुत्र-खलकू हुआ।

(१३) तेरहवां वृद्ध। लछिमन जमुनियाखेरे में जाकर बसे। लछिमन के पांच ...—भदई, महादेव, अंगा, नारायण और गोपाल हुये। अंगा के चार ...—फला, खुटिया, सुक्खा और बसंता हुये। नारायण के एक पुत्र-नाम ...न हुआ।

भूरल

बदर (१४) चौदहवां वृद्ध। लेंदू और लच्छी दो भाई असधना में बसे। ... एक पुत्र- लाला हुआ। लच्छी के एक पुत्र- राजा हुआ। राजा के ...त्र- नाम अज्ञात हुआ

(१५) पन्द्रहवां वृद्ध। मूसे असधना में बसे। मूसे के एक और जियालाल हुआ मूसे के एक पुत्र- पराग हुआ। पराग के एक पुत्र ...नदीन हुआ। जियालाल के दो पुत्र- दुरगा और मनोहरलाल हुये। ...रगा के एक पुत्र- निरखा हुआ।

(१६) सोलहवां वृद्ध। चैन असधना में बसे। चैन के एक पुत्र गोपाल ...। गोपाल के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुआ।

(१७) सत्रहवां वृद्ध। ठाकुर असधना में जाकर बसे। ठाकुर के दो ...—धनी और नारायण हुये। नारायण के एक पुत्र-बंशी हुआ।

(१८) वृद्ध। मक्कू और हजारी असधना में बसे। मक्कू के एक पुत्र ...थुरा हुआ। मथुरा के एक पुत्र—सदला हुआ। हजारी के तीन पुत्र-भूरा, मक्का ...र तीसरे का नाम अज्ञात हुये।

(१९) उन्नीसवां वृद्ध । दयाली मकन्दीपुर में बसे । दयाली के छः पुत्र रघुहा, हनुमान, भगवान, देवनन्दन, गिरधारी और हजारी हुये । रघुवा के एक पुत्र—शिवनाथ हुआ । भगवान के एक पुत्र-शिवराज हुआ । गिरधारी के एक पुत्र—भगत हुआ । हजारी के दो पुत्र-गजराज और भूरा हुये ।

(२०) बीसवां वृद्ध । नारायण गौरीपुर में बसे । नारायण के दो पुत्र ईश्वरी और दनचेला हुये । ईश्वरी के दो पुत्र—बसीटे और छोटेलाल हुये ।

(२१) इक्कीसवां वृद्ध । हीरामन बंगला में बसे । हीरामन के दो पुत्र सुलखा और ईश्वरी हुये । सुलखा के दो पुत्र—बदलू और होरीलाल हुये । ईश्वरी के चार पुत्र—भगौना, बाउर, मलखे और बदली हुये ।

बाइसवां वृद्ध । गूलम बंगला में बसे । गूलम के दो पुत्र—बर्मा और भदई हुये । बर्मा के एक पुत्र—छोटा हुआ । छोटा के एक पुत्र—रामनरायण हुआ । भदई के दो पुत्र-रामेश्वर और श्यामलाल हुये ।

(२३) तेइसवां वृद्ध । कोली हुये यह बंगला में बसे । कोली के दो पुत्र-केशव और गन्नू हुये । केशव के एक पुत्र-अचल हुआ । गन्नू के पुत्र—गोला भया । गोला के दो सुत-दयाराम और रामधीन भये ।

(२४) चौबीसवां वृद्ध । बुद्ध जटुनियाँखेरे में जाकर बसे । बुद्ध के एक पुत्र—जंगली भया ।

(२५) पचीसवां वृद्ध भदई कुर्मी रामपुर में बसे । भदई के दो पुत्र कल्लू और शम्भू भये ।

(२६) छब्बीसवां वृद्ध । टीका दरियापुर में बसे । टीका के चार पुत्र दुर्जा, सहाय, चतुरा, और छेदालाल हुये । छेदू के दो पुत्र—छोटा और चरण हुये । छोटा के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ । चतुरा के एक पुत्र भिखारी हुवा ।

(२७) सत्ताइसवां वृद्ध । छन्नू धनसिंहपुर में बसे । छन्नू के एक पुत्र-भारत हुवा । भारत के एक पुत्र—गुरदीन हुवा ।

(२८) अट्ठाईसवां वृद्ध । हीरा, जवाहिर और रामबकस हुये । हीरा धनसिंहपुर में बसे । हीरा के एक पुत्र-बल्लू हुआ । जवाहिर के एक पुत्र रघुमान हुवा ।

गोत्र कात्यानी परम्परागत (सुन्दरपुरिहा)

ये बंगला में रहते हैं।

(१) उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत सुन्दरपुरिहा गोत्र में सबसे परिज्ञात वृद्ध गगन हुआ। गगन के एक पुत्र दनकू हुआ। दनकू के चार पुत्र गप्पू, हनूमान, बेनोप्रसाद, पञ्चा हुये। हनूमान के एक पुत्र मेंडू हुआ। मेंडू के एक पुत्र अयोध्याप्रसाद हुआ। गप्पू के पांच पुत्र—महादेव, मथुरा, मिर्दीलाल, जोधा, मनियां, हुये। मथुरा के एक पुत्र—भदई हुआ। मनियां के दो पुत्र भगवानदीन, देवीदयाल हुये।

(सेवक ये लोग सुन्दरपुर में रहते हैं।)

(२) दूसरा वृद्ध सेवक। सेवक के दो पुत्र बिहारी, अम्बादीन हुये। अम्बादीन के दो पुत्र रंगीलाल, ब्रजलाल हुये। रंगीलाल के दो पुत्र—केदारनाथ, गंगाचरण हुये। केदारनाथ के एक पुत्र ब्रजमोहन हुआ।

(३) तीसरा वृद्ध-लाला। लाला के एक पुत्र—भूरेलाल हुआ। भूरेलाल के तीन पुत्र-गहोला, पीताम्बर, नन्दलाल हुये। पीताम्बरके तीन पुत्र, बदरीप्रसाद, धसीटेराम, छोटेलाल हुये।

(लाला सुन्दरपुर में आबाद हैं)

(४) चौथावृद्ध -कल्लू। कल्लू के तीन पुत्र—परम, गजोधर, जियालाल हुये। कल्लू सुन्दरपुर में आबाद हैं।

(५) पांचवां वृद्ध। तेजा भलिगवां में आकर बसे। तेजा के दो पुत्र—मंगली, बदलू हुये। मंगली के एक पुत्र गंगाचरण हुवा।

(६) छठवां वृद्ध। मैका और गोकुल सुन्दरपुर से जाकर किशोरपुर में बसे। मैका के एक पुत्र—लक्कू हुआ। गोकुल के दो पुत्र दुर्गा और बाबूलाल हुये।

(७) सातवां वृद्ध। ठाकुरदीन और पैंगा पैंगा सुन्दरपुर से जाकर किशोरपुर में बसे। ठाकुरदीन के दो पुत्र मनोहर और अज्ञात नाम हुये। मनोहर के दो पुत्र—नाम अज्ञात हुये। पैंगा के एक पुत्र छेदना हुवा। छेदना के एक पुत्र—नाम अज्ञात हुआ पैंगा के एक पुत्र नारायण हुआ।

(८) आठवां वृद्ध—छंगा सुन्दरपुर से जाकर किशोरपुर में बसे। छंगा के एक पुत्र राजा हुआ। राजाराम के एक पुत्र-नाम अज्ञात हुये।

गोत्र धनञ्जय परम्परागत (लठहा)

(१) उमरहार कुर्मी वंशान्तर्गत धनञ्जय गोत्र में परिज्ञात वृद्ध—धनसिंह । धनसिंहपुर को आबाद करके धनसिंहपुर में बसे धनसिंह के एक पुत्र—रिग्गू हुआ । रिग्गू के तीन पुत्र—रंगीलाल, बाबूलाल, दनकू हुये । रंगीलाल के एक पुत्र—चिरंजू हुआ । दनकू के दो पुत्र—गयादीन मथुरा हुये । गयादीन के दो पुत्र भगवानदीन, लालजी हुये । भगवानदीन के एक पुत्र—अज्ञात नाम ।

(२) दूसरा वृद्ध । थान, भउना, दइना, सहाय ये चारों भाई अम्बरपुर में आबाद हैं । थान के तीन पुत्र—रामचरण, गजुआ कांरा हुये । रामचरण के दो पुत्र—गोकुल, और मथुरा, जो दोनों पतित होगये ।

कारा के दो पुत्र रामलाल, बदरीप्रसाद हुये । रामलाल के तीन पुत्र—जगन्नाथ, ब्रम्हा, तीनो का अज्ञात नाम हुवा ।